राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १११

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

द्वितीय भाग

सम्पादक

श्री नारायणसिंह भाटी, एम. ए., पी-एच.डी

निदेशक—राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

१९६९ ई०

प्रथमावृत्ति १०००

मूल्य १२.५०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १११

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

द्वितीय भाग

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

१९६९ ई०

वि० सं० २०२६ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९१

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

विषय - सूची

प्रधान - सम्पादकीय

मारवाड़ रा परगनां री विगत के प्रथम भाग का विद्वानों द्वारा जो स्वागत हुआ उससे मुझे बहुत हर्ष और सन्तोष प्राप्त हुआ है। उस भाग को देख कर अनेक लोगों ने इस ग्रन्थ के अन्य दो भागों के शीघ्र प्रकाशन के लिये आग्रह किया है। यद्यपि हम सभी इस आग्रह के अनुसार कार्य करने में पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाये हैं, परन्तु ग्रन्थ के इस द्वितीय भाग को प्रकाशित करते हुये हम अपने विद्वान् पाठकों की इच्छा को आंशिक रूप से पूर्ण कर हर्ष का अनुभव कर रहे हैं।

जैसा कि विद्वान् सम्पादक ने अपने सम्पादकीय में व्यक्त किया है कि ग्रन्थ का यह भाग प्रथम भाग का पूरक होकर भूतपूर्व जोधपुर-राज्य के प्रायः सभी परगनों की विगत देने में समर्थ हो सकेगा। इस भाग में मुँहणोत नैणसी-कृत विगत के अतिरिक्त विद्वान् सम्पादक ने कुछ अन्य ग्रन्थों से भी सामग्री को संकलित कर दिया है, जिससे कि जिन परगनों की विगत नैणसी के ग्रंथ में नहीं आ पाई है उसका परिचय भी शोधकर्ताओं को एक स्थल पर मिल जाय।

मूल ग्रंथ के अतिरिक्त इस भाग में १० परिशिष्ट जोड़े गये हैं जो अनुसंधित्सुओं के लिये बड़े उपयोगी सिद्ध होंगे। फिर भी शोधकार्य के लिये इस ग्रंथ को और अधिक उपयोगी बनाने के लिये कई अनुक्रमणिकाओं तथा अध्ययन-संदर्भों एवं टिप्पणियों की आवश्यकता रह जाती है। इस सब की पूर्त्ति करने के लिये ग्रंथ का तृतीय भाग शीघ्र ही प्रकाशित होगा। प्रथम भाग के प्रकाशित होने पर विद्वानों से जो सुझाव मिले हैं उनके अनुसार यथासंभव तृतीय भाग में अध्ययन प्रस्तुत किया जायगा। इस विषय में हमारे मनीषी पाठक जो भी और सुझाव एवं सम्मतियाँ देंगे, उनसे हम अधिकाधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे।

अन्त में, मैं सम्पादक महोदय को उनके परिश्रम और लगन के लिये अनेक धन्यवाद अर्पित करता हूँ। साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसाद पारीक का भी मैं आभार प्रकट किये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि यदि उन्होंने इसके मुद्रण में तत्परता न दिखाई होती तो यह भाग इस समय समाप्त न हो पाता।

चैत्री पूर्णिमा, वि.सं. २०२६,
जोधपुर.

— फतहसिंह

सम्पादकीय

'मारवाड़ रा परगनां री विगत' के प्रथम भाग में मारवाड़ के तीन परगनों जोधपुर, सोजत और जैतारण सम्बन्धी वृत्तांत प्रकाशित किया गया था। प्रस्तुत भाग में फलोधी, मेड़ता, सिवाना और पोकरण का वृत्तांत प्रकाशित किया जा रहा है। यद्यपि नैणसी ने उपरोक्त सात परगनों का ही वृत्तांत अपने ग्रंथ में लिया है, परन्तु सांचोर, जालोर-भीनमाल आदि परगने भी बाद में जसवंत-सिंहजी के अधिकार में आगये थे। नागोर का कुछ हिस्सा भी इनके अधिकार में कुछ समय के लिये रहा था। मारोठ भी मारवाड़ का महत्त्वपूर्ण भाग रहा है। अत: इन परगनों के सम्बन्ध में जो भी न्यूनाधिक सामग्री अन्य अप्रकाशित साधनों से उपलब्ध हो सकी वह इस ग्रंथ में परिशिष्ट (१) में समाहित कर दी गई है, जिससे प्राचीन जोधपुर-राज्य में आने वाले अधिकांश परगनों पर एक ही जगह सामग्री उपलब्ध हो सके और इस प्रकार प्राचीन मारवाड़ का लगभग पूर्ण चित्र पाठकों के सम्मुख उपस्थित हो सके।

इस ग्रंथ की सामान्य विशेषताओं तथा अनुसंधान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर प्रथम भाग की संपादकीय-भूमिका में विस्तृत प्रकाश डाला जा चुका है। अत: यहाँ केवल इस भाग में समाहित सामग्री से सम्बन्धित कुछ विशेषताओं की ओर संकेत करना ही पर्याप्त होगा।

परगना फलोधी—मारवाड़ का यह अत्यधिक रेतीला भाग बीकानेर की सीमा पर होने के कारण राजनैतिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व रखता आया है। और इसीलिये अवसर आने पर बीकानेर तथा जोधपुर के शासक इसे अपने-अपने राज्य में मिलाने के लिये तत्पर रहे हैं। इस परगने को जोधपुर राज्य में मिलाने के आशय से किये गये राव मालदे के षड़यन्त्र और मुंहता नैणसी का बलोचों से मुठभेड़ करना तत्कालीन राजनीति के अध्ययन की दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। परगने के अन्त में दी गई मारवाड़ में उस समय की नमक की खानों की तालिका भी विशिष्ट महत्त्व रखती है।

परगना मेड़ता- यह परगना मारवाड़ के परगनों में अनेक दृष्टियों से विशेष महत्त्व रखता है। न केवल उपजाऊ भूमि, नाना प्रकार की फसलों और किले-कोटड़ियों के कारण वह आकर्षण का केन्द्र रहा है अपितु उसकी भौगोलिक स्थिति के कारण भी उसका सदा राजनैतिक महत्त्व रहा है। यह परगना

एक ओर जोधपुर से बहुत समीप पड़ता है अतः जोधपुर के शासक का जब तक उस पर अधिकार न हो तब तक वह निश्चित हो कर राज्य नहीं कर सकता था तथा दूसरी ओर अजमेर उसके समीप है जहाँ कि बादशाही सूबेदार रहा करता था और उसकी दृष्टि इस परगने पर सदा बनी रहती थी और इसके माध्यम से वह जोधपुर के शासक की गतिविधियों को नियंत्रित भी कर सकता था। केन्द्रीय शक्ति और जोधपुर राज्य के बीच जब भी संघर्ष चला है मेड़ता ने अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

इस परगने के एतिहासिक वृत्तांत में जोधपुर के शासकों का मेड़तियों की अनेक पीढ़ियों के साथ संघर्ष बड़े विस्तार के साथ वर्णित है जिसमें उस समय की युद्ध-कला, सैनिक अभियान, संघर्षरत राजपूतों के नैतिक मूल्य और मुगलों की नीति आदि कितने ही महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश पड़ता है।

उस समय की मुगल साम्राज्यवादी व्यवस्था में परगनों को प्राप्त करने के लिये किस विधि से काम लिया जाता था और साम्राज्य के अधीनस्थ कर्मचारी उसमें कितना सहयोग दे सकते थे और राजनीति में कब कैसे अचानक परिवर्तन हो जाते थे, इसके कई उदाहरण इस वृत्तांत में आये हैं[1]।

वैसे प्रत्येक परगने में उस काल की राजस्व-व्यवस्था तथा कर-व्यवस्था आदि पर प्रकाश डाला गया है परन्तु मेड़ता के सम्बन्ध में यह प्रकाश कुछ विस्तार के साथ मिलता है। तथा कानूगोओं आदि की व्यवस्था के सम्बन्ध में भी जानकारी मिलती है[2]।

परगनों को आबाद करने के लिये किस प्रकार के प्रयास किये जाते थे और आबाद होने वाले किसानों की सुरक्षा आदि के अलावा उन्हें कितना सामाजिक महत्त्व दिया जाता था इसके भी सुन्दर व उपयोगी उदाहरण इनमें मिलते हैं। गांवों के वृत्तांत में अधिकांश गांवों की मेड़ता से दूरी व उनका रकबा तक दिया गया है जिससे उनकी प्रामाणिकता और बढ़ गई है।

सिवना—मारवाड़ के परगनों में प्राचीनता की दृष्टि से सिवाने का बड़ा महत्त्व है। प्रसिद्ध आक्रान्ता अलाउद्दीन ने भी इसके किले पर चढ़ाई की थी और उसमें सातल-सोम चहुवान मारा गया था। राठौड़ों के इतिहास में सबसे पहले राव जोधा ने स्थायी रूप से इसे प्राप्त करने का प्रयास किया था[3] परन्तु वह पूर्ण रूप से सफल न हो सका। परन्तु इसे अधिकार में लेने के लिए

---

१. द्रष्टव्य पृ० ७५। २. द्रष्टव्य पृ० ८५–९८। ३. द्रष्टव्य पृ० २१७।

जोधपुर के शासक निरन्तर प्रयत्न करते रहे। राव मालदे और चंद्रसेन[1] तथा मोटा राजा उदयसिंह की चढ़ाइयां इसका प्रमाण है। मोटा राजा ने अकबर के आदेश पर कल्ला रायमलोत के विरुद्ध सिवाना पर चढ़ाई की थी[2] और कल्ला बड़ी वीरता दिखाकर काम आया था जिससे उसने अक्षुण्ण ख्याति प्राप्त की। सिवाना संबंधी अनेक अतिरिक्त ज्ञातव्य परिशिष्ट २ में संकलित किये गये हैं वे भी इस दृष्टि से अवलोकनीय है।

परगनों के सीमावर्ती गांव कई बार एक परगने से हटाकर दूसरे परगने में मिला लिये जाते थे। इसके कई उदाहरण इस परगने के कुछ गांवों के विवरण में मिलते हैं[3]।

इस परगने में आई हुई विकट पहाड़ियों में राज्य छूट जाने पर राव मालदे और चंद्रसेन ने कष्ट के दिन निकाले थे और वहाँ रहने के लिये कोट-ड़ियें आदि बनवाई थीं उनका उल्लेख ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्व रखता है।

परगने में बहने वाली नदी सूकड़ी का प्रवाह किन-किन गांवों में से होकर था इसकी सूचना भी लेखक ने दी है[4]। भायल, सींधल, दहिया, पंवार आदि प्राचीन राजपूत जातियों के उल्लेख भी इसके गांवों की विगत में कई स्थानों पर आए हैं।

पोकरण—यह परगना जैसलमेर की सीमा पर पड़ता है जिससे इसका भी विशेष राजनैतिक महत्त्व रहा है। जोधाजी के वंशजों में से राव नरा ने पहलेपहल वरजांग से छीन कर पोकरण पर अधिकार किया था और पास ही सातलमेर नामक नया नगर बसा कर उसे राजधानी बनाया था। इसीलिये शाही-दफ्तर में इस परगने का नाम सातलमेर ही लिखा जाता था।

इस पर स्थायी अधिकार राव मालदे ने जैतमाल से छीन कर किया था परन्तु चन्द्रसेन के समय में वह पुनः हाथ से निकल गया और प्रतिकूल परिस्थितियों को देखते हुए उसने जैसलमेर के भाटियों को कुछ रकम लेकर अडाणा (रहन पर) दे दिया था[5]। तब से जोधपुर के शासक इसे प्राप्त करने के प्रयास बराबर करते रहे परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) को जब शाही दरबार की ओर से इसे अपने राज्य में मिला लेने के आदेश मिले तब मुहता नैणसी आदि ने ससैन्य जाकर इस पर

---

१. द्रष्टव्य पृ० २१६। २. पृ० २२०। ३. द्रष्टव्य पृ० २४६, पृ० २५१, पृ० २६५। ४. पृ० २८१। ५. पृ० २६७।

अधिकार किया। इसको प्राप्त करने में जो संघर्ष हुआ उसका बड़ा विस्तृत विवरण नैणसी ने लिखा है[1] जिसके अध्ययन से उस समय के सैन्य-संचालन, युद्धनीति आदि पर विशेष प्रकाश पड़ता है। मारवाड़ के प्रसिद्ध पांचों पीरों में गिने जाने वाले तुंवर रामदेजी का वतन यह परगना रहा है अतः उनके वीरोचित कार्यों का उल्लेख भी इसके वृत्तांत में यथास्थान किया गया है।

इस परगने के वृत्तांत का विशिष्ट महत्त्व इस दृष्टि से भी है कि सीमा-वर्ती परगना होने के कारण बाहर से आने वाली वस्तुओं पर जो कर लिये जाते थे उसका बड़ा उपयोगी व्यौरा इसमें दिया गया है[2]। यह न केवल उस समय की कर-व्यवस्था पर ही प्रकाश डालता है अपितु उस समय के व्यापार के साधनों और प्रमुख वस्तुओं के आदान-प्रदान की भी प्रमाणिक जानकारी प्रस्तुत करते हैं।

गांवों के नामकरण के बारे में इसमें एक बड़ी दिलचस्प बात यह है कि बहुत से गांवों के आगे सर अथवा सरेह शब्द लगे हुए हैं जो वहाँ प्राचीन काल में बनाये गये जलाशयों के द्योतक हैं और जिस व्यक्ति ने वह जलाशय बनवाया उसी के नाम से गांव का नाम रखा गया है, जैसे—भोपी री सरेह, ढंढ़ री सरेह, सोढां री सरेह आदि[3] आज भी इस परगने में अनेक गांवों के इस प्रकार के नाम विद्यमान हैं।

पोकरण पर जसवंतसिंहजी का अधिकार होने पर प्रमुख अधिकारी के रूप में नैणसी को वहाँ रहने का अवसर मिला था इसलिये अनेक गांवों की जानकारी उसने विस्तार के साथ प्राप्त करके प्रेषित की है। वहाँ बसने वाले विशिष्ट व्यक्तियों तक का भी उल्लेख उसने किया है। अतः विस्तृत इतिहास की जानकारी की दृष्टि से ये वृत्तांत बड़े ही उपयोगी हैं।

परिशिष्ट

प्रथम भाग के अन्त में केवल एक ही परिशिष्ट दिया गया था जिसमें जोधपुर में विभिन्न शासकों के समय में बनी इमारतों तथा जलाशयों आदि का विस्तृत विवरण है। इस भाग में १० परिशिष्टों का समावेश किया गया है। इन परिशिष्टों में कुछ सामग्री तो परगनों की विगत की पूरक सामग्री है तथा कुछ सामग्री ऐसी है जिसके अध्ययन से इस वृहत् ग्रंथ के अनेक संदर्भों को विस्तार के साथ समझने में सहायता मिलती है। पाठकों की सुविधा के लिये इनके महत्त्व पर संक्षेप में यहां प्रकाश डाला जा रहा है।

---

१. पृ० ३००–३०५। २. पृ० २२५–२२६। ३. पृ० ३३६।

परिशिष्ट १ – इसमें नैणसी द्वारा वर्णित सात परगनों के अतिरिक्त जोधपुर के पांच परगनों—सांचोर, जालोर, भीनमाल, नागोर तथा मारोठ का प्राचीन वृत्तांत है। सांचोर परगने को छोड़कर अन्य परगनों के विस्तृत वृत्तांत हमें उपलब्ध नहीं हो सके पर उनका संक्षिप्त वृत्तांत अवश्य प्रस्तुत किया गया है जो इतिहास के अध्ययन के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा। इनमें सांचोर का वृत्तांत लगभग नैणसी की ही शैली पर है। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के वृत्तांत में बताया गया है कि वहाँ प्राचीन राज्य परमारों का था। अलाउद्दीन ने जब जालोर के सोनीगरा चहुवानों को पराजित किया तो सोनीगरा संवरसी के लड़कों ने सांचोर में आकर अपना अधिकार जमाया। प्रारम्भ में इस परगने के लिये शाही रकम २४ लाख रुपये लगती थी। इस रकम में जो भी घटा-बढ़ी जिस-जिस शासक के समय में हुई उसका पूरा ब्यौरा संवत १६६५ से १७५५ तक का दिया गया है। परगने की आमदनी (उनालू और सांवणू साख के आँकड़ों सहित) संवत १७२० से १७५६ तक दी गई है। चहुवानों का यहाँ लम्बे समय तक वर्चस्व रहा इसका विस्तृत वृत्तांत इसमें मिलता है, जो कि मध्यकालीन राजस्थान के इतिहास की दृष्टि से बड़ा उपयोगी है। गांवों का हाल यद्यपि संवत १६९२ की बही से नकल किया गया है[1] परन्तु लिपिकर्ता की ओर से कुछ गांवों में बाद की सूचनाएँ भी जोड़ दी गई हैं। गाँवों का वर्गीकरण, गांव चढै ऊतरै, चढै ऊतरै नहीं, भोमीचारा रा गांव आदि शीर्षकों से किया गया है तथा प्रमुख जागीरदारों के अधीनस्थ गांवों की सूचियाँ जागीरदारों की शाखाओं के अनुसार भी दी गई हैं। चारणों आदि को सांसण में दिये गये गांवों की भी सूची है।

गांवों के वृत्तांतों में आमदनी के आंकड़े नहीं हैं परन्तु रेख की चाकरी के घोड़ों की विगत अलग से दी गई है[2]। इस विगत के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय १०००) रुपये की रेख पर सामान्यतया एक घोड़ा चाकरी में देने की प्रथा थी। न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से अपितु अन्यान्य दृष्टियों से भी इस प्रकार की सूचनाओं का बड़ा महत्त्व है।

जालोर और भीनमाल के परगनों के सम्बन्ध में जो भी संक्षिप्त जानकारी यहां संकलित की गई है वह अनेक तथ्यों को प्रमाणित करने में सहायक सिद्ध होगी। इन दोनों परगनों का हाल प्राचीन बहियों में मिलेजुले रूप में मिला है अतः सम्भव है किसी समय में ये दोनों परगने एकही सूबेदार अथवा अधिकारी

---

१. पृ० ३७३। २. पृ० ४०८–४१०।

के नीचे रहे हों। नागोर का वृत्तांत यद्यपि अधिक प्राचीन नहीं है, परन्तु उसमें भी अनेक उपयोगी संकेत हैं। कुछ घटनाओं के संवत प्रामाणिक नहीं हैं। इसमें मुलतान के सूबेदार सुलमखांन द्वारा नागोर के टुकछा ग्राम में चूंडा का मारा जाना लिखा है। इसी प्रकार की कुछ विशिष्ट सूचनाएँ इस वृत्तांत में हैं।

मारोठ का वृत्तांत गौड़ों और मेड़तियों के इतिहास के लिये उपयोगी है।

परिशिष्ट २—इस परिशिष्ट में जोधपुर, मेड़ता और सिवाने से सम्बन्धित कुछ पूरक सामग्री है। जोधपुर परगने का कुछ अतिरिक्त आंकिक विवरण तथा कुछ विशिष्ट महत्त्व की ऐतिहासिक सामग्री (जो विगत की 'ख' प्रति के अन्त में लिपिबद्ध है) यहाँ समाहित की गई है। आंकिक विवरण जसवंतसिंहजी के समसामयिक अधिकारियों द्वारा संकलित किये हुए हैं इसलिये वे प्रामाणिक हैं। परगने मेड़ते (ख) में बने कुछ स्मारक, जलाशय तथा मन्दिरों आदि का व्यौरा यहाँ दे दिया गया है। सिवाने (ग) में कुछ प्राचीन स्मारकों, सीमा-सम्बन्धी वृत्तांत, जलाशयों तथा कला रायमलोत सम्बन्धी दिलचस्प जानकारी संकलित की गई है। महाराजा अजीतसिंह के प्रवास पर भी अन्त में कुछ उपयोगी प्रकाश डाला गया है।

परिशिष्ट ३— नैणसी ने परगनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अनेक स्थलों पर महाराजा जसवन्तसिंहजी (प्रथम) के राज्य-काल का विवरण प्रस्तुत किया है परन्तु वह पक्ष इतिहास, राजनीति और प्रशासन व सैनिक व्यवस्था से ही प्रमुख सम्बन्ध रखता है अतः इस परिशिष्ट में उनके समय के कुछ रीतिरिवाजों सम्बन्धी सामग्री का संकलन उस काल की संस्कृति और शासकों की घरेलू व्यवस्था को समझने की दृष्टि से किया गया है। परन्तु इसमें भी अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों, वस्तुओं के भाव, हिसाब-किताब रखने की प्रणाली तथा लोकमान्यताओं आदि पर भी अच्छा प्रकाश पड़ता है।

परिशिष्ट ४—प्रथम भाग की भूमिका में मैंने जोधाजी द्वारा स्थापित डावी और जीवणी मिसलों का उल्लेख किया था परन्तु इस विषय की विस्तृत जानकारी अनेक दृष्टियों से अपेक्षित है। इतिहास में और विशेषतया ख्यातों व साहित्यिक कृतियों में व्यक्ति की सही पहिचान के लिये उसकी जाति के अतिरिक्त खांप आदि का उल्लेख भी उसके नाम के आगे किया जाता है परन्तु उसको ठीक से न समझने पर बड़ी भूल हो जाती है। अतः इस प्रकार की कठिनाइयों का निराकरण करने में भी यह सामग्री बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी।

परिशिष्ट ५—जोधपुर राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था में पंचोली, मुहता, भंडारी, सिंघवी, पोकरणा ब्राह्मण, पुरोहित, व्यास आदि जातियों के लोगों का पर्याप्त हाथ रहा है और उनमें अनेक योग्य, स्वामिभक्त तथा नीतिदक्ष अधिकारी हुए हैं। उनके खानदान आदि के सम्बन्ध में यथोचित जानकारी अनुसंधान-कर्ताओं को मिल सके इस दृष्टि से इनके सम्बन्ध में संक्षिप्त व प्राचीन ऐतिहासिक सामग्री यहाँ संकलित की गई है।

परिशिष्ट ६—लेखक ने इस ग्रंथ में अनेक संदर्भों में कई ओहदेदारों का उल्लेख किया है। यहाँ की शासन-प्रणाली मुगल साम्राज्य की प्रणाली के अनुरूप ढल चुकी थी जिसका उल्लेख मैंने प्रथम भाग की भूमिका में किया है। यहाँ इन ओहदेदारों की सूची इस आशय से दी जा रही है कि इसके अध्ययन से यहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था को सुविधाजनक ढंग से समझा जा सके।

परिशिष्ट ७— जिन जागीरदारों तथा मुत्सद्दियों आदि की विशेष सेवायें राज्य को प्राप्त होती थीं उन्हें राजा की ओर से सम्मान देने के लिये विशेष कुरब आदि इनायत किये जाते थे। इनका अधिक संबंध राजकीय औपचारिकता से था और कुछ विशिष्ट कुरब बड़ी कठिनाई से ही प्राप्त हो सकते थे। इनके अध्ययन से उस समय के राज्य-दरबार की व्यवस्था सामन्तों और शासक के बीच के संबंधों और राज्य की ओर से विशिष्ट व्यक्तियों को मिलने वाली अनेक रियायतों आदि की जानकारी प्राप्त हो सकती है।

परिशिष्ट ८—इसमें जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह को संवत १७२१ में प्राप्त मनसब के आधीन परगनों तथा उनकी आमदनी की सूची है। इस सामग्री का सीधा सम्बन्ध इस ग्रंथ से नहीं है परन्तु मिर्जा राजा जयसिंह जसवंतसिंह के समकालीन थे और अनेक बार जसवंतसिंह से कई परगने हटा कर जयसिंह को दिये गये और जयसिंह से हटा कर जसवंतसिंह को दिये गये। उस हेर-फेर के अध्ययन के लिये इस सामग्री का बड़ा मूल्य है, इसीलिये इसे यहाँ स्थान दिया गया है।

परिशिष्ट ९—इसमें अकबर से लेकर औरंगजेब तक के बादशाहों के हिन्दू उमरावों की तालिका, उनकी जाति और मनसब सहित (कुछ के मनसब नहीं) दी गई है। यह तालिका शायद पूर्ण न भी हो परन्तु अनेक ऐतिहासिक व्यक्ति और घटनाओं को प्रमाणित करने में इस प्रकार की जानकारी से बड़ी सहायता मिलती है। इस ग्रंथ में ही अनेक ऐसे व्यक्तियों के उल्लेख आये हैं

जिनके मनसब तथा दर्जे आदि की जानकारी इस तालिका के आधार पर की जा सकती है।

परिशिष्ट १०—अन्त में नौ कोटों सम्बन्धी जानकारी इस परिशिष्ट के अन्तर्गत दी गई है। इस ग्रंथ के प्रारम्भ में तथा अन्य ख्यातों में भी नव कोटों तथा 'नव कोटी मारवाड़' ऐसे उल्लेख कई बार आते हैं। अतः यह सामग्री नव कोटों के नाम, उनकी स्थिति और ऐतिहासिक महत्त्व आदि को समझने में सहायक सिद्ध होगी।

परिशिष्टों की अधिकांश सामग्री राजस्थानी शोध संस्थान की ख्यातों और बहियों से ली गई है। कुछ सामग्री विगत की 'ख' प्रति के आदि और अंत के पत्रों से भी ली गई है।

परगनों की विगत की मूल सामग्री तथा उससे संबंधित कुछ पूरक सामग्री इन दोनों भागों में प्रकाशित होकर पाठकों के हाथों में पहुँच रही है। अनेक स्थानों पर टिप्पणियों की अपेक्षा है। परन्तु इस ग्रंथ में इतने अधिक ऐतिहासिक पुरुषों और स्थानों तथा विविध तथ्यों का उल्लेख हुआ है कि उन पर यदि मूल के साथ टिप्पणी की जाती तो इस ग्रंथ का प्रकाशन बहुत लम्बा समय लेता और शीघ्रता में कई संदर्भों का उद्घाटन करना भी संभव नहीं था। अतः ग्रंथ के तीसरे भाग में ऐसे महत्त्वपूर्ण संदर्भों पर टिप्पणियाँ, विशिष्ट शब्दों तथा कहावतों व मुहावरों के अर्थ तथा नामानुक्रमणिकाएँ आदि दी जाएँगी। इन भागों में प्रकाशन आदि से संबंधित जो भी त्रुटियाँ रह गई हैं, उनका शुद्धि-पत्र भी उक्त भाग में प्रकाशित किया जायगा।

अन्त में मैं प्रतिष्ठान के विद्वान् निदेशक श्रद्धेय डॉ० फतहसिंहजी का आभार प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिनकी सतत प्रेरणा और महत्त्वपूर्ण सहयोग मुझे इस कार्य में सदा सुलभ होते रहे हैं।

राम नवमी, २७–३–६९
चौपासनी, जोधपुर।

—नारायणसिंह भाटी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

(४) वात परगने फलोधी री

१. आदी[1] फळोधी विजै नगरी कहीजती। फळोधी सेहर विच देहरौ[2] एक श्री कलांणरायजी रौ छै। तिण रै थांभै नांवौ छै।[3] संमत ११४५ रा जेठ थे देव[१] पंवार राज करतौ तद देहरौ हुवौ छै। तद विजै नगरी कहीजती। देहरौ १ वळे जैन रौ थौ। फूल मोहल[4] री ठौड़ थौ। तद भलौ सहर बसतौ।[5] पछै बीच में दळ[6]दुकाळ[7] तुरकांणा राज उथल हुवौ। पंवारां थी बाहड़मेर छूटौ, तरै आ ही धरती छूटी सु गांव सूनौ होय गयौ, सु गांव घणा दिन सूनौ रहौ। देहरा विगर कोई आईठांण[8] रहौ नहीं। तठा पछै राठौड़े मंडोवर लीयौ। तौही राव चूंडै, रिड़मल, जोधा री वार माहे[9] आ ही ठौड़ वसी नहीं। तठा पछै राव सूजो जोधपुर धणी हुवौ तद सूजो आपरा बेटा नरा सूजावत नुं इण तरफ मेलीयौ जु षाली देस छै, एक ठौड़ जोय वासौ।[२] तरै नरै आय आ ठौड़ देखी, सहर रा आरष छै[10] आगे नगर वसतौ, नदी दीठी। तरै नरै प्रथम आ ठौड़ वासण रौ[11] विचार कीयौ। आगै फलू बांभण पलीवाळ तिण री बेटी फळूधी आई रही थी। औ फळूधी रौ वास कहीजतौ। तिका ठौड़ षीचवंद रै मारग पड़कोट[12] थी पांवडा ४०० छै। उण वांसै नांव फळोधी पड़ीयौ।

२. पछै सींधु फलो जैसलमेर रै गांव आसणी कोट रहतौ सु कुं रावळ

---

१. हथदेव। २. आवौ।

---

1. प्रारंभ में। 2. मंदिर, देवस्थान। 3. स्तंभ पर नाम अंकित है। 4. महल। 5. अच्छा शहर बसा हुआ था। 6. फौजों का विघ्न। 7. अकाल। 8. मकान आदि खंडहर। 9. समय में। 10. चिन्ह हैं। 11. बसाने का। 12. परकोटा।

थी विरस हुवौ ।[1] तरै गाडा १४० आपरा ले फळोधी आया । चोहटा बीच जाळ छै तठै हिमें सहर बसै छै, तठै आय बसीयौ । नरै राव सूजा नुं लिष नै घणी दिलासा दे वासीयौ ।[2] नरौ आप वसीयौ तिण दिन ठौड़ बोहोत वेरांन[3] सु नरा रौ मन टिकै नहीं ।[4] नै पोहोकरण तद पोहोकरणा जगमाल मालावत रा पोतरा रावत षींवौ वरजांगोत रै हुती, तरै नरै पोहोकरण लेण रौ विचार कीयौ । सु पोहोकरण रै कोट री पौळ कींवाड़ तद न था ।[5] सु नरौ घात जोवै छै ।[6] सेसू[7] लगाय मेलीया छै । इण पोहोकरणां रै घणो जाबताई को न छै । एक दिन षींवो लुको तीवाळा षांण नुं उधारास गांव छै तठै गयौ । वांसै हुवा[8] नरा नुं षबर दी । तरै असवार २०० सुं दौड़ीयौ सु जाय पोहोकरण रौ कोट लीयौ । आपरी आंणदांण फेरी । बिचै लुका नुं षबर हुई । काहाव कथीना[9] कराया । नरै कहायौ—कोई गढ लीयां पाछौ दे छै ? तरै षींवो लुको बाहड़मेर कोटड़ा दिसी गयौ । बिगाड़ करण लागौ । नरै ही कोट नुं पौळ रै कींवाड़ कराया । गढ नुं सजीयौ नै नरौ राव सातल रै षोळै थौ सु सातल रै नांवै सातसमेर नवौ गढ उठै बसायौ छै ।

३. षींयौ लुको घणौ साथ भेळौ कर आयौ । सातलमेर री उछरती[10] गाय लीवी । नरौ बांसै से ताती बाहर[11] नांदणहाई कन्है आपड़ीयौ । बेढ हुई, तठै नरौ कांम आयौ । पोहकरे बेढ जीती । नरा रै साथ गढ झालीयौ नै राव सूजा नुं षबर मेली । जोधपुर सुं सूजौ घणा साथ सुं आयौ । नरा रै बैर बाहड़मेर कोटड़ौ षारो बावड़ी[१] नोबेले[२] मारचा छा, पोहकरण आया । राव गोइंद नरा रा बेटा नुं पोहकरण दी । गोईंद बडौ आषाड़सिध[12] रजपूत हुवौ । घणा पोहकरणा मारीया

१. षाबड़ । २. नीबलो ।

1. मनमुटाव होगया । 2. बसाया । 3. वीरान । 4. मन नहीं लगता । 5. मुख्यद्वार के कपाट नहीं थे । 6. घात लयाए हुए है । 7. जासूस । 8. पीछे लगे हुए लोगों ने । 9. कहा-सुनी । 10. चरने के लिए बाहर जाती हुई । 11. तेजी से पीछा कर के । 12. युध्द प्रवीण, वीर ।

नै राव हमीर नुं फळोधी दीवी । सु हमीर राव कहाणौ । बडौ रजपूत हुवौ । हमीर संमत १५५५ फळोधी रौ कोट करायौ । संमत १५७३ कोट रै लोह रा कींवाड़ कराया । एक बावड़ी कोट रैं मांह कराई । तिण रौ पांणी सषरौ[1] छै । एक कोट मांहे कोहर[2] करायौ थौ, बूरीयौ[3] पड़ीयौ छै। एक तळाव कुडले दिसी हमीरसर करायौ । तिण दिन भाटीयां री ठकुराइ सबळी[4] थी । पण राव हमीर कुडळ कोरड़ौ भाटीयां कन्हा था दबाई लीयौ ।[5] एक वार हमीर गोईंद माहौ-माह पोहोकरण फळोधी री सींव बेइ ग्रहेड़स[6] हुई । तद रांणी लीषमी इणां री दादी ग्राई, घोड़ा कंधी री मगरो छै षारी कन्है, तठै सींव काढ दी ।[7]

४. हमीर बडौ रजपूत हुवौ । पछै हमीर संमत १५ ··· काळ कोयौ तरै रांम हमीर रै बेटा नुं फळोधी हुई । रांम रौ षुणायौ[8] तळाव रांमसर ग्राथूंण नुं पकौ बंधायौ छै । ग्रै जोधपुर रा धणी रा चाकर हुवा रहै । संमत १६०० बडी बेढ राव माल रै हुई । रा. जैतौ कूंपौ कांम ग्राया । तिण वेढ रांम भलौं[1] न हुवौ ।[9] राव मालदे रांम था रीसांणौ ।[10] रांम जोरावर[11] ठाकुर थौ, तिणे ग्रापरै परधांन जगहथ दीपावत[2] विस दे मारीयौ । तिण री साष रौ[12] दूहौ—

जगहथ वांनुं नाल जु न, राव माल रै रतन ।
दुनी रांम मरतां गई, रह गइ भाग ठकुराई ॥[3]

५. रांम नुं ग्रौ टीकौ डूंगरसी रांम रौ भाई बैठौ, नै पोहोकरण राव गोईंद संमत १५८२ काळ कीयौ सु राव जैतमाल गोईंदोत टीकै

---

१. भळो । २. देपावत । ३. जगहथिया तुं नाल जूनो राव मारै,
रतन सुनो रांम मरतां गई राह भाग ठकुराई ।
(दोहा ग्रशुध्द है)

---

1. ग्रच्छा । 2. कुग्रा । 3. धूल से पटा हुग्रा । 4. सबल । 5. ग्रपने ग्रधिकार में कर लिया । 6. सीमा के प्रश्न को लेकर खटपट हुई । 7. सीमा निश्चित करदी । 8. खुदवाया हुग्रा । 9. ग्रच्छा कार्य नहीं किया । 10. नाराज होगया । 11. ताकतवर । 12. साक्षी का ।

बैठो। जैतमाल जेसलमेर रावळ माळदे रै परणीयौ थौ सु संमत १६०३ तथा १६०४ राव मालदे जैतमाल नै डूंगरसी कन्हा सुं फळोधी पोहोकरण लेण रौ विचार कियौ तरै षोट कीयौ।[1] होळीयां रौ आगव छौ[2], डूंगरसी नुं होळी षेलण नुं तेड़ीयौ।[3] सु गांव चवां डूंगरसी षेल माहे आयौ। तरै आंष मांहे गुलाल घाल नै पकड़ीयौ, बेड़ीयां घाती, बंदीषांनै दीयौं। नै फळोधी ऊपर कटक[4] कर आय गया।[1] आगै गढ डूंगरसी रा रजपूतां जगहथ देपावत झालीयौ। मास ५ हुवां गढ हाथ नावै नै राव जैतमाल पहली राव मालदे जैसलमेर रै धणी रै परणीयौ थौ सु जैतमाल जेसलमेर जाई रावळ मालदे नुं कहौ—मेह थांहारी चाकरी करसां, थेई मांहरी मदत करौ। तरै मालदे घणा भाटीयां साथे दे कंवर हरराज नुं मदत मेलीया। इणां आई पोहोकरण डेरा कीया। राव मालदे रा डेरा फळोधी छै। तरै नरै कंवर हरराज नुं क़हौ–कहौ तौ म्हे जावां कटक रा बीगाड़[5] करां। तरै हरराज आपरौ साथ घणौ साथ दीयौ। रावत भोंवौ बीजा ही असवार ४०० भेळा हुई आया। कटक नुं हेरा लगाया। हेरै कहायौ-घात छै। ऊंट ल्यौ सो ल्यौ तरै बीजो साथ एक ठौड़ दबौ मार[6] रहा। असवार ५०० मेलीया थेई ऊंट लौ। उणे दिन पोहोर १ चढतां ऊंट लीयौ, तिण दिन बडी वेढ़ रौ पग नैड़ौ थौ।[7] मदार सारो जेसै भैरवदासोत माथै थी। कुकाउ[8] आयौ, जेसौ जुवा-हार चढोया। रा: प्रथीराज जैतावत रावजी रै घोड़ै चोकी रै चढ बाहर दौड़ीया। ऊंट लीया था उणै आगै साथ ऊभौ थौ, तठै लेई जाई नै कहौ–बाहार वांसै[9] आवै छै। इतरै बाहार ही वांसै आई। ऊंट तौ उणे चलाया नै साथ नरौ माला भाटीयां रै बेढ नुं ऊभौ। रह्यौ। अठै बड़ी बेढ हुई। रावजी रै साथ बेढ जीती नरा रा

---

१. आप पधारीया।

---

1. धोखा किया। 2. होली आने को थी। 3. बुलाया। 4. फौज। 5. नुक्सान। 6. गुप्त रूप से। 7. बड़ा युद्ध होने के आसार दिखाई देते थे। 8. पुकार करने वाला। 9. पीछे।

भाटी घणा मारीया। नरा रा पग छूटा कहै छै।[1] रावजी रै साथ वांसौ कीयौ।[2] घणा मारतां मारतां पोहोकरण कंवर हरराज रा डेरा था तठै गया। भाटी डेरा मेली नीसर गया, इण डेरा लूटीया। राः प्रथीराज रै हाथ रावत भींव रहोयौ। बीजौ ही घणौ विसैष हुग्रौ। पाछा कुसले षेमे रावजो कनै साथ ग्रायौ। तरै सिकै रातो बरछी कीयां[3] रावजी री हजूर ग्राया। प्रीथीराज माहली चाळ[4] था बरछी लुहो[5] ऊजळी थकां ग्रायौ। तरै रावजी जेसैजी नुं कहीयौ–जैता वाळौ पूत[6] ग्राज ही उजळी बरछो कीयां ग्रायौ छै। तरै जेसैजी कहीयौ छै–थे घणा रजपूतां मांहे समझौ। प्रथोराज री मांहली चाळ दिषाळी[7], वात मांड कही।[8] वेढ इण रै भुजे[9] जीती छै। तठा था रावजी प्रथो-राज रौ घणौ भलौ हुवौ। इण वेढ पछै नरा रौ बळ छूटौ। डूंगरसी जी रावजी नुं कहाड़ीयौ–हिमें मोनुं छोडौ तौ हूं कोट फळोधी रौ रावजी नुं माहरा चाकरां कन्है दिराऊं। तरै रावजी बात ग्रा राषी, कहो–माहारौ कोट ग्रावसी तरै म्हे तोनुं छोडसां। तरै डूंगरसी कोट रै मोहडै जाई[10] जगहथ देपावत नुं कहीयौ–साबास तैं पांच मास गढ वीग्रहीयौ।[11] हिमें हूं दोहौरौ हूं[12] तूं कूंची रावजी नुं सौंप जु मोनुं छोडै। तरै गढ रावजी लीयौ नै डूंगरसीजी नुं छोड दीयौ। तठा पछै बरस १५ तांई रावजी रै फळोधी रही।

६. पछै संमत १६१९ राव मालदे काळ कीयौ तरै झाली सरूपदे रा बेटा चंद्रसेन उदैसिंघ था, सु सरूपदे बळती[13] चंद्रसेण नुं जोधपुर दीयौ, टीकायत थौ। नै उदैसिंघ नुं फळोधी दी।

७. उदैसिंघ फळोधी ग्रायौ। पछै राव चंदरसेन नै रजपूतां ग्रसुष हुवौ।[14] तरै रजपूत उदैसिंघ नुं भषायौ।[15] तरै घांघाणी मारी।

---

1. कहते हैं कि भाग गया। 2. पीछा किया। 3. खून से लाल बरछी किये हुए। 4. कुर्ते (अंगरखी) के छोर के अन्दर का भाग। 5. पोंछ कर साफ की। 6. जैते का पुत्र। 7. दिखाई। 8. विस्तार से सारी बात कही। 9. इसके बाहु-बल से। 10. द्वार पर जाकर। 11. युद्ध करके गढ़ रखा। 12. तकलीफ में हूं। 13. सती होते समय। 14. अनबन हुई। 15. सिखाया।

कतरीक ऐ लूटी[1] ग्रै तिणीज टांणै रांम मालदेयोत पण मेवाड़ थको[1] सोजत रौ बीगाड़ कीयौ थौ, सु चंदरसेन बांसै बाहर चढीयौ थौ, सु रांम नुं भोज[2] सारण ग्रायौ थौ। तिसड़ै ग्रा षबर गई। तरैं चंदरसेन सारण था घणा साथ चढीयौ सु उदैसिंघ नुं लोहीयावट कन्है ग्राप-ड़ीयौ।[2] तठै बडी बेढ हुई। डदैसिंघ डील[3] ग्रापरै घणौ पराक्रम कीयौ। चंदरसेन नुं लोह पोंहचायौ[4] घणौ साथ उदैसिंघ रौ कांम ग्रायौ। ग्राप लोहां पड़ीयौ। तरै षीची हदै ग्रापरै घोड़ै चाढ ले नीसरीयो। बांसौ रजपूत करण न दीयौ। पछै संमत १६२१ रै टांणै चंदरसेन था जोधपुर छूटौ। कुहो[3] फळोधी उदैसिंघ नुं रही। तद फळौधी बीकमपुर दाण रौ वडौ हासल थौ। सु एक सोबत बीकानेर ग्राई। तरै सोदागर काहाड़ीयौ—म्हांनुं सांमा ग्राये[5] ले जासी तिण रै म्हे जासां। तरैं उदैसिंघ राः बेरसी जेसावत नै जैमल भांणोत नै सांमा मेलीया। पैली कांनौ था राव डूंगरसी ग्रापरौ भाई भांनीदास सांमो मेलीयौ सु भांनीदास पैहली जाये सोबत ग्राधी चलाई। ग्राप उलै कांनै रहीयौ थौ। बांसा था ग्रौ गयौ। माहो-माहे[6] बोलाचाली हुई। राठौड़ ग्रादमी ६ था, भाटी भांनीदास नुं कूट मारीयौ। तिण ऊपर राव डूंगरसी कटक[7] कर ग्रादमी २००० तथा ३००० भेळा कर ग्रायौ। कुंडळ ऊतरीयौ। मोटै राजा सांमौ ग्राये बेढ की। भाटीये बेढ जीती। मोट राजा हारी। पछै कहै छै पाछौ कोट मोटै राजा नै गयौ। पाषती नुं गयौ, भाटीये देस लूटीयौ। ग्रौ मांमलो संमत १६२७ हुवौ।[4] घणौ साथ मोटा राजा रौ कांम ग्रायौ। ग्रादमी ५० भाटीयां रा कांम ग्राया। राव मंडलीक बैरसलपुर रौ धणी कांम ग्रायौ।

८. तठा पछै संमत १६३१ मौटै राजा था फळोधी छूटी।[8] भाः

---

१. कतार एक लूटी। २. भांज। ३. तोही। ४. काती माहे हुवो।

---

1. मेवाड़ में रहते हुए। 2. पहूंचा (पकड़ा)। 3. शरीर। 4. शस्त्र से वार किया। 5. सामने ग्राकर। 6. ग्रापस में। 7. फौज। 8. छिन गई।

भाषरसी हरराजोत नुं रावळ हरराज जीवतां हुई। सु संमत १६३३ तांई रही। भाषरसी एकवार पोहोकरण नुं गयौ पिण हाथ नाई। पाछै संमत १६३३ रै टांणै भाभा नै माः भोजु पोहकरण रावळ हरराज रै आडांणी घाती[1], नै संमत १६३५ राजा रायसिंघ नुं फळोधी हुई सु संमत १७७२ तांई रही। परगनो निपट रस आयौ। बडी बार बुही। रायसिंघ रै केईक दिन फळौधी राठौड़ मालदे बणबीरोत कांधल नु पटै दी थी। कोईक दिन मूतै करमचंद संगावत[1] नुं पटै हुई। घणी बसी, सोघो आये रहीयौ।

६. संमत १६७२ राजा श्री सुरजसिंघ नुं हुई, रू. ६७५००) माहे। मुहतै जैमल नुं हाकम कर मैलीयौ। चौः सिषरौ थांणैदार कर मेलीयौ थौ। पछै एक बार संमत १६७४ आप था पातसाहजी बीकानेर रै राव श्री सूरजसिंघजी नुं दीवी। उण रा काः भागचंद करमचंदोत कीलांणदास अमल करण नुं आया[4] नै बांसा था कांई राजाजी रै मन में आई, कंवर गजसिंघ नुं लिष मेलो, मुः जैमल नुं लिषीयौ—जु फळोधी माहै जनम भोम छै।[4] म्हनै ही दो[2] पातसाहजी सुं अरज करसां थे अमल मत दो। तरै कंवर गजसिंघ उमराव ४ जाय जोधपुर मेलीया। राः जैतसिंह राजावत आसकरण मांनसिंघोत सौः जगनाथ जसवंतोत राः सूजा मांडणोत नै जैमल नुं लीषयौ थौ—अमल मत देजौ। तरै पैली कांनो था उणां रौ साथ आदी भेळू ऊतरीयौ। कोस २ रौ बीच थौ।[5] बीच आदमी करीया।[6] बीकानेरीया फिर गया।[7] बांसा था राजा श्री सूरजसिंघजी पातसाहजी था अरज कर फरमांण कराय मेलीया। पछै राजा गजसिंघजी माहाराजा श्री जसवंतसिंघ नुं बरकरार रही, संमत १७०३ सुधी।

१०. फलोधी बेढ तरै[3] हुई संमत १६८० साल पछै संबत १६८० रा

---

१. सांगावत। २. म्हे नहीं दां। ३. इतरी।

---

1. रहन रखी। 2. खूब आमदनी हुई। 3. अपने राज्याधिकार का विधिवत दस्तूर करने आये। 4. जन्मभूमि है। 5. दो कोस का फासला था। 6. बातचीत के लिए आदमी भेजे गए। 7. लौट गये।

आसोज[१] बद ११ सोम राः अचळदास बीकामाईतोत नुं सावड़ा ऊदैसंघ राव बीकुंपुरीया अरजन रै बैर ऊपर आया, तठै कांम आया।

११. १६६० चैत्र बद १२ भाः अचळदास सुरतांणोत भाः सकतसिंघ षेतसीयोत नुं बलोच मुगलषांन सरोही मारी।[1]

१२. १६६३ आसोज बद ६ समीयांणी हैदरअली कुंडल मारीयौ। घणौ वित लूटीयौ नै मादौ[२] फतैअली आसोज बद ६ चांषु घंटीयाळी मारी। राः हरराज रांणोत नै ईसरदास रांमसिंघोत कांम आया।[3]

१३. संमत १६६४ रा पोस सुद ८ रावळ मनोहरदास मुः नैणसी बीकुंपुरीयां रै भारमलसर परै कोस ६ बलोच मुगलषां नुं मारीयौ।

१४. संमत १६६५ माहा सुद ७ बलोच मदौ फतैअली फळोधी ऊपर मांणस ७५० सुं आया। मुः नैणसी सुंदरदास सांमो गया। बलोच भागा, कोस १० वांसौ कीयौ।[2]

१५. संमत १७१५ असाढ वद ८ भाटीयां रौ कटक आयौ। रांणीसर ऊतरीयौ। भाः रांमसिंघ पंचाईणोत बिहारीदास दयाळदासोत आदमी.........था। तद श्री माहाराजाजी रा चाकर सिंघवी जैतमाल था, कांनो हाकम था, राः गोईंददास गोपाळदासोत सु थांणैदार था। सु जैतमाल तौ कोट जड़ बैस रहीया[3] नै धाः कांनो राः गोईंददास दहूरै[4] बैठा रहा। तिणे कर गांव भेळीयौ नहीं।[5] पछै रात १ रह नै परा गया। पाषती रा गांव लूटीया।

१६. **फलोधी री हकोकत**

कोट लांबो हाथ २३८ ईस[6] नै, हाथ १२२ उपळै।[7] बुरज १६ कीरड़ी[४] हाथ ६, ऊंचौ हाथ २१ आयौ। टांची[५] बंध आयै, बावड़ी १, पांणी मीठौ, बारा ७१[६] रेजवांणी बावड़ी तळाव १।

---

१. पोस। २. मदो। ३. संमत १६६४ काती सुद सुक्र भाटी जसवंत सुरजमलोत नुं मुदफखां.........मारीयौ। ४. फिरणी। ५. टांकी। ६. ११।

---

1. जीती। 2. पीछा किया। 3. कोट बन्द करके बैठ गया। 4. मंदिर के पास। 5. गांव में घुस कर लूट-पाट नहीं की। 6. लंबाई। 7. चौड़ाई।

बसती

२४२ महाजन	२०१ बांभण पोकरणा	१८ भोजग
१२१ ग्रोसवाळ	११ दरजी	१५ माळी
१२१ महेसरी	५ छींपा	२१ सुनार
२१ रजपूत	२ तेली	४ कुंभार
४ डूम	७ नाचणा	५१ सीपाई
२१ ढेढ	२ थोरी	११ नाई

६५७[१]

इतरै कोसे ग्रा ठौड़—

३५ जोधपुर ६० मेड़ती ४५ जैसळमेर ८४ देरावर
२४ बीकुपुर ४८ बेरसलपुर[२] ४५ बीकानेर ।

१७. फलोधी रो सींव[1]

१ पूरब नुं – जोधपुर था सींव कांकड़ लागै—
सांवड़ाऊ चीराई । चाडी ग्राऊ ।
रूपसर राढीयो, ग्रजासर ईसरू[३] ।

१ पछम नुं – केलणां री षरड़ वावड़ी सेषसर नै बहगटी सोवरज कुंढल ग्रंतरीस[४] छै ।

१ दीषण – दहीया कोहर कुसलवैं वरणाऊ चामु ।

१ उत्तर नुं – घटीयाळी भेळु बीकानेर था ।

१ रीतहड़ – बाप कीरषैडरी वा सींव पुड़ीयाल सीरड़ सींव ।

१ षरक – पोहकरण बारै घोड़ाकंपी[५] ।

१. जोड़ ठीक नहीं है तथा 'ख' प्रति से भिन्नता भी है । २. बरसलपुर । ३. नवसर (अधिक) । ४. ग्रंतरगढ़ । ५. कंधी ।

1. सीमा ।

१८. सालीनो[1] फळोधी रौ षालसा रौ—

संमत	१७०३	३३५६)	संमत	१७१०	५१२१)
,,	१७०४	३७४३)	,,	१७११	६२६८)
,,	१७०५	७७१६)	,,	१७१२	६३३३)
,,	१७०६	३४५०)	,,	१७१३	६६६८)
,,	१७०७	५१२२)	,,	१७१४	६६०२)
,,	१७०८	५६७१)	,,	१७१५	१४७५४)
,,	१७०९	६०७५)	,,	१७१६	१६६२५)
			,,	१७१७	

१९. परगनो सिगळो षालसो जागीरदार सांसण कुल ठीक—

संमत	१७११	१७६२४)	संमत	१७१६	३७८८२)[1]
,,	१७१२	२३४६५)	,,	१७१७	५२२६६)
,,	१७१३	२३६१३)	,,	१७१८	७१२०३)
,,	१७१४	१६८१५)	,,	१७१९	३४४००)
,,	१७१५	३६२०)	,,	१७२०	१२११६)

२०. परगनै फळोधी री फिरसत गांव ६७ लागै पातसाही तरफ। दांम २७०००००, रु० ६७५००) मैं पाई इण ऊपर पइसो बाधीयो को नहीं। राजा श्री सुरजसिंघजी राजा गजसिंघजी नुं इण होज रेष माहे औ परगनो हुवै।

विगत

१ कसबो फळोधी लोग महाजन सगळी पवन जात, बडौ भलौ कसबौ।

२१. ९ जाटां रा गांव षुलास[2]—

१ आहू　१ आंबलो　१ दहणोष　१ घटीयाळी
१ बाणासर　१ राढीयो　१ नेषेड़ा आहू री
१ भेड़, जाटां रौ षेड़ौ, के पलीवाळ बसै।　१ चीमणावो

---

१. ३७८४२)।

---

1. वार्षिक आय। 2. पूर्णरूपेण।

२२. १३ बिसनोइयां रा षेड़ा षुलासा गांव—

१ भींवासर १ धवळसर १ भोजासर
१ मोटेही १ जेसला १ पड़ीयाल
१ बरजांगसर १ रिणीसर १ राता रौ तळाव
१ जेह री तळाई १ नोषेड़ो जेसलां रौ
१ मुजासर १ नोषेड़ो भोजासर रौ।

२३. ८ जाट बिसनोई भेळा बेहू बसै[1]—

१ चाषु १ पल्ही[1] १ लोहीयावट १ केलणसर
१ सांवड़ाउ १ पलीणो[2] १ नीनेउ १ मोदवो[3]

२४. १० पलीवाळां रा गांव—

१ साबरीज १ जालीवाड़ौ १ मुषेरी[4]
१ दहोया कोहर १ हुपाळी[5] १ छीला
१ गोधणली १ वरणाउ[6] १ नबेरी
१ मेहा कोहर कस़बै रौ।

२५. ८ रजपूतां रा गांव—

१ उलढां[7] १ कांनासर १ मेहा कोहर
१ लूणा १ लुंभासर १ मीठड़ीयो
१ ढढरवाळौ १ षीचवंद

२६. १० सूना षेड़ा—

१ गाधी गोधणली रा बांभण षेत पाही षड़ै।
१ जीभलाव[8] बाप रा बांभण षेत षड़ै।
१ केरलो बरजांगसर मांजरै।
१ तेजाभषरी आंबला में मांजरै।

---

१. पली। २. पलांणो। ३. मोरेवी। ४. मोखेरी। ५. होपाली। ६. वारणाऊ। ७. ऊलटा। ८. जानेलाव।

---

1. दोनों शामिल बसते हैं।

१ सुकनो षेड़ो जेसळमेर[1] में मांजरै ।
१ समदड़ौ दड़ीयो[2] ।
१ दीगावड़ी[3] वाप रा बांभण षेत षड़ै ।
१ बालसर भींवासर[4] बिसनोई षड़ै ।
१ सोढां कोहर सूनौ सोरढ नजीक छै ।
१ षारीयौ जगहथीयौ सूनौ पड़ीयौ छै ।

१०

२७. ६ सांसण

१ सांवणघी — १ ढीलंणो[5] लेडा नु २ बावड़ी प्रोहतां नुं ।
२ षीचवंद — १ सीह बांभणां नुं । १ थांनका नुं ।
२ बांह गढी हरभूजी रा पोतरा भोपत वास २ ।
१ काळु पाबूजी[1] रा भोपां[2] नुं ।

६

६८

२८. परगने फळोधी री फिरसत साल ५ संमत १७१५ था संमत १७१६ सुधी ।

१ कसबो फळोधी

भलौ कसबो माहजन बांभण माळी सगळी पवन जात बसै । बरसाळी षेत बुडल री सरौ रा बड़ा षेत जुवार रा बीजा कंवळा, मोठ बाजरी । ऊनाळी नहीं । बाहळौ[3] कोट नीचै बहै । तिण में बेरा ३०० तथा ४०० आषारीयासा[4] तठै गांव पीवै । भाजी तरकारी हुवै, पांणी हाथ १० मीठौ[5] छै ।

१. जेसलां में । २. मसदड़, ईडीयो । ३. देगावड़ी । ४. रा (अधिक) । ५. ढेलांणो ।

1. पाबूजी धांधल—प्रसिद्ध लोक-देवता । 2. पाबूजी की गाथा गाने वाले—भील आदि । 3. नाला । 4. साधारण पानी वाले । 5. दस हाथ की गहराई पर मीठा पानी है ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६७७)	३०४०)	२७३०)	६१०१)	३६१५)

१ लोहावट बास २

कसबा था कोस ८ तळाव मास ८ पांणो रहै। षेत कंवळा निपट सषरा। धरती हळवा ५०० तथा ७०० निपट घणी। जाट बिसनोई बसै, बड़ौ गांव। कोहर २ पुरस ६० पांणो घणौ मीठौ। कोहर ४ बीजा बुरीया छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२६६)	२५३९)	५८६०)	४४०७)	२१६०)

१ नीनाउ[1]

कसबा था कोस ४ ऊतर नुं बिसनोई बसै। कोहर १ पुरस १६ मीठौ। घणा षेत थळी रा सषरा हळवा २००। तळाव १ पांणी मास ४ रहै। बिसनोई पलीवाळ बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४१)	३५०)	४५३)	९८१)	५७५)

१ देहोया कोहर

फळोधो था कोस ८ दीषण माहे। षेत कंवळा सषरा इलया धरती १२५ षाड़ा षेत कपास तली बड़ी नैपै, तळाई १ मास ४ पांणी रहै, कोहर पुरस २५ पांणी। लोग बांभण पलीवाळ मुसला बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	३५०)	४१४)	७१९)	३३८)

१ भेड़

कसबा था कोस...धरती हळबा १५० । षेत कंवळा तळाई १ ठलीयाळी[2] ता कोस ।। पांणी मास ६ रहै, कौहर सागरी[1] पुरस ४० पांणी

१. नीनेऊ। २. डालेळाई।

1. एकसी गोलाई वाला बहुत प्राचीन कुआ —किंवदंती के अनुसार इस प्रकार के कुओं को राजा सगर के पुत्रों द्वारा खोदा हुआ माना है।

मीठौ घणौ । जाट बिसनोई पलीवाळ बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५७)	४७५)	१०७१)	११६१)	४७०)

१ जाळवाडी[१]

कसबा था कोस ५ दिषण मैं । षेत कंवळा थळ रा । बड़ो नेपै रा षेत[1] । धरती हळवा ३०० कपास तिलां बडौ नेपै । तळाव १ रषासर मास ८ पांणी रहै । कोहर १ पुरस[2] ६० मीठौ, सागरी । बास २–
१ पलीवाळ । १ बीजो ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५६)	१३४६)	२८७६)	३३४७)	१०९२)

१ पालड़ी बास २

फळोधी था कोस १२ रैत बिसनोई मुसला बसै । षेत कंवळा निपट सषरा । धरती हळवा ४०० । तळाव ४ मास ४ पांणी रहै । कोहर १ पुरस ७० पांणी घणो मीठौ, गाय ५००[२] पोवै भलौ गांव ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५८)	२२१२)	३३९०)	४३६५)	१९२२)

१ दइणोक[३] बास २ ३०००)

फळोधी था कोस ११ बरसाळी षेत कंवळा सषरा धरतो हळवा ४०००[४] । जाट बांणीया बसै । तळाव मास ८ पांणी रहै । कोहर १ पुरस ५१ पांणी मीठौ घणो ।

बसराल

१ बडौवास जाट बसै । १ लेहूबी[५] रौ बास जुदा ।

---

१. जालीवाड़ी । २. १५०० । ३. देहणोक । ४. ४०० । ५. लहूवां ।

---

1. बहुत अच्छी उपज वाले खेत । 2. तीन हाथ की लम्बाई एक पुरस के बराबर मानी जाती है ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५०) २५००) ४२९५) ३००१) १५२८)

१ घटीयाळी ३०००)

कसबा था कोस १६ बड़ौ गांव, षेत कंवळा सषरा हळवां ५००। जाट रजपूत बसै। कोहर ५ पांणी मीठौ घणौं सषरौ। बीकानेर रौ कांकड़।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१११) १४२५) २५०६) १९६२) ११५९)

१ सांवड़ाऊ

कसबा था कोस १३ भैरहर में। षेत कंवळा धरती हळवा ३००। कोहर २ पुरस ५० पांणी घणौ मीठौ। लोक जाट बिसनोई बांणीया मुसला बसै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
९२) ७२५) ८७९) १२१५)[1] ७६३)

१ बारणाउ

कसबा था कोस १५[2] भेरहर कूण में। षेत कंवळा थळ रा धरती हळवा १००। कोहर १ पुरस ३५ पांणी मीठौ सागरी। लोग जाट पलीवाळ बसै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१६) ५००) ९३२) १४३४) ६३०)

१ सावरीज ४०००)

कसबा था कोस ७ षरक में। धरती हळवा ४०० तथा ५००। षेत थळी रा कंवळा, बाजरी मोठ तिल कपास री बड़ी नैपै। तळाव ४ पलीवाळां बांभणां रा बणाया। ऊपरै छत्री छै। मास ६ पांणी रहै कोहर ६ पांणी भळभळौ पुरसे २५। घणौ लोग पलीवाळ घर १५० बसै।

---

१. १२२५)। २. कोस १।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२) ५९०) ११३३) २२१६) ५५६)

१ हौपाली

कसबा था कोस ४। षेत कंवळा सषरा धरती हळवा १००, षेत कपास री बड़ी नैपै। तळाई १ बांभण होपाल री षुणाई[1]। मास ८ पांणी रहै। पछै कोहर नहीं। लोग पलीवाळ घर ५० तथा ६० बसै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
७०)[1] ५५५) १४४३) ३७५) ०

१ मोषेरी ७००)

फळोधी था कोस २॥ दिषण मैं। धरती हळवा १००। षेत सषरा, बाजरी मोठ तिल कपास री बड़ी नैपै छै। तळाई मास ८ पांणी रहै। कोहर १ पुरस ५० पांणी मीठौ थोड़ौ रहै। गा० ४०० तथा ५०० पीवै। लोक बांभण पलीवाळ बसै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
६॥) ५००) ३९७) ४१०) ४४८)

१ आऊ ३०००)

फळोधी था कोस १५ ऊगण में। धरती हळवा ४००। थळी रा बडा षेत। बाजरी मोठ कपास तिल री बड़ी नैपै छै। तळाई १ मास ४ पांणी रहै। कोहर २, पुरस ५० पांणी मीठौ। थोड़ो लोग जाट घर ८१, बीजा लोग बांणीया[2] नै रजपूत बसै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४०)[3] २७९९) २७५०) ४२१५) १२४७)

१ भींवासर २५००)

---

१. ६) तथा ५००)। २. ९ घर। ३. १४७)।

---

1. खुदवाई हुई।

फळोधी था कोस १३ ईसांन में। धरती हळवा ३००। षेत कंवळा थळी रा सषरा। तळाई मास ४ पांणी रहै। कोहर भींवासर लहूवै भींवा रौ षीणायौ। पुरस ४८ पांणी मीठौ। घणौ लोग बिसनोई घर ८० बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१९०)	१७००)	२२५७)	३५३१)	१०१५)

१ पलोणो

कसबा था कोस ७। धरती हळवा १०० षेत कंवळा अजाईवी तळाव १, मास ४ पांणी रहै। कोहर १ पुरस ४८ मीठौ, गाय ८०० पीवै। लोक जाट विसनोई मुसला[1] वसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३)	६३०)	८१८)	५५२)	५६१)

१ आंबलो[1]

कसबा था कोस ५। धरती हळवा १००। षेत थळी रा सषरा। तळाव नहीं। कोहर १ पुरस ४१ पांणी मीठौ, गाय ८०० पीवै। लोक जाट रजपूत बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४३)	६५०)	८८२)	८८१)	४२७)

१ चाषु

फळोधी था कोस १७ षेत कंवळा थळी रा। तळाई १ मास ४ पांणी। कोहर ४, पुरस ४५ पांणो मीठौ घणौ। रजपूत जाट बिसनोई बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
११७)	५८८)	२०१)	७९९)	३९०)[2]

---

१. ग्रास २। २. ३३०)।

---

1. मुसलमान।

१ वरजांगसर १५००)

कसबा था कोस १[1] ऊगवण माहे। षेत कंवळा थळी रा सषरा। धरती हळवा १००, तळाव १ मास ४ पांणी। कोहर १ पुरस ४६ पांणी मीठौ, गायां ८०० पीवै। सह कोई बीसनोई मुसला बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३९)	५२५)	१३००)	७५९)	५३०)

१ भोजासर

फळोधी था कोस १४ ईसांन में। षेत कंवळा थळी रा सषरा। धरती हळवा १००। तळाव १ मास ४ पांणी रहै। कोहर १ भोजासर पुरस ५१ पांणी घणौ मीठौ। लोक बिसनोई बांणीया मुसला बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६३)	१३५०)	१५३२)	१८५३)	६८२)

१ मुजासर

कसबा था कोस ८ भरहर में। षेत सषरा कंवळा थळी रा। तळाई १ पांणी रहै। कोहर १ पुरस ५१ पांणी घणौ मीठौ। लोक बिसनोई घर ६१ रजपूत बसै। बसी रा घर २०।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५८)	९००)	१३३१)	१७४५)	८०१)

१ वणासर

कसबा था कोस ५। धरतो हळवा ५० षेत कंवळा सषरा। तळाई १ मास ४ पांणी रहै। कोहर १ पुरस ४५ पांणी मीठौ। गायां ४०० पीवै। लोग जाट घर ३० बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४)	४८४)	९०५)	८४७)	३८९)

१ चोमणवो

कसबा था कोस २० ईसांन में। षेत थळी रा हळवा २००।

---

१. कोस ११।

तळाई २, मास ३ पांणी रहै। कोहर २ पुरस ४६ पांणी मीठौ। गायां ४०० पीवै। जाट रजपूत बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८)	४००)	२२३)	४१२)	३८२)

१ धवळासर

कसबा था कोस ५ उत्तर नुं। षेत थळी रा धरती हळवा ६०। तळाव १ मास ४ पांणी। कोहर १ पुरस ६० पांणी मीठौ। बिसनोई बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	४२५)	३४२)	६०३)	४३८)

१ मोटेही

कसबा था कोस ६ खेत कंवळा थळी रा धरती हळवा १००। नाडी १ पांणी मास ४ हुवै। कोहर १ पुरस २१ पांणी षारौ थोड़ौ। भींवासर मैड़ीयाळ[1] पीवै। लोग बिसनोई बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	२८२)	३५१)	७०२)	२२४)

१ केलणसर ११००)

फळोधी था कोस २० षेत कंवळा थळी रा हळवा १००। कोहर १ पुरस ४८ पांणो मीठौ। गायां ४०० पीवै। बसती घर २५ जाट बसै, घर ६० रजपूत जागीरदार री बसी रा।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४)	५२५)	१३३२)	११००)	५५२)

१ नोषड़ा जेसलां रौ

फळोधी था कोस २०। धरती हळवा ६० षेत थळी रा अजायब कोहर १ आदु षेड़ौ[1] छै। पांणी नहीं, तरै कोहर १ जैसलां रौ मु०

१. पड़ीयाल।

I. बहुत प्राचीन।

जगनाथ बड़ा नुं दीयौ । बसतो बिसनोई बसै घर २५ तथा ३० ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	६२५)[1]	७५८)	६६०)	२३०)

१ जेसला १५००)

फळोधी था कोस २०, षेत कंवळा सषरा थळी रा । कोहर पुरस ४० मीठौ थौ । कोहर १ जेसलां बांसे नै कोहर १ षेड़ा बांसै छै । मु० जगनाथ घातीयौ[1] । बसती बिसनोई घर ५० बसै घर १५ रजपूत बसी रा बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४)	९२१)	१३०७)	११७४)	६१९)

१ षेड़ो भोजासर रौ

कसबा था कोस १४ । धरती हळवा ६० षेत कंवळा थळी रा । कोहर १ आदु षेड़ो थौ सु बुरांणो, पांणी नहीं तरै । भोजासर रै कोहर पीवै । बिसनोई घर २० बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	६६२)	[2]	४४२)	१८५)

१ रीणीसर

कसबा था कोस ११ । षेत थळी रा हळवा ५० । कोहर १ पुरस ४८ पांणी मीठौ । गायां ३०० पीवै । नाडी १ मास ४ पांणी रहै । बसती घर २० तथा २५ बिसनोई बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८)	२६२)	२९७)	४६१)	२७१)

१ जेहांरी तळाई

फळोधी था कोस १३ । धरती हळवा ५१ षेत कंवळा सषरा

---

१. २६५) । २. ३४६) संवत १७१७ ।

---

1. मुहता जगनाथ ने निश्चय किया था ।

थळी रा। कोहर नहीं। तळाई १ जेहरी कहीजै तठै मास ४ पांणी रहै, पछै मुजासर पीवै। लोग बिसनोई घर २० बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६)	४७०)	८३३)	६३२)	७८)

१ षीचवंद

कसबा था कोस १॥, षेत थळी रा रूड़ा[1] भला हळवा ६०। तळाव ४[1] पांणी रहै। बेरा २० पार में छै, नदी मैं, तठै हाथ ५ तथा ७ पांणी अषारीया[2] तठै पीवै। रजपूत घर ४० सोमांरा बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७१)	८१)	७१)	१५१)	१०१)

१ नोषड़ो आहू रौ

फळोधी था कोस १५। धरती हळवा ६० षेत कंवळा सषरा। आदु षेड़ौ थौ सु पण कोहर नहीं सु कितरा लोग आहु भेळा हीज आई बसीया। आहू रै कोहर १ मांहे हेंसो १ छै तीण, जाट बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२९)	४५६)	३८७)	५०८)	२३७)

१ गोधणली

कसबा था कोस २ उत्तर में। षेत हळवा ७० रूड़ा भला। कोहर नहीं। तळाव १ मास ८ पांणी रहै। पछै कसबै री नदी बेरीयां पीवै। पलीवाळ बसै। लूण रा आगर २०० बेरा छै। लूण निपट सषरौ[3] हुवै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	४।)	१३०)	८१)	८४१)	१९९)

---

१. मास (अधिक)।

---

1. अच्छे। 2. एक अखारी २०० चरस पानी निकालने की मानी जाती है। प्रायः कुए में अधिक पानी न होने के कारण एक अखारी निकालने के बाद कुछ समय के लिए ठहरना पड़ता है ताकि तब तक कुए में फिर पानी शामिल हो जाय। 3. बहुत अच्छा।

१ गांव ढाढरवाळो

कसबा था कोस १ भरहर माहे । षेत हळवा ५० कंवळा थळी रा सषरा। तळाव नहीं। कोहर १ पुरस ४७ मीठौ पांणी। गायां ३०० पीवै। बसती घर १० जाट २५ रजपूत लहुवा मेघा सीवराजोत री बसी रा बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	१२०)	७२)	३०१)	९६)

१ लुंभासर

कसबा था कोस २०। धरती हळवा ६०। कोहर १ काचो विण बांधीयौ[1] षाड[2]। गायां ४० पीवै। पांणी षारौ। कोहर १ संवत १७१७ गांव लुणां रै दीयौ पुरस ५२ गायां ४००० पीवै। पांणी षारौ बसीवांन लोग कोई नहीं। जागीरदार नुं पटै हुवै जिकै बसै। हमें रा० भगवान करमचंदोत[1] नुं पटै सु बसै[2]।

१ लुणो

फळोधी था कोस २० उत्तर में। धरती हळवा १०० षेत रूड़ा थळी रा। कोहर २ छै तिण में कोहर १ लुंणो लुंभासरीये नुं संमत १७१७ दीयौ, नै कोहर १ घीघालीयो पांणौ भळभळो, पुरस ४५ गायां ४०० पीवै। वसीवांन लोग नहीं। जागीरदार री बसी रहै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३७)[3]	२००)	५०)	२०१)	१६०)

१ मीठीयो[4]

कोस २०, धरती हळवा ६० षेत सषरा थळी रा। तळाव नहीं।

---

१. रूपावत (अधिक)। २. संवत १७१५ १६ १७ १८ १९ पांच वर्ष की आमदनी 'ख' प्रति में— १०) १५०) १५०) २०१) १४७) ३. ३)। ४. मीठड़ीयो।

---

1. पत्थर आदि से पक्का बंधा हुआ नहीं। 2. गड्ढा।

कोहर २ पुरस ४५ पांणी षारौ, गाय ४०० पीवै। बसीवांन लोग नहीं। जिणनुं पटै हुवै जिण री बसी रा लोग रजपूत बसै। रा० रामचंद भगवांनदासोत री बसी रा घर १५ बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	४०)	२०)	५१)	४०)

२८. सूना गाँव[1]

१ घाघरि २००)

कसबा था कोस १॥ षेड़ौ सूनौ। धरती हळवा ६० षेत सषरा। षेत ४ गेहूं काठा हुवै। संमत १६७२ गांव सूनौ हुवौ। वसीवान लोग कोई नहीं। गोधणली रा बांभण षेत षड़ै। पहली कदीम जगमाल मालावत रौ पोतरौ बसता। तिके गाधरीया कहीजै। कोहर तळाव नहीं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	११०)	७०)	१७०)	३५)

१ जांभळावो[2] १५००)

कसबा था कोस ८ उतर नुं। धरती हळवा २०० बड़ा षेत। तळाव १ जांभेळाव बिसनोई रौ करायो मास ८ पांणी रहै। वसीवान लोक नहीं। गांव नीनेउ वाप बीजा ही गांवां रा लोक षेत षड़ै बरसाळी[1]। बसती तळाव ऊपर लोक रहै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३७)	६५०)	६२५)	३०६०)	६७५)

१ षारीयौ जगहथ रौ

कसबा था कोस १७। धरती हळवा ४० संमत १६७० सूनौ हुवौ, तिण पछै षेड़ौ कदेई[2] बसीयौ नहीं। षेत घटीयाळी रा लोग षड़ै।

---

१. 'ख' प्रति में यह शीर्षक यहाँ है। २. जांभेळाव।

---

1. वर्षा ऋतु में। 2. कभी भी।

कोहर १ पांणी षारौ पुरस ४५। बूरीयौ पड़ीयो छै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	४०)	१५)	०	०

१ सुकनो षेड़ौ

रसबा था कोस २१। षेड़ौ जुदौ नहीं, धरती हळवा ४० षेत छै सु जेसळा में षड़ीजै छै, कोहर एक छै सु सूकौ पड़ीयौ छै बूरांणौ। जैसण में मांजरौ जुदो नहीं, षेड़ै री षबर नहीं। कोहर सुकोनोषेड़ौ कहीजै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	३६२)	२८०)	४४२)	१५१)

१ केरलो

कसबा था कोस १३। सूनौ षेड़ौ, वरजांगसर में मांजरौ। धरती हळवा २५। वरजांगसर रा लोग षड़ै। षेड़ौ कदै जुदो[1] बसीयो नहीं। संमत १६८० जुदौ पटै हुवौ थौ। कोहर नहीं बेरी नहीं। षेड़ै री षबर नहीं। संमत १७१६ जुदौ कियौ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०)	३८०)	१००)	२००)	५८)

१ राता रौ तळाव

फळोधी था कोस १४। धरती हळवा ४० षेत थळी रा कंवळा। कोहर नहीं। तळाव मास ५ पांणी रहै पीवै पछै रांणीसर मांहे तीण[2] १ तठै पीवै। बसती घर १५ ता २० बिसनोई बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६)	१००)	६१७)	४६१)[1]	२७१)[2]

१. ४५२)। २. १७४)।

1. अलग से। 2. समयानुसार निश्चित पानी निकालने की हिस्सेदारी, पानी की कमी के कारण कुओं से पानी लेने की सुविधा के लिए इस प्रकार की व्यवस्था होती है।

१ छीलां

फळोधी था कोस ४। षेत कंवळा सषरा धरती हळवा ७१। कोहर नहीं। तळाई १ मास ५ पांणी रहै। पछै षीचवंद जालीवाड़ौ पीवै; हमैं संमत १७१६ कोहर नवौ षिणायौ। पलीवाळ बांभण घर ४० बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	५७२)	६८०)	८७०)	३५७)

१ नबेरी

फळोधी था कोस ३ पछम माहे। धरती हळवा ६० षेत सषरा। कोहर नहीं। तळाव १, मास ८ पांणी रहै छै। कसबै फळोधी नदी माहे बेरी पीवै। बसती घर २५ पलीवाळ, घर १५ मुसला बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३।।)	२८०)	१२१)	७१६)	६४)

१ राढीयौ

फळोधी था कोस १४। षेत कंवळा सषरा धरती हळवा ६० कोहर नहीं। तळाब १ मास ४ पांणी। पछै नवासर रौ कोहर मैं तीवण १ छै तठै पीवै। जाट बिसनोई घर २५ तथा ३० बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४)	२७०)	१२०)	२८०)	७५)

१ ऊलटां १५००)

कसबा था कोस २० ऊत्तर नुं। षेत कंवळा थळी रा रूड़ा। बीकानेर री भेळु था कोस ३। कोहर ४ पुरस ४५ पांणी मीठौ घणौ। कोहर १ बूरीयौ पड़ीयौ छै। कोहर ३ बहै छै[1]। बसीवांन लोग कोई नहीं, जिण नुं पटै हुवै तिकौ बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५०)	२५	२५०)	२२५)	२४०)

1. चालू हालत में।

१ मेहाकोहर

कसबा था कोस २० ऊत्तर नुं बीकानेर रौ कांकड़। धरती हळवा १०० षेत थळी रा। कोहर २, पुरस ५० पांणी षारौ। वसीवांन लोग को नहीं। जागीरदार भा० दुरगदास केसोदासोत रो बसी रा घर, रजपूत घर ५० बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	६१)	७७)	२०१)	१५४)

१ पड़ीयाल ३०००)

फळोधी था कोस ११, धरती हळवा २०। षेत कंवळा सषरा। तळाई ४ तथा ५ पांणी मास ४ पीवै। पछै कोहर २ पांणी मीठौ। कोहर १ दुदासर पांणी थोड़ौ गायां ३०० पीवै। आगै पहली कहै छै नाळ[1] १०० थी सु बूरी पड़ी छै। जाट बिसनोई बसै।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	७२)	१९८०)	१८२५)	२७५७)	९३६)

मोखौ ७००)[1]

कसबा था कोस ९। धरती हळवा ५० षेत सषरा। कोहर १ पुरस ४८ पांणी मीठौ, गायां ४०० पीवै। तळाई १ मास ४ पांणी रहै। बसती बिसनोई घर २० बसै बसीवांन।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२२)	२००)	५०८॥)	३०५)	२१२)

१ कांनुसर

कसबा था कोस ४। धरती हळवा ६० षेत रूड़ा। कोहर १ जेसगां रौ करायौ। पांणी थोड़ौ गायां २०० पीवै। इतरा दिन गांव सूनौ थौ संमत १७१६ बसीयौ, षालस मुसला घर १० तथा १२ बसै।

---

१. ५००)।

---

1. एक प्रकार का कुआ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३०)	६०)	३५)	२१)	२१)

१ देगावड़ी १५०)

कसबा था कोस ७ रेष १५० धरती हळवा १०० । षेत सषरा षेत ४ काठा गोहूं छै[1] । गांव घणा बरस हुवा सूनौ । वसीवांन लोग कोई नहीं । वाप रा बांभण षेत षड़ै । जिण नुं पटै तिका बसै । कोहर नहीं, जांभेळाव पीवै वीकुपर रा गांव वाप[1] नजीक ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	१३०)	१२०)	३०)	०)

१ सोढां कोहर २००)

कसबा था कोस १० । धरती हळवा ६० षेड़ौ घणा बरसां रौ सूनौ सीरहढ़[2] नजीक । कोहर १ छै सु भाटीये बूरीयौ थौ सु किणी ऊघाड़ौयौ[2] नहीं । पुरस ४० पांणी षारौ । घणा बरस हुवां सूनौ, जेसंधर राठौड़ रौ कदीम गांव । षेत पड़ीया रहै छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०	२०)	१०)	२०)	०

१ समदड़ौ ईड़ोयौ[3]

कसबा था कोस ७ । षेड़ौ सूनौं । धरती हळवा ४० । बसीवांन लोग कोई नहीं । बीकानेर दोसीड़ी रा लोग षेत षड़ै । जागीदार नुं पटै हुवै तिकौ बसै, तरै दासौड़ी रै कोहर पीवै । कोहर १ छै सु बूरीयौ पड़ीयौ छै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३)	२५)	२५)	४०)	०

---

१. थापण । २. सीरढ़ । ३. 'ख' प्रति में २०० रेख ।

---

1. गेहूं पैदा होते हैं। 2. वापिस खोदा नहीं।

१ बालासर

कसबा था कोस ··· भींबासर में मांजरै षेड़ौ । कोहर नहीं । षेत हळवा ६० छै सुं भींवासर बिसनोई षेत षड़ै । भींवासर था आथूण नुं छै । सदा भींवासर भेळौ कर षडीजतौ, संमत १७१६ जुदौ कीयौ ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	०)	३८०)	१००)	२००)	५८)

१ तेजा भाषरी

कसबा था कोस ४ । आंबला री सींव में, तेजा भाषरो रा षेत १० छै । षेड़ौ कदे बसीयौ नहीं[1] । षेत धरती हळवा १० आंबला में मांजरै । कोहर तळाव को नहीं । आंबला रा लोग षड़ै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	७०)	३५)	३१०)	१५)

२९. सांसण

१ सोवांणीयौ

फळोधी था कोस ६ उत्तर नुं । दत्त राजा रायसिंघ किलांणमलोत रौ चारण लाषा करमसीयोत कनीया नुं दीयौ । हिमैं नरौ चतरभुज रौ देवौ मेहाजळ रौ धनौ लाला रौ । हेस[2] ३ कनिया नुं छै । हेस १ रतनु गोवल मेहावत नुं छै । धरती हळबा २० । कोहर नहीं । तळाई १ मास ३ पांणी रहै । पछै जांभेळाव पीवै छै । मांगीयो पीवै[3] । घर २० चारणां रा बसै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	६२)	५०)	७५)	५०)

१ कोळू

फळोधी था कोस ७ दीषण नुं । दत्त राव गांगा रौ, धांधल भाषर

---

1. आबाद नहीं हुआ । 2. हिस्सा । 3. मांग कर पानी पीते हैं ।

सीहेड़ा रौ कीला चाचावत षाबूजी रा भोपा नु दीयौ। हिमें जगौ दूदा वत मरौ जैतमालोत छै। धरती हळवा १५०। तळाव १ पाबूसर मास ८ पांणी रहै। कोहर ३, पुरस २५ पांणी मीठौ घणौ। बास २ रजपूत बांणीया थोरी तुरक ढेढ बसै, बड़ी बसबी।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	२०)	१३०)	२१०)	३००)	२१०)

२ बावड़ी बास २

फळोधी था कोस ४ आथूण माहे। दत्त राव जोधैजी रौ प्रो० आसा देदावत नु। जात सीवड़ौ नु दीयौ, हमें बास २, भाई बेटा बास २ कर जुदा बसीया।

१ बास थाहारू आसावत रौ

रीड़ी[1] ऊपरै बसै। धरती हळवा ५० षेत सषरा। तळाव २ पांणी मास ४ रहै। तळाव १ आसा रौ कोस १ ऊपर, मास १० पांणी रहै। बेहू गांव पीवै। कोहर १ षाती धरमा रौ षुणायौ, पांणी षारौ। बावड़ी ६ आदु, कोस १ ऊगवण माहे पुरस ६ कुंडल रा वाहाळा मांहे। पांणी थोड़ौ, वरसाळी बाहाळा रा पांणी सुं भरीजै, हिमें थाहादु रा पोतरा सो तीकम रौ, सांईदास कीसनै रौ छै। घर २० ऊपत पैलै वास नंदु चंदु नर मडै छै।

१ वास बना आसावत रौ

वास भाषर रै षुणे[1] बसै। षेत सषरा थाहादु[2] रै बास नै इण बास पांवडा ४०० रौ बीच। सींव कौहर तळाव बावड़ी सह एक। हिमें जोगी बना रौ पोतरौ हेंस ३६ छै। घर ४० बांभण प्रोहतां रा छै।

संवत	७१५	१६	१७	१८	१९
	२५)	२१०)	१८०)	३९०)	५८०)

---

१. षुढै। २. थाहारू।

---

1. पठार, पहाड़ी।

२ वोहोगटो[१] बास २ ५००)

फळोधी था कोस ५ आथूण में। पोकरण था कोस १०। दत्त राव जोधा रौ सांषला हरभू पीर नुं दीयौ। हरभुम मेहरजोत पायौ। धरती हळवा २००। तळाव ४, मास ८ तथा १० पांणी रहै। कोहर नहीं। तळाव रौ पांणी षूटै[1] तरै पाषती[2] रै गांवां पांणी पीवै। गांव षेड़ौ पहली भेळो हीज थौ। सु भाई बंटै बांटीया तरै जुद-जुदा बसीया। विगत—

१ बास किसना झांझणोत रौ

झांझण पुंजा रौ पुंजौ चाहड़ हरभु रौ। हमें जीवौ षंगार छै। घर १००[२] सांषलां रा बीजा लोक बसै छै।

१ बास १ ईसर रायपाळोत रौ

वास छै राईपाळ सेवौ पुंजौ चाड़ौ[३] हरभु रौ। बसती घर ८० तथा ६० सांषला हरभु रा पोतरा बीजो[४], गांव सु मुदाइती सांपला छै। सरणो[५] सांरग रौ सारंग ईसर रौ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	११०)	१७०)	१८९)	१७०)

१ षीचवंध

फळोधी था कोस १॥ उत्तर माहे। दत्त राव हमीर नरावतरौ प्रो० हीला[६] काजावत रौ जात सीहा नुं दीयौ। धरती हळवा २५। कोहर बावड़ी नहीं। तळाब १ मास ६ पांणी रहै। वेरां सुं पार में हाथ ६ तथा ७ पांणी चाढौ षारौ। हमैं रांम गढावत छै। घर ७ तथा ८ बांभण सीहा आचारज रा छै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
८)	२५)	२७)	९०)	२७)

---

१. बांहगटी। २. घर १०। ३. चवड़ो। ४. बीजो लोग बसै। ५. ऊभरण। ६. टीला।

---

1. समाप्त होने पर। 2. आस पास के।

१ षीचवंद—थांनकां बांभण रा षेत रू० १०)

फळोधी था कोस २ ऊतर में। धरती हळवा ३० षेड़ौ सूनौ षेत षेड़ौ।

१ ढेलांणो

फळोधी था कोस ८ दीषण में। लौहीयावट था कोस १ भेड़ रौ वास कहीजै। दत्त राजा श्री उदैसिंघजी रा० सीवराज देईदास देव राजोत नुं दीयौ। धरती हळवा १५०, तळाव ३, मास ४ पांणी रहै। कोहर १ पुरसै ३० मीठौ[1]। हमें सिवराज रा बेटा ३—

१ भांनो　　१ नारण　　१ बरसल

जणा ३ एक जणौ कार कर फळोधी धांन पाईली १ पावै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)	१२०)	२८०)	२९५)	१८०)

९

३०. फळोधी रा सांसणां री विगत, दत्त दीया तिणरी—

जुमलो	बांभण	चारण	भोपा	लेड	रेष रू०	आसामी
४	२	०	२	०	१२००)	राव जोधा रिड़मलोत
१	०	०	१	०	५००)	राव गांगो वाघावत
२	२	०	०	०	१५०)	राव हमीर नरावत
१	०	०	०	१	४००)	कुंवर उदैसिंघ मालदेवोत
१	०	१	०	०	२००)	राजा रायसिंघ कील्याणसिंघोत
९	४	१	३	१	रू. २४५०)	

1. तीस पुरस (९० हाथ) की गहराई पर मीठा पानी है।

३१. विगत गांवां री—

४ राव जोधे रिड़मलोत रा

२	७००)	बांभण सेवड़ा प्रोहत २ बावड़ी रा वास
२	५००)	भोपा सांषला नुं २ बोहगुटी रा वास
४	१२००)	

१ कंवर उदैसिंघ मालदेवोत

१	४००)	लेड राठौड़ां नु १ ढेलांणीयो
१	४००)	

१ राव गांगो वाघावत

१	५००)	धांधळां नुं काळू श्री पाबुजी रा नुं
१	५००)	

२ राव हमीर नरावत सुजो जोधावत

२	१५०)	बांभणां नुं २ षीचवन्द रा बास—
१	१००)	सीहा रौ वास
१	५०)	थानकी रौ वास
२	१५०)	

१ राजा रायसिंघ कील्याणमलोत बीकानेरीयौ

१	२००)	चारण नुं हेंसा ५१ सोवणदी गांव ४ कनीया री हेंसा १ रतनुवां रौ हेंसौ।
१	२००)	
६		

फळोधी रा परगना सुं इतरा परगनां री सींव[1] लागै, विगत—

३२. १ जोधपुर रा गांवां सुं फळोधी रा गांवां रौ कांकड़ लागै—

सावरेज देछू रा गांव	दहीया कोहर सु सेत्रावा रा गांव
सींव—	सींव—
कोळु २	भोजां कोहर। पोलवो

1. सीमा।

बांभण १।। कुसलावो ३।

बारणांऊ।

देवराणीयो। चेराई।

चांमु।

सांवड़ाऊ।

चेराई। वीकुंकोर।

रता रौ तळाव।

बीहू नीबा रौ तळाब।

राढीयौ।

नोषड़ो जेसला रौ।

रिड़मलसर।

आहु[1]।

चाडी। ईसदु। रिड़मलसर।

भेड़।

ताठीयौ। नाथड़ाऊ।

पालो।

हरलाई। मतोडौ। नोसर।

देहणोष।

बेदु। मुडलोई।

भोजासर।

मुडेलाई। बेदु रौ वास।

केलणसर।

रोहण रौ।

जैसलां।

अजासर। रिड़मलसर।

३३. १ वीकूंपुर षरड़ केलुणा[2] री फळोधी रौ गांव कांकड़ लागै।

१ ऊलटां।

सीरढ।

देगाबडी।

वाप १। सीरड़ ४।

वाबड़ौ प्रोहत री सुं।

सेषासर २।

बेहुगटो।

आंत रा गुढौ २।

सोढां कोहर १।

सीरढ ३।

कीरड़ा।

षीरड़ौ[3]। षरडो १।

मेहाकोर।

वांदु नरहर रा षेत षरड़।

जांभेळाव।

सीरढ।

बीकानेर सुं फळोधी रा गांवां रौ कांकड़—

केलणसर।

सांईसर। भेलु।

ढांढरवाळ।

भेळु।

---

१. आऊ। २. केलणां। ३. षीरवो।

समदड़ो ।
दासोड़ी ।
मेहा कोहर ।
षीदासर । षारीया ।
१।। १।।
ऊलटा ।
षारीयो । कुडलीवा[1] ।
वींजै रौ तळाव ।

[[2]श्री महाराजाजी री धरती माहे लूण रा आगर[1] इतरा गांव हुवै छै तिण री विगत ।

पाइ तषत श्री जोधपुर रै देस रै गांवां–

१ गांव कापरडो
आगर २५ घर ३०

१ गांव कांकाणी
आगर १ घर १

१ गांव मोडी बांभण री
आगर १ घर १

१ गांव चवाधां धीया
आगर १ घर १

१ षासो बीलाड़ो
आगर ४० घर ४०

१ गांव दसोर
आगर ८ घर २०

१ गांव भावी
आगर ३ छै, बीलाड़ा रा षारोळ करै ।

१ गांव कळोऊनो
आगर ७ घर ७

---

१. कुंडलिया रो। २. 'ख' प्रति का अंश।

---

1. नमक के आगार, खानें कुए इत्यादि ।

१ गांव षारला
आगर २ घर २

१ गांव षारौ बेरौ
आगर १ घर १

१ गांव भाषरी
आगर २ घर २

१ गांव वौल
आगर ६ घर ६

१ घांघाणी
आगर १३ घर १५

१ गांव बाहाळौ
आगर ४ घर ६

१ गांव पंचीयाक
आगर ३ घर ४

१ गांव सांवळतो बडौ
आगर १५ घर २०

१ गांव हमावस
आगर ६ घर १२

३५. परगने मेड़ता रा गांव–

१ गांव पुनलतो
आमर ४ घर ४

१ गांव जावौ सीसोदीया
आगर ३ घर ३

१ गांव लबादर
आगर २ घर २

१ गांव षेरवो
आगर ४ घर ४

परगने जैतारण नहीं।

३६. परगने सोभत रा गांव–

१ गांव वडीयालो प्रोहतां रौ
आगर ४ घर ५०

१ गांव गोधेळाव
आगर १ घर १

१ गांव हासलपुर
आगर ४ घर ४

१ गांव धवले रा
आगर ३ घर ३

१ गांव षोषरो
आगर ३ घर ४

१ गांव सापो
आगर ४ घर ४

१ गांव मोकळावसणी
आगर २ घर २

१ गांव महेव
आगर ३ घर ४

१ गांव हरसीया ह्रेडो
आगर १३ घर १२

१ गांव चोपड़ो
आगर ७ घर ६

१ गांव सोभड़ावस
आगर २ घर २

१ गांव पीपला
आगर २ घर २

१ गांव धुहड़ीयावसणो

आगर ५ घर ६

१ सिणलो

आगर २ घर २।

३७. परगने सीवांणै—

१ गांव पचपदरौ

पांण ३०० तथा ३२५ छै । रिण कोस १२ माहे छै। तिण में षाड[1] पण राषै, पांणी था भरीजौ रहै। तिण में लूण कर नांखै मास ४ मुं तयार हुवै। आध लीजै[2]। घर ५० षरोळां रा छै।

३८. परगने फळोधी—

गांव गोधणीलां रै था कोस बीसेक मैं छै। तिण में बेरा षीठा नै पांणी क्यारीयां मैं आवै सु जमैं। षाड बेरा १०० छै। घर षारोळां रा ६० तथा ७० छै। हेंसो ३ लागै।

३९. परगने पोकरण—

रिण छै तिण में वेरा २० छै। तिण रौ पांणी क्यारियां भरै तिण रौ लूण हुवै। हेंसो ३ लीजै।]

---

1. गड्ढे। 2. आधा हिस्सा कर के रूप में लिया जाता है।

मारवाड़ रा परगनां री विगत

(५) वात परगने मेड़ते री

१. परगनौ मेड़तो आद सहर छै, राजा मानधाता रौ बसायौ, यूं सको कहै छै[1]। केहीक दिन युं पण सुणीयौ छै। राव कान्हड़दे रै घणी धरती हुती तद कहै छै एक बार कान्हड़दे रौ अमल हुवौ छै। तठा पछै घणा दिन आ ठौड़ षाली सूनी रही छै। सु अठै झाड़-झंगी घणी हुय रही थी।

२. पछै राव जोधौ मारवाड़ लीवी, संमत १५१५ जेठ सुदी ११ जोधपुर बासीयौ, तरै भायां बेटां नुं धरती देंण रौ विचार कीयौ, तरै सोनगरी चांपा षींवावत री बेटी तिण रै पेट रा राव जोधा रा बेटा २ बरसिंघ दूदो सगा भाई था तिणां नुं राव कहौ—म्है थांनु मेंड़तो दां छां, थे जाये बसौ। तरै इण कबूल कीयौ। इणनुं घोड़ौ सिर पाव दे सीष दीवी। अै आपरा गाडा लेनै चोकड़ी आण डेरौ कीयौ। चोकड़ी रौ भाषर देषण गया था, तिण समै रा० उदौ कान्हड़देओत जैतमाल नागौर था छोड गगड़ाणै' आंण गाडा छोडीया छै। रा० उदैसिंघ सिकार चारूं तरफ रमण पिण जायै नै धरती नै पिण सारी देषतौ फिरै। सु उदो कान्हड़देओत फिरतौ-फिरतौ आ ठौड़ मेड़ता री दीठी थी सु उदा नुं किणीहीक षबर कही—राव जोधै रा बेटा २ आण धरती बसण आया छै सु चौकड़ी रै पहाड़ गढ़ करावण रौ मतौ छै[2]। तळहटी सेहर बसावण रौ मन धरै छै[3]।

---

१. गगराणै।

---

1. सभी लोग कहते हैं। 2. विचार करते हैं। 3. मन में इच्छा करते हैं।

३. तरै रा० उदौ कान्हड़देग्रोत ग्राप चढ़ नै रा० बरसिंघ दूदा कन्है गयौ, दिन २ तथा ४ मुजरौ कीयौ । सैंधो हुवौ[1] । तरै रा० बरसिंघ जोधावत नुं कह्यौ—म्है सुणां छां राज ग्रा धरती बासण मतौ छै । कठै ह्वी ठौड़ बीचार छै ?[2] तरै बरसिंघ कह्यौ—मन तौ धरां छां । तरै उदै कहीयौ—राज कांई ठौड़ बिचारी छै । तरै बरसिंघ दूदौ ग्राय चढीया रा० उदा नु चोकड़ी रौ भाषर दीषाळीयौ[3] । तरै उदै नुं पूछीयौ—ग्रा ठौड़ किसड़ी छै ? तरै उदै कहीयौ—ठौड़ भली चंगी छै । ठौड़ १ म्हें सषरी[4] दीठी छै राज एक वेळा उठै पधारौ । रा० उदौ रा० बरसिंघ दूदै जोधावत नुं मेड़तौ सैहर बसै छै तठै ले ग्रायौ कुंडल बेजपो[१] तळाव ग्राद थौ[5] सु दीठा । पछै जठै हिमार मेड़ते कोटड़ी छै ग्रा ठौड़ दीठी । रा० बरसिंघ दुदा राजी हुवा । गाडा ग्रठै ग्रांण नै कोट री रांग[6] दीवी ।

४. रहण नुं इण ठौड़ ग्राया तरै कोटड़ी री ठौड़ दुय नाहर ऊभा छै, तिण माहै वडो नाहर छै, एक उण था छोटौ नाहर छै । सु वडो नाहर उठै गाजीयौ, ताड़ीयौ पछै उठा थी परौ गयौ[7] । नै छोटौ नाहर छै सु उठै गुफा थी तिण माहै बैठौ । तरै सांवणी[8] साथे हुतौ सु विण माथौ धूणीयौ[9] । तरै इण वेळा वरसिंघ दीठौ । कहीयौ थें केण ग्राटे माथौ धूणीयौ[10] । तरै ई वेळा दोय चार उजर कीयौ[11], पिण बरसिंघ हठ कर पूछीयौ । तरै सांवणी कह्यौ—सीवण[12] एकण भांतरौ हुवौ छै । तरै बरसिंघ कह्यौ—इएा सांवएा रौ कासुं विचर छै ? तरै सांवणी कह्यौ—राज जीवसो[13] तठा सुधी ग्रा ठौड़ राज भोगवसो तठा पछै ग्रा ठौड़ दुदा रौ पेट रहसी[14], रावळा बेटा पोतां नु ग्रा ठौड़ नहीं रहै ।

---

१. वेझपो ।

---

1. जान-पहिचान की । 2. किस स्थान पर बसने का विचार किया है । 3. दिखाया । 4. अच्छी; उपयुक्त । 5. पुराना बना हुआ था । 6. नींव । 7. ताड़ने पर वहां से चला गया । 8. शकुन का जानकार । 9. उसने सिर हिलाया । 10. किस लिये सिर हिलाया । 11. टालम-टोल की, मना किया । 12. शकुन । 13. आप जिन्दे रहोगे । 14. दूदा के वंशज यहां रहेंगे ।

तद दुदो बरसिंघ एक था, माहे जीव जुदा न था[1] तरै बरसिंघ कहौ–म्है दुदौ एक हीज छां । पछै इण कोटड़ी ठौड़ रांग कोटड़ी री भराई। राव बरसिंघ दुदै आ ठौड़ संमत १५१८ चैत्र सुदी ६ नुं हसत नषतर[१] कहै छै बासी[2] ।

५. रा० उदो कान्हड़देओत नुं पराधांन कीयौ । सारी मदार उदा रै माथै छै । तिण समै धरती सारी मेड़ता री उजड़ छै । सु रजपूत आवै छै सु बसता जाय छै । तिण समै नागौर सवाळष[3] दिसा डीगा[२] था राज देला रौ कठोती जायेल री रहौ थो उठै वैर पड़ीयौ[4] । तरै[३] घर[४] राज डंगो राव बरसिंघ दुदा कनै आयौ। कहौ–मोनुं आंणौ[5] तौ म्हे सारा षेड़ा बसावां । तरै थीर राज कहौ, तिण भांत दिलासा कीया छै। मेड़तै हीज पुराणा डांगावास री ठौड़ थोर राज नुं देस मुष चौधरी[6] सारा देस रौ कर बासीयौ । थीर राज सबळौ[7] आदमी थौ । पछै सवालष रा जाट दिलासा कर करनै आंण-आंण मेड़ता रा गांवां बसता गया । पछै मेड़ता रा सारा गांव बसीया, धरती आबा-दांन हुई ।

६. श्री फळोधी पारसनाथजी रौ देहूरौ संमत ११६१ जारौड़ै साह श्रीमल करायौ तठा पछै संमत १५५५ सु राणे हेमराज देवराज रै बैटै उधुर करायौ[8] । 'जात सुराणौ धरम धोष सुरप्रतबोधीया जात पुंवार ।'

७. रा० बरसिंघ उदौ केहीक सांषला मार नै चौकड़ी बसीया। कोसांणो मादळीयो पिण सांषला के मारीया ।

८. इण गांव ईण ठौड़ां रा जाट आण इण गांवां बसायो । डागा कठौती रा–

१. रिव (अधिक) । २. डागा । ३. उठा सूं छांड नै हरसौर रै गांव घाटे श्राय रहा था सु श्रे उठे समावे नहीं (अधिक) । ४ थिर ।

1. मन में कोई भेद-भाव नहीं था। 2. हस्त नक्षत्र में नींव लगा कर बसाई। 3. नागोर पटी का प्राचीन नाम। 4. वहाँ बैर-भाव हो गया। 5. मुझे यहाँ आने की अनुमति दो, लाओ। 6. देश का प्रमुख चौधरी। 7. सबल। 8. जीर्णोद्धार करवाया।

डांगावास, लोहड़ोयाह[१], रायसल बास, इतीवे[२] । थीरोदा थीरो नागौर रा–सातलवास ।

वडीवारा रताऊरा

फालो[३] बडगांव

चांदेलीयां चुवो

महेवडो

दुगसता दुसताऊ रा

भोवाली

डीडेल[४] रावणा[५] बुगरड़ा रा

लांबीयां

कमेडीया भादु

कलरो

रेयां कासणीया कसणा रा

रेयां

रडु[६] ग्वालरां तणो नागोर रा

राहण[७]

तेतरवाल तीतरी[८] नागोर री

भड़ाऊ

गोदारो पांडो रौ बीकानेर रो

भीथीया वडाली

सोमडवाल सोमड़ी[९] नागोर री

रोहीयो

बोहड़ीया कठोती था डागा साथ आया

मोकालै अणीयाळौ सहेसड़ो

---

१. ल्योड़ीयाऊ । २. ईडबो । ३. कालो । ४. डीडेलर । ५. वणिया । ६. रतु । ७. राहीण । ८. तेतारो । ९, सोमड़ा ।

जुड़ै नहीं। तरै जोधपुर सुं बरसिंघ साथे चाकर बाबर हीड़ागर[1] परज[2] लोग आया था सु सारा परा जाण लागा। तरै रा० बरसिंघ दीठौ, यु कुंही मरां[3], तरै रा० बरसिंघ साथ भेळो कर नै सौंभर नवलषी मारी[4]। घणा माल लूटीया। सोवन मोर उडीया[5]। तिण दिन अजमेर मांडव रै बादशाह रै दाषल थौ, मलूषान अठै अजमेर रै सोबे ऊपर थौ। सु बुरौ घणौ ही मांनीयौ। पिण बैस रहौ[6]। सौंभर मारी तिण साष रौ कवित्त[7]—

तांण चीर तळहुटी धणौ कीयौ घाटौ।
माटौ फोड़ कोट घाघरौ फाड़ कंचुओ।
चौहटो कर मदा गाळिया अहर भड़ां अमीरस।
कूट लूटिया कनक हीरा मोती।
विपरीत चिरत तह रंग रमी, भार भरत जोबन भरो।
बरसिंघ कान्ह गुवाळियो गोपी संभर ज्यरी ॥[१]

१२. तौ ही अजमेर रौ सुबायत बैस रहौ। तिण समै राव सातल नै कंवर बरसिंघ अवणत हुई। बरसिंघ सातल नुं कहै—कुंही जोधपुर बाप की[8] मांहे म्हे ही पावां, तरै बेऊ यांरा परधांन अजमेर गया। मलुषांन कहौ—दोनूं अठै आवौ, म्हैं समझाई देस्यां। एक तो बात युं सुणी छै—राव सातल नै रा० बरसिंघ अजमेर गया। रा० बरसिंघ मलुषांन सुं काहाव कीयौ—मोनुं जोधपुर दौ, हुं रु० ५००००) पेसकसी रा दूं। पछै बीच राठोड़े फिर नै राव सातल नै राव बरसिंघ नुं एक कीया। उठो थी मलुषांन सुं बिगर मिळीयां उठै आया।

१३. के कहै छै आप न आया। परधांन आया, आ वात परधांन

---

१. कवित्त अशुद्ध है।

---

1. नौकर आदि। 2. प्रजा। 3. इस प्रकार क्यों अभाव में मरा जाय। 4. धनधान्य से परिपूर्ण सांभर को लूटा। 5. खूब माल हाथ लगा। 6. बैठा रहा। 7. इस कवित्त में सांभर रूपी गोपिका को बरसिंघ रूपी कृष्ण द्वारा लूट लेने का रूपक बांधने की चेष्टा की गई है। 8. बाप की मलकियत।

की थी पण मलुषांन बरसिंघ सुं लागतो थौ हीज कहै—एक तौ मांहरी सैंभर मारी, तिण रौ मांहारौ म्है बित[1] मांगां। दूजौ मांहानुं पेसकसी कबूली थी[2], म्हे ऊपर कीयौं। तरै केहीक गांवां राव सातल केलावा सुं बरसिंघ नुं जोधपुर रा दीया तिकै सुणीया, कह्यौ—आपरौ मकसद कीयौ, मांहारी पेसकसी आही राषी सु कुंण वासतै। म्हांनु कबूलीयो थौ, सुदो मलुषांन मागीयो। इण उजर कियौ[3]। मलुषांन कटक भेळो कीयौ[4]। मेड़ता री गाडा संध आया। तरै इणौ जोधपुर राव सातल नुं षबर मेली। राव कह्यौ—थेई उठै लड़ाई मत करौ। मांणस लेनै जोधपुर आवौ बेगा[5]। तरै बरसिंघ तौ जोधपुर आयौ। बांसै हुम्रौ[6] मलुषांन आयौ। मेड़ते री धरतो बिगाड़ नै जोधपुर री धरतो पिण बिगाड़ी। पींपाड़ डेरौ कर नै सथलांणै सुधी धरती सारी मार नै बंध की[7]।

१४. आ षबर राव सातल नुं हुई तरै राव सातल सुजो बरसिंघ तीनई भाई चढीया। मारवाड़ रौ साथ सारौ आये भेळौ हुअौ। राव रौ डेरौ बोसलपुर हुअौ। तिण दिन राव बरजांग भींवोत माथै सारो मदार थी[8]। बरजांग नुं रावजी कह्यौ—बेढ लड़ाई रौ विचार करौ। सु बरजांग दलगीर[9] तिण दिन छै।[१] तरै रावां परधांना नुं कह्यौ—कासुं कीयौ चाहीजै ? तरै परधांना कह्यौ—औ षोटौ आदमी छै नै गरज सारी छै, आज धरती सारी री मदार इण माथै छै इण नुं हर भांत कर सुचतौ कीजै[10]। तरै राव पूछीयौ—औ किण भांत सुचतौ हुवै। तरै परधांना कह्यौ—औ भावी मांगै छै। भावी इण रै माथै मारौ[11]। तरै भावी रौ पटौ लिख दियौ। बरजांग सुचतो हुवौ, सु

१. बरजांग परधांन साथै कहाड़ियौ—हूं तो वेढ लड़ाई कर जांणू नहीं।

---

1. धन आदि। 2. स्वीकार की थी। 3. अस्वीकार किया। 4. फौज शामिल की। 5. शीघ्रता से जोधपुर आ जाओ। 6. पीछा करता हुआ। 7. अपनी सीमा कायम की। 8. सारा कार्य बरजांग भींवोत पर था। 9. खिन्नचित्त। 10. इसे हर भांति से प्रसन्नचित्त करो। 11. भावी गांव इसे (बदमाश) को देओ (मुहावरा)।

ओरही बेगी छै। ईण राव नुं कह्यौ—हूं कटक रौ हेरौ करण जाऊं छूं,[1] मुगलां रौ डेरौ कुसांणै हुवौ छै। थे ही कुसांणा था कोस एक फलांणी[2] ठौड़ आयी ऊभौ। रात पोहर गयां हूं जोहूं सहेट माथै आऊं छुं। बरसिंघ सातल सूजौ बांसै रहा। बरजांग एकलौ कटक नजीक आयौ। तरै घास रौ भारौ ऐक बाढ लीयौ। कटक माहे मजूर हुई नै सारौ कटक दीठौ, नीसार पैसार[3] सारौ दिन फिर नै अटकळ नै[4] रात पड़ी तरै पाछौ वळनै[5] राव कन्है सहूटै[1] माथै आयौ। हकीकत कटक री कही—कुसांणा रा तळाब वांसै इतरौ हेक साथ सुं मलुषांन पड़ाव कीयौ छै। आंपणा सारी देस रो बंद कटक मांहे छै।

१५. बरजांग कह्यौ—हमें ढील रौ कांम नहीं। बरजांग दोय अणी कहनै कराया[6]। दूतुं ठौड़ नगारौ साथै दीयौ। नजीक आया, मार-मार करनै तूटा[7]। रात अंधीहारी[2] थी, कटक माहे आपचक लागी[8]। राठोड़े पण भलौ लोह बाह्यौ। राव बरजांग भींवोत रौ घणौ विशेष हुयौ। राव सूजौ जोधावत पूरे घाव पड़ीयौ। मलुषांन भागौ घदुको मुगल मारीयौ, बंध छुटी। मुगल घणा मारीया। राव सातल री फतै हुई। राव बरसिंघ पाछौ मेड़ते आय बसीयौ।

१६. मलुषांन मांडव रा पातसाह नुं फरयाद लिष मेली। वळे फौज मांडव सूं आई। तरै राव बरसिंघ सुं बातां मांडी। अै पिण बात करणो वीचार कीयौ। राव बरसिंघ नुं राजपूतां पालीयौ[9]। पिण बरसिंघ बात मानो नहीं। सुगलां पण बोल बंध मांगीयौ[10] सु दीया। बरसिंघ अजमेर मलुषांन नुं मेलीयौ। उवे दिली राठोड़[3] आद्र

---

१. सहट। २. आंधी री। ३. दिल रा ठग।

---

1. चुपके से शत्रु-सेना का पता लगाने जाता हूं। 2. अमुक। 3. आने-जाने का रास्ता आदि। 4. अनुमान से समझ कर। 5. वापिस लौट कर। 6. फौज को दो हिस्सों में बंटवाया। 7. शत्रुओं पर झपटे। 8. भगदड़ मची। 9. मना किया। 10. वचन आदि मांगे।

भाव घणौ कीयौ[1]। भली भांत बसत सासती दी। इण बेसास पकड़ीयौ[2]। साथ थौ तिण नुं सीष दी। थोड़ै हीज साथ सुं बरसिंघ रह्यौ। मास षंड हुई तरै अेक दिन मुगल गढ़ ऊपर तेड़ नै बरसिंघ नुं झालीयौ[3]। हुल जैतै प्रिथम राव रौ नै सेहलोत अजौ नरभामोत चहुवांण अै दोय कांम आयां री साष[4]—

बाथ पड़ी बरसिंघ बांगलां, हुल नै हाथी बात हुई।

दूहो—

ऊपर अगम थयाह, गम दीठो गै घड़[5] तणौ।
अजीया आकासांह, नषी(तक) नर भरावउत ॥१॥

कवत्त—

मैमंतो[6] घुमंतो सेत दांते[7] बिकराळे
उंचे गीरेवर जेस माह मैजुसे काळे
हणे ते हाथीअे हाक कीधी पुतारे
साबळ[8] सैलै सरध कूटै बाबा रे
अजमेर दुरग असुरदल[9] सिंघ सनेहे साथिये।
उकट चूक कूटै अणी[10] हुल जैत निहट्टा हाथिये ॥

१७. राव बरसिंघ नै झालीयां री षबर राः दुदा जोधावत नुं बीकानेर पोहती[11]। तरै दुदा राव वीका नुं सारी हकीकत कही, नै कहौ—मोनुं सीष दौ। तिण दिन राजपूत लाज रा कोट था,[12] सु राव वीके कह्यौ—बरसिंघ थांनु म्हे जतरै हीज छै। राव बीके डेरा बारै कीया। दुदा नुं कह्यौ—थेई मेड़ता री पाषती जाई नै थांहरौ साथ भेळौ करौ। सु दुदे आई मेड़ते साथ भेळो कीयौ। बीकौ दी० १४[1]

---

१. ४।

---

1. बड़ा आदर-सत्कार किया। 2. विश्वास में आया। 3. पकड़ लिया। 4. साक्षी की कविता। 5. हस्तिसेना। 6. मदमस्त। 7. सफेद दांत वाला, हाथी। 8. भाले के आकार का शस्त्र। 9. मुसलमान शत्रुओं का दल। 10. फौज। 11. पहुंचा। 12. लज्जा और शील के आगार थे।

माहे मेड़ते आयौ । राव सातल पिण जोधपुर साथ नुं छेड़ा चढीयौ छै । पिण राव बीको दुदो घणौ साथ लेई नै अजमेर ऊपर मेड़ता थी षड़ीया । मलुषांन रै पिण षबर हुई । मलुषांन साथ भेळो कीयौ, गढ सभीयो[1] । बीच परधांनो फिरोयौ[2] । बात हुई, राव बरसिंघ नुं तुरत छोड नै राव बीका दुदा नुं सोंपीयौ । पण बरसिंघ नुं छ मासी बिस दीयौ, जण सुं छठे मास मरीजै । पछै राव बीको दुदो बरसिंघ नुं लेने मेड़ते आया । बरसिंघ मेड़ते दिन ७ राव बीका दुदा नुं लेने मेड़ते आया । बरसिंघ मेड़ते दिन राव बीघा दुदा नुं राष म्हेमान करनै[1] सीष दी ।

१८. राव दुदो सरवाड़ गयौ । भला-भला गांव चपा चतुग करा[2] दबाये लीया । भाईबंध गांव-गांव बसीया । राव दुदा सरवाड़ रहै छै । तठै पछै मास ६ बरसिंघ मुग्रौ । बरसिंघ रै बेटौ सीहो तिसड़ो तो सेणो[3] न हुतौ पण बडै रौ बेरौ जांण नै तिण नुं टीको बरसिंघ रै पंचो चाकरे भेळा हुई दीयौ । सु सीहो नादांन सो थौ । मास ४ हुवा सीहारी साहीबी लषण[4] निबळा-सा राव सातल सांभळीया[5] तरै राव सातल सुजै इण मेड़ता सुं दषल मांडीयौ । माढी[3] ढांणां[4] री आपरा हुजदार कितरोहक साथ देई नै मेलीयौ । तिणां आंण अमल कीयौ । सेहर माहे डेरौ कीयौ । गांव-गोठां री पण धणायाप-सी करण लागा ।

१९. तरै बरसिंघ री बेर[6] सीहा री मां आपरा पंच आदमी रजपूत कांमदार भेळा कीया । पूछीयौ तरै सारे कह्यौ—थांहरा बेटा माहे बरकत कांई नहीं नै सातल सुजो जोधपुर धणी जोरावर उणां सुं फेर जवाब कुण करै[7] । तरै सीहा री मां पंचां नुं पूछीयो कासुं[8] कीयौ

१. चडी म्हेमानी की ने । २. च्यारूं तरफ का । ३. मढी । ४. दांण ।

1. गढ़ की सुरक्षा के लिए सुसज्जित हुआ । 2. बातचीत करने के लिये प्रधानों को भेजा । 3. सयाना । 4. राज्याधिकार के लक्षण । 5. सुने । 6. पत्नी । 7. कौन आपत्ति उठाये । 8. क्या ।

चाहीये ? तरै पंचां कह्यौ–थेई सारी बात देषो छौ, ग्राज मंढी लीवो सवारे सारौ परगनौ लेसी, वाहार करणी हुवै सु करौ। तरै सारां रै दाई[1] ग्रा बात ग्राई। राव दुदा नुं बीकानेर था ग्राध कबूल नै[2] ऊरौ ग्रांणीजे। तरै सीहे री मां पिण ग्रा वात थापी[3]। तरै छांना दुदा कनै बीकानेर ग्रादमी म्हेल राव दुदा नुं तेड़ीयौ[4]। पछै दिन ६ तथा ७ माहे रात ग्राधी रौ दुदौ मेड़ते ग्रायौ। केई कहै छै राव सातल रा ग्रादमीयां सुतां नुं कूट मारीया। कोई कहै छै पराह उठाय दीया[5]।

२०. बरस दोय तो सीहे नुं राव दुदै हासल मेड़तै रौ ग्राधौग्राध लीयौ। मुदो सारो दुदै रै हाथ छै। नै एक बात यु पिण सुणी छै–जु सीहा माहे लषण कोई नहीं तरै सीहा सुता नुं मेड़ता थी ढोलीयौ सुदे उपड़ाई नै[6] राहण में तवावै[1] थकै नुं रात रात पोंहौचायौ। संवार हुवौ सीहौ राहण माळीया माहे जागीयौ। तरै केई चाकर था तिण नुं पूछीयौ ऐ कांसु[7]। तरै उणां कह्यौ–मेड़तौ दुदे लीयो नै थांनु राहण दो। तरै इण कह्यौ–घी नै बाटी[8] दुदौ षासी म्हेई षासां। टीकै दुदो बैठौ, नै बारट महेस चुंतरावत मेड़तांयां रै बारट कह्यौ–दुदो सीहा रै माथे बडाई राषी।

२१. दुदो जोधावत संमत १४९७ ग्रासोज सुदि २[2] रो जायौ। संमत १५५४ राव दुदो काळ कीयौ। राव वीरमदे टीकै बैठो। तरै सीहा नुं राहण मेल⋯सु सीहो तौ भोळो-ढाळो हुतौ नै सीहा रा बेटा ३ बडो बलाये उठीया[9]। राव जेसौ, राव गांगौ, राव भोजौ। तीनैई सारीषा डीलां[10] सु इण री छाती माहे मेड़तौ माव[3] नहीं[11]। तरै ग्रै जाये राव माल सुं मिळिया। राव मालदेव पिण राव वीरमदे

१. मतवाले। २. ६। ३. समावै।

---

1. पसन्द। 2. ग्राधा हिस्सा देना स्वीकार करके। 3. निश्चय की। 4. बुलाया। 5. वहां से खदेड़ दिया। 6. उठवाकर। 7. यह कैसे हुग्रा। 8. घी ग्रौर रोटी। 9. बड़े पराक्रमी हुए। 10. एक से शरीर वाले। 11. मेड़ते का ग्रधिकार उनके हृदय में खलता था।

सुं घणी कुमया करै छै[1]। इण नुं राव भषाये दीयौ[2]। कह्यो—थांहारै बाप रौ मेड़तौ छै। तरै इणां वीरमदे सुं काहाव कीयौ—म्हारै बाप दादा रौ बंट पावां। तरै वीरमदे कह्यौं–बंट हमैं तरवारीयां परै छै[3]। तरै इणां पिण धोंकल[4] करण री मन धरी। रोहण[१] सुं गाडा बारै कीया। राव मालदे सूं घणो कागलवाई कीवी[5]। राव मालदे देलासा लीषो ग्राई[6]। इण गाडा पींपाड़ री तरफ नुं षड़ीया। दिन घड़ी २ पाछलौ थौ तरै असवार ५० तथा ६० भला चढ़ नै मेड़ता रै चोहोटै ग्रांण धाव दीया। बांसे बाहर छोड हुई। पछै कुसांणै जाता ग्रापड़ीया। उण रौ साथ पिण वळे भेळौ हुवा। ग्रठै बड़ी बेढ़ हुई। घणौ साथ ऊलौ पेलौ[7] कांम ग्रायौ। सीहा रा बेटा तीने ३ घाव पड़ीया[8]। राव वीरमदे सारी मुदार रा० षंगार जोगावत पर थी। सु षंगार जोधावत रा० भादो मोकळोत पूरे लोहां पड़ीया। सांधो मोकलोत ग्रर हीसा रौ वीरमदे रौ राहवणो इण बेढ माहे सीको[9] छै। वीरमदे ईसर सिरदार माहे को न छै। इण तीनां ही भांत पड़ीया[२]। बेढ बीरमदे रै साथ जीती।

२२. पछै संमत १५८८ रा जेठ बद १ राव गांगो काळ कीयौ। टीकै राव मालदे बैठौ सु बरस ४ तथा ५ माहे मालदे गड़ड़ीयौ[३]।[10] जरै[४] चढीयौ, सु राव मालदे री छाती माहें मेड़तो पारकै घरै[11] समावै नहीं। राव मालदे घाव[५] घणौ ही करै[12] पिण रा० जैता कूंपा राव जसौ[६] रा० षींवौ इण बात मांहे ग्रावै नहीं। सु राव सींधलां ऊपर कटक की थी। सु राव वीरमदे दुदावत पिण ग्रापरा राहवणो

---

१. राहीण। २. इण तीनां ही भायां ने खेत पाड़ीया। ३. गडकीयो। ४. जोरै। ५. दावघाव। ६. जैसो।

---

1. बहुत अप्रसन्न रहता है। 2. उल्टा सीधा सिखाया। 3. तलवार की ताकत के आधार पर ही होगा। 4. झगड़ा, युद्ध। 5. पत्राचार किया। 6. लिखित आश्वासन आया। 7. दोनों तरफ का। 8. घायल होकर गिरे। 9. सभी। 10. शक्ति से अभिभूत हुआ। 11. दूसरे के अधिकार में। 12. खूब विचार करता है।

लायौ । इण कटक साथै छै । राव मालदे राहवेधी[1] ठाकुर छै । सु नागोर दौलतीया नुं कहाड़ीयौ—रा० वीरमदे म्हां साथे छै । बडा-बडा रजपूत सारा वीरमदे कनै छै । बीरमदे थांहांरौ हाथी लायां रहै छै । थे ही बांसै आये मेड़तौ मारौं नै बीरमदे रा मांणस चचो-बचो सारो बंद कर लेजावौ । हाथी पिण थांहारौ परौ देसी । नै और डंड पिण देसी । नै पुंवार पंचायण नु कहाड़ीयौ—थांहांरौ बैर अषा रौ छै । नै हमार मेड़तौ देस सारौ षाली छै । बीरमदे सारै साथ सुधो म्हां कनै छै । थेही बैठा कासुं करौ ? रा० गांगा सीहावत नु तेड़ छांनौ कह्यौ—हमार दाव छै, थेई जाय कोट मैड़ता रौ लोपौ[2] । अै तीन दाव लगाया छै । सु राव जैता कूंपा थी छांना लगाया छै ।

२३. दिन ४ हुवा छै, छांना आलोच करै छै[3] । तरै अैण ही[4] कहीकां षवास पासवानां नुं पूछीयौ—इए दिन राव म्हांसुं बोलै न छै नै कासुं छांना आलोच करै ? तरै किणहीक बात थी सु कही । तरै इण मेड़ता नुं कागळ[5] लिष मेलोया । सु दौलतीया पैहली पोहर रैबारी कागळ मेड़ते लेई आयौ । सु रा० अषैराज भादावत रा० बीरमदे कन्है बिगर सीष मांगीयां मेड़तै आयौ थौ । कागळ अषैराज रै हाथ दीया । अषैराज कोट री जाबताही[6] की, कींवाड़ आडा दीया । बावसु सांमो मेलीया तिए षबर आंण दी—कटक कोस ४[1] ऊपर आयौ । इए कोट री पिरोळ जड़ नै भुरज ऊपर चढ़ीयौ, ऊभौ रह्यौ । साथ कोट मांहे घणौ को न छै । दौलतीया आज सेहर मार लूटीयौ नै कोट भेळण नुं आयै लागौ । कोट नुं साथ वळीयौ । तरै अषैराज भादावत दोठौ, साथ कन्है को नहीं नै वीरमदे रा मांणस बंद आज हुवै, आंषां देषां इण बात री बडाई नहीं । आज मोनुं मुवौ चाहीजै[7] । तरै अषैराज आदमीयां १५ तथा २० कूदीया[2] । सु अषैराज हेलै बरछी

---

१. ० । २. कोट री भींत था कूदीयौ ।

---

1. भविष्य का जानने वाला । 2. अधिकार में करो । 3. चुपके से विचार-विमर्श करते हैं । 4. इन लोगों ने भी । 5. पत्र । 6. सुरक्षा-व्यवस्था । 7. मर जाना चाहिए ।

नव आंगळ मंडो, सु के लागी के टळी। अै लोह भीळीया[1]। दौलतीयौ भागौ। अषैराज रो जैत हुई। रा० भैरवदास भादावत कांम आयौ। षेत[2] अषैराज रै हाथ आयौ। पुंवार पंचाइण करमचंद रौ आयौ, लोहोयावास[१] भूंबीया[3] तिकै रायेसल आगे भागा।

२४. रा० गांगौ सीहावत असवार ५०० सुं मेड़तै आवतौ थौ सु बांझांकुड़ी री नदी मांहे आवतौ थौ, तिं सगळां सुं ठाकुर सोवता था सु छींट कपड़ीयो सु कोस ०। ऊपर आया तरै गांगै ठाकुरां री पालषी संभाळी तरै। पालषी नहीं तरै पाछा वळीया। घड़ी २ ठाकुर पालषी जोई, लाभै नहीं। तरै गांगौ उठा थी हीज पाछौ वळीयौ[4]। अै षबर वीरमदे रा आदमी लेईनै रावजी रा कटक मांहे बीरमदे रा डेरा था जठै जाई छांना कागळ दीया। बीरमदे तो कतरोईक साथ लेई नै कागळ देषत समो[5] फराकत रै मिस करनै[6] चढ़ षड़ीया। कीतरायेक साथ नुं कह्यौ–थे ही तीजै पोहर अमकड़ी ठौड मांहां भेळा हुजौ। उमराव २ पुषता कामदार डेरै हीज राष गया था, उणां नुं कही गया था—सु षारै[२] इण बेळा रावजो षनै सीष मांग आवजौ। थांनुं राव पुछाड़ै, बीरमदे कठै, तरै थे कहजौ–म्हांनु तो युं कह गया था म्हे फराकता जावां छां, पछै सोकर लाभै[7] छै तौ सीकार पण जासां। सु राव रा आदमी आया, कह्यौ–बीरमदेजी कठै ? तरै चाकरां कह्यौ–फराकतां गया छै, बेगाई[8] आवसी। दोय पोहौर नुं वळे आदमी आयौ, तरै कह्यौ—आया तौ नहीं, जांणां छां सोकार षेलता होसो। आथण रा षबर कराई। तरै डेरै पुषता ठाकुर था तिणां कहाड़ीयौ—म्हे भेळा था तठै तांई तौ कांई षबर न थी। नै एक आदमी आयौ तिण कह्यौ—फलांणी ठौड़ सीकार रमता था। तठै असवार २२ मेड़तै थो आया, कह्यौ—पुंवार पंचाइण जगमाल

१. आलणीयावास। २. सवारै।

1. शस्त्रों से भिड़ गये। 2. रणक्षेत्र। 3. युद्ध किया। 4. वापिस लौटा। 5. देखते ही। 6. शौच का बहाना करके। 7. मिले। 8. जल्दी ही।

फळांणी ठौड़ झुंबीय[1], साथ वीरमदे रौ घणौ कांम ग्रायौ सु वीरमदे तौ उठी षडीया सुणां छां। राते तो[१] बीरमदे रौ साथ कटक मांहे रहौ संवारै डेरौ लदीयौ[2]। नै दौढी जाय रावजी सुं मालम कीयौ[3]– वीरमदे तौ इण ग्रचुक[4] चढ षडीया, माहां नै हुकम हुवै तौ म्हेई सीष करां। तरै राव हजूर तेड़ नै इणां नु हळ-भळ कर[5] सीष दी। वीरमदे मेड़तै ग्रायौ। राव मालदे दाव कीया था तिण मांहे कोई लागौ नहीं। राव हो कूंपा जैता बीच बेसांण[२] पड़ीया।

२५. तिण दिन बीच मंडोवर रौ पातसाह मुवौ। ग्रजमेर कोई किलेदार, तिण सुं रात रौ गढ़ छोड नोसर गयौ। बीरमदे नुं षबर ग्राई पहोती[6] –ग्रजमेर रौ थांणेदार माहे थौ, नीसर गयौ, गढ़ षाली पड़ीयौ छै। तरै राव वीरमदे ग्रापरौ साथ ले नै चढीया तिण रै ग्रजमेर हाथ ग्रायौ। गढ हाथ ग्रायौ। ग्रा वात मालदे सांभळी सु राव री छाती मांहे मेड़तो मावतौ न हुतौ[7], ग्रजमेर वीरमदे रै हाथ ग्रायौ सुणीयौ सु राव रै डील ग्राग लागी। राव वीरमदे कन्है राव मालदे परधांन मेलीया, कहाडियौ–मेड़तो थ्हांरौ छै, पिण घर मांहे तौ टीकायत म्हे छां, थे म्हारा भाई-बंध चाकर छौ। ग्रजमेर थैई म्हांनुं दौ, गढ कोट थ्हांरै षटावण रा नहीं। परधांन मेड़ते ग्राया, वीरमदे नुं वात कही। वीरमदे वात मांनी नहीं। परधांन पाछा ग्राया। राव साथ भेळौ कीयौ। राव वीरमदे रै पण साथ ग्राया, राव साथ भेळौ कीयौ। एक बार तौ वीरमदे मरणीक हुवौ[8] थकौ ली[३] सहर सझतौ थौ[9]। पछै वीरमदे रै रजपूतां कांमदारै वीरमदे नै समझायौ–म्हांरै गढ़

---

१. सारी रात तो। २. की सांणा। ३. कोटड़ी।

---

1. युद्ध किया। 2. सवेरे डेरा उठ गया। 3. सूचना दी। 4. एका-एक, बिना किसी सूचना के। 5. ग्राश्वस्त करके। 6. पहुंची। 7. मेड़ते पर ग्रन्य का ग्रधिकार उसके हृदय में समाता न था। 8. प्राणोत्सर्ग के लिये कटिबद्ध हुग्रा। 9. शहर को युद्ध की सामग्री ग्रादि से सुसज्जित करता था।

कोट नहीं, जे कोई दस दिन वीग्रहै[1] होय तौ मेड़तो पाधर रौ गांव छै[2] मरसो तौ आटे लूण हुसौ[3]। दुसमण पुरो[1] मतै दीं। पछै राव मालदे मेड़ते ऊपरा आयौ। राव बीरमदे दिन ४ पहली मेड़तौ ऊभौ मेल[4] नीसरीयौ। अजमेर मांणसां बसी सुधौ गयौ[5]। रावजी मेड़तै पधारीया नै अमल कियौ। आ वात संमत १५९५ रा टांणा री छे। अजमेर[2] रै मुंहडे रा[6] गांव वडा-वडा उमरावां नु बांट दीया। मेड़ते थांणौ राषीयौ। रा० सहैसो तेजसीहोत तेजसी वरसिंघोत मेड़तीया नुं वडौ पटौ दे नै रेयां री वडी बासीयौ, सु वीरमदे सहैसा सु घणी रीस करै छै। कहै छै—हूं आज सवारै मांहे सहैसा नुं मारूं। रा० सीधो मोकळोत रा० अषैराज भादावत रा० राइसल सारा मेड़तीया वीरमदे नुं वरज-वरज[7] राषै छै। सहैसौ रावळो छोरु छै, राव मालदे इतरा राठौड़ां नुं मेड़तो बांट दीयौ छै, तिण नुं तौ पहैली मारौ, पछै सहसा नुं मारजो। पिण वीरमदे री छाती मांहे सहैसौ मावै नहीं छै।

२६. रा० वीरमदे रा हेरायत[3] म्हेलीया था सु आया, षबर दी, कह्यौ—सहैसो आप रा साथ सुं रेयां माहे बैठौ छै। रात पहौर एक गयां रा० वीरमदे घणी-सी षबर किणही नु दीवी नहीं[8], आप चढ षड़ीया। सहसै रा पिण वाबसु लागा था तिणां आय षबर दी—राव सैहसो तेजसीयोत नै रा० वरसी राणावत सुषौ[4] थौ[9] सु वरसींघ रेयां आयौ थौ सु राव रा साथ थांणौ देर[5] रा० कूंपौ महैराजोत रा० राणौ अषैराजोत रा० जेसौ भैरवदासोत रा० भदो पंचायणोत छै। सु वेरसी रै सांढ १ घड़ीयां जोवण[10] थी, तिण चाढ ने आपरौ षुवास रा० कूंपाजी रांणा कन्है मेल्हीयौ, कह्यौ—म्हां मुआं मारीयां ऊपर

---

१. पुळो। २. मेड़ते। ३. हेरू। ४. सुख। ५. रड़ोद।

---

1. युद्ध। 2. मैदान में बसा हुआ गांव है। 3. व्यर्थ में जान गंवाओगे। 4. एकाएक ज्यों का त्यों छोड़कर। 5. अपने साथ रहने वाले सभी लोगों को लेकर चला गया। 6. अजमेर के आगे पड़ने वाले। 7. मना कर-कर के। 8. विशेष जानकारी किसी को होने नहीं दी। 9. मेल-मुलाकात थी। 10. बहुत तेज चलने वाली।

आवौ, सु वेगा आवजो। रात आधी रौ[1] ओठी जाई पोहतौ। उणै ठाकुर कागळ दीठां सांमा चढ नै वाग ली, सु रात घड़ी १ रै झांझरखै[1] रा० सहसौ तेजसीयोत केसरीया कर नै आदमी ५०० गांव रेयां रै बारे जाई जाजम नांष नै बैठौ छै। तिण समै रावजी रौ साथ पिण रेयां रै नजीक आयौ छै। रा० कूंपै रा० राणे रा० जेसै आवतां हीज पेंडै मांहे थी हीज असवार ४ बावसु भला घोड़ां रा धणी अजमेर दिसा वीरमदे दिसा सांम्हा मेलीया था सु अै ठाकुर रेयां रै गोरवै[2] आया नै असवारै वावसु अै आंण षबर दी, कह्यौ—राजा औ वीरमदे आयौ। तरै औ ठाकुर गांव नुं रा० सैहसा कन्है गयौ नहीं, पाधरा वीरमदे आवतौ थौ तठै चलाया। गांव नजीक वेढ़ हुई, सु वडौ लोह रौ रोठ पड़ीयौ[3]। अठं उलौ-पैलौ घणौ साथ कांम आयौ। तिण दिन राव मालदे रौ बडौ दिन बडो प्रताप सु वेढ राव रैं साथ जीती, आदमो ५० राठौड़ वीरमदे रा कांम आया। रावत भोजौ गांगा रौ जैतमाल कांम आयौ। राठौड़ सोधौ मोकळोत फेर घावे पड़ीयौ। वीरमदे ही तिण दिन बडौ पराक्रम कीयौ। घोड़ौ छुरीं कार पांच वेळां फेर-फेर नै राव रै साथ मांहे एकलै नांषीयौ। छुरी कार का टूक-टूक हुवां ईगारै[2] बरछी राव रै साथ रां री वीरमदे उण वाही सु षोस-षोस ली सु डावा हाथ मांहे वाग भेळो झाली छै। सु वीरमदे नु नीठ जाळोरी रौ बीहारी एक सरदार थौ सु रिण सुं पांवडा २० ले गयौ। तिण दिन राठौड़ भदै पंचाईणौत घणौ पराक्रम कीयौ, वीरमदे नुं भदै बरछीयां सुं ठेल काढीयौ, डील मारण रौ कायदो कीयौ, रा० भदै कूंपे टाळौ कीयौ। रा० जेसौ भैरूंदासोत रा० रांणो अषैराजोत पूरै घावै पड़ीयौ। वीरमदे पिण आपरा घायलां नु झालीयां[3] मांहे घाल नै वळ भरीयौ[4] नीसरीयौ। राठौड़ कूंपे भदै पिण षेत आप रै हाथ आयौ सु उण ठौड़ सैदाना[5]

---

१. रात घड़ी रौ। २. ईग्रां रै। ३. जोली।

---

1. एक घड़ी रात रहते। 2. गाँव के बिल्कुल नजदीक। 3. खूब शस्त्र चलें। 4. गुस्से में अकड़ कर। 5. वाद्य विशेष।

बजाय ऊभा रह्या । घाव लीयां था वांह नै रेयां आई उतारीया । राव मालदे आ वात सांभळीयां आभ लागौ[1] । इण वेढ सु रावजी रै मेड़तो तो रस पड़ीयौ[2] ।

२७. तठा पछै बरस १ आडौ घाल नै[3] राव मालदे अजमेर ऊपर कटक कीयौ । राठौड़ वीरमदे नुं अजमेर था ही परौ काढीयौ[4] । अजमेर आप रै हाथ आयौ । पछै वीरमदे एक बार नहारणै[1] गयौ । केहीक दिन कछहावे सेषावतां राषीयौ । पछै राव मालदे दिन-दिन जोर चढ़तौ गयौ । अजमेर राठौड़ महेस घड़सीहोत नुं पटै दीयौ । डीडवांणौ लीयौ । डीडवांणौ राठौड़ कूंपै महैराजोत नुं पटै दीयौ । सहैंभर[2] लीवी । राव रा कांमदार आय-आय सांभर बैठा । तरै राठौड़ वीरमदे चाटसु गयौ । उठै ही राव री फौजां वांसै[5] हुई आई । राठौड़ वीरमदे लालसोट[3] गयौ । उठै ही रहण न दीयै । पछै वीरमदे बांवळी जाय गाडा छोडीया ।

२८. [4][आपरा परधांन रा० अषैराज नै मु० षींवो रिणथंभोर रौ सोबादार कोई उमराव थौ तिण कनै मेलीयौ सु उठै उण रौ मुजरौ ही को मांहे जाय कहै नहीं । अै पच थाका[6] । नावाब सु तेषांना सुं कदे बारे आवै नहीं । देण नै इणां कनै कुं नहीं[7], जिकुं दीवांण बग-सीयां नै देनै अरज वीनती करावै ।

२९. नवाब रौ बेटौ एक बरसां पनरै सोळै रौ बाहर रमण नै सायतो[8] आवै सु रा० अषैराज भदावत रजपूत दूजाही हुता तिकै तौ सारां कह्यौ—अठै तौ जवाब नहीं, आंपां हालौ परा जावां । तरै मु०

---

१. नरायणे । २. सांभर । ३. लालसोढ । ४. 'ख' प्रति का अंश इन कोष्ठकों के अन्तर्गत है ।

---

1. अति प्रसन्न हुआ । 2. पूरी तरह अधिकार में आ गया । 3. एक वर्ष निकाल कर । 4. अजमेर से भी निकाल दिया । 5. पीछे । 6. प्रयत्न करके हार गए । 7. देने के लिए इनके पास (कीमती वस्तु) कुछ भी नहीं । 8. लगातार ।

षींवौ लाला रौ कहै—पाछा गयां नुं ठौड़ तौ कांई न छै, मारवाड़ रा काढीया सौ कोस मेड़ता थी बवळी आया था। इण मंडल मांहे पतासाह रै सारौ-वारौ[1] इण नवाब रौ छै। आंपां नुं पग टेकण ठौड़ को न छै। तरै रजपूतां कह्यौ—कासुं कीजै। तरै मु० षींवै कह्यौ—हूं अेक उपाव करूं छूं। भला जांणे त्युं कर। तरै सवारे मु० षींवौ रजपूतां नुं तौ डेरै होज राषीया नै षुद दोय कांठ रा मांहै नाळेर घात कुं अतलस मीसरू च्यार घात नै नवाब रै बेटौ षेलतौ थौ जठै ले गयौ। उणां रै आदमीयां पूछीयौ—थे कुण छौ? तरै मु० षींवै कह्यौ—म्हे राजा वीरमदे रा चाकर छां नै वीरमदे राव मालदे रौ भाई छै, सु जोधपुर रीसाय नै नवाबजी कनै आया छै सु राजा वीरमदे आपरो बेटी मिरजाजी नुं देण रै वासतै म्हांनुं भेजीया छै, सु म्हे नाळेर ले'र सगाई करण आया छां। सु राव मालदे रो नांव सांभळीयौ, तरै जांणीयौ राव मालदे रौ भाई राजा वीरमदे री बेटी रौ नाळेर आयौ। तरै नवाब कनै बडा-बडा ही दुवा कह्यौ—बडा बुनीयादी छै, राजा राव छै, आज हींदुवां मांहे इसड़ो घराणो और किण ही रौ नहीं, मिरजाजी नै नीपट बडी ठौड़ रौ नाळेर आयौ[2]। मिरजो बोहत कुसी हुवौ। साथे कर इणां नुं कोट मांह ले गयौ। इणां नुं डोढी नजीक बैसांण मिरजो मांहे गयौ। मिरजा रै चाकरे नवाब सुं मालम कीयौ—मिरजाजी नुं राव मालदे रा भाई राजा वीरमदे रौ नाळेर ले वीरमदे रौ परधांन आयौ छै। नवाब बोहत राजी हुवौ। मु० षींवा नुं तुरत हजूर बुलाय लीयौ। नाळेर रो वधावौ कीयौ[3]। इणनुं सिरपाव दीयौ। षींवै कह्यौ—वीरमदे रा भाई उमराव छै सु डेरै छै, हुकम कीयौ—नीमास्यांम[4], ऊणां नै ले तुं आई। इणां रै डेरै महमानी भेजी। रजपूते षींवा नुं कह्यौ—तुं कासुं करै छै? म्हे इण वात में समझा न छां। तरै मु० षींवै कह्यौ—इण वात रौ वीरमदेजी नुं हूं जवाब देईस। पछै आथण रै दीवांन रा० अषैराज दूजा ही रजपूत दरबार

---

1. पूरा अधिकार। 2. बड़े घर से शादी का प्रस्ताव आया। 3. सम्मानित रीति से नालेर स्वीकार किया। 4. नमन करने का अवसर देंगे।

गया। सारी हकीकत रा० बीरमदे री नवाब हजूरै तेड़[1] पूछी। बावळी गाडा छोडण नुं दी। परगनां रा अमल रौ परवांनौ कर दीयौ। इणां सारां नुं सिरपाव दे सीष दी। कह्यौ–वीरमदे म्हां कनै सताब आवै। रा० वीरमदे नै म्हे एक ठौड़ हुय नै षछै पातसाहजी नुं अरज कहै तिण भांत लिषां। अठै आयां सारी वातां मांड नै[2] वीरमदेजी नुं कही। वीरमदेजी वात सुण राजी हुवा।

दिनां ५ तथा ६ मांहे रा० वीरमदेजी असवार ४०० सुं नवाब रै मुजरै गया। नवाब सुं सारी वात आपरी वीरमदे मांड कही। तिका वात सारो वाका दाषल कराय नै पातसाहजी नुं नवाब अरदास की[3]। पातसाहजी रौ पाछौ हुकम आयौ—रा० वीरमदे नुं बवळी दी सु भलो कांम कीयौ, अबै रा० वीरमदे कुं षरचो देनै सताब मांहांरी हजूर भेजजौ।

३०. पछै नवाब वीरमदे नुं पातसाह कनै मेलीयौ। रा० बीरमदे दरगाह गयौ, पातसाहजी सुं मुलाजमत की.। दीवांन बगसीयां सुं मिळीया। सारी हकीकत आपरी राव मालदे री दीवांन बगसीयां साथे पातसाहजी सुं मालम कराई। पातसाहजी रा० वीरमदे सुं राजी हुवा। पातसाह आगे ही राव मालदे सुं हळाहळ हुय रह्यौ छै[4]। तिण समै बीकानेर रा धणी पण कंवर भींवराज जैतसीयोत मु० नगौ श्रै ही फिरीयाद गया छै। पिण रा० वीरमदे राहावेधी[5] हजार बात पातसाह नुं सुणाई। आगलौ मामलौ सहल[6] कर दीषायौ। पातसाह सहसरांम थो आगरे आयौ। सारौ सुलमान कर नै लड़ाई रौ आगरै बारै डेरो कीयौ।

३१. राव मालदे रै पण षबर आई। राव रै छड़ा[7] फिरीया। लड़ाई री तयारी हुवै छै। पातसाह आगरा थी कूच कीयौ। पातसाह रा डेरा हीडवांण हुवा। राव पिण जोधपुर सुं चढनै मेड़ते आयौ।

---

1. बुलाकर। 2. विस्तार के साथ। 3. विनती की। 4. बुरी तरह नाराज है। 5. भविष्य को जानने वाला। 6. सहज। 7. संदेशवाहक, अकेले घुड़सवार।

अस्सी हजार घोड़ौ तद राव मालदे रै ही भेळौ हुवौ। पातसाह मोजा-वाद रै टांणे आयौ। राव मालदे अजमेर आयौ। डेरा नजीक-नजीक हुवा। बीच परधांन फिरीया, वात बणी नहीं। वीरमदे राव मालदे बीच परधांन जुदा फिरीया। रा० कूंपे जेतै बीच आदमी फिर, धणी चाकरे वीत्रोट[1] घातीयौ। राव मालदे डेरा २ पाछा कीया। पातसाह रौ डेरौ सलेम रै उलै कांनै हुवौ। राव रौ डेरौ गीररी हुवौ। राव मालदे कूंपा जेता नु कह्यौ—अेक डेरौ वळै पाछौ करौ। तरै इणे कह्यौ—अठा आगली धरती रावजी सपूत होय षाटी थी, तिण दिसा रावजी फुरमायौ सु म्हे कीयौ। नै अठा आगली धरती रावळे माईते[2] नै म्हांरै माईते भेळा हुय षाटी हुती। आ धरती छोड नै म्हे नीसरण रा नहीं[3]। राव रै नै रजपूते घणौ गाढ हुवौ,[4] रा० वीरमदे राव कनै आपरौ बारट पातो मेल ने कुंही कहाड़ीयौ सु राव जेता कूंपा सुं विगर पूछीयां चोकी रै घोड़ै चढ़ नै रात पोहर १॥ गयां नीसरीयौ। बांसै रा० जैतो पंचाइणोत रा० कूंपौ मेहराजोत रा० षींवौ, जैतसी उदावत सो० अषैराज रिणधीरोत, रा० पंचाइण करमसीयोत, रा० वीदो भारमलोत और ही घणौ साथ मरणीक हुवा[5] सु आदमी हजार २०,००० रह्या और साथ रावजी सौथे नीसरीया। संवारे समेल री नदी रै परै वेढ हुई। राव मालदे रा आदमी हजार ५,००० सुं ऊपर लीषीया सु ठाकुर कांम आया।

३२. रा० वीरमदे पातसाह नुं ले नै जोधपुर आयौ। कितराहेक साथ रा० अचळौ सिवराजोत रा० तिलोक सिवराजोत भा० सांकर सुरावत रा० सीधण षेतसीयोत जोधपुर रै गढ कांम आया।

३३. के दिन पातसाह जोधपुर रह्यौ। पछै पातसाह मारवाड़ मांहे सैद हासमकासम नुं राष नैं षवासषांन केवले उमराव राष नै जोधपुर सुं कूच कीयौ। मेड़ते डेरौ हुवौ।

---

1. मनमुटाव। 2. पूर्वज। 3. निकलने के नहीं। 4. तनावपूर्ण स्थिति बन गई। 5. युद्ध में प्राण त्यागने को कटिबद्ध हुए।

३४. मेड़तौ वीरमदे नुं हुवौ। वीकानेर राव कल्यांणमल नुं हुई। पातसाह् आगरा नुं कूच कीयौ। आगरे-से जातां वीरमदे नुं सीष दी। तठा पछै वीरमदे वेगौ ही मुवौ।]

३५. राठौड़ वीरमदे संमत १५३४ मिगसर सुदी १४ रौ जनम। संमत १६०० रा पोस में वडी वेढ हुई। संमत १६०० रा माहा फागुण मैं वीरमदे काळ कीयौ।

राव मालदे बीच चारण फिरीयौं तोको वीरमदे रौ बारैट हुतौ, पातो।

१ पातो २ गांगो ३ जैमल ४ चतरो ५ महेस[१]

३६. राठौड़ जैमल वीरमदेवोत नुं वीरमदे मुवां पछै मेड़तीयां मिळ टीकौ दीयौ। पातसाहजी पिण मेड़तौ जागीर मांहे दीयौ। बरस १० तांई रा० जैमल सुष चैन सुं मेड़तौ भोगवीयौ।

३७. बरस ३ राव मालदे विषे[1] पीपलांण रै भाषरै रह्यौ। संमत १६०३ सूर पातसाहि मुवौ। पातसाही लोक जोध्रपुर रै गढ़ थांणो हुतौ सु गढ षालो मेल नै षवासषांन मसादली कन्है जावै, षवासपुरै गया। वांसै गढ षालो पड़ीयौ थौ। मंडोर रा माळीयां नुं षबर हुई, गढ षाली छै। तरै माळी मांहे पैठा[2]। रावजी नुं पीपलण षबर मेली।

३८. राव गढ़ आयां बरस ५ तथा ६ हुवा, तरै वळै राव मालदें संमत १६१० रा वैसाष वदि २[२] मेड़ते ऊपर आया। कुंडल में रा० जैमल नै राव मालदे बेढ़ हुई। दहब रौ[३] फेर हुऔ[3]। रावजो बेढ हारी, जैमल जीतौ।

---

१. 'ख' प्रति में बारहट की विगत के स्थान पर 'अेक बार वीरमदे जीवतां जैमल पातसाह रै बास बसीयौ हुतो सु मुथराजी जागीर में पाई छै' लिखा है। २. १२। ३. दईब रौ।

---

1. संकट काल में। 2. अंदर प्रवेश किया। 3. दैवेच्छा का फेर हुआ।

रावजी रौ[1] साथ इतरौ कांम आयौ—

१ रा० प्रथीराज जैतावत

१ रा० धनौ भारमलोत

१ सी० डूंगरसी

१ पा० अभौ

१ सोहड़ पीथौ जेसावत

१ रा० नगौ भारमलोत

१ रा० जगमाल उदैकरनोत

१ चौ० मेघौ

१ पा० रतौ नेतौ[2]

१ रा० सूजौ तेजसीहोत[3]

३९. राठौड़ जैमल रा रजपूत कांम आया, जणा ६—

१ रा० अषैराज भादावत

१ रा० मोटौ जोगावत

१ रा० नराइणदास चांदराव रौ

१ रा० चंद्राव[4] जोधा रौ

१ रावत सगतौ सांगा रौ

१ रा० सांगो भोजा रौ

६

४०. संमत १६१३ रै बरस फागण वदि ९ हाजीषांन नै रांणै उदैसिंघ अदावद हुई। हाजीषांन री मदत्त राव मालदे कीवी। असवार १५०० देनै राठौड़ देवीदास जैतावत रावळ मेघराज हापावत रा० जगमाल वीरमदेवोत रा० जैतमाल जसोवंत[5] रा० लषमण भादावत घणौ साथ दे भेजीया। रांणा उदैसिंघ री तरफ पिण इतरा हिंदू

१. राव माले री। २. नेतो 'ख' प्रति में नहीं। ३. नेतसिंहोत। ४. चांदराव। ५. जेसावत।

केईक चाकर केईक सगां थकी[1] आय भेळा हुवा ।

१ रांणो उदैसिंघ
१ जैमल वीरमदेवोत राठौड़ मेड़तीया
१ रावळ परताप वंसवाल[1] रा धणी
१ रावळ रामचंद सोळंकी तोडड़ी धणी
१ राव कीलांण बीकानेर रौ धणी
१ रावळ आसकरण डूंगरपुर रौ धणी
१ राव सुरजन बूंदी रौ धणी
१ राव दुरगौ रांमपुरा रौ धणी
१ नरायणदास ईडरीयो राव
१ रांम षेडारो[2] जाजपुर रौ धणी
१ रावत तेजो देवळीया रौ धणी

[3][आ बेढ हरमाड़े हुई । अजमैर था कोस १२ तठै हुई । रांणो ऊदेसिंघ भागौ । रा० तेजसी डूंगरसीयोत वालीसो सूजो सांवतोत रांणा रा नांवजादीक[2] उमराव कांम आया । रा० देवीदास जैतावत रै हाथ वालीसो सूजो रह्यौ । रावजी रै साथ रौ घणौ भलौ हुवौ । बेढ हाजीषांन जीती । राव मालदेजी इण फौज चलावण नुं जैतारण आय रहा था । रावजी रै षबर आई—रांणो भागौ, हाजीषांन जीतौ ।

४१. रावजी मेड़ता ऊपर जाण री तयारी करै छै । तितरै मेड़ते रावजी रा जासूस गया था सु षबर ल्याया—रा० जैमल रा मांणस बसी रजपूत था सु सारा रात नै नास नै[3] रांणा रै मुलक के बीकानेर ढुंढाड़ गया । रावजी जैतारण था संमत १६१३ सोळैसौ तेरै रा फागण सुद १२ मेड़ते पधारीया । अमल हुवौ । पछै रावजी रै मेड़तीयां सुं कस घणौ हुतौ[4] । मेड़तीयां रा पड़ाय घर पाधर करनै हळ मांहे

१. बांस वाला । २. षेराडो । ३. 'ख' प्रति का अंश ।

1. कई सगे सम्बन्धियों सहित । 2. प्रसिद्ध, नामी । 3. भाग कर । 4. बहुत गहरा द्वेष था ।

जोताय मूळा बवाड़ीया । पछै संमत १६१४ मालगढ मंडायौ[1] । संमत १६१६ पूरौ हुवौ । रा० देवीदास जैतावत नुं घणा साथ सुं मालगढ थांणौ राषीयौ ।

४२. आधौ मेड़तौ संमत १६१६ भादवा वद ६ रा० जगमाल वीरमदेवोत नुं पटै दीयौ तिण री नकल—

विगत—

१३ नीलीयां

१ नीलीयां	२ वास मकांपा
१ ईटावो	१ बरणौ
१ म्हेरासणो	१ वावळलो
१ गोठड़ो	१ नीबड़ी

(कागळ[2] ऊपरलो फाट गयौ । बीजा कागळ मांहे ईतरा गांव हेठे था सु मंडायौ)[१]—

१ रांहण	१ लांबो	१ नथावड़ो
१ हीरादड़ो	१ अलतवो	१ बोललो
१ आकेली	१ दुरगावस	१ कुरलाई
१ चांदारुण	१ गोठड़ी	
१ पालड़ी	१ वगड़	
१ धनापौ	१ घघड़णो	
१ षींदावड़ो	१ फालको	
१ गोनरड़ो	१ भीमळीयो	
१ पालड़ी सींधले	१ ईटावो षीयां रौ	

१. 'ख' प्रति के प्रति लिपिकार द्वारा लिखा गया वाक्यांश ।

1. मालगढ़ का निर्माण प्रारम्भ करवाया । 2. कागज ।

१ ग्रानोली	१ पचीपलो
१ पीथावस	१ चुंधोयां
१ जुलांणो	१ तीघरीयो
१ गोठण	१ मांणकीयावस
१ सरणु	१ सायरवस
१ दाबड़ीयांणी	१ रायसलवास
१ ऊधीयावस	१ षुहड़ी
१ पांचीयावस	१ जावलो
१ छापरी	१ भइयो
१ चोचीयावस	१ जोधड़ावस
१ धांमणीयो	१ षातेळाई
१ डुमांणी	१ हासावस
१ पाडुबडी	१ वाषलवस
१ मोरहरी	१ सथांणो
१ लुंगीयो	१ केरीयो
१ हीदावस	१ थाटि
१ कालणी	१ मडावरो
१ भादुवसणी	१ थाहरवसणी
१ षीदावस	१ सारंगवासणी]
१ धांधलवास	१ सिरीयारी[1] सोभत री
१ ———	१ ———

५८

७१

बीजी वात इतरी थाप कीवी, तिण रौ देवचौ फळोधी महामाया रा देहूरा मांहे करायौ। कंवर चंद्रसेण मांगळीयो वीरम चौ० झाझण[2]

१. सीयारी। २. झांझर।

पा० नेतै आगै कीयौ । रा० जैतमाल पंचाइणोत प्रो० भांनीदास कान्है ऊभौ कीयौ ।

इतरी वात रौ देवचो[1] जगमाल कीयौ—

रावजी कंवर चंद्रसेन सुं कदे पूठ न दै[2] ।

राव चांदो वीरमदेवोत रा० वाघ जगमालोत वास न राषौ ।

रावजी रौ चाकर कोई बिगर हुकम न राषै ।

माहाजन पाछौ आवै तिण रौ धांन गडोयौ छै

तिण रौ हैंसा ३ रावळै हैंसो १ धांन रौ धणीयां रौ छै ।

४३. रजपूत हिमार जगमाल रौ मेड़ते वससी, सुभसांत हुओ औ पटा रै गांवै बरस १ पछै जाय बससो । मांगळीयो वीरम एक हुजदार रावळौ मेड़तै मांहे रहेसी । तरै कोट पड़सी । षाई धुरसी, तळाव २ कुंडल कुकसो फाड़सी । डेरौ १ रावळा कांमदार सहैर मैं कर नै रहैसो । तळाव कील्यांणसर रौ नांव कुकसो थौ ।

४४. मेड़तो गांव सोह पड़ायौ[3], रावळा घरां रा षेत कीया[4] । सहैर नाडी दोराणो कन्है वासवांणौ[5] कीयौ थौ कहै छै वईक ढुंढा[6] हुवा था । सहैर रौ नांव नवो नगर दीयौ थौ ।

४५. संमत १६१३ रा फागुण सुदि १२ रावजी रै हाथ मेड़तो आयौ हुतौ सु बरस ५ मास १ दिन ३ रह्यौ । पछै संमत १३१८ रा बरस यांहे रा० जैमल वीरमदेवोत वळे दरगाह गयौ[7] । पातसाहजी मेड़तो दीयौ । मुगल सरफदी घोड़ा ७००० सुं मदत मेलीयौ । रावजी नुं ही षबर हुई—पातसाहजी री फौज आवै छै । रा० देवीदास जैतावत मेड़ता रै मालकोट मांहे सदा थांणै रहै छै । सु रावजी इण षबर माथै कंवर चंद्रसेन नुं रा० प्रथीराज कूंपावत, सोनगरो मांनसिंघ

1. देवता के सामने शपथ ग्रहण की । 2. बिमुख नहीं होगा । 3. पूरा गांव ध्वस्त कर दिया । 4. घरों के स्थान पर खेत बना दिये । 5. रहने का स्थान । 6. खंडहर । 7. फिर बादशाह के दरबार में गया ।

रा० सांवळदास और ही साथ असवार हजार २००० सुं म्हेलीया। कह्यौ–वेढ रौ गंम देषौ[1] तौ वेढ करजौ, नहीं तर रा० देवीदास नुं लेनै उरा आवजौ। अै ठाकुर मेड़तै आया। पातसाहजी री फौज सबळी[2] तरै इणां पाछौ डेरौ कीयौ। रा० देवीदास जैतावत घणै साथ सुं मुरड़ नै[3] मालकोट मांहे पैठौ। मुगल नै जैमल आंण मालकोट घेर नै उतरीया। कंवर चंद्रसेण रौ डेरौ हुयौ। रा० सांवळदास उदैसिंघोत वळ नै डेरै माथै पड़ीयौ। मुगल १०० मारीया। सांवळदास रै पग लोह लागौ। तरै रा० सांवळदास रा रजपूत ले नीसरीया, रा० जैमल सरीफदीन बांसै चढीयौ सु कोस १४ आये आपड़ीयौ। तठै सांवळदास नै[1] भली-भांत कांम आयौ।

४६. मालकोट घेरीयौ छै, ढोवा हुवै छै[4]। राव मालदे रा सासता[5] कागळ पत्र देवीदास नुं आवै छै—थे तौ आपरो नांव करौ छौ, मांहांरी ठाकुराई षोवौ छौ। संमत १६१८ रा फागण बद ७ कोट घेरीयौ छै। भुरज १ पिण साबात[6] था उडीयौ छै। सु राठौड़ देवीदास मुगल था बात कर नै निसरीया छै। मुगल सरफदी रा० जैमल प्रोळ रै षांधै बैठो छै। रा० देवीदास रै मोंडै आगै पीयादो १ छै। तिण रै हाथ बदुंष[2] १ रावजी रै हाथ री छै। तिण नुं मुगल १ हाथ घातीयौ। देवीदास रै हाथकड़ीया लागै[3] छै, सु रा० जैमल सरफदीन नजीक उण रै माथै मांहे उण गेडी री दी, सु भेजी फूट नै नाक दिसा नीसरी। रा० जैमल सरफदीन नुं कह्यौ–देवीदास धरम दुआर नीसरै छै[7] थे उडदोगे[4], तरै सरीफदीन कह्यौ—दीठौ। जैमल कहण लागौ—औ इसड़ौ रजपूत न छै जिको कोट छोड नै नीसरै पिण राव मालदे कहै छै–तुं मांहांरी साहेबी षोवै छै। तरै औ मांडे जाये छै[8]। औ जोधपुर

---

१. वळ नै। २. बंडकी। ३. कड़ीयाळी गेडी। ४. रुड़ा दीठा।

---

1. युद्ध का ठीक अवसर देखो। 2. सबल. बहुत बड़ी। 3. युद्ध के लिए कटिबद्ध होकर, गुस्सा खाकर। 4. युद्ध पर युद्ध हो रहे हैं। 5. लगातार। 6. बारूद की सुरंग। 7. धर्म की दुहाई देकर। 8. अनिच्छापूर्वक जा रहा है।

पोहोतौ[1] तरै राव मालदे नुं रात आपाड़[1] ऊपर आवसी[2]।

४७. इण बात कैहतां बार लागी[3]। तितरै पांवडा २०० रा० देवीदास गयौ। तरै सरफदीन जैमल नुं कह्यौ—काहूं कीयौ चाहीज ? तरै जैमल कह्यौ—आंपांरौ भलौ चाहौ तौ वांसै आपड़ै[4] देवीदास नुं मारौ। तरै नगारौ हुऔ। रा० जैमल मुगल सरफदीन वांसै चढीयौ। नगारौ हुऔ सुण नै देवीदास नै राव रौ साथ वळ ऊभौ रह्यौ[5]। सातळवस उरै बेढ हुई, संमत १६१८ रा चैत्र सुदी १५। राव रौ साथ इतरौ कांम आयौ। तिण री विगत—

१ रा० देवीदास जैतावत बरस ३५[2] मांहे
१ रा० भाषरसी जैतावत
१ रा० पूरणमल पिरथीराज जैतावत[3]
१ रा० तेजसी[4] उरजन पंचाइणोत रौ
१ रा० ईसरदास रांणा अषैराजोत रौ
१ रा० गोईंद रांणा अषैराजोत रौ
१ रा० पातो[5] कूंपो मेहराजोत रौ
१ रा० भांण भोजराज सादा कूंपावत[6] रौ
१ रा० अमरो रांमावत रौ
१ रा० नेतसी सीहावत रौ
१ रा० जैमल तेजसीयोत[7]
१ रा० रांमो भैरवदासोत
१ रा० भाषरसी डूंगरसीहोत
१ रा० अचळौ भांणोत
१ राठोड़ महेस पंचाइणोत

१. तुरत। २. २५। ३. जेतावत रौ। ४. जैतसी। ५. पतो। ६. रूपावत। ७. जैतसीयोत।

1. पहुँचा। 2. रातो-रात अपने ऊपर आवेगा। 3. बात करते समय लगा इतने में। 4. पीछे भागकर। 5. सामने घूम कर खड़ा रहा।

१ रा० जैतमाल पंचाइणोत दूदावत रौ
मेड़तीयो

१ रा० रिणधीर राईसींघोत[1]

१ राठौड़ सांगो रिणधीरोत

१ राठौड़ ईसर घड़सीहोत

१ राठौड़ रांणो जगनाथोत

१ भा० पीराग भारमलोत

१ मां० देदो

१ राठौड़ महेस घड़सीहोत

१ राठौड़ राजसिंघ घड़सीहोत

१ मांगळीयो वीरम

१ सा० तेजसी

१ भा० तीलोकसी

१ भाटी पीथो

३ बारेट–१ जालप १ जीवो १ चोलो

१ तुरक हमजौ

१ सुतरार भांनीदास

४८. पछै राव मालदे तो मेड़ता माथै कटक कोई नंह कीयौ। तठा पछै मास ८ राव मालदे संमत १६१९ रा काती सुदि १२ काळ कीयौ[1]। राव चंद्रसेन पाट बैठौ। सु चंद्रसेन रै भाई ग्रासीया जोर लागा। रजपूते नै रिणमल नै राव वीरस हुऔ[2]। राव चंद्रसेन तौ मेड़तै रो नांव लीयौ नहीं।

संमत १६१८ रा चैत सुदि १५ रा० देवीदास जैतावत कांम आयौ। तठा पछै राव मालदे बेगौ हीज काळ कीयौ। मेड़तो जैमल

---

१. रायसलोत।

---

1. मृत्यु को प्राप्त हुआ। 2. वैर-भाव बढ़ा।

पातसाही तरफ था पायौ छै, सु भोगवै छै। रा० वीठलदास जैमलोत दरगाह चाकरी करै छै। रा० जैमल मेड़ते मुगल सरफदीन रा० देवीदास वाळौ कांम करनै वेगौ हीज दरगाह गयौ। जैमल नै सरफदीन घणौ सुष छै। जैमल रौ षसमानो ऊठै ही थकौ घणौ करै छै। युं करतां सरफदीन मांहे षामी पातसाहजी री तरफ आई सु सरफदीन उठा सुं नाठौ सु रा० वीठलदास नै साथे लेतौ आयौ। सरफदीन डागोळाई ऊतरीयौ। रा० वीठलदास अजांणकरौ[1] [1] दरबार जैमल बैठौ थौ। तठै आय ऊभौ रह्यौ, पगे लागौ। जैमल देष नै हैरांन हुवौ। तुरत दरबार सुं ऊठनै मोहलां मांहै जाय नै पूछीयौ—तुं कांई आयौ[2]? तरै वीठलदास सरफदीन रौ ऊवाको मांड नै कह्यौ। नै जैमल कह्यौ—तैं बुरी कीवो। तरै कह्यौ—सु तौ होणहार, सु चारौ कोई नहीं। तरै पूछीयौं—सरफदीन कठै ? तरै कह्यौ—डागोळाई ऊपर बैठौ छै। जैमल सरफदीन कन्है जाय मिळीयौ, वात-विगत कीवी, कह्यौ—माहारा मांणस नागोर छै सु सिताब मंगाय देवौ[3]।

५०. तरै रा० सादुळ जैमलोत नुं जैमल कितरौ साथ साथे दे, सरफदीन रा चाकर पिण दोय चार देनै नागौर नुं चलाया। इणौ जाय नै मांणस कोट मांहे था काढ नै चलाया नै सादूळ वांसै थकौ आवतौ थौ सु इतरै पातसाही अहधी डाक चौकी था दौड़ीया। नागौर किणही जागीरदार नुं फरमांण ले आया—सरीफदीन नाठौ छै, सरफदीन रा मांणस जांण न पावै। सु मुनसबदार थौ सु असवार २०० तथा ४०० सुं वांसै चढीयौ, सु मेड़तै जातां आपड़ीयौ[4]। सु सरफदीन रा मांणस तौ कुसळै मेड़ते पहौता नै राव सादूळ जैमलोत कोस षंड वांसै हुओ जातौ थौ[5] सु सादूळ नुं जणा ४० सुं मार नै उबै पाछा वळीया। राव जैमल सरफदीन नुं तौ तुरत सीष दी। रा० जैमल रौ

१. अजांणजको।

1. अचानक ही। 2. तूं कैसे आया। 3. जल्दी से यहाँ बुलवा दो। 4. पकड़ा। 5. एक कोस के फासले से पीछे-पीछे जा रहा था।

विचार दीठौ–मांहारै पातसाही तरफ था तूट पार पड़ी[1]। पहैली तौ वीठलदास नीसर नै दरगाह थी सरफदीन साथै आयौ। पछै सादूळ इण भांत मराणौ, वात कहैण नुं कांई ठौड़ रहो नहीं।

५१. तरै जैमल संमत १६१९ मेड़तौ ऊभौ मेल्ह नै[2] मेवाड़ गयौ, रांणै वधनौर दीयौ। पछै संमत १६२४ रै चैत वदि ११ अकबर पातसाह चीतोड़ ऊपर आयौ। तरै रा० जैमल कांम आयौ। मेड़तीयां रा चाकर चारण कहै छै–वधनोर सुं जैमल आदमी ५०० सुं चीतोड़ नुं गयौ थौ। पांच सै आदमी साष-साष रा गढ चढीया था, सु इणां रा तौ युं कहै छै—जैमल पांचसौ आदमीयां सुं कांम आयौ, पिण आदमी २०० तौ जैमल रौ साथ जैमल रा कांम आया छै, आदमी...तो राठौड़ां जैतमाल इणां रै बडा रजपूत तिके हीज कांम आया छै।

५२. बात एक सरफदीन दरगाह सुं बेमुष[3] हुऔ तिण री। पातसाहा री मां मके जात गई थी[4]। सरफदीन बेगम साथे मेलीयौ हुतौ। सु उठै पीरां रा दरसण तौ बेर नुं हुवै जो मरद रा छेहड़ा बांधै[5], नैहींत्र[1][6] मुजावर दरसण करावै नहीं। बेगम सरफदीन नुं कह्यौ—तूं मोसुं छेहड़ बांध। तिण उजर घणौ ही कीयौ पिण बेगम पातसाह री मां छेहड़ा मांड बांध जात कीया छै। आयां, पातसाहा कितराहेक दिन कुमाया[7] करता तीणां घात घाली। पातसाहजी घणौ बुरौ मांनीयौ। कहण लागा–पैहली मांहारौ गुलाम थौ। हिमें म्हांरौ बाप हुऔ, जठै हुवै जठै थी तेड़ाव[8] कैह गरदन मारीस[9] तिके समाचार सरफदीन रै उकील सरफदीन नुं लिष मेलीया। तिणसुं सरफदीन नाठौ[2]।

---

१. नहींतर। २. उठा थी नीसरीयौ।

---

1. बादशाह का पक्ष मेरे लिए समाप्त हो गया। 2. ज्यों का त्यों छोड़ कर। 3. विमुख। 4. तीर्थ यात्रा पर बादशाह की मां मक्के गई थी। 5. पति के दुपट्टे से स्त्री के आंचल का छोर बांधना। देवताओं की अभ्यर्थना पतिपत्नी इस प्रकार करते हैं। ऐसी प्रथा राजस्थान में भी प्रचलित है। 6. वरना। 7. नाराजगी। 8. बुलवा कर। 9. मरवा डालूंगा।

५३. रा० जैमल आप तौ सरफदोन नुं पोंहोंचावण नुं सीरोही सुधो साथे गयौ नै बांसै भाईबंध नुं कह्यौ थौ—थे सारा वसी लेनै बधनोर री तल्हेटी आय रहीजो। सु जैमल पाछौ वळतो बाड़ल मांहै होय बधनोर आया। रांणौ उदैसिंघ पिण रूपजी रा भाषरां दिसा सिकार रमण आयौ थौ। पछै जैमल रै गोडै आय दीलासा कर नै बधनोर करहेड़ो कोठार[1] दे नै जैमल नुं वास राषीया[1]। रा० जैमल कांम आयौ चीतोड़। रांणा रै विषौ धरती मांहे हुवौ, तरै रा० सुरतांण केसवदासोत नुं रांणै गढ बोर गांव रूपजी सुं कोस ३ छै भाषर मांहे, सु दीयौ हुतौ। उठै इण री कोईक दिन वसी रही छै। उठै मेड़तीयां री करायौ श्रीचत्रभुजजी रौ देहरौ[2] छै।

५४. तठा पछै बरस ४ तथा ५ रा० जैमल रा बेटा रा० सुरतांण केसोदास दरगाह गया छै। इणां नुं मेड़तौ तौ तुरत हीज दीयौ थौ नहीं। केहीक दिनां[3] रिणथंभोर नजीक मलारणा रौ परगनो पातसाहजी रा० सुरतांण जैमलोत नुं जागीरी मांहे दीयौ छै। सु मुलारणै भोमीया कसबै मांहै किलेदार रहै छै, तिणां सुं उठै रहैतां उपाव हुऔ[4]। तठै रा० सुरतांण रै चाकरां मांणस १०० बेलदार तुरक भोमीयौ छै, सु मारीयौ छै।

५५. एक वात युं सुणी छै—संमत १६३७[2] तथा १६३९ रा० सुरतांण जैमलोत नुं कोई दिन सोभत पातसाही री दीवी जागीर मांहे पाई छै। संमत १६३७ रा रा० सुरतांण दरगाह गयौ। पातसाही मेड़तौ दीयौ। तरै मांहोमांह[5] गांव बांटतां रा० नरहरदास ईसरोत सुं अवणत[6] हुई। तरै नरहरदास रा० केसोदास जैमलोत री भीर हुवौ[7]। राठौड़ केसोदास नुं नरहरदास ले गयौ। उठै वीनती

१. कोठारीयो। २. १६३८।

1. बसा दिया। 2. मंदिर। 3. कुछ दिनों के लिए। 4. झगड़ा हुआ। 5. आपस में। 6. अनबन। 7. पक्ष में हुआ।

कुंही लागै नहीं । तरै रा० केसोदास री बेटी पातसाह नुं परणाय नै आधौ मेड़तौ केसोदास ले आयौ ।

५६. पछै पातसाह री धाई[1] कांई गुजरात गई थी, तिका मेड़ते आई। राव सुरतांण सीरोही रौ धणी धाई साथे मेड़ता सुधौ आयौ छै। नै रा० सुरतांण केसोदास नुं पातसाह री धाई कह्यौ—मोनुं आंबेर सुधी[2] पोंहचावौ । तरै इणां कह्यौ—इसड़ी घणी ही रांडो आवै जावै छै। तरै इण नु ं नहीं पोंहोंचाई । पछै उवा आगरै गई । जाय नै पातसाह नुं कह्यौ—मोसुं मेड़तीयां इसड़ी कीवी, तिसड़ी कोई करै नहीं। कहै तौ मांहारो चूंचीयां[3] छै सु बाढ़ूं का इणां था मेड़तौ तागीर[4] करौ । पछै मेड़तौ उतारीयौ। रा० सुरतांण नु वळे सरवाड़ दी । तठै बसी गई । नै रा० केसोदास री बसी नागेळाव रही । पछै सुरतांण री बसी बरस १० तथा १२ सरवाड़ रही । तठा पछै संमत १६४२ पातसाह वळे मेड़तौ दीयौ । तरै वळे रा० सुरतांण केसोदास फेर मेड़ते आया ।

५७. संमत १६४० निबाब षांनषांना नं गुजरात रौ सूबौ हुऔ। रा० सुरतांण जैमलोत पिण निबाब री ताबीन[5] हुता । तिणे दिने गजो[1] जाडेचौ गुजरात वडौ भोमीयौ छै। सु अहमदाबाद सहर रौ बिगाड़ जगौ एकांतरै[6] दूजै दिन करै ही करै। फौजदार, सिकदार, कोटवाळ सारा पंच मुआ[7], जगौ किणही रै हाथ आवै नहीं । असवार ४० तथा ५० लीयां सासतो ओळ मांहे बाजर मंढी भागले घाव फेरै[2]। जगा रै नांव लीयां हिरण बांडा हुवै छै[8]। एक दिन रा० वीठळदास

---

१. जगो। २. करै।

---

1. धाय। 2. आमेर तक। 3. स्तनों का अग्रभाग। 4. जब्त। 5. अधीनस्थ। 6. एक दिन छोड़ कर। 7. प्रयत्न करके हार गए। 8. मुहावरा—नाम से ही लोग अत्यन्त आतंकित हो जाते हैं।

ांमलोत, सींधल चांपौ करमसी रौ नदी संमरमती[1] री तरफ नुं सैल-सिकार गया था। सु पैलो कांनी सेहर रा लोग नाठा आवै छै। औल-सिकार रम नीसरीयौ पाछौ आवै छै। तितरै दुनी[2] नाठी[3] आवै छै। इण पूछीयौ—इण भांत नाठा आवौ छौ सु बांसै किसौ कटक[4] आवै छै। तरै उणां मांहे समझणो आदमो थौ सु ऊभौ रह्यौ नै कह्यौ—जगौ जाडेचौ सदा अहमदावाद रौ बड़ो बीगाड़ करै छै, सु आवै छै। तरै बीठळदास चांपै कह्यौ—जगौ किसड़ छै? तरै उणां कह्यौ—जगा छांना न छै[5]। तरै इणां कह्यौ—थांसू छांना न छै, पिण म्हे उळषां न छां[6]। तितरै जाड़ेचौ जगौ नजीक आयौ, दीठाळे हुवौ[7] तरै जिणां नुं पूछता तिणां कह्यौ—औ कमेत घोड़ै चढीयौ लाल पाग जार मेंषी पहरीयौ ओपै इतरै असवार मांहे सिरदार छै। दूजौ रतनो जगो फलांणौ फलांणौ घोड़ै चढीया सारी गुजरात बीगाड़ जगौ रतनौ छै। बात करतां बार लागै[8], इणां उणां उप्र नांषीया[9], ठै मामलौ हुवौ। जगौ रतनो रा० बीठळदास सींधल चांपौ आदमीयां १० तथा १५ सुं मार लीयौ।

५८. रा० सुरतांण नुं षबर हुई नहीं ता पैहली[10] नवाब नुं षबर हुई। जगो किणो हींदू मारीयौ। नबाब आप चढ उठै आयौ। सारौ सूबा रौ साथ चढ आया। रा० सुरतांण चढ आयौ। नबाब पूछीयौ—थे कुण छौ? तरै रा० बीठळदास सी० चांपै कह्यौ—म्है रा० सुरतांण जैमलोत रा चाकर छां। नबाब बोहोत राजी हुवौ। जगा रतना रा माथा बाढीया नै सेहर मांहे नबाब लायौ। सेहर मांहे लायक आदमी था तिणां नुं इणां री हकीकत पूछी। सेहर रा लोग कह्यौ—पातसाह रौ बडौ परताप, नबाब रौ बडौ भाग, आज जगौ रतनो मारतां पातसाहजी रै गुजरात षरी रस पड़ी[11]। रा० बीठळ-

---

1. साबरमती। 2. दुनिया। 3. भागी हुई। 4. फ ज। 5. छिपा रहे जैसा हीं है। 6. पहिचानते नहीं हैं। 7. दिखाई दिया। 8. मुहावरा—बात करते समय गा इतनी देर में। 9. इन्होंने उन पर हमला बोल दिया। 10. उससे पहले। 11. री तरह कब्जे में आई. अधिकार का आनन्द देने लगी।

दास नुं नबाब फ़रमायौ—थांहांरी अरज होय सु करो, तिकुं हूं पात-साहजी सुं अरज कर नै थांनुं दराउं तरै रा० बीठळदास चांपे अरज की—म्हे रा० सुरतांण जैमलोत रा चाकर छां, नबाबजी राजी हुवा छौ तौ राठौड़ सुरतांण नुं मेड़तौ दियौ[१]। तठा पछै नबाबजी दीरायौ।

५९. संमत १६४२ रा फागुण सुदी ३ इणां री बसी मेड़ते आई। संमत १६४६ रा० सुरतांण काळ कीयौ कहै छै। आधौ सुरतांण नुं मेड़तो हुतौ। आधौ रा० केसोदास जैमलोत नुं हुतौ। रा० सुरतांण रा मांणस मेड़तै सहर मांहै कोटड़ी तठै रहता। नै रा० केसोदास रा मांणस मालकोट में रहता। संमत १६४६ रा सुरतांण काळ कीयौ। मेड़तो बलभदर नुं सुरतांण री तागीरी हुवौ।

६०. संमत १६५३ रा बलभदर सुरतांणोत काळ कीयौ, मेड़तो रा० गोपाळदास सुरतांणोत नुं सुरतांण रै बांटे[1] हुऔ। नै केसोदास रौ बांट केसोदास भोगवै छै। संमत १६५६ दिषण मांहे बीड सहर बार सिरदार पातसाही फौज में सेरषां जोधा[२] तिण नै चांदबीबो रै लोग सुं बेढ हुई। पातसाही फौज हारी। तठै रा० गोपाळदास सुरतांणोत रा० केसोदास जैमलोत राठौड़ दुवारकादास जैमलोत तोनै ही मेड़तीया कांम आया। कछवाह्रा राजा जगनाथ रौ बेटौ मनतुप[३] पिण उठै कांम आयौ छै। आ लड़ाई बीड सहर रै बारै नदी छै तिण ऊपर हुई छै। का० मनतुप री छतरी छै[2]। बेढ हारी, सेर षौजो नास नै पाछौ कोट मांहे पैठौ। पछै रा० गोपाळदास रौ हेंसौ आध रौ रा० जगनाथ गोपाळदासोत नुं हुवौ नै रा० केसोदास आध कान्ह-दास[४] केसोदासोत नुं हुवौ।

---

१. दीरावो। २. सेरषोजो षो। ३. मनरूप। ४. कनाईदास।

---

1. सुरतान के हिस्से का। 2. स्मारक बना हुआ है।

६१. तठा पछै रा० जगनाथ गोपाळदासोत नै कछवाहौ राजा रांमदास उदावत अदावद[1] हुई। तरै संमत १६५८ री उनाळी सुं जगनाथ रौ बंट आधौ मेड़तो अकबर पातसाह राजा सुरजसिंघ नुं दीयौ। आधौ रा० कान्हीदास केसोदासोत नुं हुतौ। तिणां दिन कान्हीदास रा मांणस सेहर री कोटड़ी रहता। राजाजी रौ कांमदार मालकोट मांहे रहतौ।

६२. पछै रा० सं० १६६१ रा० कान्हीदास काळ कीयौ। पछै मेड़तीया बडा-बडा ठाकुरां असवार २००० साथ लेनै[1] दरगाह गया। इन्दरभांण नुं पातसाहजी कबूल कीयौ नहीं। पछै संमत १६६१ रा० कान्हीदास रौ ही आध राजा सुरजसिंघ नुं अकबर पातसाह दीयौ। तिको राजा सुरजसिंघजी जीवीया तठा सुधो[2] मेड़तौ रह्यौ।

६३. संमत १६७६ रा भादवा सुदि ६ महैकर काळ कीयौ। राजा गजसिंघ नुं जोधपुर रौ टीकौ हुवौ। तरै मेड़तो तागीर हुवौ। साहेजादौ षुरम नुं माल षासमारी था हुवौ। अबु अमीन होय आयौ। कीरोड़ी एक हाजी इतबारी दूजो मीरसकारे[2] हवाले आधो-आध परगनो सोंपीयौ। बरस २ अबु री हाकमी रही। पछै संमत १६७८ रै बरस था साहाजादे षुरम सारौ परगनो आपरा चाकरां रजपूतां नुं जागीरी मांहे बांट दीयौ सु बरस २ रह्यौ। संमत १६७६ रा वैसाष तहल, विगत गांवां री—

६४. २०४ गांव सुं कसबौ तौ राजा भीम अमरावत सीसोदीया नुं दीयौ। राजा भींव आप मेड़ते आयौ। संमत १६७६ रा काती सुदि १५ अबु मेड़तै आंण अमल कीयौ। अबु काबौ अमीन कीरोड़ी २ साथै हुता। तिण रै हवालै पटी ५ हाजी इतवारी रै—१ हवेली १ अणंदपुर १ फलदु १ मांडरौ १ राहण। मीरसका रै हवालै

---

१. थो तो कपूत सो (अधिक)। २. सफारे।

1. द्वेष। 2. तब तक।

पटी ४ हुई—१ रेयां १ मोकालो १ देधाणो १ अलतवौ। बरस २ अबु रौ हवालौ रह्यौ। संमत १६७६ संमत १६७७ ऊपना—

३२५०००) संमत १६७६, ४७५०००) संमत १६७७, संमत १६७९ रा जेठ मैं पातसाह जांहांगीर अजमेर आयौ। षुरम फिरीयौ[1] तरै मुदार सारी परवेज ऊपर धरी। तरै मेड़तौ परवेज नुं दीयौ। फौजदार सादत वेग कीरोड़ी सेष ऊपर जेठ में आयौ। संमत १६८० घासमारी[2] लीवी[१]।

रा० भींव कीलांणदासोत नुं गांव अणंदपुर।

रा० प्रथीराज बलुवोत नुं रैयां।

रा० महेसदास दलपतोत नुं बडालो।

रा० ईसरदास कीलांणदासोत नुं रोहीसो।

६५. संमत १६७६ री माल घासमारी राजाजी रा जागीरदार लीवी थी तिण रै मामलै रा० राजसिंघ षींवावत अबु कन्है आय दिन २० मेड़तै रहा। रुपीया ५०,०००) पचास हजार रोकड़ देनै मु० वेला नुं अबु कन्है राषीयौ थौ। कां चाकर वेला रै अबु रै बेढ हुई थी, मोनुं फारकती[3] करदे तरै फारकती कराय ले आयौ।

६६. तठा पछै संमत १६७९ रा फागण में षुरम साहिजादौ पातसाह जाहांगीर सुं फिरीयौ। श्रीजी देस मांहे हुता। पातसाह षुरम रै बेढ दिली नजीक हुई। उठै मोहोबतषां कीवी। राजा वीकमादीत बांभण माराणौ। षुरम भागौ। जाहांगीर पातसाहि अजमेर नुं आवतौ थौ, माहाराजा श्री गजसिंहजी चाटसु कन्है जाय पातसाह

१. इबारत के क्रम में दोनों प्रतियों में भिन्नता है।

1. विमुख हो गया। 2. जमीन का कर विशेष जो पशुओं की चराई के आधार पर लिया जाता था। 3. हिसाब का निबटारा।

जांहांगीर सुं मिळीया। मुलाजमत कीवी। पातसाह अजमेर आया। उठै सुं साहजादा परवेज नुं वळे आहद कर नै नवाब मोहोबतषां मुंहडै आगै मुदाइत कर षुरम वांसै विदा कीया। तद नबाब राजाजी री घणी सुपारस कर नै हजारी जात असवार इजार इजाफौ करायौ। मुनसब बधीयौ। नबाब परवेज साथे लीयौ। पिण तलब भरपाई नहीं। तिण समै रुपीया ६७५००) मांहे फळोधी पाई नै अजमेर रा सोबा रा षालसै रा परगने रा सार साहजादै परवेज नुं हुवा। तिण मांहे मेड़तौ ही परवेज नुं हुयौ।

६७. पछै मेड़तौ साहाजादौ परवेज सैंद नुं जागीरी मांहे थौ[1]। तरै नबाब बीच रा० राजसिंघ षींबावत नुं राजाजी वेळा ४ तथा ५ गाढपुर कहाड़ीयौं—इतरा दिन म्हे राजा सुरजसिंघजी री षाटी षाई, षाय नै सारी जमीयत राषी हुती। जु म्हांनुं नबाब सुहारे[1] मेड़तौ दीरावै छै। सु यांहरा रजपूत मेड़ता री उमेद माथै मांहां कनै इतरा दिन रहता था। हिमैं मांहांरै रजपूते दरबार मांहे सुणीयौ साहाजादो मेड़तौ किणी और नुं देवै छै, सु मांहांरा रजपूत सारा परा जाय छै[2]। नै मांहांरौ मुनसब नबाबजी इजाफे करायौ छै तिण री म्हे तलब पाई ही न छै। पछै नबाब साहिजादे परवेज सुं अरज कर नै साहिजादैजी तरफ सुं मेड़तौ दीरायौ। तालीको लिष दीयौ। राजाजी तालीको देस नुं चलायौ। पछै रा० कान्ह षींवावत भंडारी लूंणौ तालीको ले मेड़ते आया। आगे परवेज रा आदमी मेड़ता मांहे हुता तिणां एक बार उजर कीयौ[3]। पछै रा० कान्ह भंडारी लूणै उण बीच आदमी फेर नै कुंही देई-लेई[4] उणां नै सीष दीवी। संमत १६८० रा भादवा वदि ८ अमल कीयौ। दरगाही मुनसब मैं न पायौ[5]। साहाजादा री आपरी तरफ सूं रुपिया २,०००,००) मांहे दीयौ, दाम ८००००००।

---

१. साहजादां नूं जागीर में देतो थौ।

---

1. कल ही, शीघ्र ही। 2. चले जा रहे हैं। 3. आपत्ति उठाई। 4. दे ल कर। 5. बादशाह की ओर से प्राप्त नहीं हुआ।

६८. तठा पछै बरस २ नबाब महाबतषांन दिषण परवेज रै मुंहडा आगै[1] थौ सु पातसाह जांहांगीर नुं षुरासांणीये भषाई नै[1] उठा सुं उरौ तेड़ायौ। पातसाह री हजूर सुं संमत १६८२ उमराव सारां नुं फरमांन ले फदाईषांन बीरांनपुर आयौ। साहजादो सारा उमराव नबाब साथे चालण नुं तयार हुवा। बारै डेरा आय कीया। राजाजी डेरै बैठा रहा[१]। तरै साहजादो सारा उमराव बोहोत भलौ मनायौ। दरगाह नुं चालीयौ तरै श्रीजी नुं कही नै रा० राजसिंघजी नुं फिदाईषांन साथे ले लाहोर गयौ। फिदाईषांन लाहोर जाय मुलाजमत करी। रा० राजसिंघ षींवावत नुं श्रीपातसाहजी रै पांवां लगायौ। राजसिंघजी रो फिदाईषांन बोहोत तारीफ कीवी। तिण समै षोजौ अबदलहसन[२] पातसाही दीवांनो कचेड़ी छै। षोजै अबदलहसन मुनसब रौ हिसाब कर नै पातसाहजी सुं मालम कीयौ—मेड़तो राजाजी नुं दरगाही मुनसब मांहे दीयौ न छै। महोबतषांन रायत[३] कर नै साहिजादा कना दीरायौ छै। मेड़तो तागीर में लिषीयौ। पछै फिदाईषांन पातसाहजी सुं मालम कीयौ—राजाजी मुजरौ कीयौ हुतौ, इजाफा रौ उमेदवार हुतौ[2], तठै सांमो मेड़तो कासुं समझ तागीर करौ छौ ? तरै पातसाहजी अबलहसन सुं फेर-फेर कर हुकम कीयौ। मेड़तो बरकरार रषायौ, दांम लाष २०००००० मांहे नै रुपीया ५००००) इजाफै हुवा। इण तरै कर मेड़तो रुपीया २५००००) अढाई लाष मांहे हुवौ।

६९. तठा पछै संमत १६८६ नबाबषांन[४] नुं बीजापुर ऊपर साहजहां पातसाह घणा हींदू मुसलमांन साथे मेलीयौ। तद राजा राजसिंघजी नुं पिण असपषांन साथे मेलीया था सु असपषांन नै

---

१. तरै साहजादो उमराव सारा पाछा आया (अधिक)। २. अबलहुसेन। ३. रवायत। ४. आसबषांन।

---

1. बहका कर। 2. मनसब में वृद्धि का उम्मीदवार था।

राजाजी बणत न हुई । असपषांन पाछो आयो, तरै श्री माहाराजाजी रौ घणौ गिलो कीयौ[1] । तरै धरती सारी मांहे इजाफौ कीयौ[2] । तरै दांम २०००००० इजाफौ वळे मेड़ता माथै कीयौ । सारी रेष दांम १२०००००० तिण रा रुपीया ३०००००) हुवा ।

७०. संमत १६६४ रा जेठ सुदि ३ राजा गजसिंघजी काळ आगरै कीयौ । संमत १६६४ रा आषाढ वदि ७ पातसाह साहजहां राजा श्री जसवंतसिंहजी नुं जोधपुर रौ टीकौ दियौ । तिण दिन दांम लाष २०००००० वळे मेड़तै ऊपर वधोया[3] । तठै दांम १४०००००० हुवा । तिण रा रुपीया ३५००००) हुवा ।

७१. परगने मेड़ता रौ चक[4] संमत १६३० कीरोड़ो कर मूळै मापीयौ थौ । सु कांनुगै रूपचंद हरबंस मंडाई । मेड़ते लारै धरती बीघा लाष २६१२६५६[1] तिण मांहे बाद रा पहाड़ सोर जंगळ नदी नाळा वीघा २१५४३०[2] । बाकी जराईती लाइक बीघा लाष २३९६४२५[3] तिण री विगत—

१२७२१	गांव षेड़ै रा	४५७८५॥१	हौदच
१५६८७॥२	नाळा षोहळा	२४१३८॥१	सोरकलर
१३३४१	नदो	३७२५	सीगदंतो[4]
२३९६४२५॥।३[4]	जराईती[5]	७६९	चाहकुड़ी
२०३२।४	राह	३६३९९[5]	पाहड़ी
११९२१	थळी		

१. २६१२९५८ । २. २१६४३० । ३. २३९६४१ । ४. २३९६४१५॥।३ । ४. सांगदांतो । ५. ५६३९९ ।

1. खूब बुवाई की। 2. कर की रकम बढ़ादी। 3. बढ़े। 4. जमीन का हिस्सा। 5. कृषि योग्य भूमि।

७२. पटी वार धरती बीघा तिण री बिगत—

आसांमी	जुमलो	बाद	हासलीक[१]
कसबे मेड़तौ तथा हवेली	१२५०५०	१३१६१	१११८८९
तफै अणंदपुर	३४४८३०	४८८४८	१२५६२२
,, कलरो	३३८३१५	४४९९९	२९३३१६
,, मोकालो	३९१८४३	३१९२९	३५९९१७
,, राहण	३१६६३०	८४४९	३०८१८१
,, मोडरो	२७६११६	१३७५१[१]	२६२३४६
,, अलतवो	१९४९०६	७३५७	१८७५४९
,, देघांणो	२७२८६७	१३५८३	२५९२८४
,, रेयां	३५२३५७[२]	३३६०७	३१८७९०
	२६१२९५८	२१५७०४	२३९७५२४

७३. परगने मेड़ता रौ कुल सालीणो —

जमै रुपीया बैठा	आसांमी
२९५०१८	संमत १७०१
३८१९०८	संमत १७०२
३३४३९४	संमत १७०३
२०७८३२	संमत १७०४
१६५५९७	संमत १७०५
२७३३०७	संमत १७०६

१. १३७७१। २. ३५२३९७।

१. कर वसूल करने लायक।

१६६३६७	संमत १७०७
२६१७४२	संमत १७०८
३२४६२५	संमत १७०९
१८४१३७	संमत १७१०
३४८३२५	संमत १७११
१८३४१५	संमत १७१२
२५७१६९	संमत १७१३
२४६४११	संमत १७१४
१६९५२०	संमत १७१५
५१२०००	संमत १७१६
५५२३०९[1]	संमत १७१७
५७१३०१	संमत १७१८
३२८५७६	संमत १७१९
१६०५५०॥)	संमत १७२०

७४. परगने मेड़ता रो तफा वार कुल सालीणो—

आसामी	जुमलो	हवेली	आणंदपुर	मोकालो	कलरू
सं० १७०१	२९५०१८)	२२०५१)	४१५३५)	१७७२३)	२१८९२)
सं० १७०२	३८१९०८)	२८४२३)	६८७७७)	४७२००)	२८८०२)
सं० १७०३	३३४३९४)	१९२७०)	७५५८२०)[2]	३३३३४)	१९०३०)
सं० १७०४	२०७८३२)	१२५२७)	५९२६८)	११०९४)	४९५५)[3]
सं० १७०५	१६५५९७)	८७५१)	५०७४०)	७३८९)	२५५१)
सं० १७०६	२७३३०७)	१७६६३)	५८२८३)	१३७९९)	१२५३४)
सं० १७०७	१६६३६७)	९५४४)[4]	५५०९९)	११५०७)	२९१७७)
सं० १७०८	२९१७४२)	१८७४७)	७४९५१)	२९३५९)	१४०७१)
सं० १७०९	३२४६२५)	२६२२७)	६७६२५)	४१९९१)	१९८२०)

१. ५५२३०२)। २. ५७८०२)। ३. ४९९५०)। ४. ९५२४)।

सं० १७१०	१८४१३७)	१४५२६)	३६७५४)	१५०७४)	७५०७)
सं० १७११	३४८३२५)	२४१३५)	६३८५४)	४३८२६)	२२९३८)
सं० १७१२	१८३४१५)	१९६६२)[1]	३८११८)	१९७३४)	९७१३)
सं० १७१३	२५७१६९)	१९६२८)	४८५७१)	४३२४५)	१७४५४)
सं० १७१४	२४६२११)	१८८८५)[2]	४७२२८)	३९००५)	१६५२५)
सं० १७१५	१६९५२०)	१४५०१)	३९८५६)	२३०११)	८७६७)
सं० १७१६	४७९९६५)	३३३३५)	४२५९४)	५९५१०)	३६६२७)
सं० १७१७	५१३३२१)	५१९६)	१३३२४०)	३६२३०)	१७०८१)
सं० १७१८	५४७०७१)	२२२४०)	९६०२०)	७७७३०)	४६१२५)
सं० १७१९	३२८५७६)	१७२२१)	६१३९०)	३४९७१)	१९३९६)
सं० १७२०	१३६९०३॥)	४९८१)	४३७५२)	४७६३॥)	१५९६)
सं० १७२१	१८१६२६)	७३९०)	३१४५४)	१९३६७)	१११११९१)

७४. मेड़ता तफा वार कुल सालीणो —

रेहण[3]	मोडरो	अलतवो
१८३८४)[4]	१३३४)[5]	१६५१४)
२९०२६)[6]	५५५५)[7]	१८००५)
१५०६९)[8]	४५३८२)	१६१८२)
४३७०)[9]	२३१९२)	१११९८)
२०८४)	१३०४०)	८०१०)
१००६८)	३०११५)	१५५५२)
२३६२)	८७९०)	८२२२)[10]
१२२०७)	२९५७४)	१७२०१)
१८९८८)	४४६१३)	२०५२९)[11]
८००७)	२०७९८)	१२१०५)

१. १९६२९) । २. १८८६५) । ३. रायण । ४. १९३४४) । ५. ४१३३४) । ६. १९०२६) । ७. ५५५५५) । ८. १५०९६) । ९. ४७७०) । १०. ८४२२) । ११. २०५३९) ।

रेहण	मोडरो	अलतवो
१८२६५)	५३५३६)	१८७२४)
५४०६)	२५०६३)	७५७०)
९४२०)	३१३०६)	१९३३१)
११७९२)	३१८६६)	१५३६१)
५२३३)	१३४५८)	१३४७९)
३२८३६)	८०९०१)	२०९०५)
१३३६९)	७२५१२)	३१२२४)
३२०९५)[1]	७३९५४)	३३२४२)
२२०२५)	४३५७४)	२०४७८)
२०१४)	७८७८)	१००४८)
९२३१)	२२७२८)	१५३०५)

देघांणो	रेयां
४०४२७)	४७१८८)
२६२५०)[2]	६९८७०)
४१७४८)	६८६२७)
२४९५२)	५६३००)
१४४२५)	५८६००)
३३२२६)	६२०५७)[3]
१४२७४)	५३४८२)
३२०२२)	६३६०९)
३८७२५)	६६०९७)
२०८४४)	४८५२१)

१. ३२०९४) । २. ४६२५०) । ३. ६२०५०) ।

३७०२१)	६६२१६)
२०४८२)	३७६६६)
२२८२२)	४५३५१)[1]
२११५३)	४४६१६)
१७५२९)	३३६८६)
५१०१५)	८२२४३)
७५६२५)	१२८८४७)
६०८७३)	१०४७९२)
३६६२३)	७२९९७)
१२७३३)	४६१३८)
२६१९६)	३८७६४)

७५. परगनौ मेड़तौ षालसै हुवौ छौ तिण री ठीक—

जमै रुपिया	आसांमी	जमै रुपिया	आसांमी
१०५२९२)	सं० १६९२	१२३८३५)[2]	सं० १६९३
१५२४५१)	,, १६९४	११५४७६)	,, १६९५
१९१८४६)	,, १६९६	१३५५८)[3]	,, १६९७
१२४४३५)	,, १६९८	१४२८४५)	,, १६९९
१४५१८२)	,, १७००	१३८१९१)	,, १७०१
२०८६०१)	,, १७०२	१८७१५०)	,, १७०३
१११६६८)	,, १७०४	८६४२५)	,, १७०५
११९९६६)	,, १७०६	७३७४६)	,, १७०७
१९९३५)[4]	,, १७०८	१३६०८०)	,, १७०९
८४६७०)	,, १७१०	१८७४०६)	,, १७११

१. ४५३९१)। २. १२३८५३)। ३. १३५५८०)। ४. १०९९३५)।

११०४९९)	सं० १७१२	१५२४१९)	सं० १७१३
१२४७६०)	,, १७१४	६८७३२)	,, १७१५
१६१३७०)	,, १७१६	१४२३७७)	,, १७१७

रायण	मोडरो	अलतवो	देघांणो	रेयां
२०१४)	७८७८)	१००४८)	१२७३३)	४६१३८)
९२३१)	२२७२८)	१५३०५)	२६१९६)	३८७६४)

७६. परगने मेड़ता री बसती संमत १७२० रा काती मांहे मु० नैणसी मांडी, तिण री विगत—

२५१२ माहाजनां री लांहण—

२१५८ बांणीया—

१३७१ ओसवाळ

५५१ महेसरी

१६१ अगरवाळ

७५ षंडेलवाळ

२१५८

३५४ बीजी जात लाहण[1] भेळी पावै—

२८२ भोजग

४० षत्री

२८ भाट

४ निरतकारी[1]

३५४

२५१२

१. लाहीण।

1. नाचने गाने का पेशा करने वाले।

६६९ बांभण सारी न्यात–

८२ पोकरणा
१३ राजगुर
४२ गूजर गौड़
१४० पारीक
५४ दाहमा
४४ सारसुत[1]
७ संषवाळ उपाधीया
१०५ सिरीमाळी[2]
१४ गुजराती
५० गौड़
७ सनावढ[1]

६६९

५३ कायथां[3] रा घर तेपन छै–

४२ बीसा, ७ दसा, ४ भटनागर।

१ षत्री तोडरमल

१९० रजपूत

२९२ सीपाई–

३१ पठांण
१२४ तुरक सिबंधी[2] तोपची
१२६ देसवाळी
११ काजी

२९२

१. सनावड़। २. तरकसबंध।

1. सारस्वत। 2. श्रीमाली। 3. कायस्थ।

८ गेरू तबाब ईसर रा बेटा ।

२१२४ पवन जाती

११४	दरजी	१८२	माळी
९१	सोनार	९१	सोनार
९७	नाई	९२	तेली
१०	नीलगर	३१	कलाळ
१२	सिकलगर	५१	छींपा
१०	षेलवार	८१	काहार
२७	कसारा ठंठारा	११	लोहार
५४	षाती	३३	घोसी
२३	तंबोळी	१३७	मोची
२०	साबणगर	३०	जटीया वणगर[2]
३४	कुंभार	६०	भड़भूंजा
१८	गांछा	६	तीरगर
३५	बाजदार	११	लषारा
११	भरावा	५७	पींजारा
३८	सिलावट	१०	घांची
१११	धोबी	२१	सोदागर
३	नाळबंध	६	षराधी
२९३	जुलाहा	१०५	मुलतांणी
४४	कसाबगर	२	तबाब
१७	कुंजड़ा	५०	डाकोत
२	चीतारा[1]	८	हमाल

1. चितारे । 2. कपड़े बुनने वाले ।

१ बाजीगर ४ भड़ीहार
४ बाबर नाई १ सरगरो
४५ षटीक ४५ बळाई वणगर
२६ जटीया अंधोड़ी रंगे
२१ नगर-नायकां[1]
७ आचारज षंपण-षोसा

२१२५

११ फकीर घरबारी[2]

७७. १[मेड़ते री बसती रौ गोसवारौ संमत १७२० काती बद १० सुधौ[3]—

आसांमी	जुमले	बसता	छांड गया
बांभण	६६९	६५७	१२
महाजन	२५१२	२५१२	०
कायथ	५४	५४	०
बीजी जात	४९०	४७९	११
पवन जात	२१२५	१९४५	१८०
फकीर	१०	१०	०
	५८६०	५८५७	२०३]

७८. परगने मेड़ता रा कानुगोवां रै पटी इण भांत उणां रै छै—

१. 'ख' प्रति का अंश है।

1. वेश्याएं। 2. घर गहस्थी। 3. तक।

१॥ पटी पंचोळी रूपचंद सूरजमल भींवाणी रै

॥ हवेली

॥ राहण[1]

॥ अणंदपुर

१॥

१॥ पटी पंचोळी हरवंस मांणक भंडारी रै

कलरू[2]

॥ रेयां

१॥

४ पटी छतरसिंघ जादवदास जोगीदास अणंदीदास रां री–

३॥ पटी तौ हेंसै ३ बराबर—

१ बंटौ छतरसिंघ

१ जांदवदास, जोगीदास

१ अणंदीदास

---

३ हेंसै

पटी ३॥ विगत हेंसै ३—

॥ पटी रेयां री जोगीदास[3] पावै, मुहम षिजमत[1] कर–

४

१ पटी कानुगो करमचंद गंगारांम पावै, देघांणो।

---

१. रायण। कलरो। ३. जादुदास।

---

1. फौज में नौकरी देता है।

१ पटी कानुगो गुजरमल रा बेटां पोतां रै पावै, मोकालै—

॥ मोकालो भारमल

॥ लिषमीदास जीवराज पिरथीराज[१]

१ पटी मोकालो

९ पटी इण भांत बांटी छै।

परगने मेड़ता रो अमल दसतूर[1]

७९. संमत १६९१ रा राजा श्री गजसिंघ रै अमल में लेता, घासमारी—

असल जमें इण भांत प्रत रु० १) दुगणी ४०

गाय १	दुगणी	५	
भैंस १	दुगणी	१०	३॥)[२]
बरठो १	दुगणी	४	
झोटे[2] १	दुगणी	८	
छाळी[3] गाडर[4] १	दुगणी	१	
झूंपी	दुगणी	१५	

घासमारी रौ ऊपरले लेषै कोई पईसा हुवै तिण रा रु० १००) लार रु० ५॥), पेहला सही पनरोतरा[5] लेता, संमत १६९२ सहो अठोतरा छोडी, संमत १७०८ सही तीड़ोतरा छोडी ४) षरच चीड़ोतरा १॥) रोकड़ी।

५॥

१. भारमल। लिषमीदास। जीवराज। प्रिथीराज। २. रु० ।)।

1. नवीन राज्याधिकार स्थापित होने के अवसर पर लिया जाने वाला कर। 2. भैंस की बच्ची, छोटी भैंस। 3. बकरी। 4. भेड़। 5. १०५). सौ रुपये पर पांच रुपये।

साष षरीफ सीयाळू ।

भोग आध बंटाई ।

फीयाली कहण नुं सं १ रु० ६।, पिण ७।। लै छै[१] ।

रोकड़ी सीयाळू लारै ।

कड़बी भोग मं० १ द० १ रु० १००) रु० २।।) ।

कड़बी रा रुपियां लेषै कीया हुवै तिण रुपियां १००) प्रतसही[1] दोढोतरा रुपया १।। ।

८०. जबती—

पीयल वणी वीघे १ रुपयो १।=)

तरकारी वीघे १ रुपियो १।=)

बण वीघे १ रु० ।), षरच लागतौ, रु० संमत १६९२ छूटौ ।

काचरे वीघा १ रु० ।) दां० २।।) ।

षरच भोग रै रु० १००) सहीसतोतरा[२] हुतौ । संमत १७०८ राजा जसवंतसिंघजी सहीतीड़ोतरा छूट कीया, बाकी सहीतीड़ोतरा वाजे रकमां षरड़ा री साष बड़ै गांव १ ।

२०) बळ रा तथा २५) । षळा ऊठतां घुघरी दे[2] ।

५) दोत पूजा[3] ।

५) पाठा कागळ[4] ।

२) षरड़ा रा[३] ।

३९

---

१. अधसेरीणो कहेक लै ('ख' प्रति में अधिक-) । २. १०७) । ३. ५) सुध उदोषी, १) फड़ उपाड़णो, १) पोतदार (अधिक) ।

---

1. प्रति सैकड़ा । 2. अनाज निकालने का काय पूरा कर लेने पर कुछ अनाज लगान के रूप में देते हैं । 3. दवात-पूजा । 4. कागज आदि के ।

तिण रा संमत १७१४ असाढ में बडै गांव रु० १०), छोटै गांव रु० ५) कीया।

१ भरोती साष रो रु० १)
१ घांणी रु० १।।।≡)
१ चोहा[1] रु० ।≡)

कणवारीयां री लागै। पेटीयां आटो घीरत पावै। भोग वण १) सेरड़ा, ताली १ दुगोणी ६, बंटै जाई दुगोणी ३, लबायचै रा दु० २) छूट नवै थांन[2] रौ दु० बोरा दु० २) छूटा।

साष ऊनाळू—

भोग

सेंवज पांच दुवा लार कांई नहीं।

कयाली सेंवज पीयल दोनुं लेवै।

पीयल हेंसो ३ लार म० १) भोग सेर १।।।

रोकड़—

अफोण[1] वीघै १ रु० २।।) २।
षरबूजे वीघै १ रु० १)
तरकारी वीघै १ रु० १।=)

इण रेष रड़ैकीया रु० १००) रुपिया ८।।) लागता। तिण मैं सईतोड़ोतरा[3] संमत १७०८ छूटी। सही साढ पीचोतरा रुपिया ५।।) हिमें दै छै।

---

१. वीहावं। २. थांन। ३. १०३)।

---

1. अफीम।

भरोती रुपिया १)

भोग रा रुपिया सही १०७) लागै। तिण मां सही १०३ संमत १७०८ छूटी। बाकी सही १०४ लागै छै।

कणवार[1]—

भोग मण १ लार सेर ऽ१

ऊरी ताली १ सेर ऽ५

बाजै रुपिया ३९ तथा ४० लागता तिण रा संमत १७१४ रुपिया १० बडे गांव लीजै छै। रुपिया ५) छोटै गांव लीजै। बाकी छूट हुवा।

बाजै रकमां देसाई

८१. जागीरदार था गांव ऊतरै तरै तागीरात बळरा लेवै[1]।

पालेज दुधरा बडे गांव रुपिया ६) लेता। हिमें ही बडै गांव ६)। छोटै गांव देष लेवै[2]।

षीचड़ौ सदा जागीरदारां रै गांव लीजै छै। सालीना रु० ६००) तथा ७००) सारै परगने लीजै।

५) बडै गांव ४) तथा ३) तथा २) तथा १)।

पांनचराई ऊटां, सांढां दीठै[3] नग १ रु० १॥), जाट नै बिसनोई नग १ रु० ॥)।

पसायता डोहळीयां[4] रौ षेत षड़ै करसौ तिको हळ १ नै षालसा रा गांवां रौ अणनीकळी कड़ब आध बांटाई बांट लीजै।

---

१. तागीर तलब कुं लेता।

---

1. कणवारिये के खर्चे के लिये। 2. गांव की आमदनी के अनुसार निश्चय कर लिया जाता है। 3. अनुसार। 4. ब्राह्मणों को दान में दी हुई भूमि।

भोग पोंचावै तौ का न लागै[1], नै न्हीं पोंचावै तौ दसकोसी[2] मण १) दुगोणी १) चौकोसी दुगोणी० ॥

---

८२. [[1] । राजा श्रीगजसिंघजी रा वार मांहे इतरी रकम छूटी–

घासमारी ऊघरती जितरा रुपिया लेषै कीया हुता, तिण वांसै दु० १००) लारै दु० १५) लागता । सु संमत १६९२ सुं १०८ राजाजी छोडी ।

जाबती–

वण रै बीघै १ लार दु० ।) षरच रौ लागतौ सु संमत १६९२ राजाजी छोडीया ।

८३. राजाजी जसवंतसिंघजी री वार मांहे इतरी रकम मेड़ता रैत[3] नुं छोडी–

संमत १७०८ मींयां फरासत देस रौ हाकम छै, तद पेहलो रुपिया १००) वांसै रु० ७) षरच रा लागता । तिण मांहे रु० ३) छूट कीया । पछै रु० १००) वांसै ४) लीजै छै ।

संमत १८१४ रा जेठ बद १२ मुं० नैणसी नुं देस री षिजमत[4] सूंपी, तरै नैणसी श्रीमहाराजाजो सुं अरज कर नै छूट कराई–

बांसै साष-साष रौ षरड़ो हुतौ तरै साष १ इतरौ लागतौ–

सांवणु षरड़,

हुजदार री बळ, बडे गांव १ दीठ रु० २०) तथा २५) ।

दोत पूजा ५)

कागळ-पाठ ५)

सुत अधोड़ी ५)

---

१. 'ख' प्रति का अंश ।

---

1. कुछ नहीं लगता । 2. दस कोस की दूरी पर । 3. प्रजा । 4. कार्यभार ।

फड़ उठावणी १) रु०
पोतदारी १)
षरड़ा २)
———
४४

ऊनाळू साष ४४)

तिण रा बडै गांव रु० १०), रु० ५) छोटै गांव कीया सु दोनूं साषे लीजै छै।

८३. संमत १७१८ रै वरस परगनो भा० राजसी सूजावत नुं हुवौ। पछै माह फागण में रैत दरगा जाय फिरीयाद[1] हुवा। तरै उकील मनोहरदास इतरी रकम छोडो, माहाराजाजी कबूल की थी।

षरच से १०४ लागै छै, तिण में सुं १०१) रु० छोडी, तीड़ो राळीजसी।

कणवारीयां री रकम दाती जुहारी ताली १ दु० ।६ लीजती सु छोडी थी।

जाट रै सांढ ऊंट रै नग १ रु० १॥) लागै छै सु सही लै।

जागीरदारे सुं गांव तगीर हुवै छै तरै तागीर रा बळ लै छै, सु नहीं लै।

षेड़ षरच लागतौ सु बगसीयौ[2]।

देवीदास कुल धरोत रौ ऊधरांणो जागीरदार रै गांव जागीरदार रौ लोक करै तिण कनै कुं लै छै, सु नहीं लै, नै षालसा रौ और ढौड़ करण न पावै।

जागीरदारां नुं मेड़ते धांन पोंहचाय देसी।

लाटौ करण कांमदार आवौ तरै आटौ, घी, दांणौ लागै सु लेसी। रोक[3] लेण कुं न पावै।

---

1. बादशाह से फरियाद की। 2. माफ किया। 3. रोकड़।

कड़ब अगले समै ही कुं लेता सु नहीं लै ।

पयादौ तेहसील जाय सु टको १। रोज पावै इधकौ[1] लेण न पावै ।

इण भांत रौ कागळ संमत १७१८ रा फागण बद १ मु० नैणसी अेक वार लिष दीयौ थौ ।

८४. संमत १७१८ रा पौस मांहे गांव ५ तथा १० रा जाट पुकारू[2] गया हुता । तरै वांसै वडेरा मुकादमे तेड़ नै[3] उणां री मु० नैणसी इण भांत दिलासा करनै उण नुं मनावण नुं आदमी वांसै मेलीया था, पण उवे न आया ।

कागळ १ भा० राजसी रतनसी ऊपर लिष दीयौ थौ ।

कणवारीया रौ धांन भोग मण १ वांसै ऽ१ लागै छै सु मण १ वांसै ऽ।। लेसी ।

सांढ ऊंट रु० १।। लागै छै नग १ रु० १ छूट रु० ।।) लेसी, नै मुकाते कम नहीं दै ।

देवीदास रौ ऊधरांणो लागै छै सु षालसा रौ लागै । बीजो गांव करसी तौ सदा दै छै सु देसी, नै जागीरदार रौ लोग जागीरदार रै गांव करै तिण नुं कुं लागै नहीं ।

कड़ब कर वरे बरसतौ बांट दै छै नै सषरै समै ही कड़ब बंट न नीकळी बांट लै छै, सु श्रीजी सुं अरज करसां ।

तठा पछै संमत १७१९ रा बरस मांहे गांव आकेली बावळले चांदारूण लवेरा रा जाट राहीण वळे भेळा हुय पोस मांहे पातसाहजी कनै पुकारू गया । तिण समै दीवांन राजा रुघनाथ छै । सु श्री माहा-राजाजी पण राजा रुघनाथ नुं लिषीयौ—

जाट थका पुकारै छै, पुकारू आया छै, मांहांरै सदामद[4] लेता सु

---

1. अधिक । 2. फरियादी । 3. बुलाकर । 4. हमेशा, पहले से ही ।

लै छै । तरै राजा रूघनाथ आ हकीकत पातसाहजी सुं मालम की । श्री पातसाहजी फुरमायौ, राजा हिसाब अरज करै छै । तरै दीवांन हाफज नासर ऊपर परवाना लिष दीया । राजा गजसिंघ रैं अमल लेता सु तिण में कुं कम जासत हूण पावै नहीं[1] । तरै जाट पाछा आया । अमीन कनै गया ही नहीं । पछै मु० नैणसी हीज समझाया ।

उकील मनोहरदास रकम संमत १७१८ रै बरस छोडी हुती सु सारी देणी की ।

मु० नैणसी कणवार में मण १) भोग वांसै सेर १ लागो छै तिण में ऽ।। छोडीयौ थौ सु देणौ कीयौ ।

संमत १७१४ रा असाढ मांहे बाजे छोडी थी सु और राषी ।

संमत १७०८ रै बरस सै० १०३) छोडी थी सु छूटी, और राषी ।

८५. संमत १७१६ रा बरस थी इण रीत मेड़ते छै—

घास मारी

लागत असल दर			।४०
गाय	१	दु० ।।	।५
चरेऊ	१	दु०	।४
छाळी गाडर	१	दु०	।१
भैंस	१	दु०	।१०
झोटे	१	दु०	।८
झूंपी	१	दु०	।१५

बीजी लागत दु० १००) वांसै से० १०५।।) ४) चीड़ोतरी कदीम[2] तौ से० ११५) हुती । तिण में दु० ८) तौ से० १००) राजा गजसिंघ छोडीया बाकी रु० ७) रह्या था । संमत १७०८ राजा जसवंतसिंघजी

1. कम या अधिक न होने पावे । 2. पहले से चली आती हुई, पुरानी ।

छोडीया से० १०३), हिमें से० १०४) छै।

१।। दोढ़ोतरा रोकड़।

साष सीयाळू फसल षरीफ—

भोग

आध बंटाई । कयाली कहावत में तौ म० १ भोग वांसै से० ऽ। पण कुंई थकौ लै।

रोकड़ लागै—

कड़बी

भोग मण १ दु०। १ कड़बी रो।

मण १०० दु० २।।)

कड़बी रा रुपिया हुवै। तिण से० १००) रु० १।।)।

जबती—

पीयल वण वीघे १ रु० १=)

तरकारो वीघे १ रु० १=)

काचरा वीघे १० रु० ।=)

षरच भोग-भोग वांसै से० १०४) जितरौ भोग हुवै। तिण उनमांन[1]।

बाजै साष १ रु० ४० लागता सु संमत १७१४ रा सुं बडै गांव १ साष १ रु० १०) नै छोटै गांव रु० ५)।

कणवार री रकम—

पटीयो पावे, भोग म० १ से० ऽ१।

---

1. उस अनुमान से।

वांटे जाय, रु० ।=), षळै ऊठतां कुं गूघरी दै ।
दांती जुहारी ताळी १ रु० ।६

भरोती रु० १) साष १
घांणी १ रु० १।।।=)
विहाव रु० ।=)

साष ऊनाळी फसल रबी—
भोग—
सेंवज भोग पांचा दुई लार कुं नहीं ।
पीयल भोग हेंसे ३ लार मण १ सेर ऽ१।।
कयाली

रोकड़—
अफीण बीघे १ रु० २।।)२।
तरकारी बीघे रु० १।=)
षरबूजा बीघे १ रु० १)

जबती इण रै षरड़े कीयां रुपीया हुवै, तिण पहली से० १०८।।) लागती । हिमें से० १०५।।) सें० १०३) छूटो ।
४) चड़ोतरी १।।) दोढ़ोतरी

भोग रा उनमांन कीया से० १०४) लागै ।
भरोती रु० १)
कणवार री रकम
भोग म० १ सेर ऽ१, ऊरी ताली सेर ऽ५ ।

बाजे पहली रु० ४०) लागता, सु संमत १७१४ पछै बडे गांव १

साष अेक रु० १०) छोटै गांव ५) रु० ।

देसाई रकम—

जागीरदार था गांव ऊतरे तरै कुं तागीरात बळ लै ।

दूध पाले जरां बड़े गांव रु० ६) ।

षोचड़ो सदा जागीरदार रै गांवे लीजे छै ।

सालीनो रु० ६००) तथा ७००) री ठौड़ ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५)	४)	३)	२)	१)

पांन चराई ऊंठ सांढ नग १ रु० १॥)

अ्रण नीकळी कड़ब कर वरे बरस बांट लीजै ।]

---

८६. परगने मेड़ते री सींव इण भांत इणां-इणां परगनां रा इणां-इणां गांवां सुं कांकड़[1] लागै—

परगने नागौर रा गांवां सुं,

गांव सीरसलो[1]

गांव पुनावटी[2]

मो० मोटुवास

बुतावाटी[3]

मो० गोठणो[4]

हरसाळो १[5]

मो० रीयां ३[6]

रोहल १

मो० सांडावास[7]

---

१. सरेसलो । २. पुतायटी । ३. पुतायटी । ४. गोठण । ५. हरसालो । ६. रेयां । ७. सुंडावस ।

---

1. सीमा ।

रोहल १॥ धधवाड़ो १

मो॰ दुगोरदास

भूयालो[1] २ दागड़ी २ बछवारी २

मो॰ दुदड़ावास

बछवारी १॥

मो॰ जैतीबास

आकेली १ षुलावटी[2] २

मो॰ छापरी[3]

ओलादण

मो॰ मीठड़ीयो

मांझी १॥ कुतांणी १॥

मोजो डाभड़ी सांवळदास री

सरनावडो १

मो॰ डाभड़ी[4] बडी

मनावड़ो १। नोहदड़ो[5] १।

मो॰ नोहन तीन ३

देवतसर[6] १ मांडो[7] १

मो॰ चांदणी षुरद

बांभणायो १।

मो॰ बरणायो

चौसळी

मो॰ दुगोर छींकणवास

दागड़ो ॥

गांव ढाहो

नीबड़ी ३॥ बुतावाटी[8] २ देसवाल १।

मो॰ मंगळीयावास

---

१. भावलो। २. बुताटी। ३. बड़ी (अधिक)। ४. डोभड़ी। ५. नीहदड़ो। ६. हेबतसर। ७. मांझी। ८. पुतायटी।

रोहल केसो ॥ सीहू केसो ॥

मो० कुंपड़ावास बडौ

गागुरड़ो[1]

मो० बुध री बासणी

गांव

मो० दुगोर अवल

बछबा री

मो० करहो

आकेली

मो० राजोद

वुताबाटी १॥

मो० नेता री वासणी

ओलादण १

मो० भईयो बडौ

कुताणी १॥ नोसर १॥ सरणवाड़ौ[2] १॥

मो० डोभड़ी षुरद

नहुदड़ो

मो० गुदीसर षुरद

बांभणीयो १। प्रबतसर २। (हबतसर)

मो० चांदणी वडो

देवतसर[3] १। बांभणायो १।

मो० चरड़ाबस

बांभणयो

मो० षेरवौ

दागड़ो १।

[4][परगने जोधपुर रा गांवां था सींव—

---

१. गागुड़ो। २. सरनावड़ो। ३. हेबतसर। ४. 'ख' प्रसि का अंश।

षास अणंदपुर
बळुंदो १।। घोड़ारड़ ३
काणेचो
वळुंदो १ कानावास ।।
मो० सीहारा मोजा २
लोहारी ।। कुसांणो १
बोरूंदो
हरीयाडांणो २।।
मो० कुरळाई
हरीयाडांणो ३
मो० मोरीग्रावास
षांषटी
मो० षारीया री वासणी
षांषटी १।।
मो० फालको
बळुंदो
मो० षफाहड़ी
बळुंदो १।। सिणलो २
मो० गडसुरीयो
मादळीयो
मो० सुवांणीयो
मादळीयो १। रिणसी गांव १।।।
हरीयाडांणो १।
मो० डीगरांणो
सिणलो २ हरीयाडांणो २
मो० पालड़ीसिध
षांषटी १।।
मो० षारीयौ षंगार
मो० रतकूड़ीयो १

८७. परगनै जैतारण—

षास अणंदपुर
राबड़ीयाक ३ गेहावस ३ बलायड़ो ३ बांझाकुंड़ी २

मो० कांणेचो
बीकरळाई १ नींबोल लीतरीयो ॥

मो० वानसी
रास १।

मो० कंठमोहर
दयालपुरौ रास २ जगहथोयो १।

मो० षाड़ी
लीतरीयौ १ नीबोल १॥

मो० लांबीयां
बलुपुरौ २॥ राबड़ीयाक २ बलाहड़ो ३

मो० सेहूरियो
रास १

मो० देहूरियो रजपूतां
पाल्यावस ओडुवास बलुपुरौ

मो० अमरपुरौ
बलुपुरौ १ राबड़ीयाक १]

८८. परगनै अजमेर—

मो० डाभड़ी बड़ी
रांमसीयो प्र० प्रबतसर

मो० गहेढो बडौ
दाबड़ीयौ चौरासी रौ १। वेसरोली प्रबतसर १।

मो० पचीपली[1]
हरनावो बाहल रो २
बरनोल बाहल रो २

मो० बलुपुरो

---

१. पचीपलो।

हरनावो वाहल रो बरणेल

मो० मीठवाळीयो[1]

कुरवाड़ो वाहल रौ

मो० ललांणो बडो

झांझीलो १ प्रबतसर री

चीताबो परबतसर १

चोतावी परबतसर १

गूलर वाहल रो १

भादवो परबतसर रौ

हरनावो बाहल १

भादवो परबतसर १

मो० सेहवासी[2]

रांमसीयौ परगने परबतसर रौ

मो० हींगवांणीयो

रांमसीयो परबतसर रा परगने रौ १

डोडीयो १ परबतसर

मोडी चारणां री चौरासी रो १

मो० मोडी वीका

दाबड़ीयो परबतसर रौ १। बेसरोली परबतसर १

मांणवो परबतसर रौ।

मो० षेड़ो अषैराज

बरणेल ॥ जाईल री

मो० आंतरोळी संगा

जावलो वाहल

---

१. वीठवाळीयो: २. सेहरवासी।

मो० सलांणो षुरद
हरनावो वाहल रा १
झांझीला परबतसर १

मो० सीयल भषरी
नरमो हरसोर रौ ॥ भाषरी हरसोर री ॥
कुरवाड़ो ॥ वाहल
जावलो १॥ वाहल

मो० ईटावो षास
मांणवो १ परबतसर रौ
घीघालो १ परबतसर रौ
हरनावो २ वाहल रौ
मो० गोठड़ो
गोवल भोरूंदा रौ
मो० कला पींपाड़ा रौ वास
सुराबस हरसोर रौ २
गोवल भोरूंदा रौ २
नीवड़ो घोठारीयां
सुरावास हरसोर रौ ॥
मो० रोहीसड़ो
भोरूंदो
मो० सूरपुरौ भोरूंदो
मो० वीषरणीयो बडो
गोंवल १॥ भोरूंदो २
मो० पचरंडो
सुराबस १ हरसोर रौ गोवल १ भोरूंदा रौ

मो० भवाल चारणां रौ

हरसोर २।। थाठो हरसोर रौ १।।
सुरावस ।।। हरसोर रौ

मो० लवादर
जावलो १।। राजलोतो १ हरसोर रौ

मो० लाडपुरौ
रांमपुरा थांवळा रौ १

लेसवो थांवळा रौं १

नींबड़ी कलां
राजलोतो हरसोर रौ

मो० रलीग्रावतो चारणां रौ
सुरावस हरसोर रौं १
राजलोतो हरसोर रौ १

मो० गेहडांणो
जांवतो[1] वाहल
ठोहली हरसोर रो
लुणावस हरसोर रौ ।।।
राजलोतो हरसोर रौ

मो० ठहीयावड़ी
मडोवर रौ[2] थाहल[3] रौ

मो० गोपाळपुरौ
थावळो बंवाळ १।।

मो० वीजाथळ
रीछमासी । पीसांगण री १।।

मो० धमणीयो
मंडोवर[4] थांवळा रौ १
कांरो गोवंदगढ़[5] पीसांगण रौ १

---

१. जावलो । २. मंडोवरो । ३. थावला । ४. मंडोवरो । ५. गोयंदगढ़ ।

मो० षीदावास

रिछमाळी पीसांगण री १।

मो नरसिंघ वासणो

थांवळो बवळो[1] १।।

मो० नैंणपुरीयो

रिछमाळो २ कूंपावासणी पीसांगण रा १।।

मो० टैहलो

थांवळा बंवाळ २।।

सुदवाड़ौ मैरूदा रौ १।।

मो० गवारड़ी[2] षुरद

रिछमाळ पीसांगण री ।।

मो० पीपळीयो

रिछमाळी १।

कारो तथा गोवंदगढ १।

---

८९. परगनै मेड़ता रा सांसण गांवां री विगत, गांव ४५।।—

गांव आसांमी

७ राठ बरसिंघ जोधावत दीया छै।

४ बांभणां नुं[3]—

३ पांचड़ोळी रा बास रु० १५००)

पैहलो गांव १ होतौ। पछै भाईबंट[1] बास तीन हुवा, तिकौ मोकालै प्रोहित कान्हा दुदाइत[4] रा जात सीवाड़ नुं तकै मोकालै।

१ गंगादास रो बास

हिमैं प्रो० करन तारावत नै रूपौ तोगावत छै।

---

१. बवाल। २. ग्वार। ३. 'ख' प्रति में रु० २७००) अधिक। ४. रुद्राइत।

---

1. भाइयों के बंट जाने पर।

१ भांना रौ बास

हिमें प्रो० जोगीदास गुणेसौत नै सांवळदास लिषमीदासोत छै।

१ छांछा[1] रौ बास

हिमें प्रो० षींवौ केसोदास[2] नै सांमो जोगा रौ छै।

३

१ टुफली[3] १२००)

प्रो० षीदा कांनावत सिवड़ नुं तफै कलरौ कवळीयां रै बदळै दी[1], हिमें प्रो० राइचंद सुरतांण रौ करण तारावत छै। तफै कलरो।

४

३ चारणां नुं २९००)

१ कावळीयो

तफै आणंदपुर षड़ीया धरमा चांदणोत नुं। हिमें षिड़िया किसना[4] ... ... ।

१ षरहाड़ी ७००)

तफै अणंदपुर, षिड़ीयै लुंभा चंदणोत नुं। हिमें षिड़िया जेसा[5] परबतोत नै। आईदांन भैंरूदासोत छै। तफै आंणदपुर।

१ सीहा री बासणी २००)

तफै कलरो कलीयाणैह[6] नै। जगहट[7] बाबल[8] चांदणोत नुं होती। हिमें कनीयो लषौ उदैसिघोत नै[9] सांगौ हरषावत छै।

३

७

१. छंछा। २. केसा री। ३. टुकड़ी। ४. (किसनदास) केसोदासोत नै कलो भैरूंदासोत रो छै तफै अणंदपुर ५०००) 'ख' प्रति में अधिक। ५. जसो। ६. कलिया गेया। ७. जगहठ। ८. बाषल। ९. दईदांन षरघोत छै नै जगहठ गोयंद गोपाळोत (अधिक)।

1. बदले में दी।

४ रा० दूदै जोधावत दीया—

१ बांभणां नुं—

१ बांभणवास १००)

तफै कलरू रौ। रांमल्हावत[1] गूजरगौड़ नुं। हिमें प्रो० भुधर कान्हावत नै संकर गोपाळोत नुं छै।

---

३ चारणां नुं—

१ बीजोळी[2] १६५०)

तफै आलतवै। बारेट पता देवा ईचोत रोहड़ीया नुं। हिमें बारेट महेसदास चुतरावत नै चवड़ी पंचाइणोत नै ऊदौ परबतोत छै।

१ षांनपुर ५००)

तफै मोडरा। जगहठ पोटले नै, काळा संमरावत रा बेटा नुं। हिमैं चारण चवंडदास हरराजोत नै चारण दुरगो सुरतांणोत छै।

१ परबत रा षेत १५०)

तफै राहण। रतनुं पालीह[3] उदावत नुं। हिमें चारण तिजली[4] सांकरोत छै।

३

१ रा० सीहो बरसिंघोत दीयौ चारण नुं—

१ मोडरीयो

तफै मोडरै। षिड़िया सीहा चंदणोत नुं। हिमें षिड़िया भगवांन जसावत नै महेसदासोत[5] नै नारायणदास अषावत नुं छै।

४ रा० बीरमदे दुदावत दीया—

२ बांभणां नुं—

---

१. ब्रा० रांम तीलावत। २. बाजोली। ३. पाला। ४. तेजसी। ५. स्यामदासोत।

१ षेड़ीचांपा ८००)

तफै मौडरै। प्रो० रांमा डूंगावत जागरावल नुं। हिमें प्रो० जगनाथ चांपावत नै जीवौ सुरतांणोत छै।

१ सांवळीयावास २००)

तफै राहेण। श्रीमाळी व्यास जगनाथ ब्रमदे रा नुं। हिमें प्रो० सारंग गिरधर रौ नै हररांम रुघनाथोत छै।

२

२ चारणां नुं—

१ गेहड़ो षुरद १००)

तफै अलतवै। रतनुं करन सुषावत नुं। हिमें रतनुं रूपौ सुजावत नै जसौ भोजराजोत छै।

१ भवाळी[1] १५०)

तफै दैघांणै। षिड़िया मांडण षींवसरा नुं। हिमें भगवांन जसावत नै नरहर सुजावत छै।

२

४ गांव इण भांत दीया छै।

१ गांव रतनाबास रेष ६५०)

रा० रतनसी दूदावत दीयौ, दत्त चारण मीसण रतनौ डाहावत नुं दीयौ थौ। पछै रा० सुरतांण जैमलोत गांव ले नै आधौ बाहारेट चतुरा जैमलोत नुं दीयौ, आधौ मीसण नुं राषीयौ। हिमें मीसण ऊदो अणदोत छै नै बारैट महेसदास चुतरावत छै।

१ नोबेहेळौ गंगादास रौ रेष २००)

तफै राहण। प्रोहित षीदा कान्हावत नुं। हिमें प्रो० राइचंद

---

१. भवाल।

सुरतांणोत नै करन तारावत सिबड़ छै। दत्त राठौड़ रायमल दूदावत रौ दीयौ छै, बांभणां नुं।

१ मोहलावास रेष ६००)

तफै अणंदपुर। रा० श्रीमालदेजी रौ दीयौ, तद चारण षिड़िया सुरा अचळावत नुं सं० १६१० हिमें षिड़िया चारण षिड़िया कीसनदास केसोदासोत नै भगवांन गोपाळदासोत नै रुघनाथ सादुळोत छै।

१॥ राठौड़ जगमाल वीरमदेवोत रौ दीयौ दत्त बांभणां नुं।

॥ चांवडीयौ आधौ रु० १५००)

तफै मोकाले। प्रो० भांनोदास तेजसीहोत सीवड़ नुं। हिमें प्रो० जोगीदास गुणेसोत नै राजसिंघ सादुळोत नै राघोदास महेसोत छै।

१ गांव जगनाथपुर रु० २००)

तफै रेयां। श्रीमाळी देव[1] जगनाथ सदाफलोत नुं संमत १६१६। हिमें प्रो० मोहण किसनदासोत छै।

१॥

५ राठौड़ जैमल वीरमदेवोत दीया—

२ बांभणां नुं रु० ५५०)

१ गांव दावड़ीयाणी षुरद ४००)

तफै राहण। प्रो० कोल्हण[2] चतरा पोकरणा नुं। हिमें प्रो० रांमचंद डाबर रौ, नै गिरधर तुळछीदास रौ छै।

१ गांव हरभुवासणी रु० १५०)

तफै मोकाले। वीसो[3] गोतम ग्यंनसर मयारीव[4] गोवळवाळ नुं। हिमें प्रो० चक्रपांण वीठळोत नैं विसनो केसा[5] रौ छै।

२

---

१. दवे। २. केवल। ३. व्यास। ४. पारीक। ५. केसर।

३ चारणां नुं–

१ जोधावास षुरद १००)

तफै राहण। वीठु माला ने जावत नुं। हिमें वीठु पीथौ नरसंघ रौ छै।

१ रांमा री वासणी २००)

तफै हवेली। जगहट रांमा धरमावत नुं। हिमें चारण किसनो कलावत छै।

१ रळीयावतौ षुरद १०००)

तफै देघांणै। षेड़ीयो मोटल मांडणोत नुं। हिमें षिड़ीयौ लिषमीदास भैरूंदासोत नै नरहर सूजा रौ छै।

३

- - - - - - - - - -

५

२ रा० सुरतांण जैमलोत दीया चारणां नुं–

१ लुगेयो

तफै रेयां। आढौ दुरसो मेहावत नुं। हिमें आढौ रतनसी डूंगरसीहोत नै देईदांन जगमलोत छै।

१ नेता री वासणी

तफै राहण। रतनुं सांकर हींगोळावत नुं। हिमें रतनुं रांमसिंघ नै...[1]।

२

२ रा० रतन रायमलोत रा दीया चारणां नुं–

१ अचळा रौ षेत रु० १५०)

तफै रांहण। बीरु आषा[2] तेजावत नुं। हिमें विठल कूंपो पंचाईणोत नै उमरौ उदावत छै।

---

१. सूरो कलावत छै। २. वीठू आंबा।

१ जारोड़ो बैणां रु० १००)

तफै राहूण। धधवाड़िया चवड़ी[1] मांडणोत नुं। हिमें ध० सुंदरदास मोहणदास माधोदासोत नै विसनदास सांमदासोत[2] छै।

२

१ रा० नरहरदास ईसरदासोत बांभणां नुं–

१ संधांणो षुरद रु० २५०)

सारगवास तफै रेयां। बाणोपाळ लषावत पारीष गोलवाळ नुं। हिमें प्रो० रेषो पीतंबर रौ नै बलु गोरधन रौ छै।

१ राठौड़ बलभदास[3] सुरतांणोत चारणां नुं–

१ गडसुरीयौ रु० ६००)

तफै मोकालै। धधवाड़ीया मोकै मांडणोत नुं। धधवाड़ीया पिरथीराज सुंदरदासोत[4] नै जगनाथ मनोहरदासोत छै।

१ राठौड़ कान्हीदास केसोदासोत चारणां नुं–

१ धंणां रु० ४५०)

तफै अलतवै। जगहट षींवै वैणीदासोत नुं। हिमें जगहट सुंदर षींवावत छै।

१ रा० जेसो सीहावत बरसिंघदेवोत चारण नुं–

१ राभलावास रु० ४००)

तफै मोकाले रतनु भरम रूपावत नुं। हमें सांवळदास कान्हड़दासोत नै रांमसिंघ सादुळोत छै।

१ राठौड़ सोहसौ तेजसीहोत बरसिंघदेवोत बांभणां नुं—

१ लूणकरण री बासणी[5]

तफै रोयां। प्रोहित गिरधर[6] जीयावत सिवड़ नुं। हिमें प्रो०

---

१. चवड़ा। २. स्यांमदासोत। ३. बलभद्र। ४. सूरदासोत। ५. ८००) रेख (अधिक)। ६. गदाधर।

सांकर रामसिंघ री नै सांमो जोगा री छै ।

६ राजा श्री सुरजसिंघजी रा दीया–

५ चारणां नुं–

१ बछबाय रु० ४५०)

तफै राहण । बारहठ संकर तेजसीहोत रोहड़ीया नुं । हिमें वारहट देवीदास रांमदासोत छै ।

१ ऊंचाहेड़ो ५००)

तफै मोकाले । बाहरठ लषो नाटणोत[1] रोहड़ीया नुं । हिमें ब्रा० आसकरण प्रिथीराजोत गिरधरदासोत छै ।

१ भीलावस ५००)

तफै कलु[2] । बारेट परतापमल नांदणोत नुं । हिमें बा० देईदास प्रतापमलोत छै ।

१ गोदमांवास[3] ५००)

तफै राहण । रतनुं दांना हरदासोत नुं । हिमें चारण सांवळ नंदावत[4] छै, जसावत[5] छै ।

१ गुदेसर[6] ४००)

तफै देघांणै । सांदु सांवतसींह ईसरदास आसकरण माला रा बेटा छै।

५

१ भाट दसोंधीया नुं–

१ मोगावास २००)

तफै देघांणे । भाट सदमन[7] रुपसीहोत नुं । हिमें दसुंधी रिणछोड़

---

१ चांदणोत । २. कलरु । ३. गोमावस । ४. दांनावत । ५. गिरधर जसावत । ६. गुदीसर । ७. मदन ।

दास बीहारीदासोत नै हररांम दमनोत[1] चुतरभुज दुवारकादासोत छै ।

६

१ राजा गजसिंघ रौ दीयौ चारणां नुं—

१ पीथावास ५००)

तफै मोकाले । बारैठ राजसी परतापमलोत रोहड़ीया नुं । हिमें बारैठ कीलांणदास नै कान्हा राजसीहोत छै ।

४ माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी रा दीया—

१ फरासतपुरौ १०००)

तफै मोडरो । श्री बिद्रावन मदनमोहणजी रा सेवग भट्ट बंगाली नुं, बरसोंद मांहे दीयौ ।

१ कमावासणी ३००)

तफै हवेलो । मेड़ते श्री चतुरभुजजो नुं चढ़ायौ ।

१ बांभणां नुं—

१ धुवळीयो ४००)

तफै देघाणे । भट्ट गोकळचन्द नुं[2] ।

१ पीरजादा नुं—

१ षांतोलाहा ५००)

तफै राहण । अजमेर श्रीषुवाजेजी रा पीरजादा नोजरबळी निजाम षुवाज मैहमूद नुं ।

४

४६

६०. परगने मेड़ता रा सांसण रा गांवां री ठीक—

---

१. मदनोत । २. संमत १६१६ अधिक ।

गांव	रु०	आसांमी
१५॥	७७००)	बांभणां नुं
२	१३००)	श्री देवसथांन
१	५००)	पीरजादा नुं
२७	१५०००)	चारणां नुं
१	२००)	भाट नुं
४६॥	२४७००)	

६१. [[1] अथ श्री फलोधी माताजी रा देहूरा री हकीकत लिषीजै छै ।—

आद माताजी रौ देहरौ मांनधाता चक्रवती रौ करायौ—युग रौ जुगादी देहरौ माताजी रौ मंडप छै । तठा पछै तीन जुग वतीत हुवा ।

तठा पछै कळिजुग प्रवत्रीयौ[1] । कळिजुग रा कितराहेक हजार वतीत हुवा । पछै माळव देस रै विषै सेरषांन पातसाह हुवौ । तिण तुरकां नै हुकम कीयौ--जु मेवाड़ देस मांहे जिकेही दुवारा मंड-मंडप होय तिण नै ढाहौ[2] । तरै उवे तुरक ढाहता-ढाहता मेड़ते आय नीकळीया । तरै अठै माताजी-रै देहरै आय नै कछुहीक पाषती रौ मंडप ढाह नै परा गया । पछै जीणऊधोर[3] कीयौ तिण सुरांणा रौ उतपत लीषीजै छै ।

उजीण नगरी मधुदेव पंवार हुतौ । तिण रै सुरदेव, तिणरै सांवळ तिण रै मोळण हुवौ । तिण नै श्री धर्मघोष सुरप्रतबोधी नै जैन धरम कीयौ, सुरांणा गोत्र नांम दीयौ । तिण मोलण रै सालण हुवौ । तिकौ श्री वामदेव राजा सांभर हुवौ, तिण रै मंत्री हुवौ, तिण रै श्रीनिध,

१. 'ख' प्रति का अंश ।

1. प्रकट हुआ । 2. जो भी देवालय आदि हों उन्हें ध्वस्त करो । 3. जीर्णोद्धार ।

तिण रै रासधर, तिण धनेश्वर पद पायौ। तिण रै चांपौ, तिण रै राजसींह, तिण रै गुणधर तिण रै लालौ, तिण रै देवराज, तिण रै हाळो, तिण रै तोलौ, तिण रै गोसल, जिण रै सिवराज हुवौ। तिण सांभर अजमेर दांनसाला मंडाई, संमत १४६५ सुं लै नै १४६६ तांई। रुप मुद्रा दांन दीनी[1]। तिण रै देवराज, तिण रै हेमराज तिण पेहला मालवदे समै पिण देवल ऊधेर कराया छै। पछै तिण माताजी रा देहरा रौ ऊधोर करावण नै मेड़ते आई नै राव जोधा रिणमलोत रौ ढुंढो तिण कना आग्या लेनै माताजी रा देहरा नुं ऊधोर रौ आरंभ कीयौ। तिण हेमराज रै स० पुंजो १ काजो नालो, नरदेव, अै ४ बेटा हुवा। तिण पुंजा रै वाहड़, रणधीर, रणवीर, नाथु अै चार बेटा हुवा। तिण मांहे रणधीर रै देवीदास हुवौ ॥

काजा रै सेहसमल, रणमल अै २ हुवा। नाळा रै सेहसमल, नरदेव रै देवदत्त। इतरा बेटां पोतां सहत स० हेमराज फळवधी माता रा देहरा रै पाषतो मंडप करायौ। प्रतीसटा[2] कीधी संमत १५५५ वरषे पुष[2] नीषत्र[3] कै विषै देहरा री प्रतीसटा कीधी।]

परगनै मेड़ता री फिरसत

६२. तफै हवैली रेब २४१०० गांव १२।

१ कसबौ मेड़तौ

बडौ सहेर, छतीस पवन बसै। पांणी तळाव पीवै। पछै जालै जेघड़ै बेरी २० तथा २५ छै, तठै पीवै। तरकारी हुवै। रकबै बीघौ।

१ कसबो मेड़तो

बांणीया बांभण छत्तीस पवन बसै।

---

1. चांदी की मुद्राएं दान में दी। 2. प्रतिष्ठा। 3, पुष्य। 4. नक्षत्र।

१ डांगाबास

जाट बसै ।

१ सोधावास

जाट तुरक बसै ।

———

३ रेष रुपीया १६०००) रा ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४७६०)	३०१९४)	११६५४)	१८८७०)	१४९६०)

१ पडुषां री बासणी ४००)

रकबै बीघा ११७६ । बरसाळी, षेत काठा धोराबंध सेंवज रा । ढंढ १ छै तिण में बेरी ५ । चांच घणौ, पांणो थोड़ौ, काहर बसै । मेड़ता था कोस २ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४३)	१२७)	६३)	१५८)	९२)

१ मोलावास[1] ६००)

रकबो १८५५ । जाट तुरक अर्घवाही बसै । बरसाळी षेत काठा, धोरा बंधै । सेंवज घणौ । सेझौ नहीं । मेड़ता कोस ३ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२)	५६६)	९०)	१९०)	२७१)

१ सांरग वासणो ४००)

रकबो बीघा २९०४ । जाट बसै । बरसाळी षेत काठा, सेंवज । बेहर मैं कोसीटा ४ हुवै । पांणी थोड़ौ, मेड़ता था कोस २ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१६०)	२४०)	१९८)	१९९)

———

१. मोलावस ।

१ चोषां बासणी २००)

रकबो ६०० । जाट बसै । षेत सषरा कंवळा काठा । कोसेटा दोय हुवै । मेड़ता था कोस २ ।

संसत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१०६)	१६२)	१०५)	५४)

१ भेरीया बासणी १४००)

जाट बसै । सांवणु षेत धोराबंध ऊनाळु कोसेटा ७ तथा ८ घणो रकबै बीघा ९६०० । मेड़ता सुं कोस २ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५५१)	१६४०)	६०९)	१५६१)	७०२)

१ मेघाढंढ २०००)

रकबै बीघा २९०४ । जाट बसै । धोराबंध षेत । सेंवज बीघा १००० गेहूं चिणा । घणो सेझो नहीं । रांहण पीवै । मेड़ता था कोस २ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	३४७)	३०)	२०८)	१५८)

१ सुरढंढ २०००)

ररबो बीघा ३४७७ । जाट बसै । बरसाळी बड़ा धोराबंध षेत । सेंवज गेहूं चिणा । घणो सेझो नहीं । रांहण पीवै, कोस २॥ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८८)	९१७)	४६४)	३६२)	४१३)

१ सुमेर मांगळीयां री २००)

रकबे बीघा १५३६ । जाट बसै । षेत काठा षेतां ४ सेंवज धोरै घणो, कोहर नहीं । दोपेळाही पीवै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	१९१)	१५)	१०६)	४५)

१ पिरथीपुरौ ५००)

रकबो बीघा १३५०। जाट बसै। बरसाळी बडा षेत सेंवज हुवै। कोसेटा ७ तथा ८ हुवै। पहली रैंबारीयां री वासणी नांवै हुती। मेड़ता था कोस २।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८९)	२५२)	३५९)	१९९)	१३६)

१ करमा वासणी २००)

रकबो १३५०। सारंगवासणी भेळी। करसा जाट घर ४ बसै। बरसाळी षेत बडा। सेंवज गेहूं हुवै। कोसेटा ४ तथा ५ हुवै। संमत १६१५ श्री चत्रभुजजी रै देहवरै चढ़ाई[1]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४)	२०१)	१७२)	५६)	६२)

१ रांमा चारणां री बासणी २००)

सांसण राटौड़ जैमल बीरमदेयोत रौ, सांसण रौ दत्त जगहठ रांमा धरमावत नुं। रकबो ८५०। षेत काठा मगरो बैहर। कोसेटा ४, सेंवज गेहूं चणा हुवै। हमैं किसनो कलावत छै, तिके षेत अडाणै मारीया[2]। कसबै सुं कोस २।

विगत अडांणा मारीयां नै बेचीयां री—

४५०) बांभण कचरा भोमा नुं, वेचीया अडाणा रुपीया २५०), बेचारू १५०) रुपया २००) भोगळगावै १००)।

२५०) सा० बीठळदास रै भोगळावत रु० २५०)।

१००) सां० नराईण जैराजोत रै भोगळावै रु० ४१)।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१२१)	१६५)	२२७)	१२९)

---

1. चत्रभुजजी के मंदिर के लिये अर्पित करदी। 2. रहन रख दिये।

२३९००) षालसै ।

२००) सांसण ।

२४१००)

९३. तफै अणंदपुर रेष रु० ११३८५०)

१ अणंदपुर षास ९०००)

रकबो बीघा कर ५३१, बडा षेत । रेल सेंवज जव चिणा घणा हुवै । कोसेटा २०० अरट ढीबड़ा २०, जाट माहाजन सगळी पवन जात बसै । निपट बडो गांव । मेड़ता था कोस ९ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४७८४)	९९९६)	१७१०)	९१८२)	७०३२)

केकीदर[1] ६०००)

रकबो बीघा २४४१७ । बड़ा षेत । घणै मेह सेंवज गेहूं हुवै । कोसेटा २०० तथा २५० अरट ढीबड़ा १० हुवै । जाट माहाजन और ही लोग बसै । मेड़ता थी कोस ८ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३९१८)	६५४७)	३६००)	४४३१)	४३२४)

१ लांबीया ८०००)

रकबो ४२७३६ । सेंवज चिणा गेहूं रेल रा षेतां हुवै । षेतां कोसेटा २०० तथा २५०, पांणी नेड़ो । जाट माहाजन सगळी[1] पवन बसै । मेड़ता था कोस ९ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४८७१)	८०९०)	१४१६१)	८३७५)	७७८२)[2]

१. केकीद । २. १७८२) ।

I. सभी ।

१ भवाळ[1] ६०००)

रकबो ६०४८ । बड़ा षेत, सेंवज गेहूं चिणा हुवै । कोसेटा १५० तथा २०० । जाट बांणीया बसै । मेड़ता था कोस ६ ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२२७६) ७६७८) ७७२८) ३७८२) ४३४२)[2]

१ रोहीसो ७०००)

रकबो बीघा ६१२६ । बरसाळी धोराबंध षेत । कोसेटा १२५ तथा १३० हुवै । जाट बसै । बडो गांव । कोस ८ ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२६३३) २२३२) ४४७४) १०८७९) ४९३०)

१ लाडवो ४०००)

मेड़ता था कोस ६ । रकबो ४१५० । षेत धोराबंध । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । कोसेटा ५० तथा ६० हुवै । भलो गांव । जाट बांणीया बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२१९०) १९३३) ३३३६) ६८२७) ५१५०)

१ नीलीयां ७०००)

कोस ६ । रकबो २३१७२ । षेत निपट सषरा धोराबंध । सारी सींव मांहे सेंवज गेहूं चिणा हुवै । कोसेटो २० तथा २५ । पांणी ऊंडो हाथ २५ घणो । जाट बसै[3] ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
३७०) ३०००) २२३३) ३६८१) ८९६)

१ रोहीसो ३०००)

कोस ८ । रकबो बीघा ४५०० । षेत कंवळा । सेंवज गेहूं चिणा

---

१. भोवाल । २. ४३४३) । ३. बडौ गांव (अधिक) ।

हुवै । ऊनाळी कोसीटा १०५ तथा ११० हुवै । सारी सींव मांहे सेझौ । पांणी हाथ १० तथा १५ । बडौ गांव । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६८३)[1]	३८५०)	५२२७)	४०९९)[2]	२४१२)

१ कांणेचौ २०००)

कोस १० । रकबो २६८८ । षेत सषरा, धोरा । सेंवज गेहूं चिणा बीघा ५०० । कोसेटा ३० ढोबड़ा १० हुवै । भलो गांव । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१९४५)	८२८)	१५८०)	३५२८)	२८२५)

१ जसवंतावाद २२००)

कोस ६ । रकबो बीघा ...... । षेत धोराबंध । सेंवज गोहूं चिणा हुवै । ऊनाळो कोसेटा ६० तथा ८० । अरट ४ हुवै । संमत १७०० केकीदरी सींव मांहे । जाट जोगी बसाई । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४३१)	३०४१)	३२४२)	३०५२)	१४२२)

१ गेयलीयावास[3] ४००)

कोस ६ । रकबो १००४०[4] । बड़ा धोराबंध षेत । सारी सींव मांहे काठा गेहूं हुवै । सेझौ नहीं । तळाव पांणी षूटै तरै जसवंताबाद धनेरीया नील पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५२०)	३०००)	३७२)	२९५७)	९५१)

१ फालकी २२००)

कोस ७ । रकाबो ७९२० । षेत सषरा धोराबंध । सेंवज गेहूं बीघा ५०० तथा ७०० हुवै । सेझौ नहीं । तळाव पांणी षूटै तरै फालके आकोदीये पोवै जाट बसै ।

---

१. १६८७) । २. ३९९९) । ३. गेमलियावास । ४. १००४ ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१८६) १२३७) ५८७) १८९६) ४९५)

१ वडालो ५०००)

रकबौ बीघा ८८९ । बड़ा धोराबंध षेत । कोसेटा ८० तथा ९० हुवै । कसबा सुं कोस ६ । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१६५३)[1] ३३६६) ६७३७)[2] ४६५०) २९१०)[3]

१ केकीदड़ो ५०००)

मेड़ता था कोस ७ । रकबो १०६८५ । षेत सषरा, सेंज चिणा हुवै । ऊनाळु कोसेटा ७० तथा ८० हुवै । सेझौ घणौ । भलौ गांव, जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२७१९) ४९४९) ५३२९) ४०८८) ३६३३)

१ धनेरीयो सुक ५०००)

मेड़ता था कोस १० । रकबो २१७८० । बरसाळी षेत धोराबंध काठा । सेंवज मगरै चिणा गेहूं । कोसेटा ४० तथा ४५ हुवै । पांणी ऊंडौ हाथ २५ तथा ३० । जाट रजपूत बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२८४)[4] ३६५४) २९६२) २०१०) १०८६)[5]

१ सेहरीयो ४५००)

मेड़ता था कोस १२ । रकबो १७८८७ । षेत काठा । मगरै सेंवज चिणा हुवै । कोसेटा १०० तथा १२५ हुवै । सारी सींव मांहे पांणी घणौ । कांठा री गांव[1] । बसी रा लोक, राठौड़ केसरषांन नाहरषांनोत । बसी नै जाट बसै ।

---

१. १६१३) । २. ६८६७) । ३. २८९०) । ४. १२९४) । ५. १०४६) ।

---

1. सीमा पर स्थित गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२४३)	२०४३)	६९३८)	४१६२)	२८६६)

१ महेड़ावास ३०००)

कोस ७। रकबो ११३५३। षेत कंवळा काठा। सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळी कोसेटा ५० तथा ६० हुवै। सेझौ घणौ। जाट बसै। भलौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११७६)	२५५२)	४०७८)	२७६१)	१९९६)

१ फालको बडौ २५००)

कोस ८। रकबौ १४४३५। षेत धोराबंध। ऊनाळी सेझौ। कोसीटा ५ तथा ७। पांणी थोड़ौ। सेंवज गेहूं चिणा सारी सींव मांहे हुवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९१७)	३८४२)	१५२५)	२२४३)	९७५)

१ षारची २२००)

कोस ७। रकबो ३४४२[1]। षेत सषरा। सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळी कोसेटा २ पटी[2] ढीबड़ा ५ हुवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६८८)	१४८८)	२०१८)	२०३२)	१०३५)

१ वांकावास ३०००)

मेड़ता था कोस ७। रकबो २५६२। षेत सषरा काठा कंवळा रुड़ा। सेंवज चिणा गोहूं अरट ६ कोसीटा १५ हुवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३८७)	५२३)	१५२८)	९७९)	४३२)

---

१. ३४३४)। २. २५ (कोसेटा)।

१ कठमौहोर[१] २६००)

कोस १० । रकबौ ५७६६[२] । षेत सषरा[३], सेंवज चिणा सगळी सींव मांहे हुवै । कोसीटा २५ तथा ३० हुवै । पांणी घणौ । लांबीया भेळौ वास । जाट घर २० तथा २५ । सषरौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५१३)	६१४)[४]	६९०)[५]	९६६)	८२०)

१ सूरपुरौ १५००)

कोस ९ । रकबो ——— । षेत सषरा । सेंवज गोहूं चिणा हुवै । कोसेटा २५ तथा ३० हुवै । पांणी सेझौ[1] । सारी सींव में जाट बसै । राजा सूरसिंघजी री वार में[2] नवौ गांव लांबीया री सींव मांहे बसीयौ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३२९)	५७१)	१०००)	१२०१)	८७३)

१ वानसी[६] २१००)

कोस १३, रकबो ३७५० । षेत कंवळा सषरा । सेंवज चिणा हुवै, कोसेटा ४० तथा ५० हुवै । सगळी सींव मांहे पांणी घणौ । जाट घर २५, बीजा पाही सेहरीया[७] रा लोक करै[3] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४३२)	७२३)	२५८२)	१८२२)	७५६)

१ ओडुवास[८] १५००)

कौस ९, रकबो ४०५६, षेत सषरा काठा । सेंवज चिणा हुवै । कोसेटा ७ तथा ८ हुवै । कांठा रौ गांव । निषालस जाट बसै ।

---

१. कठमोर । २. ९६१० । ३. मगरा रा । ४. ५१४) । ५. ५९०) । ६. बानसी । ७. सेहूरिया । ८. छोडुवास ।

---

1. पृथ्वी तल में पानी है । 2. समय में । 3. खेती करते हैं ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१७६)	३६६)	६१८)	९११)	२१५)

१ तीघरो १२००)

कोस ८, रकबो ३११६ । षेत सषरा काठा । सेंवज चिणा हुवै । कोसेटा २० ढीबड़ी ४ हुवै । जाट बसै । भलौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०८)	८७३)	१४६३)	१५२२)	७३६)

१ देहरीयो जाटां रौ १५००)

कोस ७ । रकबो बीघा २२६६ । षेत अजायेब रुड़ा[1] काठा । कंवळा । सेंवज चिणा ढीबड़ा ७ हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९२९)	१०२२)	१८२५)	१७६६)	८१६)

१ टीबड़ी[1] ४००)

कोस ७ । रकबो ४७५१ । षेत कंवळा थळी रा । ऊनाळी को नहीं[2] । नाडी षूटै तरै तीघर पीवै[2] । जाट रजपूत घर १० बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५५)	१५१)	१५२)	३११)	५५)[3]

१ लषमणीयावास ३००)

रकबो[4] १९८७ । षेत सषरौ । ऊनाळी नहीं । षेडौ घण बरसा रौ सूनौ[5], वसीवांन लोग कोई नहीं । गांव केकीदड़े रा लोग पाही थका षेत षड़ै ।

---

१. ढीबड़ी । २. कोहर नहीं । ३. ९५) । ४. इससे पहलें—मेड़ता थी कोस ८ ।

---

1. असाधारण व अच्छे खेत । 2. तलाई में पानी समाप्त होने पर तीघर गांव में पानी पीते हैं । 5. कई वर्षों से गांव में बस्ती नहीं ।

संमत १७२५   १६   १७   १८   १९
२०)   ४०)   ०)   १०१)   ५०)

१ हीगवाणीयो

लांबीहो[1] मांह माजरै षड़ीजै । रकबो ११९६ । षेत लांबीया रा लोक षड़ै ।

१ भुभळीयो   २५००)

रकबो[2] १२६९६ । षेत अजाईब धोरा सेंवज गेहूं कठै-कठै हुवै[1] । ऊनाळी कोसेटा ५ तथा ७ हुवै । पांणी चोषौ[2] । जाट घर १०, बीजा जागीरदार री बसी रहै । कांठा रौ गांव ।

संवत १७१५   १६   १७   १८   १९
६६४)   ३५२)   ७२७)   ५३३)   ८०९)

१ फालको पींपाड़[3] रौ   १५००)

कोस ९, रकबो ६६१३ । षेत कंवळा । सेंवज चिणा हुवै । सेझौ नहीं । तळाव पांणी षूटे तरै फालके आकोदरोये पीवें । जाट बसै ।

संमत १७१५   १६   १७   १८   १९
१३६)   २१२)   ५८७)   ५९६)   २९५)

१ फालको आकोधीया रौ   १३००)

कोस ८, रकबो ४०५६ । षेत सषरा कंवळा । सेंवज चिणा हुवै । कोसेटा ३० ढीबड़ा ८ । जाट बसै ।

संमत १७१५   १६   १७   १८   १९
२४३)   ८२३)   ४२८)   ११८६)   ६२६)

१ अमरपुरौ   ७००)

मेड़ता सुं कोस १० । रकबो बीघा लांबीया री सींव मांहे बसीयो

१. लांबीया । २. इसके पहले—मेड़ता थी कोस ९ । ३. पींपाड़ा री ।

1. कहीं-कहीं गेहूं होते हैं । 2. अच्छा ।

षेत सषरा काठा। चिणा सेंवज हुवै। ऊनाळी कोसेटा ७ तथा ८ हुवै। जाट घर ४ बसी रा रजपूत बसै। कांठा रौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२९३)	४१९)	११११४)	१३१५)	४१९)

१ गजसिंघपुरौ षुरद

काळु रुघनाथ री बसी। काहाबे रकाबो ——। षेत ऊनाळी आणंदपुर भेळा। बसती घर ४०, जाट नै रुघनाथ री बसी छै। आणंदपुर सुं कोस ०॥।

१ देहरीयो रजपूतां रौ ६५०)

रकबो ६१४१[1]। षेत कंवळा, काठा सषरा। सेंवज चिणा गोहूं १५० हुवै। कोसेटा ५ तथा ६ हुवै। षेड़ौ सूनो, वसीवांन लोग कोई नहीं। सेहरीये रा सरा रजपूत षेत षड़ै।

३६

तिण में गांव ३३ बसता आबादान[1] गांव ३ वेरांन।

९४. ३ सांसण चारणां नुं–

१ गांव कांवळीयां २०००)

रा० वरसिंघ जोधावत रौ दत्त। षड़ीया धरमो चांदणोत लाधौ। हिमें किसनदास केसौदासोत सांवळ झांझणोत भैरुंदास छै। रकबो ३७५०। षेत कंवळा। चांच कोसेटा २०० तांई हुवै। सारी सींव मांहे सेझौ। पांणी घणौ। चारण जाट बांणीया बसै। बास ४, कोस ८।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५०)[2]	२१४०)	४०४०)	३०४१)	२२३१)

१. ६१४४। २. ३५०)।

1. बस्ती वाले।

१ षारड़ी ७००)

रा० वगसिंघ जोधावत रौ दत्त। षिड़या लुंभा चांदणोत नुं। हिमें भगवांन ईसर रौ, वेणीदास चुतरा रौ आईदान भैरू रौ छै। रकबो बीघा ११४४६। वरसाळी षेत धोराबंध[1]। चिणा गेहूं हुवै। ऊनाळी कोसेटा १० हुवै। अरठ ७ चांच २० हुवै। चारण जाट बांभण बसै। कोस ७।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२५)	१३४२)	२५२५)	२५२६)	१३३०)

१ मोहलवास ९००)

श्री मालदेजी रौ दत्त। षिड़या सूरा अचळावत नुं, संमत १६१० दीयौ। हिमें किसनदास केसोदासोत, जसौ नराईणोत छै। रकबो १४७२। षेत सषरा सगळौ सींव मांहे सेझो। पांणो घणौ। कोसेटा ४० षेड़ौ सूनौ, कंबळीया भेळौ बसै[2]। जाट घर ४० करसा छै। चारणां रौ बंट[3] छै। सूरै रा बटा पोतरां नुं बंट छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५०)	५६२)	१४११)	७०२)	५०५)

३

३६

३९ गांव अणंदपुर रा, ३३ षालसै, ३ सांसण, ३ सूना। जुमले रेष ११३८५०) में।

११०२५०) षालसै।

३६ गांव ३६००) सांसण ३।

---

1. बड़ी मेड़बन्दी किए हुए। 2. कंवलिया ग्राम के शामिल इसकी जनता भी बसती है। 3. हिस्सा।

९५. तफै मोकालो षास रा गांव ४५, रेष ८९४५०) ।

१ मोकालो षास ५०००)

रकबो २१६०० । षेत धोराबंध । गेहूं चिणा हुवै । कोसेटा ४० तथा ५० हुवै । सेंवज जाट बसै । कोस ३ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६१९)	४६५२)[१]	४४४६)	४४४६)	२६८६)

१ कांकड़षी[२] ४०००)

रकबो १२५८६, षेत धोराबंध । सेंवज काठा गेहूं हुवै । सेझौ नहीं । गांव कोहर[1] नहीं । तळाव पांणी षूटै तरै हिरणषुरी पीवै । जाट बसै । बड़ौ गांव, कोस ४ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३६१)	५०६४)	१०५६)	४०६७)[३]	२८०६)

१ कुरळाई ४०००)

रकबौ[४] २९५६८ । बड़ा षेत धोराबंध सेंवज गेहूं हुवै । सेझो नहीं । कोहर १ षारौ पांणी पीवै । जाट बसै । बडो गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०६२)	२०९८)	१३२८)	४११२)	१३१३)

१ कायथ वास[५] ४०००)

रकबो ८७७८, बडा षेत, धोराबंध । गेहूं चिणा सेंवज । कोसेटा २१ । पांणी थोड़ौ । जाट बसै । कोस २ ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५१)[६]	२३६४)	२१०५)	२३३७)	१५७३)

---

१. ४६९२) । २. काकुड़षी । ३. ४२६७) । ४. इसके पहले मेड़ता था कोस ७ । ५. २१५२७ । ६. वसणी ।

---

1. कुआ ।

१ बोरूंदौ ४०००)

रकबो २५३५० । षेत सषरा । ऊनाळी बीघा १५०० । काठा गेहूं चिणा हुवै । सेझो नहीं । कोहर १ छै तठै पीवै । जाट बांणीया बसै । कोस ८ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८४४)	३८४५)	१८८७)	४४३२)	२२४७)

१ मुगदड़ो ४०००)

रकबो[१] ६९३६, बडा धोराबंध षेत । सेंवज गेहूं काठा[1] बीघा २००० हुवै । सेझौ नहीं । तळाव पांणी षूटै[2] तरां फालकै आकोधी पीवै । जाट बसै । कोस ६ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३३४)	१५९२)	२२०)	३२३५)	१२६१)

१ डहूकीयौ[२] २५००)

रकबो ६१४४, षेत काठा मगरा । ऊनाळी कोसेटा २०, जाट बसै । कोस ४॥ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१९५)	१२६७)	१३८१)	१४४२)	१५१७)

१ पुनलो[३] २५००)

कोस ५, रकबो २४७२५ । षेत धोराबंध । सेंवज बीघा १०० हुवै । बीजा काठा मगरा । ऊनाळी अरट २ कोसेटा १५, चांच ४ । धोरै जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५२४)	१२२१)	१२१०)	१४६०)	४८२)

१. इसके पहले—कसबा था कोस ६ । २. डुहकियौ । ३. पुनलु ।

1. गेहू की एक किस्म । 2. पानी समाप्त होने पर ।

१ चोकड़ी षुरद २०००)

कोस १०॥[1] रकबो ४७०४। षेत काठो मगरा रा। ऊनाळी अरट ८ कोसेटा ५, चांच ५। वसीवांन लोक कोई नहीं। जागीरदार री बसी रा लोक बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६३)	५५३)	२६२९)	१५१८)	६१७)

१ ईदावड ५०००)

रकबो २०५२७[2], षेत धोराबंध। घणै मेहां सेंवज हुवै[1]। कोसेटा ४ ऊनाळी रा हुवै। जाट बसै। कोस ४।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१२५)	३६८०)	१०५७)	५७६०)	२४४२)

१ बडगांव ४५००)

रकबो १४४०७, बडा षेत धोराबंध। काठा गेहूं हुवै। सेझो नहीं लुणीयावास रै कोहर मांहे तीवण[2] १ बड गांव री जठै पीवै। जाट बसै। कोस ५।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४२०)	४८०४)	२३०७)	५५५१)	२५१३)

१ धनेरीयो नील ३०००)

रकबो २१४६४। षेत धोराबंध, सेंवज गेहूं चिणा हुवै। कोसेटा ४० हुवै। जाट बसै। कसबा सुं कोस ४॥।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१४)	४९०५)	४१६२)	३७९३)	२०६७)

---

१. १॥। २. २१५२७।

---

1. अधिक वर्षा होने पर सेंवज (गेहूं चने) होती है। 2. कुए में से पानी निकलने की निश्चित समय।

१ आकेहली[१] ६०००)

रकबो ११३१० । बडा धोराबंध षेत । सारी सींव मांहे काठा गेहूं हुवै । सेझौ नहीं । कोहर नहीं । जाट बसै । कोस ३[२] ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५६८)	३३९०)	१९१३)	३१८०)	१७९६)

१ षुवासपुरौ ५०००)

रकबो १८८१६ । षेत सषरा । ऊनाळी अरट १० कोसेटा २५ चांच ३० । धुव[1] मांहे मेड़ता था कोस १५[३] । जाट बसै । भलौ गांव[२] ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	५८१)	१७१०)	२२५८)	११८५)	५१०)

१ गगराणो[४] ३०००)

रकबो १५००० । बडा धोराबंध षेत । सेंवज बीघा १२०० काठा गेहूं हुवै । तळाब बरसोंदीयो[3] पांणी रहै । कोहर १ पीवण रौ[4] हाथ ३० । मेड़ता था कोस ५।।, जाट बसै । जैतमालोत री बसी ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५८२)	२५७१)	५७२)	३३६१)	१३६७)

१ चुंधीया २०००)

कोस २ । रकबो ११६१६ । षेत मगरा रा काठा । ऊनाळी कोसेटा १०, पांणी मोटो चोढो । जाट बसै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३३१)	१०९०)	८३९)	१६९६)	४९५)

१. आकेली । २. बड़ो गाव । ३. ५ । ४. गगडाणो ।

1. उत्तर दिशा । 2. अच्छा गांव । 3. वर्ष भर के लिए । 4. पानी पीने के लिए ।

१ चोकड़ी बडी ३०००)

कोस १०, रकबौ ५००० । षेत काठा मगरा रा । ऊनाळी अरट १० । कोसेटा १५ चांच १० । धोरा, बसीवांन लोक थोड़ो[1] । रा० प्रथीराज करमसोत री वसी ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३३७)	५०३)	१४३०)	२४२८)	७१९)

१ सीहा रौ बडौ १०००)

कोस ११, रकबो ४००० । षेत सषरा । ऊनाळी अरट ४, कोसीटा १०, चांच १० । बसी रा लोक जाट रजपूत बसै । जागीरदार रा लोक रहै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०८)	१२१)	१३४१)	९३६)	४४९)

१ बीटण ४०००)

कोस ७ । रकबो ९६०० । बडा धोराबंध षेत । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । सेझो नहीं । तळाव पांणी पीवै । षूटै तहारां कोहर १ बांधीयो छै तठै पीवै । पांणी मोटो । जाट बांणीया बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४११)	१७७५)	२७३०)	२३३८)	७८८)

१ लुणीयावास १०००)

रकबो १२१५० । षेत धोराबंध । गेहूं चिणा बीघा ४०० । सेझो नहीं । कोहर १ पांणी घणौ । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५१७)	६३३)	२३५)	१०३८)	३३२)

१ कछवाहां री बासणी १०००)

रकबो ४०८७ । षेत सषरा । सेवज गेहूं चिणा हुवै । सेझो नहीं ।

1. बस्ती में लोग कम हैं ।

कोहर १ नवौ संवत १७१६ षुणायौ[1] । पांणी घणौ । जाट बसै । कसबा सुं कोस ५ ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५६२) १०३४) १००) १२९६) २३३)[1]

१ बाईड[2] १५००)

कोस ६ । रकबौ ८६८५ । षेत धोरा मगरा बडा षेत । सेंवज चिणा हुवै । सेभो नहीं । जगड़ारण[3] रा तोवण १, कोहर पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१७४४) २११०) ३२१) ३१३२) ९९६)

१ सीवाणोयो १०००)

कोस १२ । रकबो ५७६६ । षेत रूड़ा[2], सेंवज चिणा षेत ४ हुवै, सेभो नहीं । कोहर १ हाथ ४० पांणी थोड़ो । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
६५) १२०) १००) २०६) ६६)

१ समदोळाव षुरद ६००)

रकबो ६३३३ । षेत सषरा धोराबंध । सेंवज गेहूं हुवै । कोसेटा ४ पांणी थोड़ो । जाट बसै । मेड़ता सुं कोस ३ ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
११) २०७) ९९) ४४३) २०७)

१ जेसा सोळंषी री वासणी २००)

रकबो ६०० । षेत मगरा रूड़ा । कोसेटा २ । पांणी थोड़ो । जाट बसै । कोस २ कसबा सुं ।

१. १७४४) २११०) ३२१) ३१३२) ९९६) । २. बायड़ । ३. गगडाण ।

1. खुदवाया । 2. अच्छे, उपजाऊ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६)	१२०)	५६)	६३)	४०)

१ सीहावास ५००)

कोस २॥, रकबो ९५० । षेत सषरा । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । कोसेटा ३ पांणी थोड़ो । जाट रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५)	२०६)[1]	२४७)	३८७)[2]	१३१)

१ बैणावास सूनो षेड़ो २००)

रकबो ७२० । षेत सषरा । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । सेझी नहीं । काहथ[3] वासणी रा लोक बाहै[1] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	४१)	१११)[4]	६५)	१५१)

---

१ सीहारो षुरद ८००)

रकबौ ४४६६ । षेत सषरा । सेंवज चिणा । ऊनाळी अरट ३ कोसेटा ५ धोराबंध हुवै । गांव भेळौ हीज बसै । वसीवांन लोक कोई नहीं । जगीरदार री वसी रा लोक जाट बसै, बांणीया रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०५)[5]	४३१)	१२०९)	८६६)	४४१)

१ डीगरांणो २०००)

कोस ९ । रकबो ९६०० । षेत धोराबंध । सेंवज गेहूं चिणा बीघा ५०० । सेझौ नहीं । कोहर बंधवो[2], पांणी पीवै । जाट रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७०)	११४)	५४२)	२२०२)	४९२)

---

१. २५६) । २. ३८६) । ३. कायथ । ४. १०१) । ५. १०५) ।

---

1. खेत जोतते हैं । 2. कुआ पक्का बंधा हुआ है ।

१ हिरण पुरी[१] ४००)

कोस ४। रकबौ ३४५६। षेत सषरा धोराबंध। सेंवज बीघा २०० गेहूं चिणा हुवै। सेझौ नहीं। तळाव रै बेरै पीवै[1]। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३९)	५२१)	१८०)	६६६)	४१५)

१ सेषा वासणी ५००)

कोस ४। रकबो १९१४। मगरा सेंवज चिणा गेहूं हुवै। ऊनाळी कोसेटा ३, पांणी थोड़ौ हुवै, हाथ २५। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९४)	२३३)	१२७)	२९८)	१५४)

१ घोड़ाहट ५००)

मेड़ता था कोस ९। रकबो १७५०। षेत सषरा मगरा रा घणै मेह[2] चिणा षेत ४ हुवै। कोसोटा ४, पांणी थोड़ौ। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	४९२)	२१२)	४५६)	१२२)

१ समदोळाव बडौ १०००)

रकबो ६६३३। षेत धोराबंध। सेंवज चिणा गोहूं हुवै। सेझो नहीं। कोहर नहीं। केकीद पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	३२२)	११३)	५४१)	२८१)

१ ऊंचीयाहेड़ो षुरद ७००)

रकबो ९३७४। षेत सषरा। सेंवज गेहूं चिणा हुवै। सेझौ कोहर नहीं। भुरावासणी पीवै। जाट बसै। कसबा सुं कोस ३।

---

१. हिरणपुर।

---

1. तालाब के अन्दर खुदी हुई बेरियों से लाकर पीते हैं। 2. अधिक वर्षा होने पर।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	२६०)	४५)	४११)	२१०)

१ भांनावास ५००)

कोस २॥। रकबो ———। षेत मगरा काठा। सेंवज हुवै। कोसेटा ६ तथा ७ हुवै। पांणी चोषो। जाट बसै। चुंधीयां भेळा बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	३५५)	२०७)	३५६)	१२५)

१ चांवंडीयो आधो १५००)

रकबो ३८०० आधो गांव रौ, आधौ सांसण छै[1]। षेत सषरा, धोरा, सेंवज चिणा गेहूं हुवै, जाट बसै। कोस ३।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८१३)	२१६३)	१०६१)	१४२६)	१२६०)

१ धनेड़ो[1]

षेड़ो सूनौ। धनेरीया नील रा मांजरै। रकबो ५०८।

३६ गांव

६६. ८॥ सांसण—

४॥ बांभणां नुं—

॥ चांवंडीयो आधो ५००)

रा० वीरमदे रै बेटै जगमाळ रौ दीयौ, भवानीदास तेजसीहोत सिवड़ नुं। हिमें जोगीदास गुणेसोत राजसो सादुळ रौ, राघो महेस रौ छै। रकबो ३८००। षेत सषरा काठा। सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळी कोसेटा १० हुवै। बांभण बांणीया बसै।

१. धनेरड़ी।

1. आधा दान में दिया हुआ है।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८१३)	२१६३)	१०९१)	२४२६)[1]	१२६०)

१ हरभु री बासणी १५०)

रा० जैमल वीरमदेवोत रौ दत्त। व्यास गोतम ग्येनसर[2] नुं। हिमें पाछौ राजा सुरजसिंघजी व्यास सादूळ चकरपांण नुं संमत १६७६ फेर दीयौ। रकबो ४०० बीघा। सेझो नहीं[1]। मेड़ते माळीयां रै बेरै पीवै। कोस १॥।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८७)	१०५)	९०)	२५६)	१०२)

३ पांचोड़ोळी[3] बास ३

रा० बरसिंघ जोधावत रौ दत्त। प्रोहत कांना उदारायोत[4] रा नुं दीयौ। पछै भाईबंट[2] बास जुदा-जुदा बसीया। मेड़ता था कोस १॥।

१ गांगादास रौ बास[5] ७००)

रकबो २२८२। षेत काठा मगरा ऊनाळी कोसेटा ५ तथा ७ हुवै। हमें रामचंद सुरतांणोत रौ नै करन नारावत छै। जाट बांभण बसै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१५१)	८२३)	३०२)	६८१)	३७२)

१ पांचड़ोली भांना ५००)

रकबो १४५०। षेत सषरा मगरा। सेंवज चिणा हुवै। धोरा। ऊनाळी नहीं। छबां रौ बास भेळो बसै। बांभण जाट बसै। हिमैं जोगीदास गुणेसोत छै, सांवळदास छै।

१. १४४६)। २. गेनसर। ३. पांचडोली। ४. रूद्रायत। ५. गांव दासा रौ बास।

1. पृथ्वी-तल में समाहित होने वाला वर्षा का पानी। 2. भाइयों में हिस्सेदारी होने पर।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५५)	३०५)	१७६)	२१०)	२१५)

१ पांचड़ोली छांछा ३००)

रकबो ६०० । भांना रा वास भेळी बसै । षेत [illegible] चिणा धोरै । सेभौ नहीं । तळाव में बेरा छै तठै पीवै । पांणी थोड़ौ । हिमें षिवो केसरो[1] सांमो जोगा रौ छै । जाट बांभण तेली बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३०)	३०६)	६६)	१९२)	१५५)

३

४॥

४ चारणां नुं सांसण–

१ ऊंचीहेड़ो ५००)

राजा श्री सूरजसिंघजी रौ दत्त । बारेट लषा नांदणोत नुं। हिमें गिरधरदास लषावत रा बेटा आसकरण प्रीथीराज अजबौ छै । षेत सषरा[1] छै, कंवळा । ऊनाळी सेभो नहीं । तळाव रंप रा[2] पीवै । जाट बसै ।

१ डागसूरीयो[3] ६००)

रा० बलभदर सुरतांणोत रौ दत्त । धधवाड़ीया[2] मोका मांडणोत नुं । हिमैं पिरथीराज सुंदरदासोत नै जगनाथ मनोहरदासोत रौ छै । षेत काठा मगरा । ऊनाळी नहीं । कोहर १ बंधौ[3], पुरस २०, पांणी मीठौ । ऊपर २ जव[4] हुवै । कोस १० ।

१. केसा रो । २. तळाव री बेरियां । ३. गडसुरीयो । ४. बीघा जव हुवै ।

I. अच्छे, उपजाऊ । 2. चारणों की एक शाखा । 3. पक्का बंधा हुआ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९०)	३११)	३५)	४११)	२१०)[1]

१ [illegible] ४००)

रा० जेसा सीहावत रौ दत्त । रतनु भरमा रूपावत नुं । हिमें सांवळदास कांनावत रांमसिंघ सादुळोत छै । षेत कंवळा सेंवज । गेहूं चिणा सरसुं, धोरै सेभो गहीं । लुणीयावास रै कोहर पीवै । चारण जाट बसै । मेड़ता था कोस ७ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२२)	१३०)	६५)	७११)	३२१)

१ पीथावास ५००)

राजा श्री गजसिंघजी रो दत्त बारैट राजसी प्रीथीमलोत रोहड़ीया[1] नुं । हिमें कीलांणदास कांना राजसी रा बेटा छै । षेत १० धोराबंध तांमें सेवज गेहूं चिणा । बीजा षेत कंवळा, सेभो नहीं । लुणीयावास रै कोहर[1] पीवै । तीवण १ छै । तळाव बरसोंदीयो पांणी रहै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५०)	४३१)	४०)	८११)[2]	९५)[3]

४

८॥

४५

९७. तफै कलरो रेष ५७९०१ गांव ४४

१ कलरौ षास ४०००)

१. २५०) । २. ६११) । ३. २६५) ।

1. चारणों की एक शाखा । 2. कुआ ।

कोस ३, रकबो ६८६२। बड़ा षेत धोराबंध। काठा गेहूं चिणा धोरै। ऊनाळी कोसेटा ४० हुवै। बडो गांव। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
६३७) ३०८५) २४२६) २४४०) ११८०)[१]

१ फळोधी २०००)

रकबो १८४२६। षेत कंवळा। सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळी नहीं। कोहर १ सागरी[1] पांणी घणो तठै पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
६७०) २८८१) ६७६) २१७४) १४८०)

१ सीरसलो २०००)

रकबो ७७७६। षेत थळ रा कंवळा। सेझो कोहर नुं[२] गांव ढाहो पीवै। जाट बसै। ढाहा रा कोहर रौ तीवरा[2]।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
९४) १२२७) ३८४) २८२४) १२१८)

१ लाही २५००)

कोस ...[३]। रकबो ६२०४ षेत धोराबंध। सेंवज गेहूं चिणा १००० बीघा हुवै। बेरै पांणी पीवै। जाट रजपूत बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२८७) २२५३) १०८) १४४२) १०४६)

१ वेदावड़ी[४] २०००)

कोस २। रकबो ३०१५। बरसाळी, बड़ा षेत। सेंवज गेहूं चिणा बीघा १०००। सेझो नहीं। तळाव बरसौंदीयो पांणी रहै छै[3]।

---

१. ११८७)। २. नहीं। ३. मेड़ता थी कोस ३। ४. बड़ी (अधिक)।

---

1. बहुत प्राचीन (किंवदन्ती के अनुसार राजासगर के पुत्रों द्वारा खोदा हुआ)। 2. ढाहा के कुए में पानी प्राप्त करने की निश्चित हिस्सेदारी है। 3. तालाब में वर्ष भर के लिए पानी रहता है।

षुरद वेदाबड़ी रै बेरै पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३९६)	८१६)	२४)	३६३)	४१३)

१ ढांढोया बासणी २०००)

कोस ४॥ । रकबो ३०५७ । षेत सषरा धोराबंध । सेंवज बीघा ४००, गेहूं चिणा हुवै । सेझो नहीं । तळाव मास ६ पांणी रहै । पछै सेषावासणो पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५२)	१५१६)	६२)	५६६)	१३६)

१ पालड़ीसिध २३००)

कोस ११ । रकबो ११३५ । षेत कंवळा धोराबंध कोसेटा ३ हुवै । जाट बसै, गूजरां रा घर १० ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१)	८११)	६६७)	९१२)	४३१)

१ रामसरी ढंढसरी[1] १२००)

कोस १२ । रकबो ९६०० । सेंवज गेहूं[2] चिणा बीघा ५०० हुवै । षारीये भेळो बसै । षारीया रा कोहर पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२)	६५८)	३९)	८६०)[3]	३८१)

१ मांगळीयाबास[4] १०००)

कोस ९ । रकबो ५४०० । खेत कंवळा, थळ रा, सेझो नहीं । कोहर १ पांणी मीठो, सागरी । ऊनळी सेंवज पीयल, मांमुर नहीं । जाट रजपूत जागीरदार रा घर री बसी रा लोग बसै ।

---

१. ढींढसरी । २. काठा गेहूं । ३. ८०७ । ४. मांगळियावस ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५) ५२३)[१] ४०७)[२] ५१०)[३] ३०५)[४]

१ सातळवास २०००)

कोस २ । रकबो ५८७८ । षेत सषरा धोराबंध । गेहूं चिणा हुवै । ऊनाळी कोसेटा ३० । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२४५) १११६) १५११) १७८६) ८७६)

१ षेडुली २५००)

कोस ३ । रकबो १६९०८ । षेत धोराबंध । काठा गेहूं[1] चिणा सेंवज हुवै । धोरा बेर १[५] पांणी चोषो चांच ६० वेहर मैं । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२१) २०५२) ७४८) ३४३४) १७८१)

१ ढाहो ३२००)

ररबो[६] १५२० । षेत थळी रा । मगरा ऊनाळी नहीं । कोहर बंधवे पांणी घणौ । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२१) १५३६) ६२६) ३१३१) १२२६

१ गोगारडो[७] ३०००)

रकबो ९६०४ । कोस ४ । बडा धोराबंध षेत । सेंवज गेहूं चिणा बीघा २००० हुवै । सेझो तळाव नहीं, तळाव पांणी षूटै[2] तरां वेदाबडी पीवै । जाट बसै । तळाव निपट सषरो, सबळो[3] ।

---

१. ८९१) । २. ८९२) । ३. १३९२) । ४. ५११) । ५. बेर में चांच ६० हुवै । ६. इसके पहले—कसबा थी कोस ६॥ । ७. गागरड़ो ।

---

1. विशेष प्रकार के गेहूं । 2. समाप्त होने पर । 3. खूब पानी सामने वाला ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५९७)	२९१४)	१६१)	१४९३)	१५१)

१ बेदावड़ी षुरद १०००)

कोस २। रकबो ३०१५। षेत मगरा सेंवज न हुवै। बेहर[1] में कोसेटा ४ हुवै। षेड़ा बीहू गांव भेळा बसै, जाट।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३६)	४११)	२२१)	२४६)	२१५)

१ गंठीयो ३०००)

कोस ५। रकबो १६५३६। षेत सषरा मगरा। सेंवज गेहूं चिणा हुवै। बीघा ५००। बेहर में हुवै। सेझो नहीं। गंगारड़ौंणै रै कोहर में तीवण १। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५२०)[2]	१६९०)	७७४)	२४५३)	८१४)

१ षारीयो षंगार रौ ९००)[3]

कोस १२। रकबो २०१८४। षेत धोराबंध। रेल रा[1] गेहूं सेंवज बीघा ७००, काठा हुवै। सेझो नहीं। कोहर बंधवा। जाट गूजर रजपूत बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)[4]	९१०)	४७८)	१३११)	४३५)

१ गोठण २२००)

कोस ११। रकबो २१६००। षेत कंवळा। सेंवज चिणा हुवै। सेझो नहीं। कोहर १ बंधवो, पांणी पीवै। जाट कुंभार बसै। जागीरदारां री बसी रहै।

---

१. बेरे। २. ५२०)। ३. २९००)। ४. २०)।

---

1. अधिक वर्षा होने पर पानी बहकर शामिल होने से।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
४५) २३७७) १०९४) २०२६) ६७६)

१ लांबो जाटां री ५०००)

कोस ५। रकबो २७७४४। बड़ा धोराबंध षेत। सेंवज गेहूं चिणा हुवै। सेझो पीयल नहीं। तळाव बरसोंदीयो पांणी रहै छै। पछै कोहर पीवै। पांणी थोड़ो मीठौ। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
७६९) २०३२) १५७४) ३२६२) ८७२)

१ गांगारड़ी २०००)

कोस ५। रकबो ४७०४। षेत धोराबंध। सेंवज काठा गेहूं चिणा। सेझो नहीं। पांणी बेदावड़ी पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
७४) ९७५)[1] ४६) ९२२) २२१)

१ तालोड़ो षुरद ७००)

कोस ९। रकबो ७३५०[2]। षेत सषरा। षेत ४ सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळी नहीं। बडा तालोड़ा सुं कोस ०॥ दिषण नुं बसै। कोहर १ बेही रै १ तीवण। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
४९) ६६१) १०७) ५५७)[3] २०६)

१ रेयां[4] षुरद ७००)

कोस ६। रकबो १४०५। षेत सषरा सेझो नहीं। रैयां[5] भेळा लोक जाट बसै। रैयां रै कोहर पांणी पीवै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५) २५७) २५१) ६००) ३०१)

---

१. ९७७)। २. १३५०। ३. ५५१)। ४. रीयां। ५. बड़ी रेयां।

१ मेरीयावास ४००)

कोस ११ । रकबो २४०० । षेत सषरा काठा । मगरा सेझो । कोहर पांणी नहीं । चौकड़ी पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७०)	१५६)	३६)	४०६)	१०५)

१ माडपुरीयो ५००)

कोस ९ रकबो ६६०३ । षेत रूड़ा मगरा रा, के० थळ रा । कोहर सेझो नहीं । जावा रै ऊनाळीयां पीवै । रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७)	१०५)	२५)	१०१)	११९)

१ सहैजा[1] री वासणी ४००)

कोस ६ । रकबो ३३९६ । षेत सषरा काठा मगरा रा । सेझो नहीं । सीहा चारण री वासणी रै कोहर पीवै । रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७)	१०५)	८९)[2]	३०८)	१०५)

१ धानीयो[3] १२००)

कोस ९ । रकबो १३५३७ । षेत सषरा । धोराबंध । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसेटा ७ तथा ८ बेहर मांहे हुवै । पांणी थोड़ो[I] । जाट रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७५)	८९१)	८९२)	१३६२)	५११)

१ तालोड़ौ बडौ १५००)

---

१. सेहजां । २. ७९) । ३. धनापो ।

I. कम पानी ।

कोस ६ । रकबो ६६०० । षेत सषरा सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसेटो १ कोहर ऊपर हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५५)	१११२)	८२२)	१६६०)	३५६)

१ रेवड़ीया[1] १०००)

कोस ६ । रकबो १७०४[2] । षेत सषरा । ऊनाळी सेझो नहीं । कोहर १ हिमें रा० हररांम गोइंददासोत षुणायो[1], पांणी मीठो । जाट रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	६६६)	५१८)	१०३०)	३१६)

१ आषलावास ५००)

कोस ७ । रकबो ५४०० । षेत सषरा, कंवळा ऊनाळी नहीं । कोहर १ बंधवो, जठै पीवै । पांणी घणो । जाट रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८२)	५१२)	३८२)	८११)	२३१)

१ सोढावास ५००)

कोस ६ । रकबो १३६१ । षेत मगरा काठा । ऊनाळी । सेझो नहीं । गांव लांबा रै कोहर पांणी पीवै । जाट रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६५)	५१६)	६५)	६०६)	२०१)[3]

१ षारीया री बासणो ७००)

कोस ११ । रकबो —— । षारीया री सींव मांहे बसै । षेत

१. रेयां वडी । २. ७०४ । ३. २०६) ।

1. गोइंददास के पुत्र हररांम राठौड़ ने खुदवाया ।

सषरा, सर १[1]। उनाजठ[1] छै तठै बीघा ४०० सेंवज चिणा हुवै। षारीया रै कोहर पांणी पीवै। रजपूत बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	४०६)	१०८)	६६१)	४१०)

१ मोटुवास ५००)

कोस ७। रकबो २७३४। षेत कंवळा अजाईब। कोहर नहीं। राजौद पीवै। तळाव मांहे बेरा छै, तठै पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०९)[2]	६१०)	१८९)	५११)	५८५)

१ पुजीयावास ३००)

कोस ४। रकबो ३५७७। षेत सषरा थळी रा। सेझो, कोहर नहीं। षेड़ो[2] फळोधी भेळौ। जाट घर १५ बसैं। फळोधी रै कोहर पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०४)	७११)	३४६)	१००८)	३००)

३२ गांव

९८. ८ सूना षेड़ा पाही लोक षड़ै।

१ कूंपड़ावास बडो रेष ६००)

रकबो ३३७२। षेत थळ रा सषरा। षेड़ो सूनौ। नागौर रौ गांव रोहल रा लोक षड़ै। रा० मांनसिंघ मुरारदास री बसी रा लोग षेत षड़ै। कोस —।

१. उनाळी। २. १९०)।

1. बड़ा तालाब अथवा वह स्थल जहां खूब दूरी में वर्षा का पानी भरता है। 2 गांव की बस्ती।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६०)	१५०)	१५०)	५०५)	२००)

१ कूंपड़ावास षुरद रेष ४००)

रकबो १४१७ । षेत कंवळा सषरा थळ रा । षेड़ौ सूनौ नागौर रौ गांव रोहल रा लोक षड़ै । रा० मानसिंघ मुरारदास री बसी रा लोक षेत षड़ै ।

१ सुंडावास रेष ५००)

रकबो ३४७२ । षेत कंवळा रूड़ा[1] । षेड़ो सूनौ । रा० मानसिंघ मुरारदासोत री बसी रा लोक रोहल थका[2] षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	१००)	५०)	२०१)	१००)

१ हांसावास[1] ६००)

रकबो १९९१ । षेत सषरा मगरा रा काठा । के० धोरा पिण छै । सेंवज गेहूं षेत ५ तथा ७ हुवै । षेड़ौ सूनौ[3] बसीवांन लोक को नहीं । गांगारड़ै रा लोक षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३०)	६०१)	१०२)	५०१)	१३१)

१ नरसंघ री वासणी १०००)

रकबो ५५३६ । षेत काठा मगरा । षेड़ौ सूनौ । गगराड़ै[2] रा लोक षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१)	·१५१)	१००)	१०१)	१३५)

---

१. हांसावास । २. गगडांणा ।

1. बढ़िया, उपजाऊ । 2. रोहल गांव में रहते हुए । 3. गांव सूना है ।

१ भैरूंवास ५०)

रकबो ३१७४। षेत रूड़ा भला। षेड़ो सूनो। केलावास षुटली रा लोक षेत षड़ै छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	१०१)	०)	१५१)	३०)

१ रैयां तीजी ३५१)

रकबो १४५०। षेत सषरा। षेड़ो सूनो। बड़ी रैयां रा ही लोक षेत षड़ै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	२०६)	१००)	३००)	१०१)

१ बुध री वासणी

रकबो ७७७६। थळ रा षेत। घणा बरसां पहली। हिमें को० षेत षारीयै दाषल छै[1]। बीजो रतकूड़ीयो जोधपुर रै वासै गयो[2]।

८

---

९९. ४० गांव तर्फ कालरू रा।

विगत

५६२०१)	षालसा रा	गांव	४०
१७००)	सांसण	गांव	४
५७९०१)		गांव	४४

४ सांसण

१ टुकड़ी रेष १२००)

रा० वरसिंघ जोधावत रो दत्त, प्रोहत षीदा कान्हावत नुं। हमें

---

1. खारिया ग्राम के शामिल माने जाते हैं। 2. जोधपुर परगने में शामिल कर दिया गया।

राईचंद सुरतांणोत नै करन तारावत छै। रकबो १४२५०। षेत कंवळा। सेझो नहीं। कोहर १ सागरी, पांणी मीठौ, पुरस ३२। जाट बांभण बसै। मेड़ता था कोस ६।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४७०)	११२५)	४२१)	२०३६)	४३६)

१ बांभण वास १००)

रा० दूदै जोधावत रौ दत्त बांभण रांमा तीलावत गूजरगौड़ नुं हिमें संकर गोपाळ रौ नै बु(भु)धर काना रौ छै। षेड़ौ सूनौ। फळोधी मांहे बांभण बसै। षेत षड़ै[1]। रकबो २४६४। षेत कंवळा। कोस ४॥ छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	२५)	३३)	२०१)	१००)

१ भीलावास २००)

राजा श्री सूरजसिंघजी रौ दत्त, बहारैट परतापसिंघ नांदणोत नुं हिमें परतापमलोत नै किलांणदास कांनड़ राजसीहोत नुं छै। रकबौ ३७५०। षेत कंवळा। जाट बसै। कोहर[2] नहीं मांगळीयावास रै कोहर पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३७)	१५६)	२०६)	३०६)	१०५)

१ सीहा री वासणी २००)

रा० वरसिंघ जोधावत रौ दत्त, जगहठ बाषल चांदणोत नै। कनीया गेहा नुं दीयौ। हिमें लषौ उदैसी रौ। कनीयो नै गोयंदगोपाळ रौ जगहट छै। रकबौ १३५०। चारण बसै। गांठोया[1] रै कोहर पांणी पीवै। कोस ६।

१. गंठिया।

---

1. फळोधी (मेड़ता) में रहने वाले ब्राह्मण खेत बोते हैं। 2. कुआ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५५)[1] २०६) २३) ३०६) १४०)

४

४४ गांव रेष रुपीया ५७९०१)

१००: तर्फे रांहण—

गांव ५६ रेष रुपीया ५४७५०)

१ रांहण षास ११०००)

कोस ४। रकबौ ३१९७४। षेत सषरा, धोराबंध। सेंवज काठा गेहूं बीघा २५०० तथा ३००० मैं सेंवज। कोसीटा १५ तथा १६ बेहर मैं हुवै। जाट माहाजन सिगळी पवन जात बसै। बडौ कसबो। कोस ४।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५४३)[2] ७८५२) १०४५) ३७०७) ५३७१)

१ सारसड़ी[3] २०००)

कोस ५। षेत धोराबंध। सेंवज चिणा हुवै। कोसीटा ३५ बेहर में हुवै। धोरा पांणी चोढो। रकबो ८६६४। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५७) ८२७) १०९५) १२२०) ७३०)

१ नीबोहलो बडो १३००)

कोस ३॥। रकबो ४००८[4]। षेत सषरा। सेंवज चिणा। कोसीटा ८ तथा १०। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
७१) ८७१) ९९०) १३७८) ६४८)

---

१. ५)। २. ९४३)। ३. सारसड़ो। ४. १२००६।

१ षुहड़ी वडो २०००)

कोस ८॥। रकबो २०१८४। षेत थळ रा सषरा। ऊनाळी कोसीटा ७ तथा ८। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५२)	१५४२)	११३२)	२०५७)	१०३५)

१ चुहड़ीयावास ७००)

कोस ७। रकबो बीघा २६४२। षेत सषरा थळ रा कंवळा। कोहर १ ऊपर कोसीटा। गांव पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७६)	४१६)	६१६)	५६७)	२६६)

१ षुहड़ी षुरद १०००)

कोस ८॥। रकबो ३१७४। षेत थळ रा सषरा। कोहर १ पीछ रौ[1]। ऊपर कोसीटा ऊनाळी। जाट बसै।

संमत १७२५	१६	१७	१८	१९
१५)	१६५)	१२४)	३०५)	१५४)

१ दुरगदास थळी ५००)

कोस ६। रकबो ५४००। षेत कंवळा थळी रा। कोहर १ पांणी पीवण नुं। जाट बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२१)	५११)	१२१९)	८०९)	४०८)

१ करहो १५००)

कोस ८। रकबो ५०४६। थळी रो गांव। षेत कंवळा सषरा। कोहर नहीं। करहा रै कोहर में तीण १। जाट बसै।

---

1. जनता के पानी पीने का कुआ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३३६)	१२३०)	१११)	११२०)	२१०)

१ पुनीयावास ७००)

कोस ८। रकबो ४७०४। थळी रौ गांव। षेत कंवळा सषरा। कोहर नहीं। करहा रै कोहर मैं तीण १। जाट बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
३३६)	१२३०)	१११)	११२०)	२१०)

१ चोहलां वास[1] ५००)

रकबो ४२४०। थळी रौ गांव। कंवळा षेत। षेत सषरा। कोहर १, पांणी षारौ। जाट बसै[2]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	६०१)	१७०)	४५९)	२०९)

१ आग्या वासणी[3] ७००)

कोस ६। रकवो १०५८४। थळी रौ गांव। षेत कंवळा। कोहर १ बंधवां। पांणी मीठौ। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६११)	१७०)	१२०)	९०९)	४०८)

१ राजोद ३०००)

कोस ६। रकबो ३२८५६। थळ रौ गांव। षेत कंवळा। निपट सषरो[1]। कोहर १ सागरी बंधवा। पांणी घणौ मीठौ। जाट रजपूत बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६४१)	२५५७)	४८६)	१५६६)	१०४५)

---

१. चोहल्यावस। २. मेड़ता थी कोस ८ (अधिक)। ३. आठयवसणी।

---

1. बहुत अच्छा गांव।

१ माहीढंढ वडो २००)

कोस ६ । रकबो १७३४ । थळ रा षेत रूड़ा । कोहर १ काचौ छै[1] जठै पांणो पीवै । थोड़ो मीठो । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०७)	३०८)	१४)	३०७)	१५४)

१ जेसाबास तोगा ७००)

कोस ४॥ । रकबो २९५८ । थळ रा रूड़ा । कोहर नहीं । षेढुली रै बेरै पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२३)	१५५)	१२०)	३५६)	२१५)

१ दाबड़ीयांणी २५००)

कोस ४ । रकबो ११०९४ । षेत सषरा धोराबंध । सेंवज गेहूं चिणा । ऊनाळी कोसेटा १२ बेहर में हुवै । पांणी चोढौ । जाट बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२२)	६६३)	६५९)	११६६)	११५)[1]

१ जावळी १४००)

कोस ४ । रकबो १२०७६ । षेत सषरा धोराबंध । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा २० बेहर में हुवै । पांणी थोड़ो । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८७)	१०२३)	८६८)	७६६)	६६६)

१ ढाढोळाई[2] १५००)

कोस ३ । रकबो ६४६८ । षेत सषरा मगरा । ऊनाळी कोसीटा ४ तथा ५ । जाट बसै ।

---

१. ५१५) । २. दोटोळाई ।

---

1. पक्का बधा हुआ नहीं ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९१)	८७३)	१४०)	५६४)	४८५)

१ सांझावास[1] ६००)

कोस ३ । रकबो —[2] । षेत सषरा थळी रा । ऊनाळी कोसेटा ४ तथा ५ । जाट बसैं ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१८२)	१४७)	३४८)	२५७)

१ जोधड़ावास ५००)

रकबो १३८५ । षेत सषरा थळ रा कंवळा । कोहर १ बंधवो पीछ रौ । जाट बसैं ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८)	१२०)	६)	१०५)	५२)

१ दुगर अचळा ४००)

रकबो ६९३६ । षेत थळ रा रूड़ा । कोहर १ बंधवो । पांणी घणो । ऊपर ऊनाळी[1] । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३)	४६०)	६१२)	६१५)	४६४)

१ दुदड़ावास ५००)

कोस ८ । रकबो ३२०२ । षेत थळरा कंवळा । कोहर १, पांणी घणो । जाट बसै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०६)	५८०)	३१६)	६१५)	३१४)

---

१. सांडावास । २. ४७०४ ।

---

1. ऊनालू साख होती है ।

१ भादुवसी[1] ७००)

कोस ६ । रकबो ४२४२[2] । थळी रौ गांव, षेत कंवळा । कोहर १ पांणी पीवण रौ । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	६११)	४०१)	५१२)	३११)

१ षारीयौ बडौ २०००)

कोस ६ । रकबौ ६८८२ । थळ रौ गांव । षेत कंवळा, सषरा । कोहर १ पांणी पीवण नुं, बंधवां, सषरौ । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०१)	७३०)	५८५)	७२२)	६२६)

१ पोलावास ८००)

कोस ७॥ । रकबो ३६०१ । षेत रूड़ा थळ रा । कोहर १ पांणी मीठौ । बिसनोई जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७६)	१३७)	३५)	१०१८)	६१७)

१ बीचपुड़ी ५००)

कोस ६ । रकबो ३४५६ । थळी रौ गांव, षेत कंवळा । कोहर नहीं, राजोद रै कोहर पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६९)	३०५)	१६)	२०४)	१२४)

१ षींवावास ३००)

कोस ६॥ । रकबो ३६५६ । षेत थळ रा रूड़ा । कोहर नहीं, करहा रै कोहर पीवै । जाट बसै ।

---

१. भादुवासी । २. ४३४७ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८१)	१३०)	९०)	३१२)	३११)

१ माहो ढंढ षुरद २००)

कोस ६ । रकबो १५३६ । थळ रा षेत रूड़ा । कोहर १ काचो । वेरा पांणी थोड़ो मीठो । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	१०५)	१४)	१५४)	१०४)

१ जेसावास अषैराज ४००)

रकबौ १७३४ । षेत थळ रा सषरा । कोहर नहीं । षेटुली पीवै । षेड़ौ जेसावास-तोगावास भेळौ बसै । जांट बसै ।

१ जारोडौ बडौ १६००)

रकबौ १२४२१ । कोस ५ । षेत सषरा धोराबंध । सेंवज चिणा हुवै । तळाव बेरा बरसौदीया पांणी रहै । पछै षेटुली[1] पीवै । जाट रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१०)	२०४२)	५०५)	२०३२)	१०३८)

१ जारोडौ गुजरां १०००)

कोस ५ । रकबो २६४६ । षेत कंवळा । सेझो नहीं । षेटुली री वेरां पीवै । जाट रजपूत बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४६)	३०६)	२५)	५११)	३५५)

१ छापरी बडी १०००)

कोस ६ । रकबौ ५४०० । षेत सषरा । सेझो कोहर नहीं । फळोधी ओलादण रै कोहर मांगीयो पांणी पीवै । जाट बसै ।

---

१. षेढुली ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३२)	१२०)	११७)	४६१)	३०५)

१ नीबोहळो[1] षुरद १०००)

कोस ३। रकबो १५३६। षेत सषरा कंवळा रूड़ा। ऊनाळी कोसीटा ४ हुवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६)	२९६)	२३१)	३६५)	१५४)

१ पड़वालो[2] १०००)

कोस ६॥। रकबो २१२६। षेत थळ रा। ऊनाळी कोसीटा ४ हुवै। जाट बिसनोई बसै। कोहर १ गांव कनै पीछ रौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५४)[3]	३८०)	४३४)	७१७)	६१६)

१ दत्तणी ४००)

रकबो ५४००। थळ रा बडा षेत। ऊनाळी नहीं। पांणी तळाव रा बेरां पीवै। थीराव षेटुली रा बेरां पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३२६)	१६३२)	१८६)	२०३६)	७८६)

१ जारोड़ो षुरद १०००)

कोस ५। रकबो ६१४४। षेत सषरा कंवळा। सेझो नहीं। षुटली रा बेरा पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३४)	४०६)	१४)	५०८)	२०७)

१ छापरी षुरद ५००)

कोस ६। रकबो १०५८४। षेत रूड़ा। सेझो नहीं। कोहर नहीं।

---

१. नीबोलो। २. पांडवलो। ३. ११४)।

फळौधी ओलादण नागोर रै कोहर मांगीयो[1] पांणी पीवै। राजपूत जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३६)	११५)	४५)	४०५)	२५४)

१ सुषावासणी ४००)

कोस ... । रकबो १७३४। षेत रूड़ा थळ रा मगरै रा। कोहर १ काचो। बेरा छै तठै पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७३)	२०६)	६५)	३०५)	११५)

१ छीकणवास ५००)

कोस ६। रकबो १७१६। षेत मगरा रा काठा। ऊनाळी कोसीटा ४ तथा ७ हुवै। पांणी चोढो। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५)	३७६)	४११)	५०७)	२८१)

३८

१ ———————— १ ————————

१०१. ७ सूना षेड़ा मांजरा मांही षेत षड़ै—

१ जेतावास[1] १००)

षेत रूड़ा। पुनीया बास रा लोक षेत षड़ै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
०)	०)	१८)	३१)	२५)

१: जैतीवस।

---

1. मांगकर।

१ नेणांवास ३००)

कोस ८ । रकबौ २८०६ । षेत सषरा । वसीवांन[1] घर २ जाट छै । तिके षारीये बडं पीवै । उठै थकां षेत षड़ै । बीजा षारीया रा लोक षेत करै । कोहर १ षड़ै छै[2] । पांणी षारौ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६)	२०६)	११५)	३०६)	२५७)

१ षारीयो षुरद ४००)

रकबो १५२६ । षेत सषरा । पोलावास रा लोक षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	५१)	४३)	५१)	५०)

१ रैबारीयां री वासणी २००)

रकबो १४२६ । षेत कंवळा । वसीवांन लोक कोई नहीं । मांही ढंढ बडेरा[3] षेत लोक षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३७)	९२)	२१)	२०४)	५३)

१ देवावास ५००)

रकबो २५०१ । षेत सषरा । वसीवांन लोक कोई नहीं । दाबड़ीयाणी रा लोक षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६)	०)	६)	१३९)	१०१)

१ सांवळीयावास १००)

रकबो ४५६ । षेत कोई नहीं । षेड़ो सूनौ । षेत पड़ीया रहै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
०)	७०)	४०)	०)	२०)

---

1. स्थायी रूप से बसने वाले । 2. एक कुआ जोता जाता है । 3. बड़े-बड़े गढ्ढे जिनमें बर्षा का पानी भरा रहता है ।

१ जेसावास भेणा २००)

रकबो ——। षेत थळ रा। षेड़ो नहीं। जेसावास तोगा अषै-राज बुही रा लोक षेत षड़ै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
०)	४५)	१५)	१५०)	१५५)

७

४५

१०२. ११ सांसण—

३ बांभणां नुं—

१ दाबड़ीयाणी षुरद ४००)

रा० जैमल वीरमदेवोत रौ दत्त, पोकरणा केलण चुतरे रा बेटा नुं हिमें गिरधर तुळछीदासोत नै रांमचंद डांवरोत छै। रकबो ५४००। जाट बसैं। षेत सषरा। चांच ५। रेल हुवै[1]। पांणो दाबड़ीयाणी पीवै। मेड़ता था कोस ४॥।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७०)[1]	२५६)	१७६)	४०६)	२४५)

१ नोबहलो[2] गंगदास २००)

रा० राईमल दुदावत रौ दत्त, प्रो० षीदा कान्हावत नुं। हिमें राईचंद सुरतांणोत नै करन तारावत छै। रकबो ४०५६। षेत कोठा कंवळा। सेंवज चिणा हुवै। कोसीटा २ हुवै। जाट बसै। कोस ६॥।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	१४३)	६८)	२०५)	११९)

१ सांवळीयावास षुरद २००)

१. १७०)। २. नीबलो।

1. वर्षा का पानी खेती में भरता है जिससे गेहूं-चने की फसल होती है।

वीरमदे दुदावत रौ दत्त। व्यास जगदे रांमदेव रौ सिरमाळी[1] नुं। हिमें रांमपोरा[1] कचरावत नै फरसरांम कचरावत सारंगरांमजी रौ हररांम ढुधनाथ[2] रौ छै। हेंसे ४। षेड़ौ सूनो कोस ४। रकबो १६४४। षेत कंवळा बाजरी मोठ हुवै। कोहर १, पांणी भळभळो। पुरसे २०[2]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६६)	५१)	४०)	४१)	२०)

३

१०३. ७ चारणां नुं—

१ वीछुवास ४५०)

राजा श्री सुरजसिंघजी रौ दत्त बारहट संकर तेजसोहोत नुं। हिमैं देईदास रांमदासोत छै। रकबौ २६०४। षेत कंवळा। जाट चारण बसै। कोहर १ बंधवौ, पांणी मीठौ। कोस ७।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५५)	०)	८४)	४११)	३१०)

१ गेमावास ५००)

राजा श्री सुरजसिंघजी रौ दत्त, रतनुं दांना हरराजोत नुं। हिमें सांवळदास दांनावत नै लिषमीदास जसावत छै। रकबौ ८८४। षेत कंवळा। कोहर १ पांणी भळभळौ। जाट चारण बसै। कोस ८।

१ जोधड़ावास षुरद १००)

रा० जैमल वीरमदेवोत रौ दत्त, बीठू माला तेजावत नुं हिमें पोथौ नरसंघ रौ षेमौ ईसर रौ छै। रकबो १०१४। षेत कंवळा। सेझौ कोहर नहीं। जाट बसै। बडै जोधड़ावास पीवै कोस ८।

---

१. रामेश्वर। २. रुघनाथ।

---

1. श्रीमाली। 2. बीस पुरस गहरा।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	०)	१४)	१०३)	४२)

१ नैते री वासणी २००)

रा० सुरताण जैमलोत रौ दत्त, रतनू सांकर हींगोळावत नुं। रकबौ २६४६। षेत कंवळा। सेभौ नहीं। ढाहा रै कोहर पीवै। हिमें रांमसिंघ सादुळोत सुरो कलावत नै नांथा[1] कानड़ रौ बसै। जाट बसै। ढांहरो[2] रै कोहर पांणी मांगीयो पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	५१)	४१)	१५३)	११३)

१ जारोड़ो वेणां १००)

अचळा रायमलोत रौ दत्त, धधवाड़ीया चाडा चाडा मांडणोत नुं। हिमें सुंदरदास मोहणदास माधोदासोत छै। रकबो २७०४। षेड़ो पाही, सूनो।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	१५५)	१४)	१५१)	५०)

१ अचळा रा षेत १५०)

रा० अचळा रायमलोत रौ दत्त बीठू आबा तेजावत नुं। हिमें कूंपो पंचाइणोत, हदो चौथ रौ, ऊदो अमरावत छै। रकबो ३८४। षेत कंवळा षेड़ो को नहीं। षेत पाही षड़ै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	३०)	८)	२५)	२०)

१ परबतसर रा षेत[3] १५०)

रा० दुदा जोधावत रौ दत्त। रतनुं पाला ऊदावत नुं। हिमें तेजसी नाथो सांकर रा बेटा छै। रकबो १९४४। षेत कंवळा। षेड़ो

---

१. नाथो। २. ढांहा। ३. परबत रा षेत।

सूनौ। राहीण रै षेड़ै[1] इण गांव रा लोग बसै। षेत षड़ै। राहीण पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	४५)	१०)	२१)	२०)

७

१ षातोळाई ५००)

माहाराजाजी श्री जसवंतसिंघजी रौ दत्त। पीरजादा षुजमहमद नोजाम नै नीजरबळी नुं, संमत १७०९ दीयौ। रकबो ५,०४६। षेत कंवळा कोसीटा २ हुवै। जाट बसै। मेड़ता थी कोस ७।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५७)	३०८)	१५८)	३१५)	११०)

११

५६ गांव

५११९००) षालसै रा गांव ४५

२८५५०) सांसण गांव ११

५४७ ०) गांव ५६

१०४. ता० मोडरो रेष ९१९००) गांव ४१

१ मोडरो षास ४०००)

रकबो १३२५४। षेत धोराबंध। काठा गेहूं चिणा हुवै। सेझो छै। कोहर २ हिमें नवा षिणाया[2], तठै गांव पीवै। ऊपर ऊनाळी कोसीटा हुवै। जाट बसै। गांव घणा दिन हुवा षराब छै[3]। मेड़ता थी कोस ४।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४७)	१४१३३)	२०१)	१०७६)	९४६)

१ अरणीयाळो ६५००)

1. राहीण गाव में। 2. अब दो कुए नये खुदवाये हैं। 3. बिगड़ा हुआ है।

रकबो ६३०३ । षेत धोराबंध, सेंवज काठा गेहूं चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ५० तथा ६० हुवै । जाट बसै । भलो गांव, श्रावादांन । मेड़ता थी कोस ५ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५१)	४६८४)	४१५७)	४९६९)	२१७८)

१ वगड़ ५०००)

रकबो ११३०२ । षेत धोराबंध । सेंवज चिणा हुवै । कोसीटा २० तथा २५ हुवै । जाट बसै । बडौ गांव । सांवणु बडा षेत । मेड़ता थी कोस ५॥ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५३०)	६५८२)	५६५५)	५७८२)	२५३८)

१ श्राछेजाई ७०००)

रकबो ११६१६ । बडा धोरा षेत, सर[1] बीघा २००० सेंवज गेहूं चिणा हुवै । मांहे कोसीटा ४० तथा ५० हुवै । जाट बसै । बडौ गांव । मेड़ता थी कोस ९ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५७२)	४१६१)	६७१२)	३४७६)	१७७७)

१ ईडवो ५०००)

रकबो १८२६ । षेत धोराबंध । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । सेभो नहीं तळाव बरसोंदीयो पांणी हुवै । पछै तळावां रा वेरां पीवै । जाट बांणीया बसै । सेहर था कोस ८ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६४३)	८७६२)	६२९४)	४२६०)	३०३६)

१ महेवड़ो ५०००)

---

1. वह जमीन जहाँ काफी लंबी दूरी में पानी भरा रहता है।

रकबो ११६१६ । बडा षेत धोराबंध । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । ऊनाळो कोसीटा ३० हुवै । तळाव बरसोंदीयो पांणी रहै । जाट बसै । बडो गांव । सेहर सुं कोस ७ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६७४)	५२६०)	४२९९)	५७८५)	४१००)

१ पालड़ी बड़ी ५०००)

रकबो १५००० । षेत धोराबध, सर १ बीघा २००० में । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । कोसीटा ६० तथा ७० । चांच १५० हुवै । बडो गांव । जाट बांणीया बसै । मेड़ता थी कोस ८ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५४१)	८१५३)	७७९०)	४८४०)	३४४५)

१ लांपोळाई ४०००)

रकबो ११०४९ । षेत धोरा सेंवज चिणा हुवै । कोसीटा ८० तथा १०० हुवै । पांणी षारौ । मोटो तळाव बरसोंदीयो पांणी रहै । जाट बसै । मेड़ता थी कोस ५ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३१०)	४२७५)	४४३२)	३६९७)	२२१४)

१ जुलाणो[1] २५००)

कोस ५ । रकबो १३४२३ । षेत सषरा काठा मगरा । सेंवज चिणा धोरा । कोसेटा ३० । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४२)	१२४२)	१८६६)	१६३३)	१६९०)

१ सीरासणो ३६००)

कोस ५ । रकबो १४८७२ । बडा षेत धोराबंध । सेंवज गेहूं काठा चिणा । कोसोटा ४० तथा ५० । जाट बसै[2] ।

---

१. लुलांणो । २. मेड़ता थी कोस ८ (अधिक) ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५११) ३२७८) १४२६) २८७२) २३१७)

१ धोळेळाव बडो ३०००)

कौस ५। रकबो ८३४६। षेत धोराबंध। सेझो नहीं। तळाव बरसोंदीयो पांणी रहै। जुलाणै पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
९२) ९१३) ४६६) १४२५) ६१९)

१ पालड़ीयोवास[1] २५००)

रकबो १४०५५। कोस —। षेत धोराबंध। सेंवज चिणा। सेझो नहीं। तळाव मास ८ पांणी रहै। पछै बेरोयां पटवाणी[2] सो पांणी तठै पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२१०१)[3] ५४०२) १०२२५) १२९२)[4] २३८२)

१ नथावेड़ी[5] २५००)

कोस ७। रकबो ५०४६। षेत सषरा काठा। सेंबज चिणा, कोसीटा १२। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
९४) २९६६)[6] २८६८) ४२४५) १५५७)

१ अकोली बडी ३०००)

कोस ९। रकबौ ११४४७। षेत धोराबंध। सेंवज काठा गेहूं चिणा। धोरा सेझो। कोहर १ बंधवाणी पीछ रौ। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
४१६) २०३३) १७६७) १२२९) ८४५)

---

१. पालड़ीयावास। २. पटावांणी। ३. १२०१)। ४. ६२९२)। ५. नथा-वड़ो। ६. २९५६)।

१ रळीयाइतो २०००)

कोस ३ । रकबो १७३४ । षेत धोराबंध । सेंवज गेहूं काठा चिणा । सेझो नहीं । तळाव मास ८ पांणी रहै । पछै महेवडूं पीवै । पांणी घणौ । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
३६) ७२२) ४१६) ७६४) ४८४)

१ बेहड़ावास[1] १५००)

कोस ६ । रकबो १९४४ । षेत धोराबंध । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । ऊनाळी कोसेटा २ हुवै । जाट बसै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
४९६) १०२३) ४४३) ९१९) ६२६)

१ डुमांणी ३०००)

कोस ९ । रकबो १०५८४ । षेत धोराबंध । सेंवज गेहूं चिणा । सेझो नहीं । तळाव बरसोंदीयो पांणी । पछै तौ वडोली पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
३८२) २०३३) ५७५) १०२६) ७७७)

१ धांमणीयो १५००)

कोस ६ । रकबो ४०५६ । बरसाळी वडा धोराबंध षेत । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसेटा ५ । जाट बसै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
२६१) १२३२) १२९०) १३३२)[2] ७४३)

१ तीघरी ८००)

कोस ७ । रकबो ३३३६ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज

---

१. वडो (अधिक) । २. १३२३) ।

चिणा। सेझो नहीं। तळाव मास ४ पांणी रहै। पछै चेचीयाबास पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५१) २६२) ४६२) ३५८) ३९९)

१ रांमसरी २५००)

कोस ८। रकबो ४६३७। बरसाळी षेत काठा मगरा। सेंवज चिणा। ऊनाळी सेझो नहीं। तळाव बरसोंदीयो पांणी रहै। पछै बवळै[1] पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
४३) १२२७) ४६४) ४८१) ४७६)

१ बेहड़ावास षुरद २०००)

कोस ६। रकबो २१६६। षेत धोराबंध बडा षेत। सेंवज चिणा। कोसेटा ७ तथा ८। पांणी थोड़ा, बीघा ४ पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
४२०) १०२६) १०५१) ९७६) ६२५)

१ केरीयो २४००)

कोस ६। रकबो ५१३८। धोराबंध बडा षेत। सेंवज चिणा। कोसेटा ४, पांणी थोड़ौ। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
३६८) १५३२) १६७१) १७१५) ९२९)

१ पुनीयावास ९००)

रकबो ४७०४। कोस ६॥। बरसाळी धोराबंध षेत सषरा। सेंवज चिणा। धोरा सेझौ नहीं। तळाव मास ४ रहै। पछै धांमणीय पीवै। जाट बसै।

---

१. बावळलै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३१६)	१०२२)	१२३५)	१११२)	६८७)

१ बावळलो २०००)

कोस ७। रकबो ९६६४। बरसाळी बडा धोराबंध षेत। सेंवज चिणा। ऊनाळी कोसेटा २० तथा २५। तळाव बरसोंदीयौ पांणी रहै। बसीवांन जाट। रा० हरीदास नाहरषांनोत री बसो[1]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	२०२५)	१२८२)	१६९०)	१६३३)

१ देवळमाधा १००)

कोस ५। रकबो ४७०४। बरसाळी षेत काठा, मगरा। सेंवज चिणा। ऊनाळी कोसेटा ७ तथा ८। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५२)	७३२)[1]	३३९)	५६२)[2]	२६४)[3]

१ देवळीमांडा ९००)

कोस ५। रकबो २९०४। बरसाळी षेत काठा, मगरा। सेंवज चिणा। ऊनाळी कोसेटा ५ तथा ७। जाट बसै।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५२)	३६१)	३१९)	३०९)	२३१)

१ नथावड़ी १५००)

कोस ७। रकबो ३७५०। बरसाळी षेत धोराबंध। सेंवज चिणा। कोसीटा १० तथा १२ हुवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०७)	१३३६)	५१३३)[4]	२२०९)	१४५८)

---

१. ७२२)। २. ५६३)। ३. ३६४)। ४. ११३३)।

I. निवासस्थान।

१ जाटसु[1] नांनग २५००)

कोस ७। रकबो ६६००। बरसाळी षेत धोराबंध। सेंवज चिणा। सेझो ऊनाळी नहीं। कोहर १ बंधवो। पांणी मीठौ। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२५०)	४९६)	२०९७)	१५९०)	१२३३)

१ चेचीयावास १५००)

कोस ८। रकबो ३४५६। बरसाळी धोराबंध बडा षेत। ऊनाळी कोसीटा ७ तथा ८। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	५१२)	५७५)	५६३)	३८८)

१ डुंगरवास ५००)

कोस ६। रकबो ४९०७[2]। बरसाळी षेत सषरा। सेंवज चिणा। ऊनाळी कोसेटा १० तथा १२। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९७)	८२२)	१४२६)	१०२०)	३९०)

१ फरासतपुरो १०००)

कोस ३। संमत १७०३ नवौ बसीयौ[1]। रकबो......। मोडरा दाबड़ीयांणी रो सींव[2] बसीयौ। षेत सषरा धोराबंध। ऊनाळी नहीं। तळाव बरसोंदीयो पांणी रहै। पछै दोटाळाई पोवैं। जाट बसै। संमत १७१५ श्री मदनमोहनजी रै देहरै चढ़ायौ[3]।

---

१. जालसु। २. ४९००।

---

1. नया गांव बसा है। 2 सोमा में। 3. देवस्थान को अर्पित कर दिया। देवस्थान के खर्चे के लिए ही ग्राम की आमदनी देवस्थान का पुजारी काम में लेता है। सभी करों से भी यह भूमि मुक्त होती है।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१४) २७७) ३२) ४१८) ३२४)

१ मोडरो गोडां रौ ४००)

कोस ३ । रकबो २६४६ । बरसाळी बडा धोराबंध षेत । सेंवज गेहूं काठा चिणा । सेझो नहीं । मोडरा रौ षेड़ो बडौ भेळौ बसै । पं० दुनीचंद नुं ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
६) १५३) १४) २०५) १५५)

१ आकोली षुरद ८००)

कोस ४ । रकबो ५२२१ । बरसाळी षेत सषरा । ऊनाळी षेत सषरा । ऊनाळी कोसीटा ४ तथा ५ । जाट बसै ।

१ धांधळवास[1] ऊदा ९००)

कोस ४ । रकबो ८६४६ । बरसाळी षेत धोरा सेंवज गेहूं चिणा । ऊनाळी कोसीटा २ । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२५) २२२) ७२) ४२५) १६९)

१ धांधळवास जालप ८००)

रकबो ४३२३ । षेत बरसाळी सषरा । सेंवज चिणा सेझो नहीं । षेड़ो धांधळवास ऊदा भेळौ बसै । ऊही गांव रौ लोक पीवै[2] ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१२) २२७) १०९) ३२५)[3] २१९)

१ ऊधीयावास ४००)

कोस ६ । रकबो १७३४ । बरसाळी षेत सषरा । सेंवज गेहूं । ऊनाळी कोसीटा २ । जाट बसै ।

---

१. धाधळावस । २. पांणी दोनुं गांव भेळा पीवै । । ३. ३५५) ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१४)	६०)	१०६)	२२७)	३२६)

१ षीदावास ३००)

कोस ७। रकबो ३४५६। बरसाळी षेत काठा मगरा। ऊनाळी कोसीटा ४ तथा ७। जाट बसै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१६६)	६२६)	२६५)	५१७)	१९८)

१ रांणीवास[1] ४००)

कोस ६। रकबो ११७६। बरसाळी धोराबंध बडा षेत। सेंवज गेहूं चिणा। ऊनाळी कोसेटा २ तथा ३। षेड़ो बावळलो भेळो बसै। जाट बसै।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	२१६)	२५)	१७५)[2]	१००)

३८

षेड़ा सगळा बसै, आबादांन।

२ सांसण

१ षेड़ी चंपा ८००)

रा० वीरमदे दुदावत रौ दत्त। श्री० रांमा डुंगावत जागरवाळी नुं। हिमैं जगनाथ चांपावत नै जीवो सुरतांणोत छै। रकबो बीघा ——। षेत काठा रूड़ा। कोसीटा ९ तथा १०। षेड़ै जाट बांभण बसै। मेड़ता था कोस ५।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	११०)	४७२)	३२२)	९०६)	३५७)

१ षांनपुरो ६००)

रा० दुदा जोधावत रौ दत्त। चारण जगहथ पोटल काळा सांम[3]

---

१. रांणीवस। २. १७१)। ३. स्यांम।

राव रा बेटी नुं दीयौ । हिमें अमरौ पुंजावत नै दुरगो नादावत छै । रकबो ६२० । षेत कंवळा काठा मगरा । चिणा सेंवज । कोसेटा ६[1] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३०)	४५६)	४२५)	३८१)	३५६)

१ मोडरीयो ४००)

रा० सीहा वरसींघोत रौ दत्त । षिड़ीया सीहो चंदरावत लाधौ, पछे रौ बेटौ कांना हुयौ । पछै रा० जैमल बीरमदेवोत षड़ीया चाहड़ मांडणोत नुं दीयौ । हिमें भगवांन जसावत कमे सुंदर रौ नारण अषावत छै[1] । रकबो ४६३७ । षेत काठा सारा सेंवज चिणा । तळाव बरसोंदीयो पांणी रहै । पछै चेचीयावास पीवै । जाट चारण बसै । कसबा था कोस ८ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२८५)	५७१)	२२०)	५२५)	३२५)

३

४१ सगळी गांव बसती[2]—९१९०० । विगत—

९०१०० षालसै गांव ३८

१८०० सांसण गांव ३

१०५. तफै अलतवो—

१ अलतवो षास ५०००)

रकबो १४११३ । बरसाळी षेत धोरा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसेटा २० तथा २५ । पांणी थीड़ो । बीघा ६ तथा ७ पीवै[3] । जाट बसै । मेड़ता था १५ ।

१. चारण जाट बसै ।

1. अखा का पुत्र नारायण है । 2. सम्पूर्ण गांवों में आबादी । 3. ६-७ बीघों में पानी दिया जा सकता है ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५२६) १८११)[1] १७८४) ३४५३) ११६४)

१ मदीयांन २५००)

कोस १४ । रकबो ८८४७२ । बरसाळी धोराबंध षेत । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसेटा २० तथा २५ । पांणी थोड़ो । बीघा ६ तथा ७ पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
३०१) ११४१) १००४) २०३०) १२४१)[2]

१ चांदारूण २०००)

कोस १३ । रकबो ६७७४ । बरसाळी धोराबंध षेत । चिणा ऊनाळी कोसेटा १५ तथा २० । पांणी थोड़ो, बीघा ७ तथा ८ पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२८७) ४७१) १०३१) १११९) ८१८)

१ भयो वडो ३०००)

कोस १४ । रकबो १५२४१ । बरसाळी षेत कंवळा थळ रा । ऊनाळी कोसेटा १५ । पांणी थोड़ो । जाट बसै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
५५२) ८४१) ११६७) १९३६) ७२८)

१ पुचीपलो[3] २०००)

कोस १७ । रकबो ६५५९ । बरसाळी षेत सषरा । ऊनाळी कोसीटा १० तथा १२ । कोहर १ बंधवो सागरी, गांव पीवै । ऊपर ऊनाळी[1] । जाट बसै ।

---

१. १८०१) । २. १२५१) । ३. पचीपलो ।

---

1. ऊनालू साख भी होती है ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५७२) ७२२) ४३४)[१] १७७९)[२] ६६९)

१ बीठावास ४०००)

कोस १४। रकबो ६९८५। बरसाळी षेत सषरा। सेवज चिणा। ऊनाळी कोसेटा ४० तथा ५०। जाट बसै। बडो गांव।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३७८) १८७७) ५८८३) २७२६) १८८८)

१ बाजोली जाटां[३] २५००)

कोस १३। रकबो ११२२३। बरसाळी षेत कंवळा धोरा। सेंवज चिणा। ऊनाळी कोसेटा ६० तथा ७०। बावड़ी १ बंधवा[1]। गांव रा लोक पांणी पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०७३)[४] २२७२) ३२५४) २४७२) १७२२)

१ कितलसर[५] १७००)

कोस १२। रकवो १४०५५। बरसाळी षेत कंवळा सषरा। सेंवज चिणा। ऊनाळी कोसीटा २०। बावड़ी १ बंधवा। गांव रा लोक पांणी पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५३८) १५३७) ९१८) ३०३६) १७२६)

१ भईयो षुरद १३००)

कोस १४। रकबो ९६०१। बरसाळी षेत कंवळा थळ रा[2]। सेंवज चिणा। ऊनाळी कोसीटा ७ तथा ८। जाट बसै।

---

१. ४३४४)। २. १७१९)। ३. ब्राजोली। ४. १०३७)। ५, कींतलसर।

---

1. पक्की बंधी हुई बावली। 2. रेतीले।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४२)	६७१)	६९०)	६३६)	२८६)

१ डोभड़ी बडी १२००)

कोस १२ । रकबो ६६६४ । बरसाळी षेत कंवळा थळ रा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसेटा १० तथा १२ । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५७७)	६४६)	१०३२)	१११७)	९९१)[1]

१ आंतरोळी[2] सांगा २०००)

कोस १४ । रकबो ३२४३ । बरसाळी बडा षेत । ऊनाळी सारी सींव में सेझो । कोसेटा ४२ । सेंवज चिणा । जाट बसै । पाहो पिण षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११२२)	११३२)	२१००)	१२०८)	६२६)

१ मुहाड़ीयो[3] १०००)

कोस १३ । रकबो ३३८४ । षेत सषरा काठा । ऊनाळी कोसेटा १० पिण आषरीयै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८८)	५०८)	५५९)	६१३)	४६५)[4]

१ पालड़ी राजा ५००)

कोस १४ । रकबो २४०० । बरसाळी षेत थळ रा कंवळा सषरा ऊनाळी कोसेटा ५ । पांणी चोढो । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८७)	२५७)	२२७)	३३२)	३१२)

---

१. ८८१) । २. आंत्रोलो । ३. कुहड़ियो ।
४. ९८) २५७) २२७) ३३२) ३२२) ।

१ ललाणो बडो　　१०००)

कोस १४। रकबो ८२१४। षेत बरसाळी। थळ रा। ऊनाळी नहीं। तळाव मास ८ रौ पांणी रहै। पछै षरललाणै[1] कोहर १ पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२६)	१५३)	३०)	३०६)	१६०)

१ भुतवो　　५००)

कोस १५। रकबो १९४४। बरसाळी कंवळा षेत थळ रा। ऊनाळी कोसीटा ४ तथा ५ हुवै। पांणी थोड़ौ। बिसनोई बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०८)	२३२)	२३३)	२६२)	२०७)

१ षेड़ीललीया　　५००)

कोस १६। रकबो १३५०। बरसाळी थळ रा षेत सषरा। ऊनाळी कोसेटा २ हुवै। जाट रजपूत बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१७५)	२०६)	१५७)	८१०)	१२२)

१ गेहड़ौ बडौ　　४००)

कोस १८। रकबो २६४६। षेत सषरा। ऊनाळी कोसेटा १०। पांणी थोड़ौ। बसीवांन लोक नहीं[1]। रा० माहासंघ जगनाथोत री बसी रा लोक छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०६)	३३१)	३२६)	६२२)	३२६)

१ पालड़ौ महेस　　५००)

---

१. पुरललांणी।

---

1. आबादी नहीं।

कोस १४॥। रकबो २६०४। बरसाळी षेत सषरा। ऊनाळी कोसीटा २ हुवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५)	७४)	११६)	१४३)	१०२)

१ डोभड़ी संढ री ३००)

कोस १७। रकबो २४००। बरसाळी कंवळा षेत रूड़ा। ऊनाळी कोसीटा १। जाट बसै। डोभड़ी सांवळदास री भेळो षेड़ौ बसै[1]। हुल राघोदास री बसी रा लोक षेत षड़ै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५५)	४२)	१३७)	३७)	३८)

१ षेड़ी अषैराज ६००)

कोस १७। रकबो १९४४। षेत काठा मगरा। सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळी कोसीटा १७ धोरै रा। सांवतसी नाहरषांनोत री वसी रहै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२६)	४५८)	०)	४५७)	७०७)

१ दमोई षुरद ७००)

कोस १६। रकबो २६०४। षेत कंवळा थळ रा। ऊनाळी कोसीटा २। षेड़ो सूनो। बड़ी दमोई रा विसनोई षेत षड़ै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८१)	३११)	१७५)	१०९)	१६४)

१ सीयल भषरी ७००)

कोस १३। रकबो ——। षेत काठा सषरा मगरा। ऊनाळी चांच ५० हुवै। षेड़ौ सूनौ किसनपुरै रा बिहारीदास किसनसिंघोत री वसी रा लोक षेत षड़ै छै।

1. 'सांवळदास की डोभड़ी' ग्राम में इसके लोक भी बसते हैं।

१ रावळबास १०००)

कोस १२ । रकबो ५६१६ । बरसाळी षेत कंवळा थळ रा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसेटा २० तथा २५ हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३१)	६२६)	१०७०)[1]	१९१९)	६४३)

१ मोठीयो मीठड़्यो १५००)

कोस २ । रकबो १६४०६ । षेत कंवळा थळ रा सषरा । कोसेटा १२ । पांणी थोड़ो । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२२)	६७६)	९७२)	१९१४)	७७३)

१ दमोई बडी ८००)

कोस ११ । रकबौ ३११४ । बरसाळी षेत सषरा । ऊनाळी कोसेटा १० । पांणी चोढो । बिसनोई बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१८२)	३०२)	१६३)	१०९)	२२०)

१ बीजारूण ७००)

कोस १३ । रकबो ९०३७ । बरसाळी षेत सषरा । ऊनाळी कोसेटा २० तथा २५ चांच २० । सेंवज चिणा हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०९)[2]	५६२)	११३६)	५०९)	०)

१ षेड़ी सीलां १०००)

कोस १६ । रकबो ४१३४ । षेत सांवणू[1] सषरा कंवळा । सेंवज

१. १०७१) । २. ३०८) ।

1. बाजरी आदि पैदा करने के उपयुक्त ।

चिणा। कोसीटा २५। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०६)	४४७)	६११)	९३३)	१०१४)

१ सेहरीयो वास[1] ५००)

कोस १८। रकबो १५३६। बरसळी षेत सषरा। ऊनाळी कोसीटा ५ तथा ६ हुवै। जाट रजपूत बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०७)	२०६)	५२५)	८६)	१२८)

१ मोडी[2] वीका ३००)

कोस १८। रकबो २२३५। बरसाळी षेत कंवळा सषरा। ऊनाळी कोसीटा ७ तथा ८। रा० चुतरभुज मनोहरदासोत री वसी रा लोक रहै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५२६)	४५६)	४६५)	२६०)	३०५)

१ डोभड़ी षुरद ४००)

कोस १७। रकबो २९०४। बरसाळी थळ रा षेत सषरा कंवळा। ऊनाळी कोसीटा ४। बिसनोई बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५९)	३११)	२८६)	१६६)	९४)

१ डोभड़ी सांवळदास ३००)

कोस १७। रकबो २२८१। बरसाळी षेत कंवळा सषरा। ऊनाळी कोसीटा ३ तथा ४। पांणी चोढो। रजपूत बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	६४)	२७१)	६५)	६५)

१. सेहरीयावसी। २. मेड़ी।

१ ललांणो १५००)

रकबो ——। बरसाळी थळ रा षेत। ऊनाळी सर नहीं[1]। कोहर १ पोछ रौ, पांणी पीवै। रा० माहसिंघ बीहारीदासोत री बसी रहै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५७)	१०६)	२५)	२०)	१०६)

१ हीगवाणीयो ४००)

कोस १८। रकबो २९०४। बरसाळी षेत सषरा। ऊनाळीं कोसीटा ४। षेड़ो सूनौ। गोहडा बडा रा लोक षेत षड़ै छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६)	१०५)	१५०)	४५)	८०)

१ बलुपुरा

कोस १६। रकबो ......। षेड़ो सूनो। घणा बरस हुवा अजमेर रौ गांव[2], वरणे वाहाल रा गांव में गळत गया[3] घणा बरस हुवा।

३४

१०६. ४ सांसण—

१ बाजोली चारणां री १६५०)

दूदा जोधावत रौ दत्त। बाहरेट पत्ता देवाइत रा नुं हिमें महेस चुतरावत नै षेतसी बेणावत, रांमदास करन रौ। रकबौ ४०५६। षेत सषरा, धोरा[1] सेंवज। ऊनाळी कोसीटा ४० हुवै।

१. धोराबंध।

---

1. कोई बड़ा तालाब आदि नहीं है। 2. बहुत बर्षों से अजमेर की सीमा का गांव है। 3. निर्वंश हो गये, सभी मर कर समाप्त हो गये।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६१)	१०३२)	१६४२)	१३२१)	९७५)[1]

१ रतनावास ६५०)

रा० रतनसी दुदावत रौ दत्त, चारण रतना डाहावत मीसण नुं। पछै रा० सुरतांण जैमलोत मीसण कांना उरौ[1] लै नै बाहारैट चुतरा जैमलोत नुं दीयौ। पछै चुतरौ आधौ गांव आपरी बेहन मीसण दांना गांगावत नुं परणाई थी[2] तिण नुं दोयौ नै आधौ आप राषीयौ[3]।

०।। बाहारैट चुतरा रै बांटा[4] ३ बंटै आयौ। महेस लाडषांन चुतरावत नै षेतसी चुतरावत रा बेटा पोतां रा छै।

०।। मीसण ऊदा अणदा[2] नुं छै।

रकबौ १७००। षेत कंवळा। कोसीटा १० चारण जाट बसै। कोस १५।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	३६१)	५५०)	५६१)	४२५)

१ घांणा ४५०)

रा० कानड़दास[3] केसोदासोत रौ दत्त। जगहट षींवा बेणीदासोत नुं। हिमें आईदांन जगावत[5] नै सुंदर षींवावत छै। रकबौ १०१४। षेत काठा। कोसीटा १०। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७०)	३६१)	६११)	५५५)	४४९)

१ गेहड़ो षुरद १००)

रा० वीरमदे दुदावत रौ दत्त। रतनुं करन सुषावत नुं। हिमैं

१. ९७२)। २. अणदोत। ३. कानीदास।

1. मीसण से छुड़वाकर। 2. विवाह किया था। 3. आधा खुद ने रखा। 4. हिस्सा। 5. जगा का पुत्र आईदांन।

रूपा सूजावत नै जसौ भोजरारोत छै। रकबो २५१४। षेत कंवळा। कोसीटो १। चारण जाट बसै।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
९१) १०६) २५) ४५) १००)

४
३८

विगत—

४२३००) षालसै गांव ३४
२८५०) सांसण गांव ४
४५१ ०) गांव ३८

१०७. तफै देघाणो—

१ देघांणो षास ५०००)

कोस १२। रकबो १७६२५। बरसाळी बडा धोरा[1] सर १। ऊनाळी बीघा २००० षेत सेंवज गेहूं चिणा। कोसीटा २० तथा २५। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
३३९) ३६८९) १९००) २३७७)[2] ११३९)

१ गोठड़ो ५००)

कोस ९। रकबो ५२५६। बरसाळी वडा धोराबंध षेत। सेंवज गेहूं चिणा। पीयल[1]। कोसीटा ६० तथा ७०। जाट बसै।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०९) २३१७)[2] ४६९६) २५४२) ११७३)

१. धोराबंध षेत। २. २३७७)।

1. जिनसे सिंचाई होती है।

१ गोनरड़ौ ४०००)

कोस १० । रकबौ ६३१४ । बरसाळी बडा धोराबंध षेत । सर १ बीघा १००० । सेंवज काठा गेहूं बेजड़[1] । कोसीटा १०, चांच ४० । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९

३५१) १५४६) ३३५३) २४४२) ९९२)

१ वीषरणीयो वडौ ६०००)

कोस ९ । रकबो ८६६४ । बरसाळी षेत काठा । मगरा सेंवज । ऊनाळी कोसीटा ६० हुवै । पांणी ऊंडो[2] हाथ ४० । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९

५१०७)[1] ६२३०)[2] ४३९९) २९१६) ६२५)

१ लवादर ४०००)

कोस १२ । रकबौ ९४०९ । बरसाळी बडा धोराबंध षेत । सेंवज गेहूं चिणा । पीयल कोसीटा ६० तथा ·० । जाट बसै । रा० रामसिंघ[3] सुजांणसिंघोत री वसी ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९

१६८२) ४६४२)[4] ५१४०) ५०५३) २७८२)[5]

१ डोडीयांणो ३५००)

कोस १० । रकबो ९६०० । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा । कोसीटा ५५ । जाट बसै । बडौ गांव ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९

३३५१) ३८४०) ५६५७) ४२२८) ३६५६)

---

१. १५४३) । २. ५१०७) । ३. स्यामसिंघ । ४. ४६८२) । ५. २७८३) ।

---

1. चने व गेहूं दोनों । 2. गहरा ।

१ वीषरणीयो[1] षुरद ६५००)

कोस ६ । रकबो २७५२ । बरसाळी धोरावंध बडा षेत । सेंवज चिणा । पीयल[1] कोसीटा ४० । बडौ गांव । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
११८२) २१५७) ४६८९) २२४०)[2] १५३८)

१ तीलांणेस ३०००)

कोस ९ । रकबो ७०९९ । बरसाळी धोराबंध षेत । सेंवज काठा गेहूं चिणा । सेभौ कोहर नहीं । तळाव बरसोंदीयो पांणी रहै । पछै बंवळलै पीवै[2] । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
४१०) १९३६) ३०९) ६३५) ५११)

१ जालसु बडी[3] ३०००)

कोस १० । रकबो १५९५६ । बरसाळी बडा षेत । मगरा सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ४ । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
३११) ९३६) ५८६) ३०७१) ८०१)

१ नीबड़ी कलां २५००)

कोस १० । रकबो ३७५० । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा । कोसीटा ३० । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५५९) १९६४) १२९२) १६४१) १०३१)

१ पुनलोतो ३५००)

कोस १२ । रकबो १६२२४ । षेत धोराबंध । सर १ बीघा

१. बीकरणीयो । २. २२३८) । ३. बडो ।

1. सिंचाई के योग्य । 2. पानी समाप्त होने पर बवळले ग्राम में पीते हैं ।

२०० । सेंवज चिणा गेहूं जव । कोसीटा ७० तथा ८० । सारी सींव में सेझौ घणौ ऊनाळी करौ तितरी । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१५८८) २७९०) १२५३४) ५४०२) ४३७३)[१]

१ माडल देवां ३५००)[२]

कोस १० । रकबौ ७७३२ । षेत सषरा कंवळा काठा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा २० चांच १० । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
२८८) ११२६) १५९३) ७०१) ३१८)

१ जगड़वास[३] २०००)

कोस १२ । रकबो ६९३६ । बरसाळी षेत कंवळा थळ रा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा १५ । जाट बसै ।

संवत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३१)[४] ८७२) ६३२) १११९) ८३०)

१ मेहरीयावास[५] २५००)

कोस ११[६] । रकबो २४९६ । बरसाळी बडा षेत । ऊनाळी कोसीटा ४० । सारी सींव में सेझो करै तितरौ हुवै ।[1] जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
६५५) १२२६) २६८१)[७] १४२९) ८७८)

१ तांबड़ौली २५००)

रकबो ६१६४ । बरसाळी कंवळा सषरा षेत । ऊनाळी कोसेटा २० तथा २५ हुवै ।[८] पांणी आषरीयो[2] । सेंवज चिणा । जाट बसै[९] ।

---

१. ४३२३) । २. २५००) । ३. जगड़वस । ४. २३१) । ५. वसी । ६. कोस १२ । ७. २६५१) । ८. सारी सींव में सेझो करै तितरौ हुवै (अधिक) । ९. मेड़ता था कोस १० (अधिक) ।

---

1. जितनी सिंचाई करे उतनी ही होती है । 2. सीमित पानी ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३३७)	१२२६)	१३०२)	१६०२)[1]	९८२)

१ मेहडांणो ४५००)

कोस १३ । रकबो २६४६ । बरसाळी बडा धोराबंध षेत । सेंवज गेहूं चिणा । कोसीटा ४० । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२१४)	१९४७)	४६६३)	१५४२)	११७३)

१ नीबड़ी कोठारीया री २५००)

कोस १० । रकबो ४०५६ । बरसाळी षेत सषरा काठा मगरा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा २५ तथा ३० । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५२१)	१७६१)	२२९१)	२३२६)	१५०८)

१ जावो सोसोदीयां री ४०००)

रकबो ४६७० । बरसाळो षेत सषरा काठा । चिणा धोरा । कोसीटा ७० चांच ५० । सिगळी सींव में[1] सेझौ, करै तितरौ । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५१)	६१६)	३६७६)	१४१४)	९१४)

१ मांडळ जोधां १०००)

कोस ११ । रकबो ९६०० । बरसाळी षेत कंवळा काठा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा २० तथा २५ । चांच २० । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४९४)	१३२६)	१९१३)	१०१८)[2]	५२६)

---

१. १६२२) । २. १११८) ।

---

1. गांव की पूरी सीमा में ।

१ रेवंत २०००)

मेड़ता कोस ११ । रकबो ७७७६ । बरसाळी षेत कंवळा थळ रा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसेटा ४ । पांणी थोड़ौ । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१०)	८०२)	९२१)	७३३)	९६५)

१ जालसु षुरद १५००)

कोस १० । रकबौ ८२१४ । बरसाळी षेत कंवळा सषरा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसोटा ४ । पांणो चोढो[1] । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	३६२)	४०४)	३०५)	२५५)

१ ईटावौ बांभणां १०००)

कोस ··· । रकबो ८६४ । बरसाळी थळ रा कंवळा षेत । ऊनाळी । कोसीटा ७ तथा ८ । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३३)	१८१)	४५८)	४५३)	२९३)

१ ईटावा भोजु १२००)

कोस ··· । रकबो ५१०४ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा । ऊनाळी नहीं । वेरो १ पांणी पीवण रौ छै,[2] तठै गांव पांणी पीवै छै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०३)	९२१)	३१६)	५११)	३९३)

१ वरणावो थळी १३००)

कोस ११ । रकबो ११७२२ । बरसाळी कंवळा षेत । ऊनाळी नहीं । कोहर १ बंधवो । पांणी मीठौ, गांव पीवै । जाट बसै ।

---

1. पानी कम । 2. पानी पीने के लिए एक कुआ है ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१००)	८२६)	३९७)	१४१३)	५१०)

१ कीरड़ १२००)

कोस १३ । रकबो ४५३५ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा १० । जाट बसै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१३६)	५११)	७०१)	१०१३)	४५१)

१ कला पींपाड़ रौ वास ५००)

कोस १० । रकबो ——— नहीं । पांचरूड़ा[1] री सींव में बसीयो[1] । षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । कोसीटा १० । जाट बसै । हळवा ३० ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०५)	४६२)	५२१)	५१२)	२३६)

१ गुदीसर बडो ४००)

कोस १२ । रकबो ६२२१ । बरसाळी कंवळा षेत रूड़ा । ऊनाळी नहीं । कोहर १ पांणी पीवण रौ । जाट बसै ।

संवत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	३५)	५३)	८५)	१५३)	९२)

१ ईटावो लाषां २०००)

कोस १८ । रकबौ १०३७५ । बरसाळी षेत थळ रा कंवळा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा २५ । पांणी चोढो । जाट बसै । रा० डूंगरसी देईदासोत री बसी रा लोग बसै ।

१. पाचड़ोली ।

---

1. पांचरूडा की सीमा में ही यह ग्राम भी बसा हुआ है ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२४१)	५५६)	१२४२)	१४१७)	१३८१)

१ ईटावौ लाडषांन २०००)

कोस ८॥। रकबो ३१४८। बरसाळी षेत काठा मगरा। सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळी कोसेटा १५ हुवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५८)	७१६)	७७१)	१०१५)	५१०)

१ सूरपुरौ १२००)

कोस ।॥। षेत काठा मगरा। सेंवज चिणा हुवै। ऊनाळी नहीं। कोहर १ छै, तठै गांव रा लोक पीवै[1]। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११४)	५७१)	५७४)	४१९)	४१८)

१ भाडली १३००)

कोस ११। रकबो ५७६६। बरसाळी कंवळा षेत थळ रा। कोहर १ छै, पांणी मीठौ, तठै गांव रा लोक पीवै। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११०)	३५१)[1]	५३८)	५१६)	२१५)

१ षेरवै थळी १०००)

कोस १०। रकबो १९४४। बरसाळी कंवळा षेत थळ रा। ऊनाळी कोहर १ बंधवों छै। पांणी घणो। जाट बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९४)	४१५)	१८९)	५११)	१३५)

१. ३११)

१. गांव के लोग वहां से पीने का पानी लेते हैं।

१ पांचरूड़ो १०००)

कोस १० । रकबौ २४०० । बरसाळी षेत काठा मगरा सेंवज चिणा हुवै । सेझो कोहर नहीं । नाडो मास ४ पांणी हुवै । पछै फला रै वास रा पीवै । जाट वसो ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९२)	३०९)	३२८)	४६१)	२५१)

१ लांगोड़ ३००)

कोस १२ । रकबौ १४४०६ । षेत सषरा बरसाळी कंवळा थळ रा । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ७ हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२१)	६१२)	५६२)	८११)	४५१)

१ गोरेहरी करणां ८००)

कोस १२ । रकबौ ६०८० । वरसळी षेत कंवळा सषरा । ऊनाळी कोसीटा ४ । पांणो चोढो । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६)	४६१)	२४७)	७३४)	२२३)

१ गेनरड़ी[१] ५००)

कोस १० । रकबो १७३४ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा धोरां । ऊनाळी कोसीटा १५ चांच २० । करसा गोनरड़ो भेळा बसै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८५)	२०६)	४४८)	२०१)	३१)

१ नुहंन पुरद ३००)

कोस १४ । रकबो २४०० । बरसाळी षेत कंवळा थळ रा । ऊनाळी कोसोटा २ । जाट बसै । षेड़ो तोनां ही गांव री भेळी बसै ।[1]

---

१. गोतरड़ी

---

1. तीनों ही गांवों की बस्ती शामिल बसती है ।

संमत १७१५   १६   १७   १८   १९
२५)   ३०८)   ११०)   १३०)   १७०)

१ गोरेहरी चांचा   ५००)

कोस ११। रकबो १२९१। बरसाळी षेत रूड़ा। उनाळी कोसीटा २ तथा ४ हुवै। पांणी चोढो। जाट बसै। घर ५ तथा ७।

संमत १७१५   १६   १७   १८   १९
३७)[1]   १७६)   १०८)   १०७)   १०२)

१ चांदणी बडी   १३००)

कोस ११। रकबो १७३४। बरसाळी षेत कंवळा थळ रा। ऊनाळी नहीं। कोहर १ बंधवो, पांणो मीठौ। षेड़ौ सूनो। नागोर रौ गांव[1]। बांभण बोरा पाही षेत षड़ै। कोहर पीवै।

संमत १७१५   १६   १७   १८   १९
२०)[2]   १०५)   ०   १५१)   ५०)

१ ईटावो षीचीयां रौ   ५००)

रकबो ७४९१। बरसाळी कंवला थळ रा षेत। ऊनाळी कोसीटा ४ हुवै। षेड़ो सूनो। ईटावो बांभणां रा लोक पाही षड़ै। कोस १७।

संमत १७१५   १६   १७   १८   १९
८५)   ६६)   १४५)   २५६)   १०५)

१ रोहीसड़ो   ५००)

कोस ९। रकबो ३४५८। बरसाळी षेत काठा मगरा। सेंवज चिणा हुवै। सेझो नहीं। कोहर १ पांणी पीवण रौ। जाट बसै।

---

१. २७)। २. ३०)।

---

1. मूलतः नागोर परगने का ग्राम है।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१६०)	३९)	२०७)	२२६)

१ नुंहन वडी ४००)

कोस १४। रकबो ४०५६। बरसाळी थळी रा षेत कंवळा। ऊनाळी कोसीटा २। जाट बसै। षेड़ौ तो नहीं,[1] नांहन रा भेळा बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	४११)	५५०)	५००)	१७०)

१ नुहन तीजो ३००)

कोस १४। रकबो ३०९२। बरसाळी षेत कंवळा थळ रा। ऊनाळी नहीं। जाट बसै। षेड़ौ तीनूं ही नुहन मेळा होज बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)	२०६)	१३१)	१४०)	८०)

१ चरड़ा वास ७००)

कोस १३। रकबो १०१४। षेड़ो सूनो[2]। बरसाळी कंवळा थळ रा षेत। नागोर रा गांव बांभण बोरा लोक षेत षड़ै। ऊनाळी नहीं। कोहर नहीं।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१५)	१४७)	२५१)	१००)

१ चांदण षुरद ३००)

कोस १४। रकबो ४८६। षेत थळ रा सषरा। षेड़ो सूनो। नागोर रौ गांव। बांभण रा लोक षेत षड़ै। ऊनाळी नहीं। चांदणी रै कोहर पीवै।[3]

---

1. गांव बसा हुआ नहीं है। 2. गांव सूना है।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	०	०	६१)	१५)

१ डुगर छीकणवास[1] २५०)

रकबो १३५० । षेत थळ रा कंवळा । कोहर नहीं । षेड़ो सूनो । डुगर अचळा रौ लोग षेत षड़ै । कोस १० ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९)	१०१)	१२७)	२५१)	१५०)

४६.

१०८. ५ सांसण

१ रळीयावतो षुरद १०००)

रा. जैमल वीरमदेवोत रौ दत्त । षिड़ीया मोटाल[2] मांडणोत नुं । हिमें लिषमीदास भैरवदासोत नरहर सूजावत नरहर भोजराजोत छै । रकबो २१६६ । षेत काठा कंवळा । कोसीटा ८ हुवै । सेंवज चिणा हुवै । जाट बांभण रजपूत बसै । कोस १२ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२५)	४११)	४९१)	५६१)	४१५)

१ गुदीसर षुरद ४००)

राजा श्री सुरजसिंघजी रौ दत्त, सांदू माला ऊदावत पायौ । हिमें सांवतसी आसकरनोत नै कुंभौ ईसरदासोत छै । रकबो ११६२ । बरसाळी षेत कंवळा । कोसीटा २ । जाट बसै । कोस १२ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१५६)	१५)	३०५)	५४)

---

१. छींकणावस । २. मोटल ।

१ भोवली [1] चारणां री १५०)

रा: वीरमदेव दुदावत रौ दत्त षिड़ीया मांडण षींवसुरा नुं। हिमें भगवान जसावत नराईण अषावत, लीषमीदास भैरवदासोत छै। रकबो १४४८। षेत कंवळा थळ रा। चारण जाट बसै। कोहर सेभो नहीं। भाषर नीचै कुंड १ छै तठै पीवै। कोस ११।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	३११)	३१)	१५८)	१०७)

१ मोगावास २००)

राजा श्री सुरजसिंघजी रौ दत्त, भाट [2] दमान रूपसीयोत दसौंधी नुं, हिमें रिणछोड़ बीहारीदास रौ, चुतरभुज बीहारीदासोत, हररांम मदमन री छै। रकबो ४८४। षेत कंवळा। कोहर १ पांणी पीवै। कोस २०।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	२०६)	३६)	२०९)	५८)

१ धोळीयो ४००)

माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी रौ दत्त, भाट गोकळचंद द्वारका-नाथोत नुं संमत १७१७ दोयौ। रकबो १०२१। षेत कंवळा कोसीटा ७ तथा ८ हुवै। रजपूत बसै। रा० साहबषांन मनोहरदासोत री वसी। कसबा था कोस १५।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	८०)	८१)	२०१)	१००)

५

५१

१. भवली। २. बारट

विगत—

९३७५०)	षालसै	गांव ४६
२१५०)	सांसण	गांव ५
९५९००)		गांव ५१

१०९. तफै रैयां—

गांव ५८. रेष १०७०००)

१ रैयां षास ७०००)

कोस ७। रकबो बीघा २९२२[१]। बरसाळी बडा षेत धोराबंध। सेंवज चिणा। ऊनाळी सारो सींव मांहे सेझो। पांणो घणौ। कोसेटा २५० तथा ३०० करै तितरा हुवै। वडौ गांव। वसीवांन लोक जाट।[1] रा. गोपाळदास सुंदरदासोत री वसी रा लोग ऊगवण मांहे।[2]

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३९०२)	५४०२)	१०६४३)	८६५३)[२]	७४५६)

१ पदमावती वडी ७०००)

कोस ७। रकबो १९३५७। बरसाळी बडा धोराबंध षेत। सेंवज गेहूं चिणा हुवै। ऊनाळो सिगळो सींव में सेझौ। कोसोटा २०१ तथा २२५ हुवै। पांणी नजीक। वडौ गांव। जाट बांणीया और ही रैत बसै। सदा षालसै रहै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११५८)	११२७६)	१६५२७)	९९१०)	६६९५)

१ झड़ाऊ ५०००)

१. २९८२२। २. ९६५३)

1. जाटों की बस्ती है। 2. पूर्व दिशा में।

कोस ५ । रकबो ६६०२ । बरसाळी बडा षेत । मगरा सेवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ११० तथा १२० हुवै । जाट बसै । वडौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
३३३०)	५१५६)	७२८०)	६१२७)[१]	२६२६)

१ कुड़की ६०००)

कोस ६ । रकबो ४८६०० । बरसाळी षेत काठा मगरा, निपट सषरा[1] । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा २०० तथा २५० करै तितरा हुवै । सारी सींव में सेझो । वसीवांन जाट । जागीरदार री वसी रा लोक । घणौ वडौ गांव[2] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
२६०२)[२]	५७५२)	८५१२)	६६३१)	६४४४)

१ सीहासड़ो[३] ३०००)

कोस ७ । रकबो ६६३६ । बरसाळी वडा धोरा बंध काठा षेत । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ६० तथा ७० हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
११६०)	१६६६)[४]	४४३६)[५]	२५२७)	२४१०)

१ कोरीयाठड़ी[६] ४०००)

कोस ५ । रकबो ४४२५ । बरसाळी वडा षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळो कोसीटा ६० तथा ७० । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
२८८२)	२०५२)	४७७६)	२६५२)	७६६६)[७]

---

१. ६१३७) । २. १६०२) । ३- सुहासड़ो । ४. २१६६) । ५. ४४२६) । ६. कुंरियाठड़ो । ७. १६६६) ।

---

1. बहुत उपजाऊ । 2. बहुत बड़ा गांव ।

१ कोड २५००)

कोस १० । रकबो १६१२० । वरषाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ५० तथा ६० हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६४३)	१०४२)	१८१३)	१४३९)	८०२)

१ गुवारड़ी बडी ३०००)

कोस ३ । रकबो ७०१७ । बरसाळी षेत काठा धोराबंध । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ३५ हुवै । तळाब बरसोंदीयौ पांणी रहे । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२८)[1]	८१३)	१३१६)	१४१९)	६२४)

१ नैतड़ी ३०००)

कोस २।। । रकबो १००८६ । षेत बरसाळी धोराबंध । सेंवज काठा गेहूं चिणा हुवै । सेझो नहीं । तळाव बरसोंदीयौ पांणी रहै । पछै गुवारड़ी पीवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११२०)	३१४२)	७९६)	२८८१)[2]	१३५६)

१ बीजाथळ १५००)

रकबो १९३६[3] । बरसाळी काठा मगरा । सेंवज चिणा सारी सींव में हुवै । ऊनाळी कोसीटा ६० हुवै । सिगळो सोंव में सेझो घणौ । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०१)	२३३६)[4]	३६०४)	२५२५)	८७२)

१ आल्हाणीया वास[5] ८०००)

---

१. १२६) । २. २८९१) । ३. ६९३६) । ४. २२३६) । ५. आलणीयावास ।

रकबो ३९३६६ । बरसाळी बडा षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी सेझो सिगळी सींव मैं पांणी घणौ । कौसीटा २५० तथा ३०० करै तितरा हुवै । वसीवांन जाट । रा० गोपाळदास सुंदरदासोत री वसी । बडौ गांव । कोस ९ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३४१६)	५४०६)	९३५८)	८५०३)	५८५१)

१ पदमावती षुरद ६०००)

कोस ७ । रकबौ ८८५५ । बरसाळी त सषरा काठा कंवळा । सेंवज चिणा सिगळी सींव मैं हुवै । ऊनाळी कोसीटा २५० हुवै । पांणी घणौ । बडौ गांव । जाट बसै । षालसै सदा रहै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२८८७)	४६४०)	१३८७०)	५२३५)	४८६७)

१ लाडपुरी ५०००)

कोस १२ । रकबो ९४०८ । बरसाळी बडा रेत रा षेत[1], कंवळा काठा । सारी सींव मैं चिणा हुवै । कोसीटा ६० तथा ७० हुवै । सेझो घणो । जाट बसै । जागीरदार रा लोग बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७७३)	१६७२)	४२४२)	२७४२)	१६०४)

१ झाझुण वासणी[१] २२००)

रकबो २०७२ । बरसाळी बडा षेत । सेंवज चिणा सारी सींव मैं हुवै । ऊनाळी कोसीटा ४० तथा ५० । सेझो सारी सींव में सषरो । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६२४)	१८५४)	३११२)	२०६३)	१९७९)

---

१. झाझुवसणी ।

---

1. रेतीले खेत ।

१ दासावास १७००)

कोस ... । रकबो २६०६ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ३५ तथा ४० हुवै । सेझो सारी सींव में घणौ । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०५)	९१६)	६२१२)	१४२१)	८८६)

१ टैहलौ ३०००)

कोस १२[1] । रकबौ ७३५० । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा सारी सींव में हुवै । ऊनाळी कोसीटा ३० तथा ३५[2] हुवै । जाट बसै । बारेट नरहरदास लषावत बसै[1] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५२१)	१५४६)	२२३६)	२३२७)	१४२२)

१ रायसलवास १७००)

कोस ३ । रकबौ ३३१३ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ४५ हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७२)	७६६)[3]	६३२)	१२२१)	२०७)

१ झीथीया[4] ३०००)

कोस ७। रकबो ४४०६। बरसाळी षेत काठा मगरा। सेंवज चिणा। कोसीटा ऊनाळी ११० तथा १२० हुवै[5] । बडौ गांव । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१९०२)	२८००)	४८२७)	४४१३)	३३०७)

---

१. ११ । २. ४० । ३. १६६) । ४. झीघीया । ५. सगळी सींव में सेझो करै तितरा हुवै ।

---

1. लखा का पुत्र बारहट नरहरिदास यहाँ बसता है ।

१ कोरीयो ३०००)

कोस ... । रकबो ३०१५ । बरसाळी षेत काठा मगरा धोरा[1] । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा ४० तथा ४५ हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
७७६) २०५८) ३३७८) २०२०) १६२०)

१ थाठ[2] ३५००)

कोस ६ । रकबो ५६३७ । बरसाळी बडा धोराबंध षेत । सेंवज गेहूं चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ४० तथा ४५ हुवै । जाट गूजर बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
३२६) १०१६) २२८३) २३२६) २१७६)

१ सीरीयावास[3] १०००)

कोस ६ । रकबौ ५४०० । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा ३५ । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
८५६) १८३१) १५५०) १६४७) १६४२)

१ आबुवास १७००)

कोस ८ । रकबो १९८८ । बरसाळी बडा षेत । सेंवज चिणा हुवै । कोसीटा २५ तथा ३० हुवै । सारी सींव मैं सेझो । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१०८२) १२३६) २२५९)[4] २०२१) १२३५)

१ संथाणो षुरद २०००)

कोस ८[5] । रकबौ २४७२ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ३२ । पांणी घणौ । जाट बसै ।

---

१. धोराबंध । २. थाट । ३. सुरीयावस । ४. १२५९) । ५. ६ ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
११६) ५६१) २६१) १०३५) ६११)

१ काळीयाठड़ौ ८००)

रकबो २१६६ । बरसाळी षेत काठा मगरा । ऊनाळी कोसीटा ३० हुवै । जाट बसै[1] ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
४२१) ८२१) १३३६)[2] ५३३)

१ धोळेलाव षुरद ८००)

कोस ७ । बरसाळी षेत काठा । रकबो १७६० । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसोटा १० हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१३०) ४६१) ३२०) ५५७) २१६)

१ संथाणो षुरद ५००)[3]

कोस ...[4] । रकबो ३८२५[5] । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा २५[6] हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
५७७) ६१६) १३१४) १०३५) ३६२)[7]

१ जोधड़ावास बडो ५००)

कोस ...। रकबो ३७५० । बरसाळी षेत काठा मगरा । ऊनाळी कोसीटा ७ तथा ८ हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५ १६ १७ १८ १९
१७५) १६३) ३८५) ५०६) ४०५)

१ माडावरौ[8] ४००)

---

१. मेड़ता थी कोस ६ (अधिक) । २. १११४) । ३. २०००) । ४. ६ । ५. २४७२ । ६. ३२ । ७. ११६) ५६१) २६१) १०३५) ६११) । ८. मडावरो ।

कोस ४ । रकबो ४५०४[1] । बरसाळी षेत । ऊनाळी कोसीटा ५ अरट १ हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३५)	५६१)	५१६)	८११)	३६१)

१ धांमणीयो १०००)

कोस १२ । रकबो ——— । बरसाळी षेत काठा मगरा । ऊनाळी कोसीटा १२ हुवै । वसीवांन लोक नहीं । रा० मुथरादास री बसी रा लोग बसै, षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	७०)	१९०)	४१६)	१५०)

१ सोढावास ४००)

कोस २ । रकबो २७९५ । बरसाळी षेत काठा मगरा । ऊनाळी सेझो नहीं । तळाव रा वेरा पांणी वसै सौ हुवै[2] । बसीवांन लोग नहीं । हुल सांमीदास[3] रा बेटा बसै । घर २० ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	१५६)	४५)	१५५)	४४)

१ हीदाबास चोधरीयांरो[4] १०००)

रकबो ३४५६ । बरसाळी षेत कंवळा काठा । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा ५ हुवै । जाट बसै । कोस २ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४३)	२९१)	३१४)[5]	३५५)	२२३.

१ पीपळीयो ५००)

---

१. ४७०४ । २. तळाव मास ४ पांणी रहै । पछै ताळाबां वेरां पांणी पेटणी सो हुवै । ३. स्यांमदास । ४. चूंबीयां री । ५. ३७४) ।

कोस १० । रकबो ३१७४ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । कोसीटा १० । ऊनाळी हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२०)	२५५)	८६१)[1]	५०९)	२५७)

१ काळणी ५००)

कोस १२ । रकबो ३४५६ । बरसाळी षेत सषरा । सेंवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा २० तथा २५ हुवैं । षेड़ौ सूनौ, रा० राघोसिंघ भोजौतेज[2] री वसी रा लोग षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८६)[3]	४०६)	१३०)	५५७)	२५६)

१ मांणकीयावास षुरद ४००)

रकबो १३३४[4] । कोस ८ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । कोसीटा १२ हुवै । षेड़ो सूनो । बडा मांणकीयावास रा लोग षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८०)	३०६)	२१६)	२०८)	१२५)

१ नैंणपुरौ ६५०)

कोस — । रकबो ८६४ । बरसाळी षेत काठा मगरा । ऊनाळी कोसीटा १० तथा १२ हुवै । सूनो गांव । सुहरीया[5] रा लोग षेत षड़ै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
७५)	१०१)	१०३०)	४५१)	५५१)

१ नाथु री वासणी ४००)

कोस — । रकबो २६०० । षेत सषरा । षेड़ो आलणीयावास

---

१. ८५१) । २. माधोसिंघ भोजोत । ३. ९६) । ४. १२३४) । ५. सेहुरिया ।

में मांजरै । घणा बरस हुवा आलणीयावास रा लोक षेत षड़ै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५१)	५००)	१२०२)	५५१)	४२१)

१ परबतवास[1] १००)

रकबौ २४०० । षेड़ो सूनौ । घणा बरस हुवा भड़ाऊ में मांजरै छै ।

१ भेंसड़ौ बडो २२००)

कोस —[2] । रकबो ४९८२[3] । बरसाळी षेत काठा मगरा संवज चिणा । ऊनाळी कोसीटा ४० हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९५७)	१८४६)	३६३७)	२६३६)	१८३७)

१ जेसावास[4] १४००)

कोस ६ । रकबा ५७०४ । बरसाळो षेत काठा मगरा । ऊनाळो कोसीटा ४० हुवै । भलौ गांव[1] । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०३)	१६३३)	२१६७)	२०३०)	७३९)

१ मथांणीयो १०००)

कोस ८ । रकबो ४३७० । बरसाळी षेत सषरा काठा मगरा । ऊनाळी कोसीटा ७ हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	२०१)	३५४)	३६३)	३५९)

१ भेंसड़ौ षुरद १०००)

---

१. परबतवस । २. कोस ४॥ । ३. ४९४२ । ४. जेसाव्रस ।

---

1. सभी दृष्टियों से अच्छा गांव ।

कोस ५ । रकबो ४६८२ । बरसाळी षेत काठा मगरा । सेंवज चिणा हुवै । कोसीटा ३० । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
१२१)	६१६)	३४६)	६१३)	५०८)

१ मांणकीयावास बडो ६००)

कोस ७ । रकबो १७०८ । बरसाळी षेत काठा मगरा । ऊनाळी कोसीटा १० हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
२३६)	५१६)	८१६)	७००)	३१८)

१ जोधड़ावास षुरद ४००)

रकबो १७०८[1] । बरसाळी षेत काठा मगरा[2] । ऊनाळी कोसीटा १० हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
१५४)	१६३)	५३५)	५०६)	३६६)

१ मीठड़ीया[3] ५००)

कोस ११ । रकबो -- — । बरसाळी षेत काठा मगरा । ऊनाळी कोसीटा २० हुवै । जाट बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
२४६)	७१६)	१२२६	१२६०)	६६२)

१ कबेड़ीयो[4] १०००)

रकबो २७६५ । कोस १२ । बरसाळी षेत काठा मगरा । ऊनाळी कोसीटा १० तथा १२ हुवै । वसीवांन लोग नहीं । रा० ईंदभांण[5] सुंदरदासोत री वसी रा लोग बसै । षेत षड़ै ।

---

१. २६७०) । २. सेंवज चिणा हुवै (अधिक) । ३. मीठड़ीयो । ४. केडीयो । ५. ईंद्रभांण ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४५)	७५)	२३३)	२९०)	१४६)

१ जगा सींधळ री बासणी ५००)

रकबो २१६६। बरसाळी षेत सषरा। सेंवज चिणा हुवै। कोसीटा १० तथा १२ हुवै। बसीवांन लोग कोई नहीं। रा० माधोसिंघ भोजरो[1] बेटो री बसी रा लोग षेत षड़ै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
११२)[2]	२८१)	६९८)	४८१)	२५५)

१ हीदावास गुरड़ीरौ[3] ५००)

कोस ३। रकबो ३४६५। बरसाळी षेत काठा। मगरा सेंवज चिणा हुवै। कोसीटा ऊनाळी नहीं। गुबरड़ी पीवै। जाट १ रा घर ४ बसै[4]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)	३८३)	५५)	५५८)	२०७)

१ गोपाळपुरौ ६००)

रकबौ ——। बरसाळी षेत काठा। सेंवज चिणा हुवै। बसीवांन लोग कोई नहीं। रा० चांदसिंघ रांमचंदोत री बसी रा लोग बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१६१)	४१५)	३९५)	६३१)	४६०)

१ ढही बावड़ी २००)

कोस १२॥। रकबो १७३४। बरसाळी षेत काठा। सेंवज चिणा। कोसीटा ४ तथा ५ हुवै। षेड़ौ सूनो। घणा बरस हुवा[1] लाडपुरै रौ लोग षेत षड़ै छै।

---

१. भोजराज। २. १२१)। ३. गुवारड़ी रौ। ४. जाट बसै।

---

1. कई वर्ष हुए।

१ षीदावास[1] १००)

रकबो २४०० । बरसाळी षेत रूडा । ऊनाळी नहीं । षेड़ौ सूनौ । कुड़की रा लोग पाही षड़ै । कुड़की में मांजरो ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)[2]	१०१)	१४१)	३०१)	१०१)

१ नरसिंघवासणी १४००)

रकबो ३४५६ । षेत सषरा, सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी कोसीटा १५ चांच १० हुवै । षेड़ो सूनो । गोपाळपुर रौ रा० चांदसिंघ रांमचंदोत री वसी रा लोग षेत षड़ै ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७१)	१०१)[3]	१०३०)[4]	४५१)[5]	३९७)

१ रांमपुरौ २००)

रकबो ८४० । षेड़ौ घणा बरस हुवा रोहीसा रै जोड़ मांजरै गयौ । के षेत सु रोहीसा रा लोग षड़ै ।

१ गुवारड़ी षुरद १००)

रकबौ २४०० । षेड़ो सूनो । घणा बरस हुवा रीछमाळी के नैड़ी षबर नहीं ।

५४

११०. ४ सांसण

३ बांभणा नुं—

१ संथाणो सारंगवास ३००)

मेड़ता था कोस ९ । रा० नरहरदास ईसरोत रौ दत्त व्यास गोपाळ लषावत पारीष गोलवाळ नुं । हिमें रेषौ[6] पीतांबर रौ

---

१. षीदावस । २. २१) । ३. ३६१) । ४. ३६५) । ५. ६१८) । ६. रीषौ ।

बलु गोरधन रौ भुधर गोईंद रौ छै[१]। जाट बांभण बसै। रकबौ १७७६[२]। कोसीटा ४। षेत कंवळा।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७७)	१५६)	३१६)	१६०)	०)

१ लूणकरण री वासणी ८००)

कोस ८। राठौड़ सहसा[३] तेजसीहोत रौ दत्त प्रो० गदाधर जीवावत नुं। हिमैं सांमो[४] जोगावत[५] वीको नरावत छै। जाट बांभण बसै। रकबो ४०००। षेत कंवळा। कोसीटा १२ तथा १५।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४१६)	६१६)	१५५७)	१३६६)	९२८)

१ जगन्नाथपुरौ २००)

कोस ८। जगमाल वीरमदेवोत रौ दत्त श्रीमाळी दवे जगनाथ सदाफळोत नुं। हिमें मोहण तुलछो[६] किसनदासोत छै। जाट कुंभार बसै। रकबौ १५१३। षेत कंवळा कोसीटा ७। षेड़ो सूनो[I]। ——— बसै[७]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
[२२६)	३०६)	३८५)	३८५)	२३५)[८]

१ लूंगीयो १२५०)

कसबा थी कोस ७ सात। रा० सुरतांण जैमलोत रौ दत्त, आढा दुरसा मेहावत नुं। हिमें डूंगरसी सादुळोत नै देईदांन जगमालोत छै। जाट चारण बांणीया बसै। रकबो १०१४। षेत कंवळा। कोसीटा १२।

१. गोइंद छै। २. ११७६। ३. सेहसा। ४. स्यामो। ५. जगावत। ६. तुलसो। ७. रोहीसी रै ढुह बसै नै षेत षड़ै। ८. 'ख' प्रति का अंश।

I. गांव सूना है।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२७१)	६६१)	५७१)	६११)	४११)

४

५८]

१११. परगने मेड़ता रै गांवां री ठीक—

आसांमी	जुमले	आवादांन	सूना	सांसण	रेष
ता० हवेली	१२	१०	०	२	२४१००)
ता० अणंदपुर	३९	३३	३	३	११३८५०)
ता० मोकालै	४५	३४॥	२	८॥	८९४५०)
ता० कलरो	४४	३२	८	४	५७९०१)
ता० राहण[1]	५६	३८	७	११	५४७५०)
ता० मोडरो	४१	३७	०	४	९१९००)
ता० अलतवो	३८	३०	४	४	७५१५०)
ता० देघांणो	५१	४०	६	५	९५९००)
ता० रेयां	५८	४४	१०	४	१०७०००)
	३८४	२९८॥	४०	४५॥	

१. राहीण ।

मारवाड़ रा परगनां री विगत

(६) वात परगने सीवांणे री

परगनो सीवांणो जोधपुर थी कोस ३० दषणाद कूण था जीवणे-रौ[1] । जाळोर था कोस १५, महेवा थी कोस १२ छै । आद पंवारां रौ करायौ गढ छै[2] । धरणीवाराह पंवार बाहड़मेर धणी हुवौ । तिण आपरा भाई राजा भोज नुं जाळोर भाई-बांटे दीयौ थौ । तिण रौ बेटौ पंवार वीरनाराइण । तिण इण भाषरी[3] ऊपर गढ करायौ, संमत १०७७ पोस सुद ६ ।

१. **सीवांणा गढ री हकीकत**—छोटी-सी भाषरी ऊपर गढ छै । गढ रै बीच तळाव भांडेळाव षरौ बडौ तळाव छै[4] । पांणी सदा अतूट छै[5] । तळाव बीच कीरत-थंभ ईंट रौ छै । पीरसेद मारू तळाव मांहे गोर चाकले भुरज पीर जमसेद छै । तिण तळाव रो पाळ ऊपर तुरकां रा पीरां री गोरां छै । गढ मांहे अमारत इसड़ी कांई न छै[6] । घर १ नवचोकीयां रौ राव चंद्रसेण रौ करायौ पाको-सो ।

२. को दिन पंवारां रै गढ रह्यौ । पछै पंवारां कनां चहुवांण कीतु आबू जाळोर लीयौ और ही घणी धरती चहुवांणे ली । रावळ कांनड़दे सांवतसी रौ बडौ रजपूत हुवौ । इण आ ठौड़ आपरा भतोज सातल-सोम नुं दी । पछै सातल-सोम ऊपर पातसाह अलावदी री फौज आई, कोई कहै छै पातसाह आप आयौ । कोस १ था सीवांणा रौ भाषर दीठौ सु अळगा थकां भाषरी निपट नांनी दीठी[7] । तरै

---

1. दक्षिण दिशा में दाहिनी ओर । 2. पंवारों का बनवाया हुआ बहुत प्राचीन गढ़ है । 3. पहाड़ी । 4. खूब बड़ा तालाब है । 5. पानी कभी समाप्त नहीं होता । 6. ऐसी विशेष इमारतें नहीं हैं । 7. पहाड़ी दूर से बहुत छोटी-सी दिखाई दी ।

पातसाह फुरमायौ– आ तौ भाषरी निपट सहल छै[1]। आगे नांव कुंभटो हुतौ, पातसाह आ तौ ठौड़ अेकरण समान जीत री छै, तठा सुं नांव सीवांणो नीसरीयौ छै। पछै पातसाह कह्यौ– हूं आज गढ फतै कर नै धांन-पांणी षाईस[2]। पीस सौगंद बाही[3]। आंण डेरौ कीयौ। गढ नुं ढोवौ हुवौ[4]। गढ हाथ आवण रौ नहीं। तरै पातसाह मरण लागौ। तरै आटा रौ गढ कर नै भेळण लागौ[5]। कह्यौ– पछै अेक भाई गढ सुं उतर नै सातल-सोम मांहलो आटा रा गढ में कांम आयौ। अेक भाई गढ रौ कर मुरग तीडो छाडावत पिण सातल-सोम साथे कांम आयौ छै। सातल-सोम री प्रोळ १ छोटी-सी सीवांणे छै, तठा थी मुगले सीवांणो लीयौ।

३. तठा पछै रावळ मालौ सलषावत तपीयौ[6]। मालै मुगलां कना सीवांणो लेनै रा० जैतमाल सलषावत नुं दीयौ, सु इतरी पीढी ९ जैतमाल सीवांणो रह्यौ–

१. रा० जैतमल सलषावत
२. रावत हापो जैतमालोत
३. रावत करन हापावत
४. रावत तीहणो करनोत
५. रावत वीजो तीहणोत
६. रांणो देवीदास वींजावत
७. रांणो जोगो देवीदास रौ
८. रांणो करमसी जोगा रौ
९. रांणो डूंगरसी करमसी रौ

४. तठा पछै अेक वार राव जोधे केराच सातळतोत करने देवीदास वीजावत नुं जोधपुर तेड़ायौ[7] नै सींधल आपमल भाद्राजण

---

1. सरलता से हस्तगत होने वाली। 2. गढ़ जीत कर ही अन्न-जल ग्रहण करूंगा। 3. कसम खाई। 4. गढ़ पर हमला किया। 5. आटे का बनावटी किला बना कर उसे जीतने की रस्म पूरी करने लगा। 6. राज्य किया। 7. बुलाया।

रा धणी नुं सीवांणे ऊपर अजांणजक रौ[1] मेलीयौ सु वींजो मांडण राज धरती नै सिरदार मार नै गढ सीवांणो लीयौ। राव जोधा री आंण फेर नै[2] जोधपुर षबर मेली। सु ओठी[3] जोधपुर नजीक आयौ। तिण हीज बेळां रांणो देवीदास वींजावत इण तरफ मैदांन नुं आवतौ थौ। सु ओठी २ दीठा—सीवांणा रै मारग ऊड़ायां आवै[4]। हाथ मैं पांणी रौ छागलो[5] १ छै। देवीदास रौ मन चमकीयौ[6]—ओठी सीवांणा री तरफ सुं ऊतामळा आवै सो भला नहीं, हाथ में पांणी रौ छागलो कासुं जांणी जे?[7] देवोदास उण रै मारग मांहे आई ऊभौ रहौ। उण नुं पूछीयौ—कुण छौ, कठा थी आया ? एक दोय बेळां पूछीयौ, तौ पिण उणां नहीं कहौ, तरै इण घणौ हठ कीयौ। तरै उणां कहौ—म्है सीवांणा थी आया, सींधल आपमल रा चाकर छां, जोधपुर जावां छा। आपमल छागल पांणी री मेल्ही थी सु लीयै जावां छां। रांणो देवीदास राहावेधी[8] हुतौ, तद ही समझ गयौ—वीजौ मारीयौ राव रै साथ सीवांणो लीयौ, हिमें राव मोनुं मारसी। सु देवीदास आप तौ उठा थी पाळौ हीज नीसरीयौ, चाकर एक साथे हुतौ तिण नुं कहौ—तूं डेरै जाय राव रा आदमी आंपणै डेरै तेड़ण नुं आवसो तिण आगे कोई भेद मत भांगौ[9] नै कहीजो—देवीदास सीकार[1] गयौ छै यों कर नै आघौ काढजो[10]। रात पड़ै तरै थेही नीसर उरा आवजो। ओठी उठै पहोता[11]। राव मांगल[2] गयौ। वात किण ही नुं जणाई नहीं। रांणे देवीदास नुं ऊपरा-ऊपरी तेड़ा मेल्हीया[12], सीताब ले आवौ[13]। आगै आदमी आय देषै तौ देवीदास डेरै नहीं। तरै देवीदास रा चाकरां नुं पूछीयौ—देवीदास कठै ? तरै उणै कहौ—देवीदास सीकार रमण घांघाणी रो तरफ गयौ छै। तरै बांसै[14] आदमी घांघांणी दिसा गया। देवीदास

१. रमण (अधिक)। २. सांमळ।

1. अचानक। 2. जोधा का अधिकार घोषित करके। 3. सुतर-सवार। 4. बड़ी तेजी से चले आ रहे हैं। 5. पानी की थैली। 6. मन में एकाएक विचार आया। 7. क्या समझना चाहिए ? 8. पूर्व दृष्टा। 9. भेद मत देना। 10. जैसे तैसे रवाना करना। 11. पहुंचे। 12. लगातार बुलावे भेजे। 13. शीघ्र ले आओ। 14. पीछे।

अठा थी भंवर गयौ। उठै सैंधो[1] पटेल १ थौ तिण कन्है घोड़ी १ मांग नै घुघरट[१] गयौ। उठै आपरां रो षबर पूछ नै जाळोर रौ गांव जाय सास षाधौ[2]।

५. वांसा राव थांणै सीवांणा रजपूत कोई और साथ भेजीयौ तिके आंण अमल कीयो[3]। गढ मांहे डेरौ कीयौ। पछै राव सीवांणो आपरा बेटा सिवराज जोधावत नुं दीयौ छै सु सिवराज आपरी घणी बसी ले सीवांणा नुं आवै छै। तद रांणो देवीदास वीजावत जाय सांचोर रहौ थौ। तरै घुघरोट रै भाईले दीठौ राव जोधा रौ बेटौ सीवांणे आय बैठौ तरै मांहरो अठा सुं वास चूकौ[4]। तरै भाईले रांणो देवीदास नुं षबर मेल्ही–राव सिवराज गढ मांहे पैठौ तौ पछै नीसरण रौ न छै, तिण वासतै थे कोई पहली विचार करौ। तद रांणो देवीदास साथ कर नै सीवांणा ऊपर रात रौ आयौ। कहौ–सिवराजजी आयौ, पौळ षोलो, सु आगे सिवराज री[२] अवाज हुती, राव रै साथ पौळ षोली। देवीदास कोट मांहे पैस नै[5] राव रौ साथ सो कूट मारीयौ। रांणा देवीदास री दुहाई फिरी। राव जोधा नुं सीवांणो लीयां री षबर पहोती, तरै सिवराज नुं दूनाड़ौ दीयौ छै। सिवराज दुनाड़े हीज रहौ। रांणो देवीदास बाप रै बैर भाद्राजण ऊपर गयौ[6]। सींधल आपमल घणौ साथ सुं मारीयौ।

६. पछै कितराहेक दिनां रांणो देवीदास मुवौ[7]। पाट[8] रांणो जोगो बैठौ, सु ही भलौ ठाकुर हुवौ। सीवांणौ भोगवीयो। तठा पछै जोगो मुवौ। पाट रांणो करमसी जोगा रौ[9] बैठौ। तिण सीवांणो भोगवीयो। करमसी मुवौ। पाट रांणो डूंगरसी करमसी रौ बैठो, सीवांणा रौ धणी छै।

---

१. घुघरोठ। २. आवण री (अधिक)।

---

1. परिचित। 2. विश्राम लिया। 3. राज्याधिकार स्थापित किया। 4. हमारा यहाँ रहना संभव नहीं। 5. अन्दर प्रवेश करके। 6. बाप का बैर लेने के लिये भाद्राजून पर हमला किया। 7. मर गया। 8. राज्य-गद्दी। 9. जोगा का पुत्र।

७. पछै जोधपुर राव मालदे धणी हुग्रौ । सीवांणो रांणो डूंगरसी हुवो । पछै राव मालदे सीवांणा ऊपर आयौ । रांणा डूंगरसी गढ झालीयौ[1] । मास ••• गढ घेरियौ । पछै डूंगरसी रौ सत छूटौ[2] । गढ ऊतर दोयौ[3] । रा: मदौ मेरावत मेरौ देवीदास रौ तिण रै घरे भारमल री बहन आमो[१] थो । उण मदा नुं कह्यौ–तूं गढ मर नै दै । पछै मदो कांम आयौ । अमो सती हुई । संमत १५९५ असाढ बद ८ राव मालदे सीवांणौ गढ लीयौ । राव जीवीया तठा तांई गढ रह्यौ । पछै राव मालदे मुग्रो, तरै सीवांणौ एक बार रजपूत रा० रायमल मालदेग्रोत नुं दीयौ । पछै राव चंदरसेण रायमल कन्हा गढ उरौ लीयौ । रायमल मेवाड़ गयौ । पछै कितराहीक दिन राव चंदरसेण रै सीवांणो रह्यौ ।

८. पछै पातसाही फौज सीवांणा ऊपर सेहबाजषां कन्हो राजा रायसिंघ भुरटीयो[4] आंण घेरीयौ । राव साथ मांहे थौ । गढ री कूंची मुं० पता उरजनोत रै हुती । मास ••• गढ बीग्रहयो । पछै मुं० पता रै गोळी रात री लागी । पछै राव रौ साथ ऊदावत जैमल नैतसीहोत रा० पतौ नगावत रा० बैरसल प्रीथीराजोत संमत १६३२ इण मुगल सुं बात कर नै गढ उतर नै दीयौ । अै धरमदुआर नीसरीया[5] । को दिन मुगलां रौ थांणो रह्यौ । पछै धरती मांहे घणौ षाज-पीज[6] का नहीं । पछै मुगल धरती ऊभी मेल[7] परा गया । पछै संमत १६३५ राव चंद्रसेण डूंगरपुर था पाछौ आयौ तरै वळे राव चंद्रसेण गढ पाछौ हाथ कीयौ[8] । पछै संमत १६३७ रा माहा सुदि ७ राव चदरसेण काळ कीयौ । तद रा० रायमल ही बेगौ मुग्रौ ।

९. कीलांणदास परतापसी दरगा गया । पछै पातसाह इणां दुनो

---

१. आमु ।

---

1. गढ़ में सुरक्षित रहा । 2. शक्तिहीन हो गया । 3. गढ़ में सुरक्षित रहना संभव नहीं रहा । 4. बीकानेर का राजा । 5. प्राणों की भिक्षा मांग कर निकले । 6. खाने-पीने की सामग्री । 7. त्याग कर । 8. अधिकार में किया ।

भायां नुं सोवांणो दीयौ। पछै मोटै राजा नुं संमत १६४० श्री पातसाहिजी जोधपुर दीयौ। पछै मोटै राजा साहिजादो सेषु नुं परणायौ। तठै रा० कीलांणदास सुं षांनाजंगो[1] हुई। पातसाहि रीसांणो[2]। सोवाणो मोटा राजा नुं दीयौ। पहलो एक बार मोटे राजा फौज कंवर भोपत रावळ मेघराज रा० किसोरदास रांमौत रा० आसकरण देवीदासोत[1] और ही साथ मेलीयौ। पछै राठौड़ कीलांणदास रायमलोत रातीबाहो मांणस ५० तथा ६० सुं दीयौ। कांम कीलांणदास जीतौ। मोटैराजा रै साथ रा पग छूटा। तठै रा० रंणो मालावत रा० कलौ जैसावत कांम आया। फौज भागी। पछै मोटौराजा आप घणौ साथ बडो फौज लै आया। गढ घेरोयौ। पछै पाल्हीया[2] रै भेद जंम[3] बुरज रौ राव रौ साथ चढीयौ। रांणै कीलांणदास जुहार बाळ नै सांमो आयौ। बाज मुऔ[3]। संमत १६४६ मिगसर वद ७ गढ लीयौ। रांणा कीलांणदास साथे इतरो साथ कांम आयौ—

१ रा० गोपाळदास भींवोत।
१ गोधो भादो हेमावत।
१ भाटो भाषरसी कूंपावत।
१ सेयटौ[4]
१ भायेल लालो रातीवाहे।
१ चां० गोपाळ झांझणोत।
१ भाटो पंचाईण बीसावत।
१ दहोयो।
१ धायेभाई कड़वो।
१ भायेल गोईंद बसी मांहे।

१०. मोटैराजा रौ साथ रतीवाहो[4] रांणे कीलांणदास दीयौ, तरै कांम आया—

---

१. देवीदास आसकरनोत। २. पालीया। ३. जाम। ४. सेपटो।

---

1. लड़ाई, झगड़ा। 2. नाराज हुआ। 3. युद्ध करके वीरगति पाई। 4. रात का हमला।

१ रा० राणो मालावत।
१ रा० कलौ बैरसलोत।
१ पींपाड़ो कान्हा दुजणसलोत कंवर भोपत रौ चाकर।
१ रा० ईसरदास नैतसीहोत। रा० रांणा मलावत रौ चाकर।
१ रा० कलौ जैसावत।
१ दी० परबतसिंघ मेहाजलोत, तन पसेरीयो पटै[1]।
१ रा० जेसो जगमालोत।
१ बीदावत जैतसी रौ चाकर।

११. परगने सीवांणे री रेष, पातसाही तरफ था पायौ—

दांम	रुपीया	आसांमी
१५००००० ।	३७५००)	मोटा राजा श्री उदैसिंघजी नुं।
१५००००० ।	३७५००)	राजा श्री सूरजसिंघजी नुं थौ।
२५००००० ।	६२५००)	राजा श्री गजसिंघजी नुं हुवौ।
३०००००० ।	७५०००)	माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी नुं।

१२. हिमें परगनां री रेष गांवां ऊपर इण भांत छै तिण री विगत—

१००)	कसबो सीवांणो	१[2]	३५००)	कीलाणो[3] उपजतां	१
३५००)	वीठोजौ उपजतां रौ	१	२५००)	वांभसैण उपजतां	२
२५००)	बालोतरौ उपजतांरौ	१	२०००)	समदड़ी	१
१५००)	जांणोवाणौ धारावासणी	२	४००)	पचपदरौ	१
२०००)	हौठलु	१	२०००)	दहीपड़ौ	१
३०००)	कीटणोद	१	३०००)	मांगलौ	१
२५००)	आसौतरौ	१	२५००)	मोतीसरो	१
२०००)	कुंपावस	१	२०००)	जोड़ोतरी[4]	१

१. नवसरो पटै। २. ३। ३: काणाणो। ४. जोड़ोतरी।

४०००) राषसी १
१०००) पाडु[1] १
१०००) करमावास नै बांनेवड़ो २
५००) घांघांणो[2] १
२००) देवाध १
४००) धीरां १
३००) मांहगो १
१२००) देवळीयाळी १
५००) गड़ौ १
५०) पांसु सुनो १
२००) वाहलीयाणो १
१०००) कुंडल १
२०००) कालंणो बास ५

 १०००) कांलणो
 ३००) रसोळाव[5]
 ३००) कान्हानड़ो
 २००) बेदु रो बाड़ो
 २००) पीड़ा ढंढ

 २०००)

३०००) जगीसां कोटड़ी १
१०००) रांमसैण १
१०००) गोपड़ी १
४००) मोडी १
२००) गोरमी १
३५०)[3] तेलवाड़ौ १
२००) जीणपुर १
१००) देभला, सूनो १
५००) सीणेर १
३००) मीठड़ो[4] १
२००) पादरड़ी षुरद १
७००) सेहलो १
२५००) थोभ बास ६

 १८००) बडोबास
 २५०) बरसिंघ रौ बास
 २००) तिसींगड़ी
 २००) चौ० जैता रो बास
 ५०) बास २

 २५००)

२००) कणीवाड़ौ १
३००) षारड़ी वास २
१०००) नहवाहि १
१२००) बाये १
४००) लुद्रड़ो १
२५०) अरजीवंणो १
१००) करमावास १

२०००) सीराणो १
१०००) पाटोधो १
१०००) अंबा रौ बास १
३००) बीजळीयो १
४००) फुलण १
४५०) कागड़ी १
५००) देवढो १

१. पेंडु। २. घाघाणो। ३. ३५००)। ४. मीठोड़ो। ५. रसेळाव।

५००)	बावलु	१
१२०)	सुंदयो	१
७००)	ईंदरांणो	१
३००)	पटाऊ बडी	१
३००)	कांकरालो	१
१२००)	सांवरलां	१
६००)	पाडलाऊ	१
९००)	सूरपुरौ	१
७००)	लालणो[1]	१
५००)	चीहाली	१
२००)	पटाऊ षुरद	१
५००)	कुहीयप	१
२००)	षीदावड़ो	१
४००)	मुंठलो	१
४००)	पीपलण	१
२००)	दांतालै नै महेलड़ा	२
६००)	भुंती	१
३००)	बाघलप[3]	१
३००)	त्रीगठी	१
१००)	देवासण	१
५००)	घड़सो रौ बाड़ो	१
४००)	रवणीयो	१
६००)	सेवाली	१
२००)	छडणो	१
३००)	थंपणी	१
७००)	लालीयो	१
८००)	उमरळाई	१
३००)	भरहड़	१
५००)	मोकल नडी	१
६००)	महेलीं	१
३००)	कुवड़ी	१
४००)	षाषरलाई	१
७००)	माहगड़ो	१
१००)	गौड़ां रौ बास	१
६००)	गुघरठ	१
२००)	पादड़ी बडी	१
३००)	भगया[2]	१
६००)	षारवाहो	१
३००)	सायेलो	१
१००)	कंकसी	१
३००)	बागावास	१
८४७२०)	गांव	११४
४५५०)	सांसण	३०
८९२७०)	गांव	१४४

१३. कसबै सीवांणा रो बसती ।

संमत १७२१ रै बरस मांडी छं—

१. लालाणो । २. भगवा । ३. बघलाप ।

८१	माहाजनां रा	२५	बांभणां रा
१०	सोनार	२	कुंभार
४	भोजग	४	सुतराड़
४०	तुरक	१	पींजारो
१	छींपा	१	नाई
१६	ढेढ	२	थोरी
१	जागरी		

१८८

६५ रजपूतां रा वास ६, तामें ४ बसै छै—

२५ गांगा पड़िहार रौ बास ।
२५ मेरीवास ।
३० सिवराज रौ बास ।
१५ देदा भायल रौ बास ।

६५

२८३ घर छ ।

१४. परगने सीवांणा री फिरसत[1] गांवां री—

गांव आसांमी

५२ षुलासा गांव निषालस

५ बांणीया वगैरे बीजो रैत बसै ।

१	कसबै सीवांणो	१००)
१	बादलु	५००)
१	कीटणोद	३०००)
१	बाये	१२००)
१	देवढो	५००)
१	कांगड़ी	४५०)

1. सूची ।

३७ पटैल बसै, मांहे बीजी ही रैत[1] बसै छै।

१	कार्णाणो	५००)[1]
१	समदी[2]	२०००)
१	मंगलो	३०००)
१	जगीसा कोटड़ी	३००)
१	राकसी[3]	४०००)
१	नहवाई पलीवाळ मांहे मडो	१०००)
१	बंबसेण	२५००)
१	आसोतरो	२५००)
१	थोभां, बडो बास	२०००)
१	दहीपड़ो	२०००)
१	जिड़ोतरी	२०००)
१	जीणीयणो	१५००)
१	होठलु	२०००)
१	सीरणी	२१००)
१	करमावास	१०००)
१	देवलीयाळी	१२००)
१	लालीयो	७००)
१	मोतीसरो	२५००)
१	संबरला	१२००)
१	कूंपावास	२०००)
१	भुती	६००)
१	चीहाली	५००)
१	मोकलनडी	५००)
१	रवणीयी	४००)
१	सुरपुरो, जाट बसै	६००)

१. ३५००)। २. समदरड़ी। ३. राषसी।

1. अन्य जाति के लोग।

१	सोयली	३००)
१	ललांणो	७००)
१	पाडलाऊ	६००)
१	षारवाहो	६००)
१	काठाड़ी, बांणीयां रेबारी रजपूत बसै	४५०)
१	महेली	६००)
१	बाघलवस	३००)
१	आंबां रौ बाड़ो	१०००)
१	भुरड़, जाट बसै	३००)
१	त्रिगठी	
१	सेवाळी	६००)
३७		

विगत—

३४ पटेल

२ जाटां रा

१ बीजी रैत

१० पालीवाळ बांभण बसै—

१	वीठोजो	३५००)
१	रांमसेण	१०००)
१	पचपदरो	४००)
१	माडापो	३१००)
१	माहगड़ो	७००)
१	बालोतरो	२५००)
१	गोपड़ी	१०००)
१	नवाई, पटेल बसै	१०००)
१	छंडाणी	२००)
१	ऊमरळाई	८००)
१०		

विगत—बीजी रैत ६

५२ विगत—

बीजा रैत	६
पटेल	३५
जाट	२
पलीवाळ	६

रजपूत लोक बसै, मांहे बसीयां रहै—

१ पादरू	१०००)	१ पाटोघी	१०००)
१ ईद्रारांणो	७००)	१ षाषरलाई	४००)
१ कुंडल	१०००)	१ सेहलो	७००)
१ बाहलीयांणो	२००)	१ गड़ो	५००)
१ फुलण	४००)	१ दांतांलो	३००)
१ घाणांणो	५००)	१ कुहीयप	५००)
१ मीठोड़ो	३००)	१ पीपलण	४००)
१ मोडी	४००)	१ पादरड़ी बडी	२००)
१ देवाध	२००)	१ गुघरट	६००)
१ अरजीयांणो	२५०)	१ थांपण	३००)
१ सीरेण	५००)	१ षारड़ी	३००)
१ त्रीसींगड़ी	१५०)	१ कांकरालो	३००)
२ पटाऊ ३००)२००) = ५००)		१ मांहीगी	३००)
२ धीरा	४००)	१ जीणपुर	२००)
१ पीड़ढंढ[1] कलाणां रौ २००)		१ पादरड़ी षुरद	२००)
२ भगवा २००)१००) = ३००)		१ बीजळीयो	३००)
२ बास			
१ लुद्राड़ो	४००)	१ कुठलो	४००)
१ वरसिंघ रौ बास थोभ रौ	२५०)	१ तेलवाड़ो	३५०)

१. पीड़ाढंढ ।

१ रासेळाव कालाणां रौ १ घड़सी रौ वाड़ो ५००)
१ चौहाणां रौ बास २००)
थोब रौ

४२

१५. २० सूना मांजरा—

१ देवासण[1] कांगड़ी[2] १००)
रवणीया बीच घास कटै ।

१ कान्हा रौ वाड़ो थोभ रौ बास ५०)
थोभ मांहे षड़ीजे ।

१ बादु रो बाड़ो कालणां रौ २००)
— — समत[3] बसतौ ।

१ झीका रो पाद्र ५०)
भाषर छै । षेत सोणेर रा षेड़ा[4] ।

१ कुबड़ी ३००)
पैहली कुंभार बसता । पाटाऊ मांहे षड़ीजै ।

१ बागाबास १००)
पहली जाट बसता । पछै आसाईच बसता[5] पहोस — — —
नाहली बांमसेण मंगला बीच भाषरी रौ गांव ।

१ देभलां १००)
धीरां मांहे षड़ीजै । मूळ जाळोर रौ गांव । पवाड़ोया रजपूत बसता ।

१ पासु ५०)

१. देवासणी । २. काढाड़ी । ३, पहली भायल ढूंढो । ४ षड़ें । ५. पछे सायब बसिया था ।

पादरु बांसे षड़ीजै । पहला दहीया बसता ।

१ मोडरो ४००)

काणाणा मांहे षड़ीजै । संमत १६९२[1] जेता भेळो करायौ । आगे जुदो थौ ।

१ गोड़ा रौ बास १००)

कुहीप मांहे षड़ीजै । भींव रौ गुढो कहीजै ।

१ मोकलीया[2] वेरो

कणाणा मांहे मांजरै ।

१ सुहीयो १२०)

वावळु मांहे मांजरै । तीरवा १ पछिम नुं ।

१ बनैवड़ो १५०)

करमावास मांहे मांजरै। करमावास समदड़ी बीच ।

१ धारीया वासणी २००)

होठलु षैड़ौ छै । जीणोयांणा भेळो भोग दै ।

१ काकसी[3] १००)

पादरु षेड़ो[4] रा० किसनदास जसवंतोत बसोयौ थौ सु पहला जाळोर रा मेड़ता ।

१ षीदावड़ो २००)

कुहीप मांहे षड़ीजै । भायल षीदो बसतो ।

१ महेलड़ी

दताळी मांहे षड़ीजै । दताला भेळौ मांडौ ।

१ कणीवाड़ो २००)

---

१. १६९३ । २. गोकलीया । ३. केकसी । ४. षड़ै ।

कुंडल मांहे मांजरै । घणा दिन रौ सुनो ।

१ गोरवी ५०)

घांणांणा मांहे षड़ीजै । जाळोर रा देसां[1] भाटी बसता ।

१ थोभ रौ वास १

मांडलप रौ मंडायो छै सु जुदो षेड़ौ कोई नहीं । मांडलप तळाव ऊपर गांव तीसंगड़ी वसी छै नै वीजो बास १ बडाबास मांलौ मांडोयौ छै ।

---

२० २४७०)

१६. ठीक गांवां री, सीवाणा रा बसता सूना फरसत ऊपर छै ।

९४ बसता— ३० सांसण—

५ बीजी रैत ३७ पटैलां रा १० पलीवाळां रा

२० रजपूतां रां २० सूना मांजरै

९४

१४४

१७. ३० गांव तीस सीवांणे रा सांसण छै ।

१७ बांभणां नुं—

३	सीलोर रा वास राजगुर नुं	४००)
१	त्रीसींगड़ी बल्ही[2] रौ बास सोढा नुं	१००)
१	माहबारी पाचलोर	१००)
१	सरबड़ी मंनाणो[3]	४००)
१	महैकरना[4] रोहाड़ा रौ सोढा नुं	५०)
१	सींहथली लुणोतरा	१००)
१	कालीया वासणी[5]	५०)
१	आसरावो दुदावत्त नुं	२००)

---

१. दीसां । २. वली । ३. मनणा नुं । ४. मेह करना । ५. वधन (अधिक) ।

१	साणोसणी[1] वाकुलीया नुं	४००)
१	पटाऊ रौ वास मनाणा नुं	५०)
१	उमरलाई षुरद सोढा नुं	५०)
१	पाटौधो रौ वास सीधीया नुं	१००)
१	केलणकोट वांकुलीया	५०)
१	भीदाकुवो सीहा नुं	१००)
१	लोळाबास वाकुलीया सूनो	१००)
१७		

१३ चारणां नुं–

१	कोडुषो सूनो महेवा[2] नुं	५०)
१	रीछोली रोहड़ीया नुं	६०)
४	रोहडा[3] रा बास	
	१ मईयां नुं	१००)
	१ सीढाईच नुं	५०)
	१ रोहड़ीया नुं	५०)
	१ आसीयां	५०)
१	वांदु रो बाडौ मीसण	२००)
२	ईकडाणी रा बास	
	१ वडो बास रोहड़ीया नुं	४०)
	१ षुरद बास मीसण नुं	३०)
१	भांडीयावास आसीया नुं	२००)
१	कालाणा रौ बास रतनुवां नुं	२००)
१	घड़ौई रतनू	१५०)
१	आलेचड़ी आसीया नुं	५०)
१३		३४८०)
३०		
१४४		

१. सातोसणी। २. मेहडुवां। ३. रोहाड़ा।

१८. – – – – कुल री ठीक।

रुपीया	गांव	आसमी
५७५०)	५	षुलासा बांणीया वगेरे बीजी रैत बसै।
४८६५०)	३७	पटेल तथा दूजी रैत बसै।
१३५००)	१०	पलोवाळ वगैरे बसै।
१५८१०)	४२	रजपूत बसै।
३४८०)	१७	बांभण बसै।
२४८०)	२०	सांसण।
२१७०)	१३	चारणा बसै।
८६६६०)	१०४ गाव	

१९. परगने सीवणा री फिरसत–

१ सीवांणो गढ १००)

जोधपुर था कोस —। बांणीया वगेरे बीजी रैत बसै, षुलासा गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	१०५)	५७)	६४७)	१०६)[1]

१ देवढो ५००)

सीवांणा था कोस ४ ऊगोण दिसी। बांभण बांणीयां रैंबारी रजपूत बसै। बास ३ छै। धरती हळवा ५० तथा ६०। षेत निपट सषरा[1]। ऊनाळी नहीं। तळाव घड़ोई मास ५ पांणी। कुवो १ बंधवो छै, तठै पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	४००)	४००)	४००)	३०१)[2]

१. १२०)। २. ४००)।

1. खेत बहुत अच्छे हैं।

१ बाय १२००)

सीवांणा था कोस ५ ऊगोण मांहे। रजपूत रैबारी बांणीयां कुंभार बसै। धरती हळवा २००। षेत सषरा बाजरी मूंग मोठ। ऊनाळी नहीं। बावड़ी १ पूना बेगड़[1] री कराई। मीठौ पांणी। तळाव मास ४ पांणी। बेरा पार रा कोस १, पुरस ४ पांणी मीठो। भाषर रा गांव था नजीक। बडो भाषर छै। कोस ११ घांणाणा सुधौ। पांणी ठौड़ २ तथा ३ छै। संमत १७१५ हुतौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३००)	७००)	६११)[2]	६०१)	६०१)

१ बावळु ५००)

सीवांणा था कोस ४ ऊगण मांहे। रैबारी नै बांभण बसै। धरती हळवा ४० तथा ५० षेत। ऊनाळी नहीं। तळाव १ बांधडो मास ४ पांणी। कुवो १ पुरस १४[3] षारौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	१२०)	१२०)	१२०)	१२०)

१ कीटणोद ३०००)

सीवांणा था कोस ६ ऊतर दिसी। कुंभार बसै, रैबारी रजपूत बसै। पाही षड़ै छै। धरती हळवा ६० तथा ७० बड़ा षेत। ऊनाळी करै तितरी हुवै। रेल मांहे सेवज घणा हुवै। नदी लूणी नजीक। तळाव मास ६ पांणी। कुवो पुरस १० मीठौ। पहली पटेल बसता।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१७५)	११९८)	३०९२)	१५००)	९६३)

२०. पटेल लोक बसै, नीषालस गांव षुलासा—

२ कांणाणो ३५००)

---

१. वेगड़ी। २. ६००)। ३. पुरसे १०।

सीवांणा था कोस ६ ऊतर दिसी । पटेल बांणीया बांभण तुरक बसै । पवन जात ही बसै छै । धरती हळवा ८० तथा ९० । मूंग मोठ जुवार बाजरी हुवै । ऊनाळी अरट १२ कोसीटा ३५ हुवै । रेल नदी री आवै तरै जुवार री ठौड़ काठा गेहूं हुवै । तळाव मास ५ तथा ६ रौ पांणी । कुवौ १ मोठौ गांव रै फळसै छै[1] । नदी कोस छै । मूळ पलीवाळ रौ गांव[2] । सीवांणा रौ चोतरो कांणाणे छै[3] । बडौ गांव । कसबा दाषल गांव छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१२३५)	३५३०)	३३९७)	४३७२)	२६३२)

१ समदी[1] २०००)

सीवांणा था कोस ७ ऊतर दिसी । पटेल बांभण बांणीया रैबारी बसै । धरती हळवा १०० । षेत सषरा । ऊनाळी अरट १०, कोसीटा २० हुवै । तळाव नहीं । नदी गांव था नजीक तठै पीवै । कुवा २ बंधवा छै । भाषरी गांव नजीक छै । पहली सीवांणा रौ चोतरो समदड़ी हुतौ ।[3] बडी बसी, बडौ गांव थौ । हिमें बसती तूट गई[4] । हाकम ऊठै रहता ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
६२७)	८४३)	२४७३)	१९१९)	११४२)

१ मांगलो ३०००)

सीवांणा था कोस ५ ऊतर दिसी । पटेल रजपूत कुंभार बसै । धरती हळवा ५० तथा ५५ । षेत निपट अवल[5] । ऊनाळी अरट १० तथा १२ । कोसीटा ४०, चांच २० तथा २५ । रेल आयां धणां काठा गेहूं हुवै । तळाव मास ५ पांणी, पछै कुवे पीवै । नदी लूणी गांव सूं नजीक षेड़ो भाषरी षांभै ।

---

१. समदरड़ी ।

---

1. गांव के आगे ही । 2. मूलतः पलीवालों का गांव है । 3. सीवाने का मुख्य गांव है । 4. बस्ती कम हो गई । 5. बड़े उपजाऊ खेत ।

१ जगीसा कोटड़ी ३०००)

सीवांणा था कोस १० पूरब दिसी। पटेल बांणीया रैबारी बसै। धरती हळवा ५० तथा ६०। षेत सषरा। ऊनाळी अरट २० कोसीटा १५ तथा २० री ठौड़। गांव तळाव नहीं। बेह[1] १ छै सु भरीजै। तरै मास ६ पांणी। पछै मांहे बेरा षुणीजै[1] छै, तठै पीवै। नदी २ लूणी नै सूकड़ी गोढवाड़ वाळी बेऊ बहै। पहली आंबा रौ बाड़ौ भेळौ छौ, हिमें जुदौ टाळीयौ छै[2]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४४०)	६३७)[2]	२५६०)	१०५९)	७७८)

१ बांभसेण २५००)

सीवांणा था कोस ८ ऊगोण दिसो। पटेल बांणीया कुंभार बसै। धरती हळवा ३५ तथा ४० संकोड़ सींव[3]। षेत थोड़ा। मुदो ऊनाळी ऊपर। अरट २० तथा २५, कोसीटा ३० तथा ३२ हुवै। नदो लूणो गांव नजीक। बेह १ खेजड़ीयाळी मास ४ पांणी। पछै मांहे बेरा षण पीवै। हमारू गांव षराबै छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४१६)	११३८)	४२१९)	१२१६)	९०५)

१ राषसी ४०००)

सीवांणा था कोस ६ ऊगण दिसी। पटेल बांणीया रजपूत षाती बसै। धरती हळवा ७० तथा ७५। जुवार बाजरी मूंग मोठ बडो नेपत रा षेत[4]। ऊनाळी अरट २ नीबळासा[5]। सींधलावटो रौ वाहाळो आवै छै, तिण सेंवज काठा गेहूं नै चिणा हुवै छै। तळाव

१. बेहर। २. ६२७)।

1. बेरियें खोदी जाती हैं। 2. अलग कर दिया है। 3. कम रकबे वाली सीमा। 4. खूब पैदा देने वाले खेत। 5. साधारण पैदावार वाले।

बरसोंदीयौ पांणी। मांहे बावड़ी १ बंधवा छै। पाळ ऊपर बाग छै। बडौ गांव कांठा रौ। सींधळावटी रा चोरीया लागै[1]

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१३०)	१७००)	४१५)	१०५२)	११५५)[१]

१ थोभ बडोबास २०००)

सीवांणा था कोस १३ पछम दिसो। पटेल रजपूत बांणीया षाती बसै। बडी बसी[२] जायगा। धरती हळवा १५०। बाजरी षेत। ऊनाळी लूणी मांहे काठा गेहूं मण ४०० बावै। बडौ हासल हुवै[2]। तळाव मास ६ पांणी। कुवो १ पुरस १४ मीठौ। थोभ रा वास १३ कहीजै। तांमां[3] बास ७ सांसण छै। ६ जागीर में। कांठा रौ गांव छै। बास दो—एक पटेल रौ, दूजौ रजपूत रौ। बास २ बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१०५०)	२५३)	१०६७)	३४४)

१ आसोतरो २५००)

सीवांणा था कोस ५ ऊतर दिसी। पटेल बांणीया कुंभार रैबारी सोनार बसै। धरती ह्ळवा ८० तथा ९०। बाजरी जवार मूंग मोठ। बोहसींवो गांव[4]। ऊनाळी अरट १० तथा १२। कोसीटा ८ तथा १०। रेल आवै तरै सेंवज हुवै। षेत सषरा। तळाव मास ८ पांणी हुवै। कुवो १ मीठौ बंधवा छै, पुरस १४ छै। भाषर कोस १, बांकी ठौड़ छै[5]। बडौ गांव छै[३]।

१ जिड़ोतरी २०००)

---

१. ११९५)। २. वसी री।
३. 'ख' प्रति में रेख—३२२) ८८६) १३५५) १०५१) ६५१)।

---

1. सोघालावटी के चोर यहाँ पहुंचते हैं। 2. खूब लगान आता है। 3. जिनमें। 4. बड़ी सीमा वाला गांव। 5. विकट जगह है।

सीवांणा था कोस ५ ऊतर दिसी । बांणीया पटेल बांभण रैबारी बसै । धरती हळवा ७० । षेत सषरा । ऊनाळी अरट १५ कोसीटा १५ तथा २० करै तो[1] हुवै । तळाव मास ५ पांणी हुवै छै, तठै पीवै । नदी लूणी नजीक बडी लूणी, बडौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६२०)	१३०७)	३७६४)	१२२०)	०)

१ दहीबडी[2] २०००)

सीवांणा था कोस ८ ऊतर दिसी । पटेल बांणीया रजपूत कुंभार षाती बसै । धरती हळवा ६० तथा ७० । षेत सषरा । ऊनाळी अरट १२ कोसीटा १० । सेंवज गेहूं रेल मांहे घणा हुवै । नदी सूकड़ी सींधलावटी था आवै । गांव नजीक, तठै पांणी पीवै । बडो गांव, षुलासा छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६५५)	१४७०)	२४५०)	२१५१)[3]	३८६)

१ जणीयणो[4] १५००)

कोस ७ सीवांणा था ऊतर दिसी । पटेल बांभण बांणीया बसै । धरती हळवा ५५ । षेत सषरा । ऊनाळी अरट २० कोसेटा १० री ठौड़ । सेंवज हुवै । तळाव १ बेह[5] १ मास ७ पांणी, पछै बेरै पीवै । नदी गांव नजीक । पहली रावत हापा रा बेटा पोतरा बसता जिणां रै नांवै जोणयाणो कहीजै । भा० मनै पटेल बासीया मोटाराजा री बार मांहे ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२१४)	७४३)	२१९५)	९४८)	८३२)

१ सीरांणो २१००)

सीवांणा था कोस ६ ऊतर दिसी । पटेल बांणीया बांभण कुंभार

---

१. तितरा । २. दहीपड़ो । ३. २१५३) । ४. जाणीयांणे । ५. बेहर ।

धरती हळवा ७० । षेत निपट सषरा । ऊनाळो अरट १० कोसोटा ५ तथा ७ हुवै । नदी लूणी दषण मांहे । तळाव मास ५ पांणी । मांहो कुवो १ छै तठै पीवै । बावड़ो २ बूरी पड़ी छै । मूळ पलोवाळा रौ षेडौ छै[1] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४७०)	१२११)	२२४६)[1]	७५२)	१६८)

१ देवलीआळो[2] १२००)

सीवांणा था कोस ६ ऊतर दिसा । पटेल बांभण बांणीया बसै । धरतो हळबा ६० । बाजरो मूंग मोठ जवार हुवै । ऊनाळी अरट ६ तथा ७ कोसोटा ५ तथा ७ चांच २ तथा ३ हुवै । तळाव मास ६ पांणो । नदो गांव था नजोक छै तठै पांणो पीवै । षैडौ भाषरी री षांभ छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२३७)	६८४)	१३५०)	६८४)	३५७)[3]

१ सांवरला १२००)

सीवाणा था कोस ८ ऊगण दिसा । पटेल बांणीया बांभण बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ७५ बाजरी जुवार मूंग मोठ, बड़ी नेपैंतरा षेत । बोहसींवो गांव छै । ऊनाळी पीयल नहीं । उनमैं गुगला[4] भरीजै तरै काठा गेहूं मण २०० बावै । बाहळो सींधलावाटो रौ रैलीजै तठै सेंवज काठा गेहूं हुवै । तळाव बरस २ रौ पांणी रहै । काळ-दुकाळ[2] भुतो री बहर मांहे बेरा षणा पांणी पीवै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	७१०)	१३४)	७९९)	२७१)

---

१. २२८६) । २. देवलीयाळी । ३. ३५) । ४. उनम १ गुगळो ।

---

1. मूलतः पलोवालों का गांव है । 2. अकाल आदि होने पर ।

१ होठलु

सीवांणा था कोस ८ ऊतर दिसी । पटेल बांभण बांणीया रैबारी बसै । धरती हळवा ४० सांकड़ी-सीवौ[1] ।[1] षेत सषरा । ऊनाळी अरट १५ कोसेटा १० हुवै । रेल आवै तरै सेंवज घणी हुवै । तळाव नहीं । बेहराम मांहे कुवो १ बंधवो छै, तठै पोवै । नदी लूणो कोस ॥। दिषण मैं । मूल पलीवाळां रौ गांव, पछै सूनो हुवौ थौ । पाही बांभण षड़ै छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२२४)	६५५)	१३१०)	१२८५)	६२४)

१ करमावास १०००)

सीवांणा था कोस ७ ऊगण दिसी । पटेल बांणीयां रैबारी बसै । धरती हळवा ५० । जुवार बाजरी मूंग मोठ षेत सषरा । ऊनाळो अरट १० कोसीटा १५ हुवै । तळाव मास ६ पांणी, पछै अरट पीवै[2] । बडो गांव करमावास ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४००)	६११)	१५९०)	११७०)	६०२)

१ मोतीसरो २५०)

सीवांणा था कोस ७ पूरब दिसी । पटेल रजपूत बांणीया बसै । धरती हळवा २०० तथा २५० । जुवार बाजरी मूंग मोठ तिल कपास षेत नीपट अवल । ऊनाळी पीयल नहीं । सींधलावटी रौ बाहळौ रेलीजै जितरै सेंवज गेहूं मण २०० बावै । तळाव मास ५ पांणी, मांहे बेरियां काची षिण पोवै । बाहळा गांव था नजीक ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	६९५)	११०)	१८८०)	५१६)

१. सांकड़-सीवो ।

1. कम सीमा वाला । 2. फिर रहट से पानी निकाल कर पीते हैं ।

१ कुंपाबास २०००)

सीवांणा था कोस ५ ऊतर दिसा। पटेल बांभण बांणीया कुंभार बसै। १ रजपूत बसै छै। धरती हळवा ५०। जुवार बाजरी मूंग मोठ षेत निपट सषरा। ऊनाळी अरट १० कोसीटा २० तथा २५ हुवै। नदी बडी लूणी बाड़ हेठै बहै[1]। तळाव मास ५ पांणी, पछै नदी पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३६)	७४७)	१२५०)	८६०)	४००)[1]

१ आंबा रौ बाड़ो

सीवांणा थी कौस ८ ऊतर दिसी। पटेल रजपूत बांणीया बसै। धरती हळवा ७० तथा ७५। जुवार बाजरी मूंग मोठ तिल कपास। षेत अवल[2] बोहो सींवो गांव। ऊनाळी नहीं। जगीसा कोटड़ी रा करै। तळाव भुरड़[2] भेळौ मास ७ पांणी। पछै नदी सूकड़ी पीवै। नदी सींधलावाटी री गांव नजीक। पहली गांव जगीसा कोटड़ी में षड़ीजतो। संमत १७१३ भा० ताराचंद नाराणोत जुदौ पटै दीयौ, तरै जुदौ बसायौ।

१ लालीया

सीवांणा थी कोस ६ उतर दिसी। पटेल षाती बसै। धरतीं हळवा २० तथा २२। षेत सषरा। ऊनाळी अरट २ कोसीटा ४ हुवै। तळाव मास ४ पांणी। नदी सूकड़ी सींधलावटी री नजीक तठै पीवै। सषरौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२६०)	६२०)	६१४)	४२२)	२२८)

---

१. इसके पश्चात मूल प्रति के ६ पृष्ठ अनुपलब्ध हैं। 'ख' प्रति में भी इन पृष्ठों का वृत्तांत नहीं है। २. भुरउ।

---

1. गांव से लगती हुई। 2. श्रेष्ठ किस्म के खेत।

१ भुती

सींवांणा थी कोस ८ उगवण[1] दिसी । पटेल रजपूत बसै । धरती हळवा १५ निपट ग्रवल । ऊनाळी नै पीयल नहीं । बाहाळो[2] सींधलावटी रौ नदी रेल रौ आवै, तठै सेंवज हुवै । तळाव मास ५ पांणी । पछै गांव सुहली[1] पीवै । गांव सवला[2] भेळौ गांव कहीजै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	२५०)	६)	३२)	३०)

१ मोकल नडी

सोवांणा थी कोस ८ उतर दिसी । पटेल नै बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ६० तथा ६५ । षेत सषरा एकसाषा । ऊनाळी नहीं । तळाई १ मोकलनडी मास ६ पांणी । पछै कुवौ १ पुरस १४ मीठौ पीवै । पहली सूनो थौ पछै बसीयौ छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१००)	५१)	३०५)	१७५)

१ सुइली

कोस ६ ऊतर दिसी । पटेल बसै । धरती हळवा १७ तथा २० । षेत सषरा । ऊनाळी कोसीटा ५ हुवै । ढंढ १ छै तिण में सेंवज म० १२ तथा १५ वांनं[3] । नदी सूकड़ी भादराजण री भाषर री तिण थी बहै, भरीजै । बरसोंदीयो पांणी हुवै । देहरो १ माहादेवजी रौ कदीम छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	२२०)	२३८)	२४९)	१००)

१ सूरपुरौ

---

१. सुमली । २. सांवरला । ३. हुवै ।

---

1. पूर्व । 2. नाला ।

सीवांणा थी कोस ११ ऊतर दिसो । जाट उतराधा बसै । धरती हळवा १०० । बाजरी मूंग मोठ, षेत सषरा । ऊनाळी नहीं । सेंवज हुवै । तळाव मास ८ पांणी । पछै दहोपड़ै नदी पांणी पीवै । एक साषीयो गांव । राजा श्री सुरजसिंघजी री बार मांहे नवौ बसीयौ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२)	१२५)	३९)	५०१)	३७)

१ कालाणो[1]

सीवांणा थी कोस १२ ऊतर दिसो । बांणीयां पटेल रजपूत बसै । धरती हळवा ६० तथा ७० । बाजरी मूंग मोठ तिल कपास, षेत सषरा । ऊनाळी नहीं, एक साषीयो । तळाव मास ५ पांणी । कुवो १ बंधवो छै तठै पीवै । कालाणौ, कालाणा रा बास ९ कहीजै । जेतां मैं बास ५, सांसण बास ४ जागीरदार दाषलै नै बास २ बाघलप घड़सी रौ बाड़ो जुदौ हुवौ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	३१०)	५०)	३००)	१५७)

१ चाहालो[2]

सीवांणा थी कोस ८ पूरब दिसी । पटेल रजपूत बसै । धरतो हळवा ४० । जवार बाजरी मूंग मोठ, षेत सषरा । एक साषीयौ । ऊनाळी नहीं । तळाव मास ६ रौ पांणो । कुवो १ बंधवो तिण रौ पांणी पीवै । बास २ मंडै, तांमें १ सूनो ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	२७८)	५३)	२००)	८२)

१ रावणीयो[3]

सीवांणा था कोस ५ दिषण दिसी । पटेल रजपूत बांभण बसै । धरती हळवा ७० । षेत रूड़ा । इकसाषीयो । ऊनाळी नहीं । तळाव

१. काणाणो । २. चीहाली । ३. रवणीयो ।

मास ५ पांणी । पछै कुवौ १ बधालग तठै पीवै । बास १ बांभण रौ जुदौ डोहळीयां[1] छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	२५०)	२२५)	२७५)	२५१)

१ लालांणो

कोस ५ ऊतर दिसी । पटेल रजपूत बसै । षारी धरती, हळवा ३० तथा ३५ । षेत सषरा इकसाषीया । ऊनाळी नहीं । तळाव २ मास ५ पांणी पीवै । नदी बडी लूणी नजीक तठै पीवै । अरट १ छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	३१४)	५५)	४४९)	१५४)

१ पाडसाऊ

सीवांणा थी कोस ७, ऊतर दिसी । पटेल बांभण रैबारी बांणीया बसै । घरती हळवा ३० तथा ३२ । सषरा इक साषीया, ऊनाळी पीयल नहीं । रेल आवै तो सेंवज हुवै । तळाव मास ५ पांणी । कुवो १ बंधवो तठै पांणी पीवै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४०)	३८०)	१२४)	३३१)[2]	१३७)

१ बाघल[3]

सीवांणा थी कोस १२, उगूण मांहे । पटेल बसै । धरती हळवा २० तथा २५ । षेत सषरा । ऊनाळू ऊनवा ३ छै, सु भरीजै । तरै जुवार भावै काठा गेहूं हुवै[2] । तळाव बाघेळाव मास ८ पांणी । पछै मांहे बेरा षिण पीवै । पहली सांसण थौ बांभणां नुं पछै मांहे-माह लड़ीया[3] तरै भा० मांने[4] लीयौ ।

१. रेबारी (अधिक) । २. ३३६) । ३. वाघलप । ४. मने ।

1. दान में दिया हुआ । 2. जवार या काठे गेहूं होते हैं । 3. आपस में झगड़े ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१३०)	१२०)	१८७)	८१)

१ भुरडे[1]

सीवांणा थी कोस ८ ऊगोण नुं। जाट पटेल बसै। धरती हळवा ३० तथा ३२। षेत सषरा। ऊनाळी कोसीटा २ नीषालसा[2]। तळाव २[3] मास ७ पांणी। पछै अरटवाली[4] निवै पीवै। सषरो गांव छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
०)	०)	०)	७८)	६०)

१ त्रिगठी[5]

सीवांणा थी कोस ८ ऊगोण दिसी। पटेल रैबारी बसै। धरती हळवा ३०। जुवार बाजरी मूंग मोठ हुवै। इकसाषीयो। षेत सषरा ऊनाळी नहीं। तळाव मास ५ पांणी, पछै महेवरीये[6] पांणी पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१५०)	२०)	१०१)	१२०)

१ षारबाहो

सीवांणा था कोस ८ ऊतर दिसी। पटेल रजपूत बांणीया बसै। धरती हळवा ३५ तथा ४० बाजरी मूंग मोठ हुवै। षेत सषरा इकसाषीया। ऊनाळी नहीं। तळाव २ मास २ तथा ४ पांणी। कुवो १ बंधवा तठै पांणी पीवै। सषरो गांव छै। कुवै ऊपरै बीघा ५ तथा ७ हुवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	२५०)	११०)	१६५)	१७९)

१ मेहली

सीवांणा थी कोस ७ ऊतर दिसी। पटेल रजपूत रैबारी षाती

---

१. भुरड़। २. नीबलासा। ३. ३। ४. अरट वाले। ५. त्रीगठी। ६. मांहे बेरीयां।

बसै । धरती हळवा ४० तथा ४५ । षेत सषरा इकसाषीया । ऊनाळी नहीं । तळाव २ मास ६ पांणी । कुवौ १ षुणीजे छै । वेहर १ गांव गजीक तिण मांहे वेरा ४ तथा ५ पांणो मीठो अवल छै सु पीवै । सषरो गांव छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	७०)	१६०)	४०४)	२८४)

१ सेवालो

सीवांणा थी कोस ७ ऊगोण दिसी । पटेल बसै । धरती हळवा ५१ । षेत सषरा इकसाषोयो । ऊनाळी नहीं । तळाव मास ६ पांणी, पछै चीहाली रै कुवै पांणी पीवै । सषरौ गांव निषालस छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	५००)	५१०)	२३८)	१००)

१ कागड़ी[1]

सीवांणा थी कोस ६ दिषण दिसी । रजपूत रैबारी बांणीया बसै । धरती हळवा ६० तथा ७० । बाजरी मूंग मोठ, षेत सषरा । ऊनाळी, सेंवज ही नहीं । तळाव मास ५ । कुवो १ सागरी मीठौ पीवै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१५०)	१००)	१००)	६०)[2]

३७

२१. पलीवाळ बांभण बसै । षुलासा गांव ।

१ वीठोजो

सीवांणा थी कोस ६ पछम दिसी । बांणीया पलीवाळ रजपूत सोनार कुंभार षाती बसै । धरती हळवा ६० तथा ६५ । बाजरी जुवार मूंग मोठ हुवै । बड़ा षेत । ऊनाळी अरट ४० री ठौड़ । रेल

१. काठाड़ी । २. ६००) ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	६००)	६६)	१००)	४८)

१ गोपड़ी

सीवांणा थी कोस १२ पछम दिसी। पलीवाळ बांभण बसै। धरती हळवा ४० षेत सषरा। इकसाषीयो। ऊनाळी नहीं। रेल आवै तरै सेंवज काठा गेहूं हुवै। तळाव मास ८ पांणी, पछै छडांणे रै कुवै पीवै। गांव रो सींव मांहे लूण रा आगार ४० तथा ४५ छै सु पंचपदरा रै दरीबे दाषल छै। जागीरदार नुं दु० २१) गुगरीयां[1] रा दिरीजै छै। सषरो गांव छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	८०)	११)	२९०)	१६९)

१ महांगड़ो

सीवांणा थी कोस ६ पछम दिसी। पलीवाळ बांभण बांणीया नै भाट बसै। धरती हळवा ५०। बाजरी मूंग मोठ हुवै। षेत सषरा इक साषीया। ऊनाळी नहीं। तळाव नहीं। कुवो १ बंधवो पुरसे १३ पांणी मीठो। सषरो गांव छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	३४८)	११४)	३३८)	२५२)

१ नेहवाई

सीवांणा थी कोस १३ पछम दिसी। पटेल बसै छै। धरती हळवा ६० षेत सषरा अवल। इकसाषीयो। ऊनाळी नहीं। पाछत बुठे[2] सेंवज काठा गेहूं हुवै। तळाव मास ८ पांणी पछै गांव कुड़ी रै कुवै पीवै। पलीवाळां रो गांव। घोड़ीयां छै, त्यांरा बछेरा[3] निपट सषरा हुवै छै।

---

1. कर स्वरूप। 2. वर्षा ऋतु के अंत में वर्षा होने पर। 3. घोड़ी के बच्चे।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
३०)	२४८)	१५)	२४०)	११४)

१०

२२. रजपूत बसै मुकाती, तथा करसो घणो को नहीं।

१ पादरूजु

सीवांणा थी कोस ११ पछम दिसी। लोक कोई नहीं। वसी रा रजपूत बांणीयां बांभण पवन जात बसै। बडी बसी छै। धरती हळवा २०० तथा २२५। इकसाषीयो। षेत निपट सषरा। बोह सींवो ऊनाळी नहीं। तळाव को नहीं। कुवा ३ सागरी छै, तिणां पांणी पीवैं। बडो गांव छै। कदीम जाळोर रौ गांव[1] दहीयां[2] रौ। रा० दासे पातलोत सीवांणा पाछै घातीयौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
२५०)	८००)	८३०)	१०००)	६०१)

१ धणांणो

सीवांणा थी कोस ६ पछम दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत लोक बसै। धरती हळवा ५० तथा ६०। बाजरी मूंग मोठ। इक साषीयो षेत सषरा, ऊनाळी को नहीं। तळाव को नहीं। कुवो १ सागरी पुरसे १४ पांणी भळभळो। सषरो गांव छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
६५)	६०)	१००)	१५०)	१५७)

१ षाषरलाई

सीवांणा थी कोस २ ऊतर दीसी। कुंभार पटेल रजपूत बसै। धरतो हळवा २०। जवार बाजरी मूंग मोठ षेत इक साषीया। ऊनाळी

---

1. प्राचीन समय में जालोर परगने का गांव था। 2. राजपूतों की एक शाखा, जिनका कोई समय में जालोर पर अधिकार था।

नहीं । तळाव १ मास ५ पांणी । कुवो १ बंधवो, गेहलडा जीवा रौ करायौ तिण पोवै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४)	१००)	७५)	१५०)	१५०)

१ पाटोधी

सीवांणा थी कोस १५ पछम दिसी । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत बसै । बडी बसी बडो गांव । धरती हळवा २०० तथा २५० । बाजरी मूंग मोठ जवार हुवै । इकसाषीयो, थळी रा षेत । बोह-सींवो । झोल १ देवनीमी छै । पोर कहोजै । बेरा २० तथा २५ हाथे ४ पांणी मीठौ घणौ । वडो कांठा रौ गांव । रन मडी छै । थांन १ आरांभा रौ छै तठै पांडवे वेढ थापी हुती[1] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१०००)	७८०)	१५०)	०)

१ ईद्राणो

सीवांणा थी कोस ५ पछम दिसी । रजपूत बांणीयां बसे । बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ४० तथा ४५ । बाजरी मूंग मोठ जवार इकसाषीयो, षेत अवल । ऊनाळी नहीं । तळाव को नहीं । १ बंधवो सागरी तिण पांणी पीवै । भाषरी १ पाधरोसो छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	३००)	२०७)	४००)	३१०)

१ कुहीयप

सीवांणा थी कोस २ उतराध मांहे । रजपूत रैबारी सुषवासी बसै । धरती हळवा १०० तथा १०५ । बोह सींवो बडो नेपत[2] रा षेत । इकसाषीयो । ऊनाळी तळाव मास ८ तथा ९ पांणी । पछै कुवो

---

1. जहाँ पांडवों ने युद्ध किया था । 2. अच्छी पैदावार वाले ।

१ तठै पीवै । बडो गांव छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८१)	२००)	२१०)	२००)	३०१)]

१ कुंडल

कोस १२ दिषण दिसी । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ७० तथा ८० । षेत सषरा, बोहोसींवो । ऊनाळी ऊनव[1] १, गेहूं मण १४० बावै । तळाव मास ८ पांणी । कुवो १ भाषर मांहे छै । कुंडल पहली बडी बसती हुती । पंवारां री ठुकराई हुती । रा० पातल राजावत लीयौ । आगे जाळोर पाछै हुवौ[1] । पछै राव मालदेजी री बार मांहे सीवांणा वांसे घालोयौ छै[2] । बडो भाषर । विषै राव श्री मालदेजी कुंडल रै भाषर रहा था । कोट री भींत गज ४ कराई छै । देसोत रहै तिसड़ी ठौड़ छै । भाषर में पांणी सषरो-सो नहीं ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	३००)	३००)	४००)	१७५)

१ बादळीयांणो[2]

कोस ६ पछम दिसी । लोक कोई नहीं । रजपूत बसै । मुकातो दै छै । धरती हळवा ४० । बाजरी मूंग मोठ, षेत सषरा । इकसाषीयो । ऊनाळी नहीं । तळाव कोई नहीं । कुवो १ बंधवां सागरी पुरस १४ तथा १५ भळभळो पाडलोसो गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१००)	१२०)	१२०)	१०१)

१ पीपलाणो

सीवांणा थी कोस २ दिषण दिसी । लोक को नहीं । भायल री

---

१. हुतौ । २. बाहलीयांणो ।

---

1. वह स्थल जहां पानी भर जाता है । 2. सीवाना के साथ मिलाया ।

बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ७० षेत कंवळा एकसाषीया । ऊनाळी तळाव १ मास ४ पांणी । कुवो १ बंधवो पुरस १६ मोठौ । पाहड़ कै बांसै । बडौ भाषर । विषै रहण री ठौहड़, सझुझ भाषर छै । राव मालदे सूर पातसाह रै विषै इण भाषर रहौ थौ । भाषर ऊपर कोट करायौ । तळाव १ रायळाव बंधायौ, मास १० पांणी । पछै मांहे बेरीयां हुवै । गांव रौ षेड़ौ पहला भाषर में थौ पछै भाषर री षुड़ै बसीयौ छै[1] । बास २, सषरौ गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४०)	१४०)	१३०)	१७५)	१७५)

१ मोडी

सीवांणा थो कोस १।। ऊगोण मांहे । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ४० बाजरी मोठ । षेत मगरा रा । एक साषीया । ऊनाळी नहीं । तळाव मास ५ पांणी । कुवो सषरो सागरी बंधवो, तिण पांणी पोवै । भाषर कड़षे मांहेला कटक रहणा रो ठौड़ छै । ओढी ठौड़[2] । कां पांणी ही भाषर मांहे छै[3] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	११०)	१५०)	१५०)	२०१)

१ सेहलो

सीवांणा थी कोस ६ दिषण दिसी । लोक कोई नहीं । वसी राठौड़ रजपूत बसै । धरती हळवा ५० तथा ६० । षेत सषरा । ऊनाळी नहीं । तळाव मास ४ पांणी । पछै जीणपुरै रै कुवै पांणी पीवै । भाषर री षंभ, पुंवार रौ गांव । रा० दासै लीयौ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१२५)	२०)	५०)	१००

---

1. बाद में पहाड़ की ढाल में बसा । 2. विकट जगह । 3. पहाड़ में कुछ पानी भी है ।

१ मीठड़ो[१]

सीवांणा थी कोस १० पछम दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बांभण बसै। धरती हळवा ६० तथा ६५। बाजरी मूंग मोठ षेत कंवळा एकसाषीया। तळाव कोई नहीं। कुवो १ सागरी पुरस १४ पांणी भळभळौ। कुवा ४ बूरीया पड़ीया छै। महेवा रै कांकड़[1] छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	३००)	२५०)	२५०)	२५०)

१ गढी[२]

कोस ४ पछम दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा १५० बोहोसींवो। षेत सषरा इकसाषीया। ऊनाळी नहीं। तळाव छै। कुवो १ बंधवा पुरस १० तथा १२। पांणी मीठौ सषरौ। गांव छै षेड़ौ भाषरो री जड़ां[2]। पहली ब्रह्मपुर पाटण कहीजतौ। धुधली माल दबटीयो बडो बाको। पहाड़ छै। बोषे रहण री ठौड़ छै। रावळ मालो पातसाही फौज था बेढ की तरै आपरा मांणस महेवा था आंण अठै राषीया था। बडो ठौड़ छै। राव मालदेव भाषरो गागल नयास बंधायौ छै। कोट तोषी भींत कोईकै कांनी री की छै।[3] भाषर मांहे नै भाषरो जड़ां कुवा ५ तथा ७ छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७०)	३००)	३२०)	३१०)	३०१)

१ फुलण

सीवांणा थी कोस ४ ईसांण कूण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा १०० बाजरो मूंग मोठ। एक साषीयो नै ऊनाळी नहीं। तळाव मास ४ पांणी। कुवो १ बंधवो पुरस १४

१. मीठोड़ो। २. गड़ो।

1. सीमा। 2. पहाड़ी के नीचे ही। 3. कोट के थोड़ी इर्द-गिर्द दीवार करवाई थी।

पांणी मीठौ । षेड़ौ भाषरी री जड़ां बसीयो छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)[1]	१७५)	१७५)[2]		

१ दांतोलो[3]

सीवांणा थी कोस १। ऊगण दिसी । लोक कोई नहीं । बसी सींधल मदु री[4] रा बसै छै । धरती हळवा २० । षेत मगरा एक साषीया । ऊनाळी नहीं । तळाव कुवो कोई नहीं । गांव देवाध रै तळाव कुवै पीवै । भाषर नजीक छै । सषरौ भाषर छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१००)	७०)	१००)	१००)

१ पाद्रड़ी[5] बडो

सीवांणा थी कोस १। बाय कूण मांहे । गढ राज बुरज हेठै बसै । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ६० तथा ६५ बाजरी मूंग मोठ । षेत मगरा एक साषीया । ऊनाळी नहीं । तळाव ४ पांणी । कुवो १ बंधवो छै तिण पीवै । पछरी[6] षान रौ कबाड़ो गढ रा कांम नुं आवै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	५०)	१२०)	१२०)	१५०)

१ देवंध[7]

सीवांणा थी कोस १ ऊगण मांहे । लोक कई नहीं । बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ३० । षेत मगरा बाजरी मोठ एकसाषोया । ऊनाळी नहीं । तळाव मास ८ पांणी । कुवो १ सागरी बंधवो तिण पीवै । थांन १ श्री माहादेवजी रौ सषरौ छै[1] ।

१. १००) । २. 'ख' प्रति में आगे के दो वर्षों की आमदनी—१७५) १७५)
३. दांतालो । ४. मादु री । ५. पादरड़ी । ६. पथर । ७. देवाध ।

1. महादेवजी का एक अच्छा स्थान है ।

संवत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	७१)	६०)	९५)	८१)

१ अरजीयाणो

सीवांणा थी कोस २ ऊगण मांहे। लोक कोई नहीं। बसी रा लोक रजपूत बसैं। धरती हळवा ८० बाजरी मोठ हुवै। तळाव मास ६ पांणी। कुवो १ बंधवो सागरी पुरस १३ मीठौ। एकसाषीयो। ऊनाळी नहीं। पहली षेड़ो भाषर मांहे थौ। रा० जैतसी नगावत उरो वासीयौ[1]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	२१५)	२००)	२०१)	२०१)

१ बिजळीयो

सीवांणा थी कोस १॥ ऊगवण। देसी लोक कोई नहीं[2]। बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा ५० बाजरी मोठ। षेत कंवळा एकसाषीया। ऊनाळी नहीं। नाडी मास २ पांणी, पछै अरजीयाणै रै तळाव कुवै पीवै। पैलो भाषर री जड़ां[3] बसतो, तठै कुवौ छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६०)	१५०)	१५०)	१५०)	१५०)

१ गुघरट

सीवांणा थी कोस २॥ दिषण दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बसैं। धरती हळवा ७० तथा ८० षेत सषरा। जवार बाजरी हुवै। ऊनाळी पीयल नहीं[4]। एकसाषीयो। सेंवज बंधे हुवै। तळाव मास ६ पांणी। कुवो बंधवो तठै पीवै। पाहड़ आढो भाषर छै कोस ५ में। विषै रहण री ठौड़। भाषर में झरणो पटैवणो[१] पांणी हुवै।

१. पेटवाणी।

1. नगा के पुत्र जैतसी ने इस ओर बसाया। 2. मूल निवासी लोग कोई नहीं। 3. पहाड़ के बिलकुल नीचे। 4. सिंचाई नहीं होती।

तळाव १ सौभोळाव मास १०, बावड़ी १ बंधवी तठै तीरथ छै। झरणा हेठे झाड़ छै[1]। बावड़ी १ षटुकड़ी जड़ां छै। भाषर री जड़ पहली षेड़ौ भाषर नजीक थौ। हिमैं ऊरै बसोयौ छै। बास दो जुदा पटै छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७०)	१८०)	२२०)	२५०)	२७९)

१ लुदरड़ो

सीवांणा थी कोस ४ पूरब दिसी। पटेल षाती बांभण बसै। वसी रा रजपूत बसै। धरती हळबा १००। बाजरी मूंग मोठ रा षेत कंवळा एकसाषोया। ऊनाळी नहीं। तळाव मास ४ पांणी। कुवौ १ सागरी बंधवा तठै पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	१५०)	१५०)	२००)	२००)

१ थांपण

सीवांणा थी कोस ५ पछम दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा ५०। बाजरी मूंग मोठ षेत मगरा एक साषीया। तळाव मास ५ पांणी। कुवो १ सागरी पुरस १५ षारौ। पहली षेड़ो गोडां भाषर परै हुतौ। सु कैचा राठौड़[1] पाधर मांहे[2] बासीयौ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०	१००)	७०)	७०)	८०)

१ सिणेर

सीवांणा थी कोस ५ पछम दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा

१. सु कै राठोंडां।

1. झरने के नीचे झाड़ी आदि है। 2. मैदान में।

रजपूत बसै नै बांभण बसै धरती हळवा १०० । बाजरी मूंग मोठ षेत सषरा एकसषीया, बोहोसींवो गांव । ऊनाळी नहीं । कुवो १ सागरी बंधवो पुरस १५ मीठो, पीवै । पहला भाषर री षंभ बसतो । हिमैं कुवा कनै बसै छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१००)	२००)	२००)	२००)	२००)

१ मुठली

सीवाणा थी कोस ६ पछम दिसी । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ६० । बाजरी मूंग मोठ षेत एक सषाया । ऊनाळी नहीं । तळाव मास ४ पांणी । कुवो १ बंधवो सागरी भळभळो, पीवै । छोटो-सो गांव ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	८०)	५०)	५०)	०)

१ षारड़ी रा वास

सीवांणा थी कोस १५ पछम दिसी । १ षारड़ी बोडु १ चुंहाण रा बास । लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ६० तथा ७० । षेत एकसाषीया सषरा । उनवा २ भरीजै तौ काठा गेहूं मण २०० बेवै । तळाव मास ४ पांणी रौ छै । पार री बेरीयां हाथ ४ पांणी मोठौ ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१००)	१००)	१००)	१०१)

१ त्रिसींगड़ी बडोबास थोभ रौ

लोक कोई नहीं । बसी रा रजपूत बसै । धरती हळवा ८० षेत सषरा एकसाषीया । ऊनाळी नहीं । ऊनवड़ा ५ छै । भरीजै तरै गेहूं मण ५०० भोग आवै[1] । तळाव १ मांडलप मास ८ पांणी रहै । पछै रोहड़े पीवै ।

1. जमीन के लगान के रूप में ५०० मन गेहूं आते हैं ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४)	०	०	०	०

१ वरसिंघ रौ बास थोभ रौ

सीवांणा थी कोस १३ पछम दिसी। थोभ थी कोस १। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा ३० तथा ३५। बाजरी मोठ, षेत कंवळा एकसाषीया। ऊनाळी नहीं। गांव रौहड़े रै तळाव पांणी पीवै। छोटौ गांव छै।

१ पटाउ रा बास २

सोवांणा थी कोस १२ उतराध दिसी। एक बडो बास, एक देवड़ां रौ बास। दोयुं[1] ही बास बसै। बसती जुदी-जुदी। रजपूत बांणीया बसी रा लोक बसै। धरती हळवा ९० तथा १००। बाजरी मूंग मोठ एक साषीयौ। ऊनाळो नहीं। तळाव मास ४ पांणी। कुवो १ बंधवौ पुरस १४ मीठौ। सषरौ गांव।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५०)	६०)	४०)	४५)	४०)

१ तेलवाड़ो

कोस ७ दिषण दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा ५० तथा ६०। मूंग मोठ तिल कपास हुवै। इकसाषीया, ऊनाळी नहीं। तळाव मास ४ पांणी। कुवौ १ सागरी बंधवो, तठै पोवै। भाषर ओढी ठौड़ छै। तठै झरणा सदा झरै। पीणहट हुवै छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३०)	४०)	१५)	४०)	५०)

1. दोनों।

१ काकराळी[1]

सीवांणा थी कोस ८ ऊतर दिसी। लोक कोई नहीं। वसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा ४०। बाजरी मूंग मोठ। एकसाषीया षेत, ऊनाळी नहीं। तळाव मास ४ पांणी। पछै सीलोर लूणी नदी रै बाहळै पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
५)	५०)	५१)	१००)	१००)

२ धीरा वास २

कोस ५ दिषण दिसी। लोक कोई नहीं। वसी रा रजपूत बसै। जुदै पटै सु वास कहीजै। धरती हळवा ८०। बाजरी जुवार मूंग मोठ एक साषीया षेत। ऊनाळी नहीं। तळाव सादेळाव[2] मास ५ पांणी। कुवो १ सागरी बंधवो तठै पीवै। पाहड़ बडो कुंडल सुधौ कोस ३० रै फेर मांहे[1] छै। मांह द्रह[2] २ तथा ४ छै। गांव रै मांढ[3] कोट री भींत छै। भायलां रौ बडौ गांव। भाषरी मांह बसै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
४०)	५०)	४०)	५०)	५०)

१ पीडा ढंढ

कालाणै था कोस २। सीवांणा था कोस १२ ऊतर में। कालाणै रौ बास। लोक कोई नहीं। रजपूत बसै। धरती हळवा ३५ तथा ४०। षेत सषरा, जुवार बाजरी। एकसाषीया। ऊनाळी नहीं। तळाई मास २ पांणी, पछै धरमदास रै वास पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१६
१०)	२०)	५)	४०)	२५)

---

१. काकरालो। २. सीदेळाव। ३. मुहढे।

---

1. ३० कोस के घेराव में कुंडल तक बड़ा पहाड़ है। 2. पानी के गहरे व बड़े खड्डे।

१ रासेळाव

कालाणा था कोस १॥ सीवांणा था कोस १२ ऊतर मांहे। लोक कोई नहीं। रजपूत बसै। कालाणै रौ बास धरती हळवा ४० तथा ५०, जवार बाजरी। षेत एकसाषीया। ऊनाळी नहीं। तळाव रासेळाव पांणी मास ८ रौ। पछै कालाणै रै कुवै पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
०)	२०)	५)	६०)	४०)

१ जीणपुर

सीवांणा था कोस ५ दिषण दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत डौहळीयां[1] बांभण बसै। धरती हळवा ४०, बाजरो मूंग मोठ तिल। षेत एकसाषीया। ऊनाळी नहीं। तळाव मास ४ पांणी। पछै कुवो १ बंधवां तिणै पीवै। षेड़ौ भाषर री गाळ मांहे। ओढो भाषर छै[2]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१५)	४०)	१५)	४०)	४०)

१ भागवौ

सीवांणा थी कोस ७ दिषण दिसी। बास २–बडो बास १ भायल बीसा रौ बास १। भेळा बसै[3]। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा ५० बाजरी मूंग मोठ। एकसाषीयौ। ऊनाळी नहीं। तळाव मास ४ पांणी। कुवौ १ सागरी तठै पीवै। भाषरी री षंभ बसै। बडौ भाषर छै। जाळोर री मै मागवा रा चोरी करै। वीहारी[4], वार २ तथा ३ आया। मांणस हाथ नहीं पड़ीयौ[5] भाषर रौ घणौ बळ छै। धीरां कुंडल सुधौ भा र छै।

१ मांहगी

---

1. दान में दी हुई जमीन। 2. ऐसा पहाड़ जिस पर चढ़ना बड़ा कठिन है। 3. शामिल ही बसते हैं। 4. बिहरी (मुगल) यहां चोरी करते हैं। 5. कोई आदमी पकड़ा नहीं गया।

सीवांणा था कोस ५ दिषण दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा ४० बाजरी मूंग मोठ तिल हुवै। षेत कंवळा इकसाषीया। ऊनाळी नहीं। तळाव मास ५ रौ पांणी। कुवो १ बंधवो छै, तठै पोवै। पछै धोरा पोवै। पहाड़ री गाळ मांहे बसै[1]। बांकी ठौड़ छै[2]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	३०)	१०)	३०)	४०)

१ पादरड़ी षुरद

सीवांणा थी कोस ६ पछम दिसी। लोक कोई नहीं। बसी रा रजपूत बसै। धरती हळवा २० तथा २२। बाजरी मूंग मोठ तिल, एकसाषोयो। ऊनाळी नहीं। कुवो १ बंधवो छै तिण पांणी पीवै। तळाव कोई नहीं।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३५)	५०)	६०)	५०)	६०)

१ घड़सी रौ बाड़ो

सीवांणा थी कोस १० कूण दिसी। रजपूत जाट बसै। धरती हळवा ३१ तथा ३५। बाजरी मूंग मोठ तिल कपास हुवै। एक साषीयो। ऊनाळी नहीं। तळाव मास ५ पांणी। पछै सारोड़ी पटाऊ पीवै, तळाव पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१००)	५०)	६०)	७०)

४२

गांव सूना मांजरै—

1. पहाड़ की घाटी में बसता है। 2. विकट जगह है।

१ देवासण[1]

सीवांणा था कोस ५ ऊगोण दिसी । घणा बरस हुवा षेड़ो सूनो छै । कागड़ी रावणीया बीच धरती हळवा १० छै । तळाव कुवो नहीं । जागीरदार रै घास गाडा ४०० कटै ।

१ कांना रौ बास थौभ रौ

सीवांणा था कोस १३ पछम नुं । थोभ था कोस १ दिषण मांहे । षेड़ौ घणा दिन रौ सूनौ छै[1] । धरती हळवा २० षेत सषरा । तळाव १ मास ४ पांणी ।

१ नाईली[2]

सीवांणा था कोस ८ ऊगोण दिसी । बांभसेण मांह मांजरौ । बांभसैण मांगला बीच भाषरी छै तिण रै नांवै कहीजै[2] । बांभसैण रा षड़ै ।

१ बागावास

सीवांणा था कोस ६ ऊत्तर दिसी । पहळी जाट बसतौ । पछै आसायच रजपूत बसीया । संमत १७०६ सूनौ हुवौ । धरती हळवा २० । षेत एकसाषीया । ऊनाळी नहीं । गांव समदड़ी रा पाही लोग षेत षड़ै छै । जिण नुं पटै हुवै तिण नै भोग दै[3] । नाडी १ मास ४ पांणी । पछै देवलीयाळी री नदी पीवता । नदी लूणी नजीक छै ।

१ धारीयावासणी

सीवांणा था कोस ७ ऊतर दिसी । गांव जांणीयाणा भेळौ पटै मंडै । गांव होठलु रा लोग पाही षड़ै नै भोग दै । घणा दिन सूनौ ।

---

१. देवासणी । २. नाइली ।

---

1. गांव कई दिनों से सूना है । 2. बांभसेण और मागल नामक गांवों के बीच पहाड़ी है उसी के नाम पर इसका यह नाम पुकारा जाता है । 3. जिसकी जागीर में होता है उसी को जमीन का लगान आदि देते हैं ।

जांणीयांणै चौधर रौ बसतौ। पछै ऊताराधा जाट बसीया था। जांणीयाणो होठलु था कोस १ ऊतर मांहे। तठा पछै षेड़ौ सूनौ छै। धरती हळवा १५ तथा १७। एकसाषीयौ। ऊनाळी नहीं। तळाव १ मास ५ पांणो। पछै कुवै पीवै।

१ पांसु

सीवांणा था कोस १५ पछम दिसी। पादरू वांसै षड़ीजै छै। पहली दहीया रहता। सु जाळोर रैं साह राणे नै महेवा रै नाकौड़ बसै छै। धरती हळवा २५। कुवो १ बूरीयो पड़ीयौ छै। जाळोर रै कांठै वास सूनौ छै।

१ षीदावड़ौ

सीवांणा था कोस २ ऊतर मांहे। कुहियप मांहे षड़ीजै छै। घणा दिन रौ सूनौ। मूळ भायल षीदा रौ बासायौ। कुहियप था कोस १ ऊतर मैं। धरती हळवा २०। षेत एकसाषीया। कुवौ १ बंधवो, बूरीयो पड़ीयो छै। षैड़ा री ठौड़ भाषर मैं ढूंढा री जायगा छै[1]।

१ गोड़ां रा वास

सीवांसा था कोस २ ऊतर दिसी। कुहीयप वांसै षड़ीजै। पहली जैतमाल चांपौ बसीयौं थौ। गौड़ां रौ भाषर बांको पाड़ छै, तठै कुवो[1] छै। तठै सदा पांणी रहै छै, सु भींव रौ गोडो कहीजै छै। सु कुहीयप था कोस ०॥। पछम दिसी।

१ मोकलीयौ वेरो

सीवांणा था कोस ६ ऊतर दिसी। कांणांणै रौ मांजरौ कदीम छै। रजपूत बसै[2]। कांणाणा था कोस ०॥ रूपारास मांहे लालणा रौ

---

१. कुंड। २. चौहांणां री वार मांह मोकल रजपूत बसतो।

---

1. पहाड़ में गांव के स्थान पर मकानों के खण्डहर हैं। 2. शामिल कर दिया।

मारग, धरती हळवा २० । बेरौ १ मोकलीया बेरो । बूरीयौ पड़ीयौ छै ।

१ सुईयौ

सीवांणा था कोस ४ ऊगोण मांहे । बावलु रौ मांजरौ । तीरवा १ पछिम नुं, बावलु था छै ।

१ बनेवड़ो

सीवांणा था कोस ७ ऊगोग दिसी । करमोवास मांहै मांजरौ । पहली पटेल बसता तुरक नूं धरती हुई तद सूनौ हुवौ[1] । करमावास समदड़ी बीचे छै ।

१ भीकां रौ पाद्र

सीवांणा था कोस ४ पछम दिसी । घणा बरस सूनो । भीकां रौ बडौ भाषर । ओोढी ठौड़, ऊपर द्रह छै । कूवा २ बंधवां पांणी मीठौ छै । धरतो हळवा २० सोणर रा रजपूत षेत षड़ै । तळाव कोई नहीं । भाषर नांव भींका रौ कहीजै छै[2] ।

१ बांदु रौ बाड़ो

कालाणा रौ बास सीवांणा था कोस १२ ऊतर दिसी । बास २ बादुरा बाड़ा कहीजै । तामें १ चारणां नुं सांसण १, बास पटै १ मांहे मांडै रजपूत रौ, तठै भायल दूदौ बसतौ । हिमें सूनौ छै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
६)	०)	०)	०)	०)

१ देभलां[1]

सीवांणा था कोस ६ दिषण दिसी । धीरां मांहे षड़ीजै । मौजरे

१. देवलां ।

1. मुसलमानों का इस क्षेत्र पर अधिकार होने पर सूना हुआ । 2. पहाड़ का नाम भींका कहा जाता है ।

भंडै। कदीम जाळोर रौ गांव। पावाडीया रजपूत बसता। पछै राव मालदे रा हुकम था भाईल मार नै सीवांणा वांसै कीयौ[1]। तद रौ षेड़ो सूनौ छै।

१ काकसी

सीवांणा थी कोस १३ पछिम दिसो। षेड़ौ सूनौ। घास कटै छै। केईक षेत पादरू वाळा षड़ै छै। संवत १७०३ रा किसनदास जसवंतोत बसीयो थौ। रा महेसदास लीयौ, दलपतोत जाळोर रै साथ किसनदास नुं मारीयौ। पछै सींव नीसरी तरै सीवांणा रै वसै चोकस कीयौ। पहला जाळोर था वेधीलो थौ। कुवो १ छै। तळाव नहीं। जाळोर रै कांठै[2] सूनो षेड़ौ छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
०	२०)	१०)	०	०

१ मोडरो

सोवांणा था कोस १० धू दिसी। कांणाणे मांहे मांजरै, आदू षेड़ौ छै[3]। पहला सूनो हुतौ। पछै महतो वूलो उतराधा जाट बसाया। पछै संमत १६९३ चौः जैतै कांणाणौ रै राज श्री गजसींघजी री बार मांहे अरज की–जु सींव थोड़ी छै। तरै मोडरो कांणाणे भेळौ कीयौ[4]। सु सूनौ छै। धरती हळवा ३० बाजरी मूंग मोठ इकसाषीया। तळाव मास ४ पांणी। कुवो १ षारौ, बूरीयो, पुरस ७। कांणाणै था कोस ४ धू मांहे छै।

१ महेलड़ी

सीवांणा था कोस २ ऊगण मांहे। दंताला मांहे मांजरौ। रा० लषा जैतमालोत रौ बास कहीजै। सूनो छै। भाषर री षोह[5] माहे तठै पांणी रौ द्रह छै। वडा बास था कोस ०॥ ऊतर मांहे।

---

1. सीवाने के शामिल किया। 2. जालोर की सीमा से लगता है। 3. बहुत प्राचीन गांव है। 4. शामिल कर दिया। 5. पहाड़ के अंदर खोखला स्थान।

१ कांणीवाड़ौ

सीवांणा था कोस ११ दिषण मांहे । कुंडल रौ मांजरो । पंवार नै जैतमाळ री बार मैं बसतो । कुंडल था कोस १॥ धू मांहे । सूनो षेड़ौ छै । तळाव १ छै । धरती हलवा– षेत भरेत रा ।

१ गोरवी

सीवांणा था कोस ६ पछम दिसी । घाणांणा मांहे मांजरौ । पुंवार नै जैतमाळ री बार मैं बसतो, कुंडल थौ । भाटो समदर[1] जात छै सु बसता । घाणांणा था कोस ॥, द्राह मांहे भाषरी गोरमी छै । जाळोर री दिस ।

१ कुवड़ी

सीवांणा था कोस १३ ऊतर दिसी । पटाऊ मांहे षड़ीजे । पहली कुंभार बसता । संमत १७०४ था सूनौ छै । धरती हळवा ३० तथा ३५ । एकसाषीया । तळाव मास ४ पांणी । कुवो १ बंधवो तिण ऊपर ऊनाळी हुवै, पुरस १०, षारौ छै ।

२०

२३. परगने सीवांणा रा गांव सांसण छै तिण री फिरसत ।

गांव आसांमी

१७ बांभणां नुं सांसण—

३ सीलोर रा वास

गढ़ सीवांणा था कोस ६ ऊगोण था डावौ[1] । दत्त रावत हापा जैतमाल रौ, प्रौः नांना रोहड़ीयोत जात राजगुर नुं । पहला पुंवार रौ दीयौ अगनोतीयां[2] नुं सांसण थौ । हिमें प्रौः महेराज[3] भोजा रौ नै लिषमीदास देवीदास रौ नै हेमराज षेतै सूरा रौ नै रतनौ रावतोत

१. दरदक । २. हेमराज ।

1. पूर्व से बांई ओर । 2. अग्निहोत्रियों को ।

बंट घणा[1] वास तीनां ही कनांरै कनांरै बसै छै। बांभण बांणीया बसै। धरती हळवा २००। बरसाळी षेत धोरावंध, धांन सगळा हुवै। ऊनाळू अरट ५ तथा ७ कोसीटा १५ चांच २५ हुवै। सेंवज लूणी री रेल आवै, तरां षेत १० तथा १५ गेहूं चिणा हुवै। तळाव मास ६ रौ पांणी। बावड़ी २ बंधवी छै। नदी पांवडा २०० छै। षेड़ा दोळी कोट री रांग कदीम छै[2]। पहला पौळ ४ थी।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२०)	१३५)	५०)	२१०)	१२५)

१ आसराबौ

गढ़ था कोस १५ ईसांन मांहे। दत्त रांणा देवीदास बींजावत रौ, प्रो० सांगा दूदावत नुं। हिमें प्रो० मेहो रूपा रौ नै मनोहर जैमल रौ नै नाढो चांदा रौ नै भादौ कांना[1] रौ छै। बांभण बांणीया रजपूत बसै। धरती हळवा १००। बरसाळी बाजरी मोठ मूंग तिल कपास हुवै। षेत रूड़ा ऊनाळी। सालावास वाळौ बाहळौ पांवडा ४० छै। सु रेलीजै तरै हळवा २० सेंवज गेहूं चिणा हुवै। तळाव मास ६ पांणी। कुवो १, पुरस १६ पांणी मीठौ। गांव ५ तथा ७ पाषती रा ही पीवै[3]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	३८)	१५)	७०)	२५)

१ तिसींगड़ी वाल्ही[2] रौ बास थोभ रौ

सीवांणा था कोस १४ धू दिसी। दत्त रा० धुहड़ आसथांनोत रौ प्रो० पीथोड़ सोढावत जात सोढ़ा नुं। पछै रांणो देवीदास वींजावत प्रो० झांझण महेराजोत नुं दीयौ। हिमें प्रो० आपमल[3] किसना रौ नै

१. वीका। २. वली। ३. आपमाल।

---

1. अनेक लोगों की हिस्सेदारी है। 2. गांव के चारों ओर परकोटे की प्राचीन नींव है। 3. पास के ५-७ गांव भी पानी पीते हैं।

द्वारकादास केसा रौ छै। बांभण रजपूत बसै। धरती हळवा ४०। बरसाळी बाजरी मौठ मूंग तिल हुवै। ऊनव १ गड़ो[1] हळवा १० सेंवज गेहूं हुवै। तळाव १ मांडलप मास १० पांणी। मांहे वेरां हाथ २० पांणी मीठौ। तळाव १ मास ४ पांणी रहै। पछै पाटोधी पार रा बेरां मांगीयो पांणी पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१४)	१२०)	३५)	१८०)	११०)

१ सातोसणी

सीवांणा था कोस १६ धू दिसी। दत्त रांणा देवीदास बींजावत रौ, प्रो० कान्हा बाल्हावत जात वांकुलीया नुं। पहेलां रा० जैतमाल सलषावत रौ दत्त थौ। हिमें प्रो० जीवो तीकम रौ नै ईसर कांना रौ नै षंगार रांमदास रौ नै रोहीतास वीदा रौ छै। बांभण हीज बसै छै। धरती हळवा २५ बाजरी मूंग मोठ तिल हुवै। ऊनाळी नहीं। तळाव १ मास ८ पांणी। कुवो १ कोस ०॥ षनौड़ दिसी पुरस ६, षारौ, नवो। बरस ६० कुवो १ षारड़ी री सींव में सातोसणी रौ छै, हाथ ८ पांणी षारौ। गांव साथे दीयो थौ[1]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४)	१२)	२२)	३५)	१५)

१ महेबारी

सीवांणा था कोस ६ नीवास मांहे। दत्त रा० केसोदास भाषरसीयोत दासा पातळोत रौ, वी० वीरा अमरावत नुं रांम दासावत काका-भतीज नुं। रा० भाषरसो दासावत दीयौ छै। पछै रा० केसोदास सुरेहज रौ पाद्र दो हिमें प्रो० सूरौ नै माधै रांमावत नै सादूळ आसावत नै हेमो मेहराजोत[2] पंचोळ[3] रौ छै। संमत १६७० राजा

१. वेहड़ो। २. माहवारो। ३. पांचलोर।

1. गांव के साथ यह कुआ भी दान में दिया था।

सूरजसिंघजी री बार में दीयौ। षेड़ौ सुनो छै। इण गांव रा बांभण गांव जीणपुर मांहे रहै छै। धरती हळवा १५ तथा २०। बरसाळी बाजरी मूंग मोठ हुवै। ऊनाळी नहीं। पांणी जीणपुर कुंडल पीवै। कुवा २ रादड़ीड़ा[1] साईणा षेत मांहे छै। पांणी नहीं। भाषर बडौ अनड़ तीन तरफ छै[1]। धरती हळवा १५ बाजरी मूंग मोठ तिल कपास हुवै। ऊनाळी नहीं। तळाव मास ६ पांणी। बेरो १ गांव षारड़ी रौ ऊदै करायौ छै, हाथ ९ षारौ, कोस १। छै, तठै पीवै। भाषरी ३ गांव नजीक छै। रा० कोलांण रायपाळोत धुहड़ोत रौ महेवा था छांड नै[2] इण मांहली भाषरी एक आय बसीया था। तठै घर कोटड़ी करई थी। सु केलणकोट हो थोभ रौ वास।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	१५)	७)	२५)	१८)

१ कालीया वासणी

गढ़ सीवांणा था कोस १३ धू दिसी। दत्त राव मालदेजी रौ, प्रो० षींवड़ देईदास रौ जात बंधन साधू पलीवाळ नुं। पछै रावळ मेघराज हापावत बरसिंघोत रै दीयौ छै। पछै राव चंदरसेन मालदेवोत गांव षोस उरौ लीयौ थौ[3]। तरै प्रो० षीवड़ जुहार कीयौ[4] तरै वळे सुरहै ४ रो पाई दीनै। सांसण कर दीयौ। हिमें प्रौ० कलौ नै गंगादास मांडण रा नै बसतौ अणंदा रौ छै। षेड़ौ सूनौ नैहवाई नजीक छै। बांभण नैहवाई मांहे बसै छै। धरती हळवा १५ तथा १७। बरसाळी बाजरी जुवार तिल घणा हुवै। सेंवज षेत १ गेहूं चिणा जव हुवै। तळाई १ कालीयानडी मास ८ पांणी। पछै कुवड़ी रा कुवै पांणी पीवै।

---

१. राघोहड़ा।

---

1. तीन ओर बड़ा भारी पहाड़ है। 2. महेवा से अपना निवास स्थान छोड़ कर। 3. छीन लिया था। 4. पेश होकर नमस्कार किया।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
७)	३५)	२०)	९२)	६०)

१ लोळावास

गढ़ था कोस १६ । धू दिसी पटाऊ सरवड़ी बिचै । दत्त रांणा देवीदास वींजावत रौ प्रौ० बरसल सांवतोत जात वांकुलीया नुं । हिमें प्रो० षंगार रांमदासोत छै । षेड़ौ सुनो ऐ — बांभण पटाऊ मनाणो बांभणां रौ बास मांहे बसै छै । कहै छै—पहली षेड़ो कोई नहीं हुतौ[1] । धरती हळवा ६ बाजरी मोठ हुवै । पांणी पटाऊ भेळौ पीवै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	२०)	१०)	३५)	१८)

१ भीदाकुवो[१] कीटणोद रौ वास

सीवांणां था कोस ५ वायव कूण मांहे । दत्त रांणा देवीदास वीजावत रौ, प्रौ० हदु बुटहड़ौत नै भीदा थाहरोत जात सीह काका-भतीजा नुं, गांव दाधी रौ षेड़ौ दीयौ । हिमें प्रौ० सुरतांण देवीदास रौ नै तेजमाल नाराईण रौ नै भलौ चांदा रौ छै । हेंस घणी[2] । बांभण बसै । धरती हळवा १५, बरसाली षेत सषरा । ऊनाळी, नदी लूणी । अरट ६ कोसीटा १४ हुवै । रेलीजै तारां सारी ही सींव मांहे[3] सेंवज गेहूं चिणा हुवै । तळाई १ मास ४ पांणी । कुवो १ भीदा बांभण रौ करायौ, हाथ ३० मीठौ कुवौ । दाधी रा तोड़ बूरियौ पड़ीयौ छै । प्रो० भोदै नुं औ गांव बांटै आयौ नै प्रो० हदु नुं गांव बालोतरा री धरती हळवा २० अरट ५ छै, सु बंट आया छै[4] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	१३०)	३५)	२१०)	११०)

---

१. षीदाकुवो ।

---

1. ऐसा कहते हैं कि पहले कोई गांव बसा हुआ नहीं था । 2. गांव में हिस्सेदारी बहुत है । 3. पूरी सीमा में । 4. हिस्से में आए हैं ।

१ पटोऊ रौ वास मनणां रौ[1]

सीवांणा था कोस १० धू दिसी। दत्त रांणा देईदास बीजावत रौ प्रो० सोहड़ जैता मनणा नै ही हुवै। प्रो० डाहो षींवा रौ नै सूजौ माधा रौ नै कलु अणंदा रौ छै। बांभण बसै। धरती हळवा २० तथा २५ री। मूंग मोठ तिल कपास हुवै। ऊनाळी नहीं। कुवो १ ऊगवण मांहे प्रो० सूजा रौ करायौ। पुरस १२ पांणी षारौ। तीने ही वास पटाऊ रा पांणी पीवै। वास भेळा बसै छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४)	१६)	७)	१५)	१२)

१ सरवड़ी

गढ था कोस १२ ऊतर ईसांन मांहे। दत्त राठौड़ सोम जैतमालोत सलषावत रौ। प्रो० सौकर चाहौड़ोत जात मणनो नुं। हिमैं प्रो० मोहणदास सुजावत नै जगनाथ लिषमोदासोत नै राघो नारणोत छै। हैंसा घणा छै। राणै देईदास बींजावत प्रो० रांमा नै रूपा पूनावत नुं फेर दीयौ[1]। बांभण कुंभार बसै। धरती हळवा १००। बरसाळी बाजरी मूंग मोठ घणी जवार थोड़ा तिल कपास। सषरी ऊनाळी नहीं। तळाव मास ६ तथा ४ पांणी। कोहर १ पांवडा ४ पुरस १६ पांणी षारौ-मीठौ। पांणी पाषती रा गांवा रौ पोवै। बाहळौ १ गांव नजीक छै[2]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
२५)	१२०)	७०)	१३५)	११०)

१ ऊमरळाई षुरद

सीवांणा था कोस ६ धू मांहे। दत्त रा० किसना रायमलोत देवीदासोत रौ प्रो० देदा नापा बींजावा सोढा नुं। हिमें प्रो० लषौ नरा रौ नै कूंपौ केसव रौ नै जसौ करमसी रौ छै। बांभण बसै।

---

1. फिर से दांन में दिया। 2. गांव के पास एक नाला बहता है।

धरती हळवा ४० बाजरी मूंग मोठ तिल हुवै । ऊनाळी नहीं । पांणी बड़ी ऊमरलाई रै तळाव कुवै पीवै । धरती हळवा ३ । रा० दासै पातळोत राजावत रै धावचै प्रो० मालदेयोत नुं दीयौ छै, सु पिण भेळौ छै[1] ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	२५)	१०)	३५)	१७)

१ महैकर रौ वास—रोहाड़ा रौ

सीवांणा था कोस १२ धू दिसी । दत्त रा० डूंगरसी करमसीहोत जोगाइत देवीदासोत रौ । प्रौ० मोकल कचरोत जात सोढा नुं । पछै राव मालदेजी प्रो० तेजसी मोकळोत नुं सुरेह २ रौ पाइदी पहैली राघौ कोभावत जातमालोत प्रो० कान्हड़ केलावत नुं । नै एक ठौड़ लीषोयो छै–रांणै डूंगरसी प्रो० सेषै मेहावत नुं दीयौ । बांभण बसै । धरतो हळवा २० तथा २५ । बाजरी मूंग मोठ तिल हुवै । ऊनाळू नहीं । तळाव मास ८ तथा १० पांणी । पछै पावती[2] रा गांवां मांगीयौ पांणी पीवै । हिमें प्रो० कलौ म्हेकरन रौ नै लषमण केसव रौ । गोईंद ऊदैसी रौ, वेलो षेतसी रौ छै । नैहवाई नजीक बसै ।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	४५)	१०)	८५)	४०)

१ पाटोधी रौ वास सींधीपा[1] रौ

सीवांणा था कोस १९[2] ऊतर मांहे । दत्त रांणा देवीदास वीजावत रौ, प्रो: जोसी···सीधप नुं । हिमें प्रौ० डूंगरसी नेतावत नै तिलोकसी हरषो गांगावत छै । षेड़ौ सूनो छै । बांभण पाटोधी बडै वास मैं बसै छै । धरती हळवा १० छै । बाजरी मोठ हुवै । ऊनाळू नहीं । तळाव नहीं । पार रा बेरा २ पका छै तठै हाथ ७ पांणी मीठौ

१. १८ । २. (सीधीया) ।

1. वह भी शामिल है । 2. पास के ।

पीवै । संमत १६७५ जैसलमेर रौ कटक पाटोधी ऊपर आयौ[1], तठा पछै षेड़ौ सूनौ छै । पटोधी रौ डाभलो षेत भरीजै छै तरै इण षेत मांहे गेहूं सेंवज हुवै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	१०)	४०)	३५)	१२०)	१०५)

१ सींहथळी

गढ़ सीवांणा था कोस १६ धू दिसी । दत्त रांणा देवीदास बींजावत रौ प्रौ० परबत सादावत जात लुणोत रा नुं छै । पछै राव मालदे जी प्रो० सादूळ हमीर रा नुं फेर दीयौ । हिमें प्रो० भांनो मांडण रौ नै सूजा धना रौ नै पीथौ नांराईण रौ नै भाषर सादूळ रौ छै । बांभण बसै छै । धरती हळवा १५ । बाजरी मूंग मोठ हुवै । ऊनाळी नहीं । सेंवज तळाव चिणा हुवै । तळाव मास ६ पांणी । कुवो १ काचो[2] पुरस १४ भळभळो । तठै गांव छाछेळाई रा पिण पीवै ।

संमत	१७१५	१६	१७	१८	१९
	८)	२०)[1]	१०)[2]	३५)	२०)

१ केलण कोट

गढ सुं कोस १५ धू दिसी । दत्त रांणा देवीदास बींजावत रौ प्रौ० चतरभुज कानावत जात वाकुलिया नुं । हिमें पिरोहत ऊदैसी केसा रौ नै पीथौ नरा रौ छै । बांभण बसै ।

१७

२४. १३ चारणां नुं सांसण ।

४ रोहड़ां रौ बास—

१. ३०) । २. ३५) ।

1. पाटोदी पर जैसलमेर की फौज आई । 2. पक्का बंधा हुआ नहीं ।

१ बास १ चारण महीया[१] रौ

गढ था कोस १२ पछम दिसी। दत्त रांणा देईदास बीजावत रौ, महीया ऊरजान भाचावढां नुं। पछै राव मालदेजी चारण अचळा लालावत नुं फेर दीयौ। कहै छै, एक बार राजा ऊदैसिंघजी अटकीयौ थौ[1]। हिमें चारण रूपा रा सांकरौ[२] नुं ऊदौ रांमा रौ नै सांवत देदा रौ नै करमसो सहैस[३] रौ ने ठाकुरसी डाहारौ छै। चारण रजपूत बांणीया बसै। धरती हळवा ३० तथा ३५ बरसाळी जुवार मूंग धांन सगळा हुवै। षेत सषरा ऊनाळू षेत ७ तथा ८। सेंवज गेहूं हुवै। तळाव मास ६ तथा १० पांणी हुवै। पछै पाटोधी कुड़ी मांगीयो पांणी पीवै। बेरो १। तळाव मैं पांणी मीठो पुरस ६।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	२०)	७)	५०)	२५)

१ कोडुषां[४]

गढ़ सीवांणा कोस १४ वायब मांहे। दत्त रा० बरसल पिरथी राजोत जैतावत रौ। चारण सारंग सोनावत जात सोहड़[५] नुं। राव मालदेजी सुं रा० पतै गांगावत डूंगरोत अरज कर दीरायौ[2]। कदीम रांणे देईदास बीजावत रौ दीयौ हुवनौ। हिमें सोहड़ राजौ भांनौ रौ नै सहसौ महेस अषावत छै। षेड़ौ सूनौ छै। अै चारण गांव रीछोली मांहे रहै छै। धरती हळवा ४५, आगै हळवा १० मंडी छै। बरसाळी बाजरी मोठ हुवै। ऊनाळी नहीं। तळाव कोडुषौ मास ४ पांणी। पछै पाटोधी पार रा बेरा ४ ऊदक रा छै[3], तठै पीवै। बेरा २ बहै छै[4]।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	३०)	१०)	४५)	२५)

१. माइया। २. रूपो सांकर रौ। ३. सहेसा। ४. कोडुषो। ५. मुहड़।

1. हस्तक्षेप किया था। 2. गांगा के पुत्र पत्ता ने राव मालदेजी से विनती करके दिलवाया। 3. दान में दिए हुए हैं। 4. दो कुआ से पानी निकाला जाता हैं।

१ रींछोली[1]

सीवांणा था कोस १२ वायव मांहे। दत्त राव मालदेजी रौ बाहरेट हेमौ चौभावत रोहड़ीया नुं। रा० पत्तै गांगावत कहै नैं दीरायौ। हिमें चारण अषौ गौईंद रौ नै चतरौ जैता रौ नै रांमदास पीथा रौ छै। चारण रजपूत जाट षाती बसै। बसती घणी हळवा १००। बरसाळी बाजरी मोठ हुवै। ऊनव १ भरीयौ। वाड़ीयो गेहूं सेंवज हुवै। तळाई १ रीछमाळी, पांणी मास ४ तथा ८ हुवै। पार रा वेरां मांगीया पीवै। रावळ मेघराज हापावत धरती हळवा ३० सांभीयाळी कावळली कनारली[1] दीवी छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
५)	४५)	१५)	१२०)	३०)

२ इकडाणो रा बास

गढ सीवांणा था कोस ११ तथा १२।

१ बडौबास बाहरैट रौ

कोस ११ दिषण मांहे दत्त रा० पंचाईण बरसिंघोत महेवचां रौ। बारैट लाला पुनसरोत रोहड़ीया नै। पछै राव मालदेजी बारैट जसा गोईंदोत नुं दीयौ। हिमें चारण वीरा नरबद रौ नै गोपाळ मनावत छै। बसती हमार न छै। गोवळू गया छै[2]। रजपूत बांभण चारण बसै। धरती हळवा ३५। मूंग मोठ बाजरी। ऊनाळी नहीं। तळाई ईकडाणो १ मास ८ पांणी। मांहे बेरी १ षिण नै पीवै। पछै रीछोली पटोधी पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८)	४०)	१५)	१२०)	७०)

---

१. रोछोली।

---

1. किनारे की। 2. गायों आदि को लेकर लोग बाहर गये हैं।

१ वास संढाईचां रौ[1]

गढ था कोस १२ पछम दिसी। दत्त रा० कूंपा जोगावत देईदासोत रौ, संढाईच चोसंध बीजावत। हिमें चारण वेणो मांडण रौ नै नगौ गोपाळ रौ नै रूपौ राजा रौ छै। चारण बांणीया नै ओड बसै छै। धरती हळवा १५ तथा १७। बरसाळी जुवार बाजरी मोठ मूंग तिल हुवै। धोराबंध षेत। मांहे सेंवज गेहूं ऊनाळी नहीं। पांणी बडै रोहड़ै भेळौ पीवै। तळाई १ कांधळां री, मास २ पांणी रहै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
९)	३५)	१५)	११०)	७०)

१ वास बारेट रोहड़ीयां रौ

सीवांणा था कोस १२ धू था डावौ। दत्त राव चंदरसेन मालदेवोत रौ, बाहरैट देवीदांन गुणावत नुं। कदीम रांणा देईदास रौ हुतौ। पछै राव मालदेजी सीवांणो लीयौ तरै रावजी दीयौ। पछै राव उदैसिंघजो पालीयौ[I]। हिमें बारठ समुरतौ पता रौ नै रांमचंद गोईंद[2] रौ छै। चारण रजपूत बसै। धरती हळवा २५। बरसाळी बाजरी मूंग मोठ तिल हुव। ऊनाळी सेंवज नहीं। पांणी तळाव बडै रोहड़ै रै पोवै। पटाऊ कुवड़ी पीवै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
४)	२५)	८)	३५)	१५)

---

१. 'ख' प्रति में इसके पहले 'इकडाणी' के दूसरे बास 'षुरद वास मीसणां रौ' का वृत्तांत है—'बारटां रा वास भेळो बसै। दत्त राव श्री मालदेजी रौ मीसण अणंदा ऊधरणोत नुं हिमें चारण भाषर जोगावत नै मेहराज भींवोत छै। वास २ चारणां नै रजपूत बसै। धरती हळवा २२ तथा २५ बाजरी मूंग मोठ हुवै। षेत एक डाभलो सेंवज गेहूं हुवै। तळाव १ मास ८ पांणी। पछै बडेवास पीवै पाटोधी पार रा वेरां मांगीयो पांणी पीवै'।

२. गोयंद।

I. जब्त कर लिया था।

१ बास १ आसीयां रौ

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
३)	३५)	१०)	४५)	२५)[१]

४

१ घड़ोई कालाणा रौ वास

सीवांणा था कोस १२ धू दिसी। दत्त रांणा देवीदास वीजावत रौ, चारण नींबा करमावत नै पीथो टोहावत जात रतनुं काका-भतीजा नुं। हिमें चारण दांना किसनावत नै नराईण षेता रा नै ईसर मेहाजल रौ नै भारमल मना रौ छै। चारण बसै। धरती हळवा २५। जवार बाजरी मूंग मोठ तिल कपास हुवै। ऊनाळी नहीं। तळाव १ घड़ोई मास ८ पांणी। बाघलप रा ही पीवै। पछे काणांणै रै कोहर पोहोर १ हेंसौ छै[1], सु पीवै। भाट रूपसी केलणोत नुं कांणांणो पटै हुतौ तरै रूपसी अरज कर नै[2] औ षेत दिराया छै।

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
८)	५०)	२०)	६०)	२५)

१ कलणां रौ वास रतनुं रौ

१ बादु रौ बाड़ौ

१३

३० गांव छै[२]।

१. यह आमदनी के आंकड़े 'ख' प्रति के है, मूल में नहीं हैं।

२. सांसण की पहले दी गई सूची में 'भांडीयावास' ग्राम है पर आगे के वृत्तांत में इसे छोड़ दिया गया हैं। 'ख' प्रति में इसका वृत्तांत इस प्रकार हैं—[शेष पृ० २७८ पर]

1. काकाणा के पानी पोने के कुए में एक पोहर के लिए पानी निकालने को हिस्सेदारी है।
2. राजा से निवेदन करके।

२५. परगने सीवांणा री सींव इण परगनां सुं लागै तिण री विगत—

जोधपुर रा गांवां सुं सीवांणै रा गांवां रौ कांकड़ लागै—

चीहाली
षंडप डाभली
मोतीसरो डाभली
आंबा रौ बाड़ौ करमां रौ बाड़ौ
जगीसां कोटड़ी
षारटीयो
सूरपुरा सुं
भांना रौ बाड़ौ
भलड़ा रौ बाड़ौ
आसराबौ बांभणा सुं
आसराबो
तीसंगड़ी सुं
छाछेळाई नेढळी
चांदा रौ वास

सीवाली
षंडप करमां रौ बाड़ौ
राकसी डाभली
लालीयां सुं मजल
दहीपुड़ै सुं भांना रौ बाड़ौ
घड़ोई धरमदास रा वास सुं
दहीपुड़ौ धवारौ
कालाणौ सुं
आसराबो छाछेळाई
चांदा रौ वास
बांकीबाहो
सातोसण सुं
सीवराषीयो बड़नावो
आकेली

---

१ भांडीया वास [शेष पृ० २७७ का]

गढ़ सीवांणा था कोस १० ऊत्तर पछम मांहे। दत्त रांणा देवीदास बींजावत रौ आसीया पूंजा हींगोलावत नुं। पहला आधो गांव दीयौ थौ। पछै ऊहड़ जैमल नेतसीयोत आसीया माला पुंजावत नुं हळवा ४० दी। पछै राव चंद्रसेन आसीया रतना मालावत नुं आधौ गांव रहौ थौ सु सांसण कर दीयौ। हमें षेतसो भींवावत नै मोहण लषौ हरदासोत नै गांगौ भांना रौ नै चुतरौ दुजा रौ छै। चारण रजपूत बांणीया बसै। पहली कुंभार रैबारी घणा बसता। धरती हळवा १००, बोहसींवो, गांव हळवा २०० हुसी। जवार बाजरी धांन सोह हुवै। तळाव मास ८ तथा १० पांणी। बहरला तळाब मांहे बेरा घणा छै। बावड़ी १ मोठी। कोहर १, बेरो १ पांणी भळभळो। आमदनी—

संमत १७१५	१६	१७	१८	१९
१०)	७५)	२५)	९०)	३५)

षारड़ी सुं सीवरषीयो थोभ सुं
पाटोधी सुं बाघावास
बड़नांवो फळसूंड केल्हण कोट
आकेली

सीवांणा रा गांवां सुं महेवा रा गांवां रौ कांकड़ लागै—

मुठळी आसोढौ घणांणा सुं
मोठड़ा सुं जागसी द्राषां
भाटो मीठोड़ा डाहीभर आसोतरा सुं
द्राषां जेसोल
बीठोजा सुं आसोढो
आसोढो जसोल वालोतरा सुं
रांमसेण सुं जसोल जेरला
जेरलां मांहगड़ै सुं
गोपड़ी सुं जेरला
गोपड़ी सुं जेरला
चंपला वेरो वीदरळाई पाटोधी थां
पचपदरा सुं कवळली कांपलीयो
वेदरळाई कांढोहलो
माडापड़ा सुं
जेरलां

जाळोर रा गांवां सुं सीवांणा रा गांवां रौ कांकड़ लागै—

वाय सु रायथल रावणीयां सुं
मोतीसरा सुं रायथळ
भंवराणी रायथळ कांठाड़ो सुं
लुद्रा सुं रायथळ बोरावाड़ो

रायथळ भंवराणी वासण

भागवा सुं
आहोर वासणपी
आवलेज

पाद्र सुं
जीवणौ बापड़तरो
वालैरा (पालेरा)

पासु
जीवांणो बापड़तरौ
वालेर

कुंडल सुं
गोवल

तेलबाड़ा सुं
अेहलांणो नींबलांणो
गोवल

घीरा सुं
वासण थलुड़ो
आंषल

काकसी
षुरहल बापड़तरौ
ऊंठवाला गोवल
जीवांणो ।

---

२६. परगने सीवांणै षालसै हासल जमा-बंधी रौ गोसवारौ कुल ठीक, साल री साल--

२०१२३)	संमत	१६६२
२६८५५)	,,	१६६३
२५६६२)	,,	१६६४
२६५१६)	,,	१६६५
२२८१६)	,,	१६६६
२१७३०)	,,	१६६७
२१३२१)	,,	१६६८
१८७९६)	,,	१६६९
२४८७०)	,,	१७००
२०२८०)	,,	१७०१
२२५९५)	,,	१७०२
१७६०४)	,,	१७०३
१४२४१)	,,	१७०४
७३४५)	,,	१७०५
१०४७०)	,,	१७०६
१२७२६)	संमत	१७०७
१७३५३)	,,	१७०८
१२०७६)	,,	१७०९
१००२९)	,,	१७१०
१०५४४)	,,	१७११
१३१४७)	,,	१७१२
९९३७)	,,	१७१३
१०२९७)	,,	१७१४
९९३७)	,,	१७१५
१०२९७)	,,	१७१६
२६११३)	,,	१७१७
---	,,	१७१८

२७. परगसे सीवांणे रौ तकमीनौ षालसै जागीरदारां सांसण रै गांवां हासल री कुल ठीक—

३२२७५)	संमत १७११	३४२४१)	संमत १७१२
२८५१५)	„ १७१३	२००८०)	„ १७१४
१३८८८)[1]	„ १७१५	४४५४०)	„ १७१६
५४६३४)	„ १७१७	५७७०८)	„ १७१८
३३२६५)	„ १७१६	२५४६१)	„ १७२०

१०६४३) षालसै जमा
१४८४८) जागीरदार
२५४६१)

२८. नदी सूकड़ी सादड़ी रा मगरा राहण था ऊत्तर सु घांणे-रै हुई वींझपै, चांचोड़ी, चांणदो गोधावास, कुलथांणो, धींगाणो, राषाणो, बांकली, हाजावस सीहराणो, घांणा, बरवां, मजल, लालीयां, आंबै, जगीसा कोटड़ी, भुडहड़ बीच कोटड़ी रै जीवणै कांनै आथूण नुं। लूणी दिषण दिसी सूकड़ी बुहै बीच[2] कोटड़ी नै करमावास, दहीपुड़ौ भुरहर, भुडहड़े रै त्रिभटै दुयां रौ द्रह छै तठै सूकड़ी लूणी भेळी हुवै।

आगे-आगे नदी हालै—

समदड़ी	करमावास	बीच
बांभसैण	देवला	„
कांणाणो	कूंपावास	„
जाडोतरी	लालाणो	„
सीलोर	मांगलो	„
सीराणो	कोटणोद	„
बीठौजौ	जांणीयांणो	„
होठलु	आसोतरो	„

---

१. १३८८६)। २. दोनूं ही।

वालोतरौ जसोल बीच
जेरलो मांडावास ,,
षेड़ तेमावास ,,
तलवाड़ौ वोहरावास ,,

---

२६. परगने सीवांणा रा गांवां री विगत ।

२४ ऊनाळी पीवल हुवै—

१ ग्रासोतरो	१ कीटणोद	१ वीठोजो
१ कांणाणो	१ वालोतरो	१ देवलीयाळी
१ दहीपुड़ौ	१ समदड़ी	१ जगीसा कोटड़ी
१ लालीयां	१ भुरड़	१ करमांवास
१ बांभसैण	१ सोहली	१ मांगलौ
१ रूपावास	१ जेलोतरी	१ सीराणो
१ जाणीयांणो	१ होठलू	

२०
४ सांसण
सीलोर वास ३ भादुकुवो[1] १

२४

१४ ऊनाळी सेंवज हुवै—

१ मोतीसरो	१ रांमसैण	१ गोपड़ी
१ षारड़ी	१ नैहवाई	१ माडापुरो[2]
१ भुती	१ वाघलप	१ ग्रासरावौ
१ पचपदरो	१ पाडलाऊ	१ कुंडल
२ थोभ रा वास	१ सोवरलो	१ त्रीसींगड़ी
१ राषसी		

१७

---

१. भीदाकुवो। २. मांडापो।

७ सांसण रा छै ।

३ रोहड़ां रा वास

१ महीयां रौ   १ संढ़ायचां रौ

१ आसीयां रौ

३

४ गांव

१ रींछोली   १ भांडीयावास

१ आसराबौ   १ त्रीसींगड़ी

४

७

२४

५७ इक साषीया वसता दाषलीक हुवै—

१ क० सीवांणो	१ वाय	१ वावलु
१ देवढौ	१ चीहाली	१ मोकलनडी
१ रावणीयो	१ सूरपुरौ	१ ललाणो
१ षारवाहो	१ कागड़ी	१ कालाणो
१ महेली	१ आंबा रौ बाडो	१ सेवालो
१ त्रिसींगड़ी	१ छंडाणी	१ मांहगड़ौ
१ ऊमरलाई	१ पादरू	१ पाटौधो
१ धाणाणो	१ ईंदरांणो	१ षाषरळाई
१ कुहियप	१ सेहलो	१ मोठोड़ो
१ बाहलीयाणो	१ गड़ौ	१ पीपलण
१ कुलत	१ दांतालो	१ मोडा
१ देवाध	१ पादरड़ी वडी	१ वीजळीयो
१ अरजीयांणो	१ गुघरट	१ लुद्राडौ

१ सोणेर
१ बरसंघ रौ वास
१ कांकरालो
१ मांहगो
१ पीडाढंढ
१ घड़सी रौ वास
१ थापण
१ तेलवाड़ो
२ धीरावास
१ भागवौ
१ चहुवांणां रौ वास थोभ रौ
१ मुठली
१ पटाऊ रा वास
१ रासेळाव
१ जीणपुर
१ पादरड़ी षुरद

---

५७ विगत

---

१०५ विगत

९४ दाषलीक रा वसता

११ सांसण मांहे ऊनाळी हुवै—

४ पींपय ७ सेंवज

११

१०५

१९ सांसण रा जुमलै ३० मांहे ११ ऊनाळी मांहे मंडीया। बाकी १९ री विगत—

१२ बसता गांव इकसाषीया—

७ बांभणां रा—

१ पटाऊ रौ वास
१ ऊमरळाई षुरद
१ केलण कोट
१ सरवड़ी
१ महैकरना
१ सातोसणी
१ सींहथली

७

५ चारणां रा—

१ रोहाड़ौ बारैटां रौ　२ इकडांणी रा वास
१ घड़ौई　१ कालाणा रौ वास रतनुंवां रै ।

———
५
———
१२

७ सूना
४ बांभणां रा—

१ माहवारी　१ पांटौधी रौ वास　१ लोळावास
१ कालीया वासणी

———
४

३ चारणां रा　१ कीहुषां　१ आलेचड़ी　१ बादु रौ बाड़ौ

———
७
———
१६

२० सूना षेड़ा—

१ देवासण　१ भींका रौ पाद्र　१ कांना रो वाड़ौ
१ बादु रौ बाड़ौ　१ बागावास　१ नाईली
१ देभला　१ कांकसो　१ पासु
१ षीदावड़ो　१ गोड़ां रौ वास　१ महेलड़ी
१ काणोवाड़ौ　१ सुईयो　१ गोरवी
१ बनेवड़ो　१ मोकला वेरो　१ मोडरो
१ धारीयावासणी　१ कुवड़ी

———
२०
———
१६४

३०. परगनै सीवांणा रा सांसण री विगत दत्त दीया तांरी ठीक—

जुमले	बांभण	चारण	रेख रुपया	आसांमी
१	१	०	२५०)	रा० धुहड़ आसथांनोत।
३	३	०	४००)	रावत हापो जैतमालोत।
१	१	०	४००)	रा० सोम जैतमालोत।
१३	८	५	२८००)	रांणो देवीदास बीजावत।
१	०	१	५०)	रा० कूंपो जोगो[1] देईदासोत।
१	१	०	५०)	रा० किसनो रायमलोत।
२	१	१	१५०)	रा० डूंगरसी करमसीयोत।
४	१	३	२००)	राव मालदे गांगावत।
१	०	१	५०)	राठौड़ बरसल प्रथीराजोत।
१	०	१	४०)	राठौड़ पंचाईण वरसंघोत।
१	१	०	१००)	रा० केसोदास भाषरसीहोत।
१	०	१	५०)	रा० चंद्रसेन मालदेवोत।
३०	१७	१३	४५५०)	

गांवां रो विगत सांसण दीया—

१ राठौड़ धुहड़ आसथांनोत—बांभणां सोढां नुं त्रीसींगड़ी बाल्ही रौ बास, थोभ रौ २५०)

३ रावत हापो जैतमालोत-बांभण राजगुरां नुं गांव सीलोर रा बास ३ रेष ४००)

१ राठौड़ सोमो जैतमालोत—बांभण मना नुं
१ सरवड़ी रेष ४००)

१३ रांणो दईदास वीजावत

1. जोगाइत रौ।

१६५०) गांव ८ बांभणां नुं–

१०००) १ दूदावतां नुं आसरावो

१०००) १ मनाणांनुं पटाऊ रौ वास तीजो

३५०) ३ वाकुलीया नुं

२००) सातोसण ५०) केलण कोट

१००) लोळावस १

३५०) ३

१००) १ लुणोतरा नुं सीहाथली १

३००) १ सीहा नुं भीदाकुवो

१००) १ सींधला नुं पटोधी रौ वास १

१६५०) ८ गांव

८५०) ५ गांव ५ चारणां नुं–

२००) १ मीसण नुं–वादु रौ बाड़ौ १

२००) १ आसीयां नुं–तीडीया वास १

२००) १ रतनुवां नुं–कालणा रौ वास १

१५०) १ रतनुवां नुं–घड़ोई १

१००) १ महीवां नुं–रोहड़ी रौ वास १

८५०) ५ गांव

२६००) गांव १३.

१ रा० कूंपो जोगो देईदासोत–चारण संढाईचां नुं रोहड़ीयौ वास रेष ५०)

१ रा० किसनो राईमलोत देईदासोत–

६०) गांव १ बांभण सोढा नुं–ऊमरलाई षुरद १

२ रांणो डूगरसी करमसीहोत जोगाइत र–

१००) गांव १ बांभण सोढा नुं रोहड़ो मेकरण रो वास
५०) गांव १ आसीया नुं १ आलेचड़ी

१५०) गांव २

४ राव मालदे गांगावत रो–
५०) गांव १ बांभण वघान साधू १ कालोया वासणी
१५०) गांव ३ चारणां नुं
६०) १ बाहारैट नुं– रोछोली
४०) १ मीसण नुं इकडांणी षुरद
५०) १ आसीया नुं– १ रोहडोयां रो वास

१५०) गांव ३

४ २००)

१ राव चदंरसेन मालदेवोत–
५०) गांव १ चारण बारैटां नुं–१ रोहड़ावास

१ राठौड़ वरसल पिरथीराजोत जैतावत–
५०) गांव १ चारण मेहड़ा नुं पाडुषो महड़ां नुं
१ राठौड़ पंचाइण वरसंघोत महेवचां रो–
४०) गांव १ चारण बारैहटां नुं १ इकडांणी वडोवास
१ राठौड़ केसोदास भाषरसीहोत दासा पातळोत रो–
१००) गांव १ बांभणां नुं पांचलोत रा नुं १ माहबारी

३०

(७) वात परगने पोहकरण री

१. आद पोहकरण, पोहकर रषीसर पोहकरण बांभण रै पूरवज रौ वासीयौ सहैर छै[1]। श्री लिछमीजी श्री ठाकुर सिधपूर परणीया तद बांभण हजार ५०००० तठै मिळीया[2]। बांभण ४५००० श्रीमाळी भेळा हुआ। बांभण हजार ५००० पोकरणा मिळीया। श्रीमाळी आचारवा तथा सुं पहलो पूजा श्री ठाकुर लिछमीजी श्रीमाळीयां री की। पछै पोहकर री पूजा करण लागा तरै औ रीसाई नीसरीयौ[3]। कह्यौ–माहरौ मांन भंग कीयौ[4]। श्री ठाकुर मनाय-मनाय रह्या सु मांनै नहीं। तरै श्री ठाकुर लीछमीजी सराप दीयौ–

वेद हीण हुवौ।

क्रिया भृस्ट हुवौ।

निरजळ देस बसौ।

मान हीण हुवौ।

२. औ पोहकर रषीसर उठा थी आय नै इण ठौड़ बसीयौ। तद अठै पांणी न हुतौ। तरै इण वरण[5] रौ उपासना कीयौ। वरण परसन हुवौ, तरै वर दीयौ। एक कोस धरती मांहे दस हाथे पांणी हुवौ[6]। पछै इण पोहकर रिषीसर ऊंटां नव राषसणी[7] कर चलाई, सु श्रीमाळीयां रा डावड़ा सारा गरभ में मारै। उणांरो वंस बधण पावै नहीं[8]। तरै श्रींमाळा [[1]सारा भेळा हुय श्री ठाकुरजी श्री लिछमीजी कने

१. 'ख' प्रति का अंश।

1. पुष्करणा ब्राह्मणों के पूर्वजों पुष्कर ऋषि का बसाया हुआ शहर है। 2. मिले, शामिल हुए। 3. रूठ कर वहाँ से चला गया। 4. मेरा अपमान किया है। 5. वरुण। 6. दस हाथ की गहराई पर पानी होगा। 7. राक्षसी विद्या। 8. वंश नहीं बढ़ने पाता।

आपरी बात कही । तरै श्री ठाकुरजी कह्यौ–सांची बात, पोहकर ऊंटां राकसणी चलाई छै, सु बाळक नुं षाय जाय छै । श्री लक्ष्मीजी विनती की–इणां री सहाय करौ[1] । तरै श्री ठाकुरजी लिछमीजी श्रीमाळीयां नुं ले नै पोकरण आया । तरै पोकर सुं घणी हट करनै भेळा कीया । तरै पोकर कह्यौ—म्हेतो भेळा करां जो म्हां नुं स्राप थे दीयौ छै सु परौ[2] करौ, नै वर दौ[3] । तरै श्री ठाकुरजी फेर वर दीयौ—

वेद मत भणौ, वेद रा अंग पुरांण जोतग भणौ ।

राज मांन हुवौ ।

थांहरी थोड़ी लिछमी घणी दीपसी ।

श्रीमाळी लाषेश्वरी थां हेठे हाथ मांडसी[4] ।

युं कर भला कीया, सु पोकरण रै षेड़ै[5] पांणी इण भांत पोकर रीषीसर कीयौ ।

३. आद अठै पंवारां री ठकुराई हुती, राजा परुरवा राज करतौ । श्री लिछमीनारायणजी रौ देहूरौ[6] कहै छै परुरवा रौ करायौ छै । तद राषस भेरवो हिळीयौ सु दिन रौ मांणस अेक षाय[7] । तिण समै ऊगोण सुं भाइ पंज जैपाळ चाकरी नुं आया छै ।

नानग परूरवा री बेटी परणीयौ । परुरवा रै बेटो न हुवौ । परुरवा मुवौ । नानग पाट बैठौ । बड़ो प्रतापबळी ठाकुर हुवौ । नानग छाबड़ो कहाणौ । उण रौ बेटो महिधवळ हुवौ ।

देवराज रौ करायौ तळाव अेंकारे कनै ।

जाजा रौ करायौ तळाव जाजुसर थाट कनै ।

---

1. रक्षा करो । 2. जो श्राप हमको दिया है उसे दूर करो । 3. वरदान दो । 4. तुम्हारे आगे हाथ पसारेंगे । 5. पोकरण शहर के आस-पास । 6. लक्ष्मीनारायणजी का देवस्थान परुवा का करवाया हुआ है, ऐसा लोग कहते हैं । 7. भैरवा नाम का राक्षस वहां रोज एक आदमी खाने का आदी हो गया ।

हमीर रौ हमीरसर थाट कनै ।

धुहड़ रौ धुहड़सर, बडौ ऊनव छै[1] ।

४. अेकण साह रौ बेटौ मुवौ सु मड़ो इण षेड़ै बळण पावै नहीं[2] । भेरवो राषस लै । तरै साहा इण कनै आयौ, कह्यौ–आज री रात थे माहारा बेटा री लोथ रषवाळौ[3] । पछै इणे फुले नै रीषा की । पछै राकस इण जीतौ । गांव नानग धणी हुवौ । पछै नानग मुवौ । पाट महीधवळ नानग रौ हुवौ । उण रै नानग री षाटी[4] सोना री थाळी हुती, सु अेक थाळी रोजीना राषस लेजातौ । नानग आ वात जांणतो परगट करतौ नहीं[5] । महीधवळ थाळी १ रोजीना जाती जांणी तरै थाळीयां सांकळ दिराइ[6] । भैरव राकस पकड़ीयौ उण सराप[7] दियौ– पवांरां रौ राज गयौ । पोकरण राकस सूनी की ।

५. तठा पछै केई दिन सूनी रही । तठा पछै कितरेक दिने रावळ मालौ महेवे धणी हुवौ । तिण समै तुंवर अजैसी रांमदे पीर रौ बाप नै रांमदे माला कनै कनै महेवे आया । सु आ ठौड़] रांमदे पीर दीठी तरै रांमदे रावळ माला नुं कह्यौ–आ पोकरण नांनग छाबाडा वाळी सूनी नगरी पड़ी छै, थे कहौ तौ म्हे वासां[8] । तरै मालै कह्यौ–उठै तौ राषस भैरवो रहै छै । तरै रांमदे कह्यौ–म्है उण सुं समझ लेसां, थे दुवौ देवो । तरै मालदे दुवो दीयौ । रांमदे पोकरण वासी । राकस भैरवो हाथ जोड़ आगै ऊभौ रह्यौ । कह्यौ—मोनुं हुकम करौ तठै जाऊं । तरै कह्यौ—सिंध नुं जाव । पछै पोकरण रांमदे वासी । रांमदे रौ भाई वीरमदे हुतौ तिण रांमदे नुं विगर पूछीयां राठौड़ जगपाल मालावत रौ बेटौ हमीर तिण नुं रांमदे री बेटी दीवी[9] । पछै रांमदे पोकरण छोड रांमदे रै देहूरै बसीयौ[10] । पोकरण हमीर जगपालोत नुं दीवी ।

---

1. जहां पानी दूर तक भरता है । 2. जलाया नहीं जा सकता । 3. लास की रखवाली करो । 4. जीत कर प्राप्त की हुई । 5. जानते हुए भी प्रकट नहीं करता था । 6. जंजीर लगवादी । 7. श्राप । 8. मैं इसे बसाऊं । 9. लड़की की शादी कर दी । 10. जहां आजकल रामदेवरा है वहां बसा ।

तठा पछै इतरी पीढ़ी पोकरण इण रै रही, राव हमीर सुं—

१ राव हमीर
२ राव दुरजणसाल हमीर रौ
३ राव बरजांग दुरजणसाल रौ
४ राव षींवौ बरजांग रौ ।

---

६. राव षींवौ बरजांग रौ निबळौ-सो[1] ठाकुर पोकरण धणी हुवौ । तद कोट रै कींवाड़ न हुता[2] । नै रा० नरा सूजावत नुं राव सूजो कंवर थका नुं फळोधी राषीयौ थो सु फळोधी वाग-वाड़ी पांणी तिसड़ौ नहीं । सु नरा रौ मन फळोधी सुं रंजै नहीं[3] । नरौ पोकरण लेण री मन घणी हर राषै छै[4] । सु नरा रा हेरू[5] पोकरण नुं लाग रह्या छै । राव षींवौ नावा लिषण नुं उधरास गयौ हुतौ । नरा रौ हेरू लागौ हुतौ थौ, तिण षबर आंण नरा नुं फळोधी पोंहोंचाई । नरै तिण वेळा पागड़ै पग दे असवार १२० सुं उडाया[6] । कहौ—राव षींवो आय कोट लीयौ । नरै आपरी आंण फेरी[7] । राव षींवो लूंको षींवावत थटोहण गया । उठै जाई घणौ बिगाड़ कीयौ[8] । पछै पोकरण सहर री षेड़ षींवै लूंकै ली । नरौ वाहार चढ़ीयौ[9] । पोकरण था कोस ५ जातो नदणहाइ¹ उनौ छै[10] तठै वेढ हुई । नरौ सूजावत कांम आयौ । पछै राव सूजो जोधपुर सुं कटक[11] कर नै पोकरण आयौ । नरा रौ दावौ माला रौ सारौ देस मारीयौ । नोलवो षारी षावड़ रौ बैसणो मारीयौ। पछै आय नै नरा रा बेटा गोईंद नुं टीको दीयौ । नरौ राव सातल रै षोहळै[12] थौ सु नरौ पोकरण सूनी कर नै पोकरण था कोस १ ऊतरनुं

१, नादणवाई ।

---

1. निर्बल-सा । 2. दरवाजे नहीं थे । 3. संतुष्ट नहीं होता । 4. प्रबल इच्छा रखता है । 5 जासूस । 6. घोड़ों पर चढ़कर १२० सवारों सहित तेजी से चला । 7. अधिकार प्रकट करने के लिए अपने नाम की दुहाई फेरी । 8. बड़ा नुक्सान किया । 9. पीछा किया । 10. जलाशय है । 11. फौज । 12. गोद ।

नान्ही-सी भाषरी ऊपर सातळमेर वासीयौ थौ[1]। नरौ सातलमेर रौ चढ़ीयौ कांम आयौ, संमत १५६० राव गोयंद नुं टीकौ हुवौ। संमत १५८२ राव गोयंद काळ कीयौ।

पोहोकरणा गोईंद टीकै बैठा तद बारै हुता। गोयंद पाट बेठौ तद बाळक हुतौ। राव सूजो थांणै उमराव राषीया हुता[1]। तिण नुं कह्यौ थौ, गोयंद नान्हो छै सु वरस ४ तथा ५ तौ गोयंद नुं रजपूते चढण न दोयौ[2]। पछै पोहोकरण लूंकै रांमदे रा देहूरा कन्है घणा दावळीया[a] राव गोईंद बाहर चढीयो। सु कोढणा कन्है जातौ आपड़ीयौ[3]। घणा पोकरणा आदमो १४० कहै छै मारीया। लूंका नुं आप गोयंद आपड़ीयौ, तठै लूंके रो पौहरण दुपटौ हुतौ सु छूट गयौ। सु ऊघाड़ौ नाठो जाय[4]। तरै गोयंद कह्यौ—काकाजो ऊभा रहौ[5], थांनुं नहीं मारूं। आपरी दुपटी दीवी[6]। पहराय नै साफर सातळमेर लूंका नुं ले आयौ, कह्यौ—आगै हुई सु नीवड़ी, बैर भागौ[7]। भेळा षोच षाधौ[8]। पोकरण रा दुय बांट कीया[9]। गांव ३० सूं सातलमेर पोकरण आप राषी। गांव ३० सूं लूणीयांणो[3] पोकरण लूका षींवावत नुं दीयौ। औ आय लूणीयाणो बासीयौ। सातलमेर रा० गोयंद री वार मांहे बडी बसती हुई। घर ५०० पांच सौ माहाजन बसता।

८. राव गोयंद काळ कीयौ। राव जैतमाल गोयंदोत नुं टीकौ हुऔ। जैतमाल जैसलमेर रावळ मालदे री बेटी परणीयौ हुतौ। कपूत सो ठाकुर हुतौ। उण रै को परधांन[10] थौ तिण माहाजनां नुं घणौ

१. तठै देहूरा छै, कोहर एक देहूरा कनै हुतौ, तिण मांह पांणी घड़ा १०० हुतौ। बावड़ी एक कोट रा षाडा हेठै हुती सु बुरांणी पड़ी छै। तळाव एक नरासर तळाव धरणीसर छै। तठै पांणी पीता। षेत एक महरवण नजीक छै तिण मांह बेरा घणा छैं। तठै पीवता। ('ख' प्रति में अधिक)। २. बिन लीया। ३. भुणियाणो।

1. देख-रेख के लिए उमरावों को रखा। 2. चढ़ाई नहीं करने दी। 3. पकड़ा। 4. नंगे बदन ही भागा जा रहा था। 5. ठहरो, खड़े रहो। 6. अपना वस्त्र दिया। 7. पहले की अदावत समाप्त हुई, बैर समाप्त हुआ। 8. शामिल बैंठ कर भोजन किया। 9. दो हिस्से किये। 10. कोई एक प्रधान था।

दुष देणौ मांडीयो, घर लूटणा मांडीया। आग षंणीली[1] रा राव जैतमाल आगै कूकीया[1]। दाद फीरोयाद कोई सुणै नहीं। तरै माहाजन जोधपुर राव मालदे कन्हा आया, पुकारीया। सारी विध समभाया कही। राव मालदे आप सातलमेर ऊपर गया। जैतमाल गढ भालीयो दिन ५ विग्रह हुओ।[2] राव मालदे री नाळां[3] छुटी तिण सुं पांणी गढ री बावड़ी रौ सूक गयौ। बारे कोई नीसर न सैकै। पछै जैतमाल वात कर नै गढ मालदे नुं दीयौ। आप जैसलमेर गयौं।

९. संमत १६०७ राव मालदे सातलमेर परौ पाड़ीयौ[4], नै पोकरण कदीम हुतौ तठै गढ़ करायौ। नै आपरौ थांणौ राषीयौ, संमत १६०७ रा काती मांहे। सु राव मालदे जीवीया तठा ताऊ पोकरण मालदेजी रै रही।

१०. संवत १६१९ रा काती सुदि १२ राव मालदेजी काळ कीयौ। पाट राव चंद्रसेन बैठौ। बरस ३ चदंरसेन राव रै जोधपुर रह्यौ। संवत १६२२ रा मिगसर सुदि ४ राव चदंरसेन था जोधपुर छूटौ। राव चंदसेन भाद्राजण वरस…रहा। तठा पछै को दिन राव पीपलण रै भाषरै आय रहा। तद पोकरण गढ़ इतरा ठाकुर कोट मांहे रहे, छै तिण री विगत—

१ चहुवांण रांमौ भांभणोत।
१ पंवार नराइण अषावत।
१ षींवसी अषावत।
१ राः कानड़दास जोगावत[2]

---

१. रैत सी अजाजीती परधांन घणी करै। २. रा० किसनदास जोगावत।

---

1. अपना दुःख प्रकट किया। 2, युद्ध हुआ। 3. विशेष प्रकार की तोप। 4. नष्ट कर दिया।

१ सोहड़ राजधर सीहावत
१ भाटी सुरजमल केल्हण
१ पेथड़ राजौ ऊधरास रौ

११. एक वार तद रा. मानसिंह राजावत कछवाहां दिसी थौ ।[1] तिण नुं देवराज थळेचे[2]कहाड़ीयौ-पोकरण थांहारै बापी की धरती छै आज राव चंदरसेन नुं मुगलां दबायौ छै, सीवांणा रै भाषर छै । थे आवौ तौ म्हे थांनुं गढ ले देसा[3] । मानसिंघ आदमी ५०० सुं ढूंढाड़ था आयौ । थळेचा सारो भेळा हुवा । गढ घेरीयो । आदमी १०० राव चंद्रसेन रा था तिणां गढ झालीयौ नै राव चंद्रसेन नुं पीपलण षबर मेली । राव चंदरसेन असवार ५०० जीनसालीयां सुं तुरत चढीयौ । सु लूणीया आय ऊतरीयौ । राः मानसिंघ नुं षबर हुई । तारां मानसिंघ रावजी कनै परधांन मेलीया । अरज कराई-मोनुं पोकरण देवौ, मो कनै चाकरी करावौ ।[4]

राव वात मानी नहीं । मानसिंघ राजावत नास गयौ[5] राव देवराज रौ गांव मारीयौ[6] । माहाजन लूटीया, वित धांन सुं लूणीया रा देहरा भरीया । राव चंदरसेन एक बार पोकरण आय कोट देष नै पाछौ पीपलण रै भाषरे गयौ[7] । तठा पछै संमत १६३२ रै बरस रावत जीव थळेचै सोहड़ री गायां लीवी । राव रौ इतरो साथ वाहर आपड़ मुवौ[8] ।

विगत—

१ चहुवांण रांमो झांझणोत
१ पंवार नराईण
१ सोहड़ राजधर सीहावत
१ सोहड़ रतनो गांगावत

---

1. कछवाहों के देश की ओर था । 2. राजपूतों की एक शाखा । 3. तुम्हें गढ़ ले कर दिलवा देंगे । 4. मेरे पास से सेवाऐं लो । 5. भाग गया । 6. गांव में लूट-पाट की । 7. पीपलण के पहाड़ों में वापिस चला गया । 8. पीछा कर के युद्ध में काम आया ।

१ सोहड़ देदो भैरउत

१ भाटी सुरजमल केलणोत[1]

१ पेथड़ राजौ ऊधरास रौ

राठौड़ किसनदास जोगावत लोहड़ै लागै[1] कोट आयौ।

१२ तिण समै भाटी भाषरसी हरराजोत नुं श्री पातसाहजी जागीर मांहे दीया[2] छै। राव चंद्रसेन था तिण समै सीवांणो छूटौ छै। राव मुराडे[3] मेवाड़ रौ छै।[2] भाषरसी हरराजोत देष[4] राव अळगो[3] जांण नै संमत १६३३ रा सांवण मांहे भाटी भाषरसी हरराजोत मांणस ५०० तथा ७०० सुं कर, फळोधी था चढ नै पोकरण घेरी। मास २ षसीयौ[4]। गढ मांहे सामान सषरो हुतो[5]। आदमी ४० राव रा मांहे हुता, सु भला लड़ीया[6]। भाटी भाषरसी तौ षस थाकौ[7], गढ हाथ नायौ[8]। तरै भाषरसी परौ गयौ। नै रावळ हरराज नुं कहाड़ मेलीयौ-मो कनै तौ गढ़ लेण रौ तौ सामांन नहीं। राज गढ लौ तौ घात छै। तरै रावळ हरराज आदमी २००० चढीया। पाळा दे कंवर भींव नुं पोकरण मेलियौ। इण आय गढ घेरीयौ। राव रै साथ गढ़ झालीयौ। भली गोळीयां(री)मार दीवी।[9] सहर नजीक डेरा करता हुता सु गोळीयां आगै करण न पाया। पछै सहर था कोस १ नरासर तळाव जाय ऊतरीयौ। उठै डेरौ कर नै गढ नुं ढोहा[10]दस-बीस कीया। मांहला साथ[11]नुं वात विगत चंद्रसेन कन्हा परधांने के फरीयाद मेलिया, गुण मांनत कराइ छै–सुतो हमारू मार-वाड़ छूटी छै, गढ पोकरण तुरक लेसी तौ म्है तौ थांहारा सगा[12]था

---

१. केलण। २. फळोदी जागीर मांहे दी। ३. मुडाड़े। ४. घात देल।

---

1. घायल होकर। 2. राव चंद्रसेन मेवाड़ के मुराड़ा ग्राम में है। 3. दूर। 4. खूब प्रयत्न किया। 5. युद्ध-सामग्री आदि अच्छी थी। 6. अच्छे लड़े। 7. प्रयत्न करके हार गया। 8. गढ़ हाथ नहीं लगा। 9, गोलियों से खूब अच्छा हमला किया। 10. हमले। 11. किले के अन्दर वाले लोग। 12. सगे-सम्बन्धी।

मांहां नुं अडांणी दौ[1]। थे जोधपुर पधारसौ ताहारां मांहरा पईसा देनै गढ थांहांरौ परौ लेजो। पछै लाष फदीयां[2] मांहे पोकरण राव मुडाड़ै थकां[3] अडांणै मेली। के भाटीयां रै परधांन फदीया हजार २०,००० उठै दीया। बाकी रा फदीयां नुं भंडारी मांनौ मंह नुं साथे दोई भोजु भाटीयां रा परधांन साथ दे पोकरण नुं मेलीया। इणे संमत १६३३ रा फागण वदि १४ पोकरण आय उतरीया। राव रा साथ नुं बारै आंणीया[4]। कुंवर भींव नुं गढ सोंपीयौ। भंडारी मांनौ मांगळीयो भोजु जैसलमेर गया। उठै केईक दीया के न दीया। किताहेक दीया भंडारी मांनै नाचणीयां सुं षाधा। तठा पछै राव चंद्रसेन डूंगर-पुर गया। बरस २ गल १ अै[1] कोट रहा। संवत १६३५ रा मिती— सवराड़ राव चंद्रसेण पाछौ आय बेढ़ कीवी। को दिन सोभत हाथ आई। वळे मुगलां रो फौज आई। राव सारण सचीआय जाय रहा। पोकरण री कांई षबर ले सकीया नहीं। संमत १६३७ माहा वदि ७ राव चंदरसेन काळ कीयौ। टीकौ आसकरण नुं हुवौ। तठा पछै आस-करण नुं उगरसेन वेगौ ही मारीयौ।

१३. तठा पछै सं० १६३८ रा जेठ मांहे अकबर पातसाह मोटा राजा नुं जोधपुर दीयौ। संमत १६४० रा मिती जोधपुर पाट बैठा। पातसाही मुनसब मांहे सातलमेर नांवै मांडीयौ। पिण अमल हुवौ नहीं। संमत १६५१ रा आसाढ सुदि १० लाहोर काळ कियौ।

१४. टीकौ राजा सुरजसिंघ नुं हुवौ। पोकरण पातसाही मुनसप मांहे मांडी दांम लाष मांहे। एक वार राजा सुरजसिंघ फौज दे कंवर गजसिंघ नुं विदा कीया था। पछै पातसाह नै कीया तरै गांव बेराही

---

१. गळीये।

---

1. पोकगण हमारे रहन रख दो। 2. सिक्का विशेष। 3. राव चंद्रसेन जब मुडाड़ ग्राम में था उस समय। 4. चन्द्रसेन के आदमियों को बाहर निकाल दिया।

था फिर आया। संमत १६७६ भादवा सुद ९ काळ कीयौ। पोकरण अमल न हुऔ[1]।

१५. टीकै राजा जसवंतसिंघ बैठा पातसाही मुनसब मांहे दांम लाख ६०,०००० मांहे पाई। सं० १७०६ रा मिगसर वदि २ रावळ मनोहरदास किलांणोत काळ कीयो। तद श्रीजी रिणथंभोर गौड़ रै परणवा पधारीया[2]। वांसै जाहानावाद बाई श्री मनभावतीजी पातसाह जी सुं अरज को—जु पोकरण मांहारो जागीर मांहे मंडै छै, माहांरौ अमल न छै[1]। इतरा दिन रावळ मीनोहरदास मांहारो सगो थौ, तिण रै वासते म्हे बोलता नहीं। हिमें भाटी रांम, चांदसीवोत नुं टीको हुवौ छै। औ कोई छै, इण नुं पोकरण म्हे काहण री छेडां[3]। श्री पातसाहजी हुकम करै तो पोकरण मारलां। तरै पातसाहजी श्री साहजी बाईजी नुं कहौ–थे चाहौ तौ जैसलमेर थांनु दां, पोकरण आपरी मार लेतां थांनुं कुण बरजे छै[4]। सु औ समाचार संवत १७०६ फागुण मांहे सुदि···गढ रिणथंभोर श्रीजी नुं आई संवत १७०६ रा चैत मांहे श्रीजी जाहानावाद पधारीया। तरै फेर अरज कीवी— जैसलमेर सुं म्हांरै कोई कांम नहीं हुवै। ठौड़ भाटीयां रौ कदीम ऊतन छै। नै पोकरण सदा म्हांरी छै। म्हांरी जागीर मांहे पातसाही दफतर लीषीजै छै। हजरत फरमांण करदै तौ मांहांरी हरभांत कर उरी लेवां। संमत १७०६ रा वैसाख सुदि ३ श्रीजी नुं देस नुं विदा कीया पोकरण रौ फरमांण कर दोयौ। जेठ मांहे श्रीजी माहाराजाजी पधारीया, देस मांहे। सांवण में पातसाही फरमाण राठौड़ सादूळ गोपाळदासोत वीहारीदास राघोदासोत नै[2] जैसलमेर मेलीया। फरमांण रावळ रांमचंद नुं दिषाळीयो। दिन ४ पछै भाटियां जवाब कीयौ—गढ मांगीयां लाभै नहीं। दस मांणस भाटीयां मुंवा पोकरण आवसी। औ

१. न हुवै। २. दे नै।

1. राज्याधिकार कायम नहीं हुआ। 2. शादी करने को गौड़ों के वहाँ गये। 3. किस कारण से छोड़े? 4. आपको अपनी पोकरण पर कब्जा करने से कौन मना करता है।

ठाकुर पाछा जोधपुर आया। श्री माहाराजाजी सुं हकीकत सारी गुदराई[1]। श्री माहाराजाजी भाटीयां री जवाब सुण नै कटक री तयारी करण रौ विचार कीयौ। अणीयां तीन रौ विचार कियौ[2]। सारी मदार फौंज री रा० गोपाळदास सुंदरदासोत, रा० वीठळदास गोपाळदासोत, रा० नाहरषांन राजसिंघोत ऊपर राषी।

१ अणी १ रा० गोपाळदास सुंदरदासोत रा० प्रतापमल मेड़तीयो करमसीयोत पातावत।

१ अणी १ रा० वीठळदास गोपाळदासोत भा० जगनाथ रौ। चांपावत, जोधा, भाटी, ऊहड़, थळेचा, देवराज, गोगादे, चाहड़दे।

१ अणी हरोळ रौ[3] रा० नाहरषांन राजसिंघोत मुहणोत नैणसी जैमलोत, कूंपावत, जैतावत ऊदावत, बाला, अषैराजोत, रांणा रावळ भादावत, चहुवांण, ऊरजनोत भाटी।

३ अणीयां तीन इण भांत बांटी असवार हजार २०००, पाळा ४०००, साथे विदा कीया।

आसोज वदि २ रा० गोपाळदासजो।
आसोज वदि ३ रा० नाहरषांन राजसिंघोत।
आसोज वदि ७ राठौड़ वीठलदास गोपाळदासोत।
डेरा जिण-जिण मितियां गांवां हुवा तिण री विगत—
आसोज वदि ७ देवीभर।
आसोज वदि १० तींवरी।
आसोज वदि ११ चैराई।
आसोज वदि १२ सांवड़ाऊ।
आसोज वदि १३ पीलवा।
आसोज वदि १४ जालीवाड़ै, दिन ८ मुकांम कीयौ।

---

1. सारी बात निवेदन की। 2. फौज के तीन हिस्से करने का विचार किया। 3. सेना के अग्रिम भाग में।

आसोज सुदि ७ गांव षारे पोकरण रै डेरा कीया। तिण समै पातसाहजी पूछीयौ—रावळ मनोहरदास मुवौ उण रौ वारस कुण छै। तरै सबळसिंघ राजा रूपसिंघ किसनगढ रौ धणी राठौड़ रौ वांसै थौ तिण नुं पगे लगायौ। तरै भाटी सबळसिंघ दयाळदासोत नुं रावळाई रो टीकौदे[1] जैसलमेर विदा कीयौ छै। सु सबळसिंघ कन्है जमीयत सांमान कोई नहीं। रावळ सबळसिंघ जोधपुर आय श्रीजी रै पगै लागौ। घोड़ो सिरपाव दे, षरची दे नै विदा कोयौ। घणी दिलासा कीवी[2]। कह्यौ–थे फळोधी जावौ, मांहारी फौज आवै छै सु थहांरो ऊपर करसी[3]। रावळ फळौधी घणा दिन रह्यौ पछै केल्हण'[1] री षरड़ जवण रो तळाई सेषसर था कोस ४ उठै वेढ १ पोकरण रा थांणा रौ साथ आयौ तिण सुं इण कीवो। वेढ़ इण जीतो[4]। रांमचंद रौ साथ हारीयौ। पछै आसोज सुदि ७ षारा रै डेरौ आदमी ५०० तथा ६०० सुं रावळ सबळसिंघ ही श्रीजी रै साथ सुं भेळौ हुवौ[5]। अठै षबर आई पोकरण मांहे षबर आई, मांणस हजार दोढ छै। तरै मुकाम ३ अठै कीया। धरती पोकरण री सारी सबळसिंघ रै साथ लूटी। षालत हमौर राहड़ को पोकरण री पाषती रा कोट मांहे हुता सु फौज नेड़ी आई ताहरां रात रा नीसर गया[6]। रावळे साथ रौ डेरौ आसोज सुदि ११ रा देहरै तळाव हुवौ। तरै वळे कोट मांह था मांणस ४०० नीसर गया। मांणस ३५० कोट मांहे छै। आ षबर देहरा रै डेरा आई। आसोज सुदि १३ सातळमेर कन्है नरासर तळाव पोकरण था कोस १ छै, तठै रावळे साथ डेरा कीया। आसोज सुदि १३ पोकरण था कोस ०॥ तळाव डूंगरसर छै, तठै रावळै साथ डेरा कीया। असवार २०००, पाळा ४०००, रावळा साथ, मांणस हजार ६००० छै।

---

१. केलणां

---

1. जैसलमेर का राज्याधिकार दे कर। 2. खूब आश्वस्त किया। 3. तुम्हारी सहायता करेगी। 4. युद्ध में इसकी जीत हुई। 5. आकर मिला, शामिल हुआ। 6. रात को भाग निकले।

इतरो साथ भाटीयां रौ तिण दिन कोट मांहे थौ—

१ भाटी प्रतापसी सुरतांणोत रावळोत।

१ भाटी गजसिंघ मेघराजोत।

१ भाटी पिराग बाघावत सोहड़।

१ भा० मांनो सीवदासोत हमीर।

१ भा० गजधर, देदो षेता रौ बेटा।

१ भा० सीहो गोईंदोत सांवतसो।

१ भा० नरो अजावत हमीर रौ।

१ राठौड़ सादूळ बरसळोत थळेचो।

१ हमीरोत भाटी संतो केसव रूपो।

१ भाटी कलेवचां १ जोगी १ सुजो।

१ पेथड़।

१ अचळो १ नेतो १ भींवराज १—

४

६ भाटी एका रूपसी।

१ वीठल १ जीवो १ नाथो १ विणो १ जगनाथ १ गोकळ।

६

१ राठौड़ नाथौ गोगादे।

१० भाटी जसहड़।

६ भाटो जैचंद।

१०० तोपची।

५ भुंणकमल।

१ भाटी हेमराज अंणगो।

चहुवांण लषौ।

१ गोगली हेमराज ।

३ मुंहता ।

१ ऊधव १ सीवराज १ चंदण ।

३

८ साह बांणीया ।

१०० फुटकर लोक मांणस[1] ।

३५०

आसोज सुदि १५ रवि राव श्रीजी रै साथ पोकरण रै कोट ढोवौ कीयौ । पैली पिण नाळ छूटी, ऊली पिण नाळ छूटी । पोहोर १ तांई तौ रा० गोपाळदासजी वीठळदासजी नाहरषांनजी श्रै ठाकुर चढ़ नै ऊभा रहा । पछै श्रै तौ ठाकुर डेरां गया नै मु० नैणसी नाहरषांन रौ साथ ले नै नाळ कन्है रहा । नै रावळ बलरांम दयाळदासोत सोनगरो माधोदास रा० श्रमरो श्रासकरनोत राठौड़ हरचंद राजसिंघोत रा० करणा सुजांणसिंघोत रा० मुकंददास किसनसिंघोत रा० दलपत श्रासकरणोत श्रौर ही रावळा साथ मुंहणोत नैणसी रै ऊपर रै वासतै[1] तीरवा एक ऊभा था । दिन घड़ी ४ वांसलो[2] थौ तरै श्रां ठाकुरां सहर ऊपर दौड़ाया । सेहर भेळ नै कोट रै मुहडै रौ[2] छै तठै जाय मोरचौ मांडीयौ । श्रै ठाकुर श्रसवार २०० था सु घोड़ा तौ पोहोकरण रै बजार हाट मांहे वाधा[3] । नै श्राप देहरा मांहे ऊभा रहाया, नै कोट मांहेलै साथ गोळीयां तीर बैहता रहा[4] । पिण माहाराजाजी रै साथ रै किणी रै लागी नहीं नै कोट मांहला जणा २ रै इणां गोळी लगाड़ी । पछै दिन श्राथमीयौ नै नाळीयां रै मोरचै मुणोत नैणसी था सु रा० गोपाळदासजी वीठळदासजी बुलाया लीया । नै

१. 'ख' प्रति में नामों के क्रम में भिन्नता है । २. देहरो ।

1. सहायतार्थ । 2. पिछला, अस्त होने से पहले । 3. घोड़ों घो बाजार में बांधरिया । 4. चलते रहे ।

उण जायगां रा० गोपाळदासजी आपरो साथ मेलीयौ। पछै परभात हुवौ। रा० गोपाळदासजी वीठळदासजी नाहरषांनजी मुणोत नैणसी नुं बुलाय नै कह्यौ—थे जाय नै रा० बलरांमजी नुं देहरा रै मोरचां सुं तेड़ लावौ[1]। तरै मुहणोत नैणसी बलरांमजी कनै गया। तरां बलरांम जो फिर नै मोरचो दिषायौ। नै कहण लागौ—आ जायगा छोडीयां वणै नहीं[2]। तरै आ हकीकत नैणसी रा० गोपाळदासजी वीठळदासजी नाहरषांनजी नुं लिष मेली। तरै यां ठाकुरां नाहरषांनजी नुं कह्यौ—थेई जाय नै बलरांमजी नुं बोलाय लावौ। तरै नाहरषांनजी उठै गया। मोरचौ दीठौ तरै नाहरषांनजी पाछा जाय नै गोपाळदासजी वीठळ-दासजी नुं कह्यौ—मोरचौ छोडण वाळो नहीं छै। तरै अै पिण ठाकुर उठै मोरचै गया। दिन तीन तांई लड़ाई हुई तरै कोट मांहला साथ रौ बळ मिटीयौ। तरै उणां रावळ सबळसिंघ नुं कहाड़ियौ— थे म्हांनु बांहां झाल नै परा काढौ तो म्है परा नीकळां[3]। तरै रावळ सबळसिंघ रा० गोपाळदासजी नाहरषांनजी वीठळदासजी सुं वात कराड़ी, नै कह्यौ—दोई दीन म्हांनु पसदो नै कोट मांहे संचौ छै सु म्हांनुं बगसौ। नै रावळौ साथ मोरचां छै सु बुलाय लेवै। तरै आ बात यांही ठाकुर कर नै आरे कीवी[4]। तरै कोट मांहलौ साथ थौ सु सबळसिंघ हाथ झालने सौ[5]परौ काढीयौ। दिन २ तांई कोट मांहलौ संचो[6] थौ सु रावळ सबळसिंघ आपरा आदमियां कन्है कढाय नै आपरै डेरै आंणीयौ[7]। पछै काती वदि ४ रै दिन रा० गोपाळदासजी वीठळदास जी नांहरषांनजी अै ठाकुरे आदमी १०० मेलीया, तिके कोट मांहे जाय पैठा[8]। बीजो सौ साथ भाटीयां रौ सगळो नीसरीयो थौ नैं भा० परतापसिंघ सुरतांणोत आदमीयां १५ तथा १६ था मांहे रह्यौ थौ। तरै आ षबर गोपाळदासजी विठलदासजी नाहरषांनजी सांभळी, तरै रावळ सबळसिंघ नुं कहाड़ीयौ—कैतो थे परतापसिंघ नुं परौ काढौ[9] नहीं तर

---

1. बुला लाओ। 2. इस जगह को छोड़ना संभव नहीं। 3. तुम हमें बांह पकड़ कर यहां से निकालो तो हम चले जावें। 4. स्वीकार की। 5. सब, पूरा। 6. संचित सामग्री। 7. अपने डेरे पर ले आया। 8. किले में घुसे। 9. या तो प्रतापसिंह को निकाल दो।

म्हे इण नुं मारसां । तरै सबळसिंघ कहाड़ीयौ–संवारे हूं जाय नै परो काढीस[1] । पछै श्रै ठाकुर मांहौ-मांह कहण लागा–म्हे मारसां । पछै रात थकी रा० वींठलदासजी श्रापरो साथ मेलीयौ, तरै इतरा साथ सुं परतापसिंघ बारै श्रायौ, देहूरै पौळ श्रायो नै कांम श्रायौ । भाटीयां रौ साथ परतापसिंघ सांथे कांम श्रायौ । भाटीयां रौ साथे कांम श्रायौ तिण री विगत–

१ भाटी परतापसिंघ सुरताणोत, बरस ७५ ।

२ भाटी ऐका ।

१ वेणीदास कलावत, बरस ६० ।

१ गोकळदास पातावत, बरस ५० ।

१ गोड़ रांमो बरसळोत, बरस ६४, बांसै सती हुई[4] ।

१ चा० लषौ, बरस ५० ।

१ तुरक जैमल कछवाहौ, बरस ८० ।

१ भा० कान्हो मुलपसाव परतापसी रौ चाकर, पूरै लोहड़ै ऊपाड़ीयौ[3] ।

१ भाटी रूपसो जगावत, बरस ६५ ।

१ भा० सादो श्रमरावत केलण, बरस ६० ।

१ रा० कुसलचंद समेचो, बरस ७० ।

२ रा० सादूळ नै रा० सादूळ वैरसलोत रौ चाकर, बरस ५० ।

१ भा० लालो मूलपसाव भा० प्रतापसी रौ चाकर, बरस ३८ ।

१ भा० ज़सौ बरस ४० फतैसिंघ रौ चाकर, पूरै लोहड़ै ऊपाड़ीयौ । बीजै दिन कांम श्रायौ[1] ।

---

1. निकाल दूंगा । 2. पीछे सती हुई । 3. बुरी तरह घायल होने पर उठाया । 4. दूसरे दिन वीरगति पाई ।

आदमी १० माहाराजाजी रा घायल हुवा—

३ रा० वीठळदास गोपाळदासोत रा रजपूत

१ सौ० सुरतांण।

१ सोळंकी दुरगो।

१ रा० भोजराज पातावत रौ चाकर।

३

१ रा० सुजांणसिंघ केसरीसिंघोत रौ चाकर, पंवार गोईंद।

१ भाटी रुघनाथ सुरतांणोत रौ रजपूत रा० भोपत जैसिंघोत।

१ रा० अमरो सुरजनोत रौ रजपूत, पींपाड़ो रांमा रै लोहड़ै १।

१ रा० सबळसिंघ किसनसिंघोत रौ चाकर, पींपाड़ो मोहणदास।

१ रा० नाराणदास राघोदासोत रौ रजपूत,सोनगरा जोगीदास रौ।

१ पूरबीयो जगमाल माल वैस रै लोहड़ै १।

१ भाटी महेसदास अचळदासोत रौ रजपूत, गंगादास सोहड़।

१०

१६. काती बद ५ श्री माहाराजाजी रौ कोट मांहे अमल हुवौ। सैहर मांहे आंणदांण वरती[1]। श्रीजी री फौज दोवाळी तौ पोकरण की। श्रीजी नुं कोट फतै हुवौ री बधाई मेली। तिण ऊपर श्रीजी परवांनो भेजीयौ—रा० गोपाळदासजी वीठळदासजो नाहरषांजो भा० जगनाथ मुहणोत नैणसो हिमें थे म्हांरी हजूर वेगा आवजो नै सोंघवी परतापमल नुं कोट पोकरण रै कितराहक साथ था राषोजो। तरै अै ठाकुर काती सुद ६ जोधपुर आया नै श्रीजी रै पगे लागा। पछै रा० गोपाळदास वीठळदासजी नाहरषांनजी नुं तौ घरां नूं सीष दी[2] नै मुहणोत नैणसी नुं सिरपाव दे नै काती सुदि १२ पोकरण नुं विदा कीयौ।

---

1. अपने नाम की दुहाई शहर में फेरी (राज्याधिकार स्थापित होने की रस्म)। 2. घर को विदा किया।

१७. काती सुदि १२ मुहणोत नैणसी जोधपुर था चढ़ीयौ मंगसर वदि २ पोहोकरण जाय पोहोतौ[1]। सिंघवी परतापमल थौ तिण नुं सीष दीवी नै परतापमल हजूर आयौ।

इतरो साथ मुहणौत नैणसी री ताबीन दे नै[2] पोकरण रै राषीयौ, तिण साथ री विगत--

असवार आसांमी

मुहणोत नैणसी

१० रा० मनोहरदास जसवंतोत वीदो किलादार, कोट री कूंचो
७ रा० किसनसिंघ किलांणदासोत।
५ भा० केसरीसिंघ अचळदासोत।
५ रा० रूपसी बलदलोत[1] कूंपावत।
४ भा० राजसिंघ बेणीदासोत।
३ रा० नराईणदास राघोदासोत।
२ रा० भींव वरसलोत[2]।
२ रा० वीठळदास भगवांनदासोत।
१ रा० अचळदास भगवांनदासोत पातो।
१ रा० हेमराज गोईंददासोत पातो।
२ भा० नाथो लिषमीदासोत।
१ रा० रूपसी आसकरणोत।
१ भा० नरहरदास भैरूदासोत।
२ सलोत कीलांणदास ईसरदासोत।
१ रा० जगमाल वरसलोत।

१. वलभजी रौ। २. वेरसलोत।

1. पहुंचा। 2. अधिकार में देकर।

७ रा० वीको किलांणदासोत । कोट मांहे चौको नुं राखीयौ[1] ।

३ रा० हरीसिंघ रांमचंदोत, कोट मांहे – – – ।

१ मु० जीवराज रूपसीयोत ।

२ रा० कुंभो नाथावत ।

१० मांगळीया-जणा १० ।

१० रा० सुजांणसिंघ रायसिंघोत ।

४ रा० जूंझारसिंघ हररांमोत ।

२ रा० पिरागदास[1] हरीसिंघोत ।

७ भा० राजसिंघ दयाळदासोत ।

४ भा० मोहणदास हरदासोत ।

३ रा० सांमसिंघ[2] गोईंददासोत ।

४ भा० सांमो कुंभावत[3] ।

२ रा० जसकरण अमरावत ।

२ रा० मुकंददास भांणोत ।

२ रा० पोथो षेतसीयोत पातावत ।

२ रा० जगनाथ चांदावत ।

२ रा० हरीदास नरहरदासोत ।

१ रा० सबळसिंघ कांनावत[4] ।

१ चौ० मनोहर सादूळोत ।

१ सहलो हरीदासोत ।

१ रा० अमरो भींवोत ।

---

१. प्रागदास । २. स्यांमसिंघ । ३. स्याम कुनावत । ४. मांनावत ।

---

1. किले में चौकी का अधिकारी करके रखा ।

१ सोढो ईसरदास नेतावत ।

१ रा० माधोदास जसवंतोत, कोट मांहे चौकी नुं राषीयौ ।

२ रा० बलु जगनाथोत।

२ रा० करण नाथावत

२ रा० सादूळ सूजावत ।

१ तोपची जणा...।

१ पयादा आसांमो ७० हाकम री तावीन ।

इतरा पुरण[1] सांमान नुं दीया—

१० घोड़ा	१० ऊंट	४ बळध
३ बगतर जीनसाल	८ सुतरनाळ[2]	दारू[3] गोळा मण २०

---

१८. पोकरण सुकाळ[4] हुवै नै सबरी नीपजै[5] तो रुपीया १५०००) ऊपजै। नै पातसाही तरफ मुनसब में दांम लाष ८०००००) में छै। तिण रा रुपया २०,०००) हुवै। ठौड़ उनमांन री विगत—

५०००) मेळा २, रांमदेहरै रा[6]
लूण रौ...

६०००) गांव रैं हासल रा धड़कसाल[1] पाटो ।

५०००) मारग वैहतीवांण सुं[7] संमत १७१६ पातसा — —।

---

१९. पोकरण रौ षेड़ो सैहर रौ पाधरी करड़ी धरती माथै[2] छै।

---

१. टकसाल। २. रड़ी माथै।

---

1. ऊंट आदि । 2. ऊँटों पर ढोई जाने वाली तोपें। 3. बारूद । 4. खेती संबंधी पैदावार का अच्छा वर्ष । 5. अच्छी फसलें हों। 6. रांमदेवरा के दो मेले लगते हैं उनकी आमदनी । 7. सीमा में से निकलने वाले राहगीरों से लिया जाने वाला कर।

बडौ कोट राव श्री मालदेजी रौ करायौ छैं। रावजी करायो सु कोट गज १५ ऊंचो छै। तिण ऊपर रावळ भींव रावळ कीलांण[१]मल वळे गज कठै ही पांच कठै ही गज ८ ऊंचो भळै करायौ छै[1]। कोट रौ पाठौ गज रै[२] पन्है[2] छै। पोळ रै मूंडै कोट गज २१ ऊंचौं छै। बांसली कांनी[3] गज १७ ऊंचो जेह सुधो छै। तिण उपर भुरज छै। कोट मांहे भुरज २१ छै। तठै चोकीदार राषीया चाहीजै[4]। तिण भुरज मांहे भुरज १६ मोटा डेरा करै, चोकीदार रहै तिसड़ा छै। कोट पोळ १ त्रिपट बडी पौळ छै तिण नु लोह रा कींवाड़ छै। पौळ ऊपर माळीयो छैं[5]। पौळ १ वळे माहाराजाजी रै हुवां पछै[6] पङकोटा री कराई छै। नांव जसपौळ कहावै छै।

कोट मांह था गज २०० लांबौ छै। गज २०० आडो[7] समचौरस[8] सारीषो छै। कुवो १ कोट मांहे पौळ सुं नजीक दीवांणषांना कन्हें पायगा[9] रै मुंहडै आगै। पांणी पुरस ६ तथा ७ भळभळौ[10]। बावड़ी १ भाटी भोपत रै घर वांसै, देवी रा भुरज था नजीक बावड़ो, पांणी भळभळौ घणौ। हमार तो अवावर पड़ी छै[11]।

कोट मांहे रावळा घर सादा छैं। घर १०० कोट मांहे भाटीयां रा रहता। हिमें और मांहे गांवेती[12]तौ को नहीं। देहूरौ जैन रौ छै। श्री आदेसुर[३] रौ छै। थांन १ श्री देवीजी रौ छै। चांवंड बुरज छैं, तठै देवीजी री मूरत छै। नाळ ३ कोट मांहे कदीम छै। नाळां[४] सषरी छै। जंत्र १ भाटीयां रौ बणायो छै। कोट दोळू षाही छैं[13], पक्की गज ४ ऊंडी। गज ५ रै पन्है छै[14]। पाषती बावड़ो २ छै, कोट बारै। तिण सुं भरण तेतो[५] भरै।

---

१. कल्यांण। २. गज ५ रै। ३. आदीसर। ४. नाळ। ५, मते।

---

1. फिर और ऊँचा करवाया। 2. दीवार की चौड़ाई। 3. पीछे की ओर। 4. चोकीदार रखने चाहिए। 5. छोटा महल बना हुआ है। 6 महाराजा जसवंतसिंहजी के अधिकार में आने के बाद। 7. चौड़ा। 8. लम्बाई चौड़ाई में एकसा। 9. घुड़शाल। 10. कुछ खारा। 11. प्रयोग में नहीं आती। 12. गांव के लोग। 13. किले के चारों ओर खाई है। 14. चौड़ाई में भी ५ गज है।

२०. सैहर पोकरण री बसती रौ उनमांन—

३१० महाजनां रा घर—

३० ओसवाळां रा

२८० महेसरीयां रा

३१०

५० करसां रा[1]—

२० संजो[1] ३० माळी

५०

१० दरजीयां रा

१० मोचीयां रा

४ कुभांरां रा

१२ तेरवां रा

३० तुरक सिपाई

१० ढेढां रा

४ जोगी रा

५० बांभण पोकरणा डोळीया[2]

३० भोजग डोहळीया

३ षातीयां रा

७ सुनारां रा

३ नाईयां रा

१० छींपा षत्री रंगारा[3]

३ पींजारा

३ कोटवाळ तुरक

---

१. सुजी ।

---

1. किसानों के । 2. जिन्हें दान में भूमि दी हुई है । 3. रंगाई का काम करने वाले ।

२ जागरी
४ सरगरा
२ डूंब[1]

५५७

२१. सहर मांहे देहरा देवस्थांन छै--

३ सिषरबंध देहरा[2]--

१ देहरो श्री चतरभुजरायजी रौ, बाजार मांहे कोट था नजीक, दिषण नुं पांवडा १०, राव बरजांग पौकरणा रौ करायौ ।

१ देहरो श्री सूरजजी रौ, सिषरबंध, चतरभुजजी रा देहरा कनै नजीक अड़तौ हीज[3], सा० जैता राऊ रौ[1] करायौ ।

१ देहरो देवी श्री षीवजजी रौ, सिषरबंध । सहर सुं कोस ०।। दिषण नुं, कदीम । सहर मांडोयो तरै छै[4] । पछै वळे महाजने महेसरीयां भूतड़े फेर संवरायौ छै[5] ।

३

१ देहरो १ माहादेवजी रौ, कोठौ त्रीवाय ऊपर कुंड छै ।

१ रांमदेजी रौ थांन, कोट मैं पैसतां[6] जीवणी तरफ[7] कोठौ छै, कदीम थांन छै ।

१ वाळनाथजी[2] रौ थांन, गांव बारै धू में पांवडा १५ ।

२२. तळाव पोकरण सहर इतरा छै, तिणां री विगत—

१ डूंगरसर-सहर था कोस १ ऊतर नुं । सा० मुरार राठो रौ करायौ । भाषर रै षुड़ै[8] । पांणी बरसोंदीयो रहै ।

१. राठी साह जैता रौ । २. वालीनाथ जी ।

1. ढोली । 2. वे मन्दिर जिन पर शिखर हैं । 3. बिलकुल सटा हुआ । 4. जब से शहर की स्थापना हुई तभी से है । 5. मरम्मत आदि करवाई । 6. किले में प्रवेश करते समय । 7. दांई ओर । 8. पहाड़ के नीचे ही ।

१ नरासर-रा० नरा सूजावत रौ करायौ । सातळमेर कनै, गांव था कोस १।। ईसांन मांहे । आगे अठै कुवो थौ तठै गांव थौ, बाग थौ । नरा री छत्री उठै छै[1] । सहलड़ी हुवै । आंबा आगै था । पांणी बरसोंदीयो रहै ।

१ मैहरळाई–ऊगण नुं कोस ०।। कुंभार म्हैरा री काराई । पांणी मास ८ रहै । ऊपर पींपळ छै ।

१ रूषी री तळाई–सहर सुं पांवडा ६० दिषण नुं । पांणी मास २ रहै । रूषी बिणीयांणी री षंणाई । ऊपरलै पाळ रै झाड़ छै[2] ।

१ सुदाताधी[1] री तलाई–गांव था पांवडा १० । पांणी मास ३ । दिषण दिसी ।

१ संघरळाई-सीघां बांभण पोकरणा री षंणाई । गांव था कोस० । पांणी मास ७ रहै ।

१ मोषासर–आदु तळाव छै। मास ४ पांणी रहै । पिछम नुं छत्री १ ऊपर सो० नरूरी छै ।

१ रांमदेसर–गांव था पांवडा ४० आथूण नुं । रांमदे पीर रौ, आदु छै । ऊपर छत्री रांमदेजी री पड़ी छै[3] । पांणी मास ८ रहै । बावड़ी १ रांमदे री कराई, पुरसे ५, घणौ पांणी ।

१ धरणीसर–सातलमेर कन्हे उत्तर नुं । नरासर कन्है, पोकरण था कोस १।। दोढ कोस, मांहै पाणी मास ६ रहै । धरणांग रा नु[2] ।

१ लीगासर–[3] बाई लीग[4] राय गोयंद री बेटी रौ करायौ । कोस ३ ऊगण नुं । पांणी मास ८[5] रहै ।

२३. इतरी बावड़ी कसबे छै—

---

१. सुदा गांधी । २. राठी । ३. लूगासर । ४. बाई लुंग ४ । ५. ४ ।

---

1. नरा का स्मारक छतरी के रूप में हैं । 2. पाज पर झाड़ी है । 3. रामदेवजी की छतरी ढह गई है ।

१ कुंभारवाय–बंधवीं, पांणी घणौ। ऊपर अरट २ बहै। गेहूं मण ३५ बीज बहै[1] दरजी करसा करै। ऊगवण नुं।

१ मोहणवाय–पाणी चोढो[2] उपर अरट १, गेहूं मण १४। माळी करै।

१ नीबली–पांणी घणौ, ऊपर अरट २। गेहूं मण २४ बहै। माळी करै।

१ सारंगवाय–कुओ, गांव रा लोग पांणी पीवै।

१ मेहावाय–कुंभार कराई। गेहूं मण १० बहै।

१ वीसवाय–माळी करै। ऊपर अरट, पांणी हाथ १५, थोड़ौ षारौ। गेहूं मण ८ बहै। जाव[3] घणौ।

१ मदागण–माळी करै। पांणी मीठौ, घणौ। ऊपर अरट १ हुवै। गोहूं मण १० बहै।

१ भाषरवाय–पांणी थोड़ौ षारौ। गेहूं मण ४ बहै। जाव घणौ। ऊपर अरट माळी करै।

१ हीरावाय–पुरसे ६ पांणी घणौ, मीठौ। माळी करै। गेहूं मण ८ बहै।

१ कोहरीयो–पुरस ५ पांणी घणौ, मीठौ। माळी करै। गेहूं १२ मण बहै। अरट १ हुवै।

१ षांडी वाय–पुरसे ५ पांणी मीठौ, घणौ। जाव थोड़ौ। गेहूं मण ५ हुवै। अरट १, माळी करै।

१ वछेसर–पुरसे ५ पांणी चोढो। गेहूं मण ६ बेवै। एके-बीजी बाव रौ पांणी आवै[4]। जाव थोड़ौ। अरट १ माळी करै।

---

1. ३५ मन गेहूं का बीज बोया जाता है। 2. कम पानी। 3. वह जमीन जिसमें बावड़ी के पानी से सिंचाई करके फसल उगाई जाती है। 4. एक-दूसरी बावड़ी का पानी आता है।

१ बाली बावड़ी—पुरसे ४, पांणी घणौ । गेहूं मण ५ बहै । अरट १ माळी करै ।

१ थड़ी वाव-पांणी पुरसे ६ घणौ । ऊंची मंडी थी सु नीची मांड नै वछेसर रौ जाव पीवै । इण रौ जाव पड़ीयौ छै ।

१ सतावाय[१]—करसा दरजी करै । पुरस ६ पांणी घणौ, मीठौ । गेहूं मण १८ बावै ।

१ देहाऊवग[२]वाय- गांव रा लोक पीवै । पांणी पुरस ४ मीठौ, घणौ ऊपर गेहूं अरट, गेहूं मण १२ बहै । माळी करै ।

१ षांषो री बाव-माळी करै । गेहूं मण ५बहै ।

१ मोषासर-नीचे पांणी पुरस ४ घणौ । गेहूं मण ५ बहै ।

१ कोट मांहे कुवौ १-प्रौळ कनै पायगा आगै । पांणी घणौ मोटौ पुरस ८ ।

१ बावड़ी १-पुरस ६ पांणी मोटौ । अवावर पड़ी छै । पांणी घणौ ।

२०

२४. सांसण बावड़ियां—

१ भलवाय-पांणी घणौ, पुरस ८ मीठौ । ऊपर अरट १ गेहूं मण १२ बहै । जाव घणौ । व्यास भोपतजी नुं माहाराजा श्री जसवंत सिंघ रौ दत्त ।

१ बावड़ी १-श्री चतरभुजजी रै देहूरै सांसण । भोजग करै । पांणी थोड़ौ, पुरस ८ । गेहूं मण ८ बावै । अरट करै । आदू दत्त छै[1] ।

१ बावड़ी १-बांभण सीघां पोकरणा नुं । पुरस ७ पांणी घणौ,

१. घठोवाय । २. देहाऊग ।

1. प्राचीन काल से ही दान में दी हुई ।

मीठौ । गेहूं मण ८ बावै । ऊपर अरट कदीम । सांसण पहली रांमदेजी रौ दत्त थौ । पछै रांणी लीषमी दींध छै[1] ।

१ बावड़ी १–जोसी बैकुंठ नुं राव गोइंद रौ दत्त । पांणौ घणौ पुरस ५ पांच । नदी रै कांठै[1] । जाव थोड़ौ । नदी रै कांठै गेहूं मण ३ बावै मैं हुई । पोतरा[2] जोसी पोकरणा छै ।

२ बावड़ी १–बाळनाथजी रै सांसण । जोगी करै, कदीम ।

१ सोहाई वाय–पांणी घणौ, गेहूं मण ८ बावै ।

१ ऊलावाय–पांणी घणौ, गेहूं मण २ बावै ।

२

२५. १ नदी १–एक बाहळौ कुंभारां रौ कहीजै । बड़लो – – ल्हीयां उला नगरां रै पांणी आंवै दिषण दीसां, तिको कोट नीचै बहै । आगै बहै तिण बाहळै कर नै गांव मांहली बावड़ियां पांणी रौ सेझो छै[2] । पछै बाहळो आगे ऊतरा नै जाय तठै षेत ४ रेलै छै । पांणी रिण मांहे जाय तठै लूण हुवै ।

१ जोड[3] १–निपट बड़ौ । पोकरण था ऊली कांनी । कोस ३ पेलौ छेह कोस ५ पोकरण था लेनै रूपा री तळाई बांणीयां बांभण रै गांव सुधौ[4] । घास सेवण बुरगांठयो हुवै । जैसलमेर रै मारग वाल्हीया गोमट रै पाद्र था पाद्राड़ा सुधो ।

पीर रांमदे रौ थांन कोट री पौळ मांहे पैसतां[5] जीमणे कनारे[6] । रांमदे पीर पहली पोकरण वासो[7] तरै अठै कोटड़ी कीवी थी, तठै रांमदेजी रा पादका[8] छै ।

---

१. घरां २० छै । २. मेहू रा पोतरा ।

---

1. नदी के किनारे पर । 2. इस नदी के कारण गांव के अन्दर की बावड़ियों में पृथ्वी-तल से पानी आता है । 3. पड़त भूमि जो चरागाह के काम में आती है । 4. तक । 5. प्रवेश करते समय । 6. दांयें किनारे पर । 7. बसाई । 8. पादुका, पैरों के चिन्ह अंकित किये हुए ।

१ तीरथ १—त्रीवाय कुंड, श्री बालनाथ जोगी रै थांन कनारे, बंधावां छै ।

२६. पोकरण कसबै री धरती री हकीकत—

बरसाळी षेत निपट अवल[1], जवार, बाजरी, मूंग, मोठ, तिल, कपास सारा धान सषरा[2] हुवै । षेत धोरां लग नाडीयां रूंष[3] छै । एक वार भरीजै तौ कै जुवार कै गेहूं घणै षेतां हुवै ।

उनाळी बावड़ी २० तौ सषरी छै । गेहूं मण ५०० पीयल री ठौड़[4] । सेंवज गेहूं पिण घणा हुवै, घणा मेहां । भला षेत छै ।

परगने मांहे इतरा गांवां सेंवज गेहूं हासलीक गांवां हुवै, ऊनव[5]—

१ धुहड़सर	१ देपालसर[1]	१ लोहा रौ षेत[2]
१ कांढण	१ तलसर, कसबा रा षेत १००, मण २००० ।	

२७. परगना मांहे इतरा रिणे[6] लूण षारी हुवै—

१ पोकरण जोधपुर रै मारग दिसां ।

१ दांता सुई १ लोहमे ।

१ धुहड़सर ।

१ आवणैसे सेंवज ।

---

२८. परगने पोकरण रा गांवां रौ मेळ—

---

१. वड़सी रौ (अधिक) । २. लोहबा रौ खेत ।

---

1. अति श्रेष्ठ । 2. अच्छे । 3. वृक्ष । 4. जहां ५०० मन गेहूं के बीज को पानी दिया जा सकता है । 5. वह स्थल जहां वर्षा का पानी भर जाता है और सूखने पर गेहूं आदि बोये जाते हैं । 6. बंजर धरती ।

जुमले	बसता	सूना	आसांमी
४०	२८	१२	हासलीक गांव—

९ पलीवाळ बांभण बसै

1 वड़ली
1 वणीया
1 चांचा
1 पांच(प)दरो
1 कालो
1 भींवा भोजा
1 माहव
1 लोहमो
1 धुहड़सर

९

५ पलीवाळ नै रजपूत भेळा, जुदै वास बसै[1]।

1 ढूंढ
1 बांभणू
1 मांढलो
1 चांदसमो
1 जसवंतपुरो

५

1 कसबै मोहाजन सारी तीस पवन जात बसै।

1 षारौ बीसनोयां रौ

८ रजपूतां रा बसी रा गांव—

1 झालारीयो
1 ऊधरास पेथड़ा रौ
1 छाहणी पड़ीहारां री
1 राहड़ां रौ गांव भाटी
1 केलावौ भाटी

1. अलग-अलग बस्तियों में बसते हैं।

१ जैसिंघ रै गांव राठौड़
१ एक भाटीयां रौ गांव
१ बील्हीयो

८

२ मुसलमांना रा–
१ गोमट १ गाजण री सरेह

२

२८ बसता छै।

१२ सूना छै–
१ वड़लो रौ बास
१ झालरोया रौ बास
१ सरवण री सरेह
१ राहोपो
१ बरडांणो
१ दूधीयो
१ नेहड़ी नडी री सरेह
१ ढंढ री सरेह
१ गळता री सरेह
१ षेतपाळीयां री सरेह
१ सोढां री सरेह
१ भोपी री सरेह

१२

४०

१५ १० ५ सांसण
३ पिंडत १ बांभणां, सूनौ।
११ चारण

७ बसता ४ सूना।

११

१५

३० १४ १६ पोकरणा राठौड़

१ साकड़ो	१ लूणो
१ चोक	१ सीनावड़ो
१ झालामलीयो	१ गुड़ो
१ बांभण	१ मांडीयो
१ बहड़ो	१ चांदणी
१ आवणीयो	१ पद्राड़ो
१ भुणीयाणो	१ जालोवाड़ो

१४

१६ सूना—

१ गोडगड़ो	१ बघेवो
१ षीवलाणो	१ झेरवड़ो
१ झाबरो	१ गुड़ौ
१ दूधीयो	१ गोगटो
१ मीठड़ीयो	१ देघड़ो
१ कुसमलो	१ सीनावड़ीयो
१ झालाड़ौ	१ दातल
१ रातड़ीयो	१ कासड़ो

१६

३०

८५ ५२ ३३ गांव २ जैसलमेर रै हेठै दबीया[1] नै एक टोटो १, एक कोटड़ा हेठै, आरंग।

1. जैसलमेर की सीमा के अन्तर्गत दबा लिये गये।

२६. पोकरण था इतरा कोसां[1] श्रैह सहर गांव छै—

४० जोधपुर	३५ जैसलमेर	३३[1] कोढणो
१०० देरावर	१६ फळोधी	३५ महेवो
१६ फळसूठ	१६ सेतरावो[2]	६० नागोर
५० नहवर	५५ बाहड़मेर	३६ कोटड़ो
४३ वीसालो	५५ बीकानेर	१८ बाय
३४ वीकमपुर		

---

३०. परगने पोकरण रै परगनां सुं बीजा गांवां रौ कांकड़[2] लागै ।

जैसलमेर रा गांवां सुं पोकरण रा गांवां री सींव लागै—

वरडांणो

ऐढो २　टोटी ३　लाठी ३　भाद्रवो २

षुहड़ो　मदासर　भेसड़ो

सनावड़ो　मंदासर　नडांणो　धाईसर[3]

जालीवड़ा सुं—

श्रोलो[4]　वंणाड़ो

षींवलांणो　भैंसड़ो　वणाड़ो[5]

कांला बांभणां रै—　ऐढो

दुधीयो　श्रंतरगढो

राहड़ री सरेह　श्रंतरगढो

चांदणी—

लाठी ३　भाद्रवो ३　धायल २　देसाल ३　षचीहाय २

बंधवो　श्रसमो　वंणाड़ो

---

१. ३२ ।　२. सेत्रावो ।　३. धायसर ।　४. ऊलो ।　५. बांणाड़ो ।

---

१. पोकरण से इतने कोसों की दूरी पर ।　२ सीमा ।

साकड़ो

भैंसड़ो ४ नेडाणो ३ मदासर २ धायसर

लूणो सुं भैंसड़ो

छाहण

बारू ऐटो ३ टेटो २ अंतरगढो

वाहळौ अंतरगढो

पाचदरौ लाठी

फळोधी रा गांवां सुं पोकरण रा गांवां कांकड़ लागै—

षारो

वेहगठी ३ सावरीजी ३

हापाली ४ वीटड़ीया ४

अघासर सावरीज १

मढंलो सावरीज ३

बांभणू कोळु ३ सावरीज १॥

राहड़ा री सरैह सु बंहगठी[1]

जोधपुर रा गांवा सुं पोकरण री सीवं—

माढलो

देसुं ४ ऊंठवाळी[2] ३॥

भाबरो

पूंगळीयो दासांणीयो फळसूंड ऊंटवाळीयो

दातीलो फळसूंड

साकड़ीयो कालाऊ

चांदसमो

ऊंठवाळीयो २ कलाऊ ३ बुड़कीयो १

---

१. बेंहगटी। २. ऊंठवाळीयो।

रातड़ीया

कालाऊ	पूंगळीयो	फळसूंड	दासांणीयो

गोडगड़ो	फळसूंड
पादरड़ो	कलाऊ।

३१. परगने पोकरण हासल ऊपनौ[1] तिण री कुल ठीक—

जुमलै रु०	गांवां रौ हासळ	मेळो रांमदे रौ	सांसण रा गांव	आसांमो
१३५३४)	६५९२)[1]	३६६५)	२७८)	संमत १७११
१२२३१)	८९९०)[2]	२९९०)[3]	३३०)	,, १७१२
१३४५७)	८५८३)	४५४४)	४३०)	,, १७१३
१५८९१)	१०४७५)	३९८१)	४३५)	,, १७१४
६२१९)	३९९०)	२०९१)	१३८)	,, १७१५
१३८६१)[4]	७३४५७)[5]	५८११)	६९०)	,, १७१६
१५६६८)	११४६४)	३६३२)	५७२)	,, १७१७
२०४२९)	१६१९७)	३७०२)	५३०)	,, १७१८
१०३३०)	७८८०)	१७०२)	४४८)	,, १७१९
४०००)	०	०	०	,, १७२०

३२. परगने पोकरण माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी लीवी तठा पछैलौ[2] हासल ऊपनौ तिण री जमै-बंधी रो ठीक—

रुपया	आसांमी
४३५०)	१७०७ रै बरस
१२३१५)	१७०८ ,,
१४६२८)[6]	१७०९ ,,

१. ६५९१)। २. ८९११)। ३. २९३०)। ४. १३८१६)। ५. ७५१५)। ६. १४६२९)।

1. जमीन की आमदनी सरकार को प्राप्त हुई। 2. उसके बाद का।

९५४५)	१७१० रै बरस
१०५९०)	१७११ ,,
९२४६)	१७१२ ,,
११८१२)	१७१३ ,,
१४०९५)	१७१४ ,,
५८८४)	१७१५ ,,

३३. संवत १७०७ काती वदि ५ श्री माहाराजाजी रो आंण फरीयाद छै[1]।

मुंहणोत नैणसी जेमलोत मंगसर बद १ दिन ४० ।

भा० रामचंद रायचंदोत ।

मु० सुंदरदास जैमलोत संमत १७०८ मंगसर में, १७०९ चैत में छुटी ।

मु० हरचंद नुं संमत १७१० रा सांवण में हुई ।

संमत १७१५ फागण सुद १३ रा सबळसिंघ ।

---

३४. परगने दसतूर अमल लागै–

मापो विसवे कसबे लागै ।

बोपारी[2] बार था बसत आंणै[3] तिण नुं सेरीणो मण धांन घीरत रुत सिगळी बसत लागै । नै बीछाहीत नुं दांण ने बिकरी लागै ।

---

३५. मेळो श्री रांमदेजी रै देहूरै बरस एक मांहे वार दो हुवै[4]–

१ भादवो   १ माही

---

1. जसवंतसिंहजी के अधिकार की रस्म पूरी हो चुकी । 2. व्यापारी । 3. राज्य के बाहर से वस्तुएं लाते हैं । 4. एक वर्ष में दो बार मेला लगता है ।

रुपिया	आसांमी		रुपिया	आसांमी	
१२६८)	संमत	१७०७	३६८१)	संमत	१७१४
४२१६)	,,	१७०८	२०६४)	,,	१७१५
६५५१)	,,	१७०६	५८११)	,,	१७१६
३४११)	,,	१७१०	१६३०)	,,	१७१७
३६६५)	,,	१७११	३७०२)	,,	१७१८
२६६१)	,,	१७१२	१७०१)	,,	१७१६
४५४१)	,,	१७१३	१२२)	,	१७२०

३६. परगने पोकरण मांहे राठौड़ जगमाल मालावत रा पोतरा भोमीया छै। सु गांव भुणीयांणे जालीवाड़ै वांसै मोजा चरा' घणा ही हरा षाई छै। घणी-सी चाकरी ही कांई करै नीं[1]। पईसा पिण के दिन छै' उण मांहे। आज लाईक पोकरणा देवराज रा बेटा मालो परबत रूड़ा रजपूत छै[2]। जालीड़ौ पाधर[3] में बसै छै। भुणीयांणो कंवरो बसै छै। सारा पोकरणा असवार १००, पाळा ४०० री जोड़ छै। श्री माहाराजाजी रै तौ अमल मांहे इणां नुं सभी तिसड़ो कदे नहीं पोंहती[4]। रावळ मनोहरदास एकरसी[5] घणा पोकरणा मारोया हुता नै माला परबत नै पकड़ बंदीषांनै दीया हुता। पोकरणा सारै देस रा ऊजाड़ै छै[6]।

३७. परगने पोकरण रौ अमल दसतूर—

मापो बिसवे कसबे लागै,

१. चंपा। २. कदे न छै।

1. राज्य को विशेष नौकरी भी नहीं देते। 2. अच्छे काम आने वाले राजपूत हैं। 3. मैदान। 4. वैसी लाभदायक और कभी नहीं हुई। 5. एक बार। 6. नुकसान करने पर आमादा।

बोपारी बार था वसत आंणे[1] तिण नुं ।

पोकरण रा माहाजन देस मांहली[2] वसत घीरत तेल रुत कपास धांन तिल सिगळी वसत मण ऽ१ सेर १ रावळे लागै ।

बीजा बापारी[3] बीछाईत वसत आंणे तिण नुं मण १ सेर १ लागै ।

परदेस था बापारी वसत लावै तिण नुं ।

पोकरण रा माहाजन लावै तिण नुं दांण लागै ।

बिछाईत वसत लावै तिण नुं दांण विसवो बेहू[4] लागै ।

विगत—

कपड़ो मण १ तोल २० रै दुगाणी ८ लागै ।

॥ दांण ॥ विसवो

रेसमी बाब रेसमी कपड़ो रेसम मण १ फदीया १० विसवे सुधा लागै ।

दांत मण १ पीरोजी ४ दुगांणी ०॥ लागै ।

गुजरात री वसत दांत, रेसम, कसतूरी, कपूर और ही वसत मोती बीग लैवे तिण नुं मण १ पीरोज १॥ दुगाणी ०॥ लागै ।

तांबो, कांसो, पीतळ, जसद, सोसो, कथीर, गरी, नाळेर, मिरच, पीपळ, मजीठ, हींग, सुषड़ो, तेल, मिसरी, गुळी, इतरा वसते[5] दुगाणी ८ मण १ लागै ।

षांड, सूत, सूंठ, पोपळामूळ, घीरत मण १ दुगाणी ६॥ लागै ।

गुळ, तेल, रुत, लोह, लाष, मण १ दुगाणी ५॥ लागै ।

जीरो, अंजवो, सोवा, धांणा, ब्रिराळी, हळद मण १ दुगाणी ३॥ लागै ।

---

1. व्यापारी लोग जो मारवाड़ के बाहर से वस्तुएं लाते हैं । 2. मारवाड़ के अन्दर की । 3. दूसरे व्यापारी । 4. दोनों । 5. इतनी वस्तुओं पर ।

मेथी, राई सरसूं, अळसो, तिल, मूंज, साजी, इणां दुगाणी ६।। लागै। मुठ[1] दुगाणी लागै।

कबाड़ै, डोडा, कुबड़ा वीसो हेक वोसी लागै।

इतरौ कसबै लागै—

व्याज बिवणौ हुवै[1] तिण में हेंसो ८ लागै।

माल—

महाजनां नुं घर १ दीठ दुगाणी १७ लागै।

१२ होळी दीवाळी री, ५ राषड़ी री।

१७

बोजौ घर दीठ वळे देषलै।

करसां नुं घर दीठ जिसड़ो देषै तिसड़ौ लै[2]।

---

३८. १ षेतां रौ भोग[3], हेंसो—

बांणीया महाजनां नुं हेंसो ४।। तथा ५ नै लार मण १ सेर ६। लागै, सांवणू साष में।

करसां नुं हेंसो ४ तथा ४।। लार मण १ सेर ७।।, सांवणू साष।

तरकारी, तंबाषू, कांदा, जिकूं हुवै सुं चोथौ वांटौ हेंसो बांट रौ लेवै।

रजपूतां सुं मुकातौ हळ १ रु० ३) तथा ३।। (दे) छै।

ऊनाळी साष—

---

१. पूण।

---

1. ब्याज की रकम दुगुनी होने पर। 2. जैसी हैसियत देखते हैं वैसा ही उससे लेते हैं।
3. सरकार का हिस्सा।

कसबै री बावड़ीयां रौ हेंसौ ३ मांड लै ।

बीजो सेंवज गेहूं जव चिणा सांवणू धांन रो रीत लाट लै ।

३९. परगने पोकरण रै गांवां री विगत—

१ कसबो पोकरण ५०००)

जोधपुर था कोस ४० पिछम नुं वायब मांहे । महाजन माळी दूजी छत्तीस पवन बसै[1] । बरसाळी बडो गांव । ऊनाळी बावड़ीयां २० । पीयल सेंवज मांहे घणो हुवै । रुपीया १००००) ऊपजतां री (ठौड़ ।

३ बड़ली ९००)

पोकरण था कोस २ दिषण मांहे ।

१ बड़ली पीथलां री

षेड़ौ पाधरी ठौड़[2] । पलीवाळ बांभण घर ४० बसै । बरसाळो षेत सषरा । ऊनाळी ऊनव २—देपालसर, षींवसर । दुनू बड़ली रै षेड़ै । गेहूं मण २०० भोग, १४० देपालसर रा, ६० षीवसर रा । धोराबंध षेत ५ तथा ७ । गेहूं हुवै । वांकनेरे[1] पीवे ।

१ बड़ली मांडा री

पलीवाळ २० बसै । बरसाळी षेत सषरा । ऊनाळी उनव देपालसर षींवसर तळाव भेळा, पांणी मास ९ रहै । पछै वांकनेर बेरा ७ छै तठै पीवै ।

१ बड़ली डूंगरां री

तळाव कुवौ को नहीं । बरसाळो षेत सषरो । षेत ५ तथा ७

१. बांकनेरी ।

1. ३६ ही जाति के लोग बसते हैं । 2. गांव मैदान में बसा हुआ है ।

भरै तौ सेंवज हुवै । षेड़ो बांसां सूनो । बांभण डूंगर रा बेटां पोतां रा मांडां री बड़ली मांहे रहै छै, सु षड़ै[1] ।

३

१ बांणीया (१०००)

बांभणां रौ गांव । पोकरण था कोस ६ पछम नुं । धरती हळवा १०० । पलीवाळ घर ४० बसै । बरसाळो षेत सषरा । ऊनाळी ऊनव १ काढणां[1] रौ । गेहूं मण १०० बहै । तळाई १ बांभण रूपा री षणाई[2] । कुवा २ बंधवां, जोड़ करड़ीयां कन्है । पांणी पुरस २० षारौ ।

१ चांच[3] ५०)

बांभणां रौ गांव । कसबा था कोस ६ रीतहड़ । हळवा धरती ४० । रु० ३००) ऊपजतां री ठौड़ । पलीवाळ बांभण घर ३० बसै । तळाव १ सोलोत[4] रौ गांव था कोस ०। पांणी मास ४ रहै । कुवो १ करड़ीयो[5] पोकरण जोड रै कांकड़, पुरस १७, पांणो षारौ । बरसाळो षेत सषरा । ऊनाळी षेत ५ तथा ७ । घणै मेहे[2] गेहूं हुवै ।

१ पचपदरो (१५००)

पोकरण था कोस ६ आथूण नुं[3] । धरती हळवा १५० । रुपोया ७००) तथा ८००) सातसै तथा आठसै ऊपजै । पलीवाळ बांभण मुंधा रा घर ५० तथा ६० । षेत सषरा ऊनाळी सेवंज पीयल कुं नहीं[4] । नाडी ३ सषरी, पांणी मास ८ रहै । कुवो १ कड़ीयो पुरसे १७[5], पांणी षारौ ।

---

१. काढण । २. गांव सूं कोस ०।। खरक में पांणी मास १०. मांहे बेरी ४ पेटवांणी (अधिक) । ३. चाचा । ४. सहलोत । ५. कीरोड़ीयो ।

---

1. खेत बोते हैं । 2. अधिक वर्षा होने पर । 3. पश्चिम की ओर । 4. रबी की फसल से कुछ भी पैदा नहीं होता । 5. १७. पुरस गहरा ।

१ काला ८००)

बांभणां रो गांव। पोकरण था कोस ५ पंचाध मांहे। धरती हळवा ८१, रेष रूपीया ५०० ऊपजतां री ठौड़। पालीवाळ बांमणां रा घर २५ बसै। षेत कंवळा काठा सषरा। ऊनाळी ऊनव १ करै। डूंगर पांणी आवै[1] तिण था षेत ३० रेलीजै। सेंवज गेहूं हुवै। तळाव २ बांभण भांभण कांना रौ, मास ८ पांणी रहै। ऊपर छत्रीयां २ छै। कोहर १ पद्रौड़ो कौस २ ऊगवण में, पुरसे १५, भळभळो-सो।

१ भींवा ४००)[1]

भोजा बांमणा रौ। कसबा था कोस ३ पंचाध मैं। रुपीया ३०० तथा ४०० री ऊपजतां रौ[2]। पलीवाळां रा घर १० बसै। बरसाळी षेत सषरा। ऊनाळी, ऊनां सेंवज नहीं। कुवो १ पाद्रोड़ो पुरस १५, पांणी मीठौ।

१ गांव माहवां[2] ६००)

बांभणां रौ गांव। पोकरण था कोस ४ ऊतर मैं। ५००) ऊपजतां री (ठौड़) पलीवाळ बांभणां रा घर ४५। धरतो हळवा ६०। षेत निपट सषरा ऊनाळी ऊनव १ काढण था कोस ०। घणा मेहां रेल आवै[3], तरै षेत ३० रेलीजै, तरै गेहूं हुवै। तळाव १ बाहळे[3] नै हरषा री तळाई। मास ८ पांणी रहै। कोहर १ पाद्रोड़ो, दिषण मांहे, कोस १, पांणी भळभळो।

१ सोहवौ[4] २५००)

बांभणां रा। पोकरण था कोस ४ ऊगोण मैं। बडो गांव, रुपीया १५००) तथा २०००) ऊपजतां रौ। षेत निपट बडा, धोराबंध। सांवणू जुवार बाजरौ मूंग तिल कपास धांन सारा हुवै। ऊनाळी षेत

१. २००)। २. मोहावां। ३. बाहलो। ४. लोहवो।

1. पहाड़ से वर्षा का पानी बह कर आता है। 2. पैदावार का। 3. वर्षा का पानी बह कर आता है।

रेलीजै । गांव ना ऊतर नुं भाषर छै, तिण रा पांणी सुं षेत रेलीजै तरै सिगळी सींव में[1] षेत ५० तथा ६० गेहूं हुवै । तळाव १ जवणकां[1] गांव नजीक, पांणी बरसोंदीयौ रहै । ऊपर गुमट[2] सांमी सूरजनाथ रौ छै । बावड़ी २ दोय बंधवों छै पगवाय । पांणी घणौं मीठौ ।

२ वास २—पलीवाळ बांभणां रा भेळा हीज बसै[3] ।

१ पलोवाळ डूंगरे रौ बास । घर ५० बांभणां रा ।

१ बास १ पलीवाळ गांगा रौ । घर ५० बांभणां रा, घर १५ २०[2] बीजा लोक ।

२

२ वास २—लोहवा री सींव में जुदा बसै ।

१ आसायचां रौ बास

लोहवा था कोस २, ऊगोण थकां जीवणे । तळाई पेसरी रा षेत कहीजै । तिण ऊपर घर १५ तथा १६ बसै । षेत हळवा २० सषरा, षेत काठा मगरा । हळ १ रु० ३।।) मुकाते दै[4] । तळाई पेसरी रा मास ८ पांणी रहै । पछै लोहवा री बावड़ी पीवै ।

१ देढोयां रौ वास

लोहवा था कोस २ ऊगण नुं । तळाई सवणधी[3] ऊपर घर १४ तथा १५ बसै । धरती हळवा २० तथा २५ । षेत सषरा । हळ १ रु० ३।।) मुकाते रा दै । तळाई सवणधी पांणी मास ८ रहै । पछै लोहा री बावड़ी पांणी पीवै । देढोया राठौड़ ।

२

४

१. जवणकी । २. १६) । ३. सैवाणधी ।

1. पूरी सीमा में। 2. गुंबजदार स्मारक। 3. शामिल ही बसते हैं। 4. एक हल जमीन पर ३।।) का लगान देते हैं।

१ धुहड़सर ४००)

पोकरण था कोस ४ ऊगोण था जीवणे। धरती हळवा ३०। रु० ६००) ऊपजतां री ठौड़। धूहड़सर ऊना री नवौ थौ। षेत झालरीया री सींव में धुहड़सर री सरेह थी। तिण ऊपर पलोवाळ घर ३० बसोया। बरसाळू षेत सषरा। ऊनाळी षड़ीण धुहड़ भरीजै तौ गेहूं सेंवज हुवै। बीजू बडा षेत ऊना री तळाई २–जांझण री नै नाथै री। मास १ पांणी रहै। पछै पोकरण रै कोहर रावडां पीवै। षेत हळवा ७[1]।

२ झालरीयो

वास ६, तिण में वास ३ सांसण छै। नै वास ३ बीजा छै। झालरीयो पोकरण था कोस ५। ऊगोण दिसी। रेष रुपीया १०५०) ऊपजतां री। सींव घणी हळवा —। षेत मगरा थळी रा अजायब। षड़ीण हळवा २० थौ, तिको धूहड़सर रा बांभण षड़ता। तळाव नहीं। कोहर २ पांणी थोड़ौ। वास ३ छै तांमें वास १ बसै। रा० रायमल जसवंतोत नरावत रा बेटा बसै।

१ वडोवास, रजपूत बसै। घर ३० तथा ३५।

२ वास कालरां रौ, नै षालरा[2] रौ, हिमें सुनो छै।

३

१ ढंढुवास ७००)

पोकरण थी कोस ७ ऊगोण में। आदू गांव पेथड़ रौ। रुपीया ७००) तथा ८००) ऊपजतां री ठौड। षेत सषरा, धरती हळवा ३०० तथा ४०० जंगळ पड़ीयौ छै। तळाव १ धांधलां रौ गांव था कोस ०॥, मास ४ पांणी रहै। कुवौ १ सागरी पुरस २० पांणी घणौ, मीठौ। वास ५ बसै। षेत सींव कोहर सोह भेळा[1]।

---

[1] ६०। [2] षालतां।

---

1. सभी शामिल हैं।

१ वास १—पलीवाळ बांभण जगीया सोवराज[1] था रावळ मनोहरदास री बाहर में बसीया। घर ४०, रेष रु० ७००)।

१ वास १—पेथड़ अचळा पीथानोत[2] रौ, घर १२ बसै। सेउडो[3] १ चढीयां पोकरण चाकरी करै।

१ वास १—भाटी किसना रौ, घर १०। रा० भगवांन लिषमीदास रा नुं। पछै[4] चाकरी करै।

१ वास १—भाटी रांमसिंघ वीरमोत, घर १५। ऊंट १ चढीयौ पोकरण चाकरी करै।

१ वास १—पेथड़ रिड़मल रौ, घर ८। ऊंट १ चढीयौ चाकरी करै।

५

१ ऊधरासर[5] १०००)

वास ५ पहलो था। हिमैं वास २ बसै छै। कदीम पेथड़ां रा गांव। पोकरण था कोस ५ ऊगोण नुं। धरती हळवा २००। षेत कंवळा थळ रा। रुपीया ४००) तथा ५००) ऊपजतां री ठौड़। सींव घणी। तळाई ५ राजू री कहीजै नै भेळी होज छै। मास ५ पांणी रहै। कोहर १ पुरस २५, पांणी मोठौ, घणौ। वासां री विगत—वास २ बसै छै। पहलो वास ५ था।

१ वास ४ पेथड़ नुं ५००)

पटै दिया तरै आगला षेड़ा सूना करे नै सगळा एकहीज वास कीया[1], भेळा ही रहा। घर ७० रजपूतां रा छै। असवार ४ पोकरण चाकरी करै।

---

१. जगीयावास। २. पीथा नेता। ३. ऊंट। ४. पटै। ५. ऊधरास।

---

1. सब मिला कर एक ही बस्ती बसा दी।

१ पेथड़ भलो नाथा रौ ।

१ हेमराज करमणंद रौ ।

१ हरदास कांलाणो ।

१ पेथड़ जीवौ अचळा रौ ।

४

१ वास सीहड़ भाटी जीवा नै पटै । घर २० जसवंतपुरौ कहीजै[1] । असवार १ चाकरी करै । रेष रुपीया ५००) ।

५

१ षारौवास ४ १०००)

पोकरण था कोस ८ ईसांण मांहे । धरती हळवा २०० । षेत रुड़ा[2] थळ रा, बाजरी मोठ । ऊनाळी सेंवज नहीं । तळाव १ मास ८ पांणी रहै । आदू छै[3] । ऊपरां छत्री छै । कुवो १ पुरस ३२, पांणी षारौ ।

वास ४ री वीगत–वास २ बसै । २ वास सूना ।

१ बिसनोयां रौ वास– घर ३० कदीम । राव नरा री वासी[4] छै । के रावळ भींव री वार में[5] षरंगा[1] था आया । षेत सषरा । धरती हळवा ५० ।

१ सातलमेरीयां रौ वास– वडो वास नजीक । रजपूत घर ४० । बसी रा० केसवदास जोगीदासोत नै देईदास नरांणदासोत नुं पटै । भोग म० ३०० री ठौड़ ।

१ प्रो० षीमा री सरेह– वास घणौ कदे नहीं । लिखमा[2] रौ बेटौ

---

१. षरांगा । २. षेता ।

---

1. जसवंतपुरा के नाम से पुकारते हैं । 2. अच्छे, उपजाऊ । 3. प्राचीन है । 4. बसाई हुई । 5. समय में ।

सावरीज थकां षेत षड़ै। षेड़ो कोई नहीं। हळवा २० री धरती। हेंसे सातमें भोग दै[1]। म० १५० री ठौड़।

१ सीडड़ां रौ वास। सूनौ। पैहली सीहड़ जोग बसतो। धरती हळवा ५०। षेत सषरा।

४

१ बांभणू ८००)

पोकरण था कोस ६ ऊगवण नुं। रु० ३००) उपजतां री ठौड़। धरती हळवा ६०। षेत कंवळा थळ रा। गांव कोहर १, पुरस २० पांणी मीठौ, घणौ। तळाव २ धुकड़ा री, मास ८ पांणी रहै। वास २।

१ वास वडो वास-रा: आसा डूंगरसीहोत रै, चाहड़दे रा घर ३० मुकातै। हळ १ रा रूपीया ३॥) दै।

१ वास १ बांभणां मनांणां रौ-घर ४ पहली डोहळीया[2] था। हिमें म० १ मांणो १ भोग देवै छै।

२

१ मुढलौ[1] सोहड़ां रौ- वास २ १०००)

पोकरण था कोस ८ ऊगवण नुं। धरती हळवा १०० तथा २५०। रेष ४०० तथा ५००) ऊपजतां री ठौड़। षेत सषरा थळी रा, कंवळा। तळाव १ सोहड़सर, गांव था कोस २। मास ८ पांणी मीठौ। कोहर ऊपर गांव बसै[3]।

१ वास सोहड़ रौ-घर ३० तथा ३५। मुकातौ हळ १ रा रूपीया ३॥) दै। सोहड़ गोकळ माधावत नुं पटै[4]। ऊंट १ चढीयौ चाकरी करै[5]।

---

१. मढलो।

---

1. जमीन की पैदावार का ७वां हिस्सा लगान के तौर पर देते हैं। 2. जिन्हें दान में भूमि मिली हुई थी। 3. कुए के समीप ही गांव बसा हुआ। 4. माधा के पुत्र गोकल को जागीर में दिया है हुआ। 5. जागीर की एवज में एक सुतर-सवार की नौकरी नियमित रूप से देता है।

१ वास १ बांभण पलीवाळां रौ–बांभण रांमदास नै किसनौ सावरीज था आय बसीया[1] । घर ३० । भोग हूंसै ५ सतसेरी लार हासल दै ।

२

१ चांदसमौ वास २ ५००)

पोकरण था कोस ८ ऊगवण था जीवणै । धरती हळवा २००, षेत सषरा । रेष रूपीया ३००) तथा ४०० री ठौड़ । तळाव नहीं । कोहर २, आदू सागरो, पुरस ३० पांणी मीठौ, घणौ । रा० चांदसमेचां विजै वीरमोत रा पोतरा बसै । विजै रा पोतरां रौ ऊतन[2] ।

१ वास– रा० परबत कुसलावत विजै वीरमोत रा पोतरा चांदसमेचां रा घर ४० तथा ५० बसै । हळ १ रा रूपीया ३)[1] मुकातै देवै ।

१ वास १ बांभणां रौ–रजपूतां रै भोग[3] हूंसै ७ लार सेर ७ । घर १० बांभणां पलीवाळां रा ।

२

१ छयण[2] १०००)

पोकरण था कोस १० ऊतर मांहे । १०००) ऊपजतौ री ठौड़ । धरती हळवा १५०) । षेत थळ रा । आदू पड़ीयारां रै ऊतन रौ गांव[4] । कोहर ६, पांणी मीठौ घणौ, पुरस ३५ तथा ४० । तळाव नहीं । ऊनाळी नहीं । बसती घर २५ तथा ३० रजपूतां रा ।

१ राहड़[3] रौ वास ३५०)

पोकरण था कोस ८ ऊतर मांहे । भाटी जेसो राहड़ रा०[4] कीलांण-

१. ३।) । २. छायण । ३. राहड़ा । ४. रावळ ।

1. सावरीज गांव से आकर यहां बसे । 2. विजै के वंशजों का वतन है । 3. राजपूतों को लगान लेने का अधिकार है । 4. पड़िहारों का प्राचीन गांव ।

दास री वार मांहे बसीयौ। धरती हळवा ३०, षेत सषरा थळ रा। तळाव १ राहड़ा रौ। पांणी मास ४ हुवै। पछै छयण पीवै। कुवो नहीं। घर २५ रजपूतां रा बसै। मुकातो दै।

१ केलावौ १५०)

पोकरण था कोस ३ पिछम नुं। धरती हळवा ४० षेत सषरा। ऊनाळी कांई नहीं[1]। तळाव १[१] सषरा मास ६ तथा ७ पांणी रहै। कोहर १[२], री वसी रावळ वरसी[3] रौ पोत रो।

१ थाट ४००)

पोकरण था कोस ४ दिषण मांहे। रू०......... ऊपजतां रौ। धरती हळवा ४०। षेत सषरा। ऊन्हाळी नहीं। तळव १ रूपणीसर। जैंपाल रौ षीणायो[2]। मास ६ पांणी हुवै। पछै गांव था कोस १ ऊगवण नुं पार छै, तठै वेरा १० छै, तठै पीवै। पांणी मोठौ घणौ, हाथ १०[3]। बसती घर ४० तथा ५० रजपूतां री। भा० पतै सुरतांणोत री बसी।

१ जैसिंघ रौ गांव १५०)

पोकरण था कोस ६ ऊतर मांहे। ढंढ १ छै। ऊपर रा० करमचंद महेसोत रावळ कला री वार में गांव बसीयौ। धरती हळवा ४० ऊपर रूपिया........ री ठौड़। ढंढ कोस ०॥ दिषण में। मास ४ पांणी रहै। पछै छांहण रांमदेरै मांगीयौ पीवै। रजपूतां रा घर ३० छै।

१ जैमलोतां एकां रौ गांव १००)

पोकरण था कोस ३ ऊगवण मांहे। धरती हळवा ३०। पहली,

१; तळाव ३। २. पुरसे १५ मीठो घणो। बसती घर ५० तथा ६०, भा० जोगीदास गंगादासोत (अधिक)। ३. वेरसी। ४. जैसिंघा।

---

1. रबी की फसल बिल्कुल नहीं होती। 2. जैपाल के द्वारा खुदवाया हुआ। 3. दस हाथ गहरा।

कसबै री सरेह थी । भा० जैमल एका रौ बेटो रावळ भींवा री वार में बसीयौ । षेत सषरा । तळाव देवाध गांव था कोस ०॥ । मास ४ पांणी रहै । पछै जलाधरी रा बेरां पीवै । एकां रा घर २५ । चाकरी वीठळदास करै[1] ।

१ कालर ७०)

गाजण री सरेह, गाजचां रौ गांव कहीजै । पोकरण था कोस ३ पंचाध में । धरती हळवा २० । रेष रुपीया ... उपजतां री ठौड़ । रावळ भींव री वार में गाजण कालर बसीयौ थौ । षेत सषरा कंवळा काठा । कोहर १ पाद्रड़ो कोस ०॥ दिषण में । पुरस १५ पांणी भळ-भळो । कालरां रा घर १५ तथा २० छै ।

१ गोमढ ८०)

मौहर कालरां रौ गांव । पोकरण था कोस १ ऊगवण था डावौ[2] धरती हळवा ३० । रेष रू०......। राव नरा री वार मांहे कालर जोगी-दास[1] मैहर चुहड़ बसीया था । हिमें कालर मैहर रा घर ३५ पैंतीस छै । तळाई नींबली सादवा एक, मास १ पांणी रहै । कोहर १ तोला बेरो[2] कोस ०।, पांणी पुरसे १ मीठौ, घणौ ।

१ षालतसर १००)

बण (री) सरेह षालतां रौ गांव । पोकरण था कोस ४ ऊतर था जीवणो । धरती हळवा ३० । रावळ भींव री वार में षालत साहण नुं अै षेत दीया था । सुं षालत हिमें छांड़ गया[3] । गांव सूनौ । हिमें जेतौ माहर नुं छै । ऊंट चढ़ीयौ चाकरी करै छै । षेत रूड़ा भला ।

१ वीलड़ोयो २००)

---

१. जोगी । २. तोलवीरो ।

---

1. वीठलदास इस जागीर की एवज में राज्य में नौकरी देता है । 2. पूर्व में बाईं ओर ।
3. अब खालत लोग ये खेत छोड़ कर चले गये ।

पोकरण था कोस १ आथूण नुं। कदीम गांव सतां[1] भाटीयां रौ। धरती हळवा २५। षेत सषरा। कोहर १ सागरी पुरस १०, मीठौ, घणौ। तळाई १ मास ४ पांणी रहै छै। बसती घर ७ रजपूत रहे।

१ रोहीयो[2] १५०)

पोकरण था कोस ७ पछम नुं। धरती हळवो ३०। रावळ भींव री वार मांहे भाटी मांनौ देवराजोत एकै नुं श्रै षेत कसबा रा दीया था, तरै गांव वसीयो[1]। धरती हळवा ३०, षेत सषरा। हिमें गांव सूनौ छै। तळाव नहीं। कुवा ८ काचा पार रा वेरा। गांव था ऊगोण वांणा में पार छै तठै पीवै। पांणी भळभळो पेटवांणी-सो[2] छै।

१ बरडांणो षालतां रौ ४००)

पोकरण था कोस ६ पंचाध मांहे। धरती हळवा ४०। कोहर १ वरडांणै नांव[3]। पुरस २५ मीठौ। पोकरण जैसलमेर वेधी[3] छै। गांव छै तिण सूनो पडोयौ छै। पहलां षालत लाडू डूंगर बसतौ। हिमें सूनौ पड़ीयौ छै।

१ दूधीयौ २००)

पोकरण था कोस ६ ऊतर नुं। धरती हळवा ३०। षेत सषरा। कोहर नहीं। दूधीया नाडा रा षेत कहीजै। षेड़ो कदै बसीयौ नहीं। माहव बांभण षेत षड़ै, भोग दै। हिमें भाटी सीहै रांमदासोत नुं पटै। चाकरी करै।

१ नैहड़ी री सरेह

पोकरण था कोस ६ आथूण सूं डावी। तळाई १ नैहड़ी कदीम छै, तिण रौ नांव नैहड़ी री सरेह कहीजै। षेत १० छै। सांवणू छै।

---

१. वसतां। २. रोह। ३. वेधीलो।

---

1. तब यह गांव बसा। 2. पीने लायक। 3. वरडांणे नाम का एक कुआ है।

ऊनाळी नहीं। पहली बांणीयां रा बांभण षेत षड़ता। हिमें पड़ीया छै। भाटीयां री वार में भा० सूरै नादावत नुं था।

१ षेतपाळीयां री सरेह १००)

पोकरण था कोस ८ रीहतड़ में। षेत १५ सांवणू सषरा। ऊनाळी नहीं। कूवौ नाडी का नहीं[1]। भाटीयां री वार मैं जैललमेर रौ गांव। देवी[1] रा बांभण घमट षेतपाळीया षड़ता। तिण षेतपाळीयां री सरेह कहीजैं। संमत १७०० पछै षेत कोई षड़ै नहीं, पड़ीया छै।

१ भोपी री सरेह १५०)

पोकरण था कोस ८ भरहर ईसांन मैं। षेत १० सांवणू। हळवा[2] १०। ऊनाळी नहीं। तळाई १ कदीम भोपी री कहीजै। तिण वांसै भोपी री सरेह कहीजै। लोहवा रा बांभण षेत षड़ै। भोग हेंसौ ५ तथा ६।

१ ढंढ री सरेह २५०)

पोकरण था कोस ५ उत्तर थी डावौ बाजू। षेत १० हळवा। सांवणू अजाईब। ऊनाळी नहीं। तळाव १ ढंढ पड़ीहार अड़बाल रौ षीणायौ। हिमें ढंढ कहीजै, तिण वांसै ढंढ री सरेह कहीजै। ढंढ मास ४ पांणी रहै। षेत माहावां बांभण नै देहरा रा बांणीयां षड़ै। भोग मुकातौ दै।

१ सोढां री सरेह ५०)

पोकरण था कोस ६ ऊतर था जीवणो। षेत २०, धरती हळवा २५। सांवणू अजायब षेत। ऊनाळी नहीं। तळाई १ सोढां री कदीम छै। तिण वांसै सोढां री सरेह कहीजै। गालरां री सरेह षेत यांहीज भेळा छै। षेत मांहवां रा बांभण षड़ै। कदेहोरा बांणीयां षड़ै। सोढां री तळाई, मास १ पांणी रहै।

---

१. देवां।

---

1. कुंआ अथवा तलाव नहीं है। 2. १०० हलों से बोई जा सके उतनी जमीन।

१ गालरां री सरेह २५०)

पोकरण था कोस ६ ऊतर सुं जीवणो। षेत १० हळवा १० सांवणू निपट सषरा। भरेत रा षेत[1]। सोढां री सरेह सुं लगता हीज। माहवा रा बांभण नै देहरा रा बांणीयां षड़ै। तळाव कुवो कोई नहीं।

---

४० विगत— २८ आवादांन १२ वेरान।

४०. पोकरणा राठौड़ां रा गांव ३०। पोकरण राठौड़ जगमाल[1] मालावत रा पोतरा पोकरण रै परगनै भोमीयाचारै[2] गांव षाअे[3]। पेसकसी, नाळबंधी घणी का दै नहीं, ना कदे चाकरी करै[4]। १६, गांव दुजणसाल हमीर जगमाल मालावत रा पोतरां नु वंट मांहे—

१ साकड़ो २००)

पोकरण था कोस १२ दिषण मांहे। षेड़ो पाधरी धरती। बरसाळी बडा षेत। ऊनाळी नादणहाई रै ऊनां कोस ३ छै तठै गेहूं हुवै। रा० दुरजणसाल[2] रा पोतरां री बसी रा घर ५०१ रजपूतां रा छै। तळाव ४ सषरा। मास ४ पांणी रहै। कुवा ७ गांव था नजीक। पांणी पुरस १० मीठौ, घणौ।

१ लूणौ १५०)

पोकरण था कोस १४ दिषण नुं। षेत सषरा। षेड़ो पाधरी धरती बसै। बसती रा घर २००। वास २ ठौड़ बसै, रजपूत पोकरणा।

१ वास १—लषौ तांबळ गौपौ अभौ कलौ वीसा दुरजणसाल रौ[3]।

१ वास १—रा० महैराज साढा षुमांणोत रौ। कोहर गांव था कोस ०॥ ऊतर नुं। पुरस १३ पांणी मीठौ।

२

---

१. जगपाल (मूल प्रति में)। २. दुजणसाल। ३. दुजणसालोत रौ।

---

1. जहां वर्षा का पानी भरता है। 2. भोमिये होने के नाते। 3. गांवों का उपयोग करते हैं। 4. न कभी सरकार की सैनिक सेवा करते हैं न विशेष लगान या कर आदि ही देते हैं।

१ पुहड़ौ (१००)

पोकरण था कोस १४ दिषण नुं। गांव रौ षेड़ौ पाधरो धरती बसै। षेत सषरा काठा मगरा। कोहर १ गांव था पांवडा १०० ऊतर नुं, पुरस १२ मीठौ। तळाव नहीं। बसती रा घर २०। रा० परबत हेमा किसनाणी[1] री बसी रा घर।

१ चौक[१] (१००)

पोकरण था कोस ८ दिषण नुं। षेड़ो पाधर में बसै। षेत सषरा काठा मगरा। कोहर २ गांव था कोस १ पछम नुं, पुरस १५ पांणी षारौ घणौ। बसती घर ४०। रा० अजैराज वीरमदे चूंडावत री बसी रा घर ४० छै।

सीनावड़ो (२००)

पोकरण था कोस ११ पिछम नुं। षेड़ो पाधर। षेत काठा मगरा, सषरा षेत। कोहर २ गांव था कोस ०॥ आथूण था डावा, पुरस १६ पांणी मीठौ घणौ। बसती बास २ बसै छै[2]। वास १—रा० उरजन हमीर करन री बसी रा घर ८०। वास १— रा० गौदो, मेघौ, महेस सांगावत री बसी रा घर १०१ बसै।

१ चांदणी (१००)

पोकरण था कोस १० पछम नुं। षेड़ौ पाधर मैं बसै। षेत सषरा। कोहर १ सागरी, गांव था ऊतर नुं, पुरस १७ पांणी षारौ। बसती वास २ छै। घर ४० रा० गोपाळदास नेतसो स्हैसमलोत रा बेटा बसै।

१ झालामल (१००)

---

१. चोक।

---

1. किसना के पुत्र। 2. दो बस्तियों में लोग बसे हुए हैं।

पोकरण था कोस १२ पछम नुं। गांव रौ षेड़ो पाधर में बसै। षत सषरा। कोहर १ गांव था पांवडा ४०[1]। पांणी मोठौ पुरस १२। वसती—रा० आसौ रांमसिंघ जैमलोत री बसी रा घर २० तथा २५ बसै।

१ गोडागड़ो ५०)

पोकरण था कोस १५ रूपारास में। षेड़ौ सूनौ। षेत कंवळा। फळसूंड रा रजपूत षेत षड़ै। कोहर तळाव को नहीं। गांव री सींव में भुणीयांणे री रेल बहै। तिण में पांणी मोठौ, घणौ। फळसूंड था कोस १।।

१ बाघेवौ[1] ५०)

पोकरण था कोस ११ दिषण नुं। षड़ो घणा वरस रौ सूनौ। कदीम पड़ीहारां री वडी ठकुराई थी। पड़ीहार राणो रूपोड़ बसतौ, तिण रै रावळ माला रौ बैटौ जगमाल परणीयौ थौ। कोहर ३ बंधवा। पुरस ४० पांणी मोठौ, घणौ। काळ-दुकाळ तळा जुपै[2] तरै षड़-चर लोग[3] आय बसै। जंगळ षड़ीयो छै।

१ षींवलांणो १५०)

पोकवण था कोस १६ दिषण नुं। षेड़ौ सूनौ। घणा बरसां रौ। कुवो १ पुरस ३ पांणी। भळभळो सौ षेत करै कै पाई षड़ै। गोवळी लोक द्राव चारै तिण री चराई आवै। जंगळ पड़ीयौ छै।

१ भेरावड़ ५०)

षेड़ौ सूनौ। पोकरण था कौस १० दिषण मांहे। जालीवाड़ा थी कोस १। षेत काठा मगरा। जालीवाड़ा रा रजपूत केईक षेत षड़ै। कोहर १, षेड़ा तीरवा २, पुरस १५ षारौ। षेड़ौ संमत १६८७[2] सूनौ हुवौ थौ। हिमें षेत कोई षड़ै नहीं छै। द्राव चरै छै।[4]

---

१. नाघेवो। २. १६६४।

---

1. ४० कदम पर। 2. कूंओं से पानी निकाला जाता है। 3. जानवर चराने वाले। 4. ढोर चरते हैं।

१ झाबरो १००)

पोकरण था कोस १२ दिषण नुं । षेड़ौ सूनौ । पहलो रा० आसौ वीरभांणोत बसतौ । संमत १६५२ छांडीयौ थौ । तठा पछै सूनौ हीज छै । कुवो १ सागरी, गांव रा षेड़ा कनै । पुरस १४ पांणो मीठो । थोड़ो बूरांणौ छै । गोवली द्रावा चारै तिकौ करेक बसै ।

१ गुड़ौ १००)

पोकरण था कोस ८ दिषण नुं । षेड़ौ सूनौ । पहली पड़ीहार बसता । संमत १६८४ छांड गया । तठा पछै कोई बसीया नहीं । षेत कोई षड़ै नहीं । जंगळ पड़ीयौ छै । कुवो १ बंधवो, अवावर पड़ीयौ छै ।

१ दूधीयो ५०)

पोकरण था कोस ११ दिषण नुं । षेड़ो सूनौ बरस १०[1] पहला बसतौ । कुवो १ बंधवो छै, सु अवावर पड़ीयौ छै । पांणी पुरस १० पांणो थोड़ो-सो छै ।

१ गोगटौ ५०)

पोकरण था कोस १० दिषण नुं । षेड़ौ सूनौ । पहली थौ थळरा रजपूत पाद्रीया[2] थका बसता, सु छांडीया । पछै कोई बसीया नहीं । तळाव नाडो कोई नहीं । कुवो १ बंधवां । पुरस ४० पांणी, सागरी । हिमैं बूरियो पड़ियौ छै । थोड़ो-सो पांणी छै ।

१ मीठड़ीयो १००)

पोकरण था कोस १२ दिषण नुं । षेड़ौ सूनौ घणा बरस रौ छै । पहली कदे बसतौ । कोहर १ धूड़ीयो-सो थौ । पछै काठ सु बांधो सो छै । पांणी पुरस ७, पांणी थोड़ौ ।

१ देधड़ो[3] ५०)

पोकरण था कोस १२ दिषण नुं । षेड़ौ सूनौ । रा० अषौ देकांणी[4]

---

१. १००) । २. पाडरीया । ३. ठेघड़ो । ४. दिकांणो ।

हरबू रौ पोतरो बसतौ, सु छांड गयौ । संमत १६७६ सूनो हुवौ । तळाव १ गुरड़ां रौ बंधायौ । सादेवो १, मास ४ पांणी । कुवो १ बंधवो पुरस १२ । पांणी थोड़ो, मीठौ ।

१ गुड़ी १५०)

पोकरण था कोस ६ परक नूं । षेड़ो बसै । रा० किसनो म्है रावत बसै । बलू वीजावत लूंका रौ पोतरो[1] घर ४० सुं बसै । षेत सषरा । कुवा २ नांव गुड़ी बंधवां, गांव था सादवो १ मैं छै, पछम नुं ।

१ कुसमलौ ५०)

गांव तौ महेवा रौ । नै कुसमळे कोहर ३ छै । तांमें कोहर २ महेवा रा छै । तिण ऊपर महेवा रौ गांव कुसमलौ । महेवा रा मालीया रा[1] पोतरा बसै छै । नै पोकरण लारै कोहर १ छै, सु घणा बरस हुवा सूनौ पड़ीयौ छै । कदे बसीयौ नहीं । करेक गोवली थका लोक षड़चर थका रहै[2] । तळै[3] झंजोत[2] पांणी पीवै, पुरस ३० मीठौ, घणौ । कुवा ३ भेळा ही छै । नवसरै कोटड़ी रा गांव सुं कांकड़ । पोकरण था कोस २० । महेवा था कोस २५ ।

१६

४५. ६ इतरा गांव रा० सूरा हमीर जगमाल मालावत रै पोतरां रै बंट रा गांव छै[4]–

१ भुणीयांणो १०००)

पोकरण था कोस १० दिषण नुं । वडो गांव आद नगर । जिसड़ो पोकरण तीसड़ो बीजो भुणीयांणो[5] । राव गोईंद नरावत राव नरा री

---

१. महेवचा माला रौ । २. जोत ।

---

1. लूंका का पौत्र । 2. कभी-कभी ग्वाले लोग जानवरों को चराने के लिये यहां रहते हैं । 3. कुंए से । 4. बंटवारे में प्राप्त गांव । 5. जैसा पोकरण वैसा ही यह दूसरा गांव भुणीयाणा है ।

वार में[1] घणा पोकरण मारीया। नै राव षींवो वरजांगोत नै लूंको षींवावत वेढ में ऊघाड़ा नाठा जाता[2] तरै राव गोईंद यांहा नुं दुपटा उढाया पाछौ आंण[3] आधो परगनो पोकरण सातलमेर सुं ले नै आप राषीयो नै आधौ परगनो भुणीयांणा था गांव ३० रा० लूंका पोकरणा नुं दीयौ। तद रौ औ बंट पोकरणां रै छै। भुणीयांणो बडो गांव, आद नगर। तळाव ५ तथा ७, बडा तळाव। बावड़ो १२ बंधवीं। पांणी घणौ। ऊपर ऊन्हाळी हुवै[4]। देहरा ४ तथा ८, तिण में दोय जैन रा रा। सिषरबंध देहूरा छै। बीजा ही देहरा पड़ीया छै। उडीसा[1] छै। बड़ो कसबो थौ। हिमें संमत १६९० मांहोमांह भायां रै बंट हुवौ[5], तद षेड़ो आगलौ[6] थौ सु छोड नै सादवा एक पिछम में रा० कवरे रौ भांण रावतोत बसीयौ। तठै घर ४०० रजपूतां रा बसै छै। बीजो लोक बांणीयो महाजन घणौ कोई नहीं। धुहड़-सा लोग चंवरा-टापरा बांध बसै[7] छै। आगे षेड़ौ थौ जीठै[8] भेतहर बाजार सषरो थौ[9]। बरसाळी बडा षेत, जवार मूंग बाजरी रा। ऊनाळी बावड़ी १२, जूनौ षेड़ौ छै तठै करै तौ हुवै। पिण करै कोई नहीं। तळाव ५ छै तिण में गेहूं बावै। मण ४०० बीज बावै।

१ आवणेसो[2] ३००)

पोकरण था कोस ४ दिषख नुं भुणीयांणे था कोस ५ ऊतर नुं। षेड़ो पाधरी धरती बसै। कदीम षोषरां रौ गांव, षोषर करमचंद रौ। घर २५ बसता[3]। बीजा पोकरण भुणीयांणै बसै छै। षेत सषरा। ऊनाळी घणी का नहीं। तळाब ३ सषरा। मास ५ तथा ७ पांणी रहै। कुवो १ पुरस १२ मीठौ, घणौ।

---

१. धुड़ीया। २. अवणेसो। ३. बसती।

---

1. राव नरा की रावताई के समय में। 2. नंगे बदन भागे जा रहे थे। 3. वापिस लाकर। 4. रबी की फसल होती है। 5. भाइयों के आपस में बंटवारा हुआ। 6. पहले का। 7. कच्चे घर बनाकर रहते हैं। 8. उस जगह। 9. अच्छा बना हुआ बाजार था।

१ सीनावड़ीयो ५०)

पोकरण था कोस १४ दिषण मांहे। भुणीयांणे था कोस ८ पिछम नुं। षेड़ो सुनो। पहलो धांधळ अचळौ बसतो सु छांड नै[1] भुणीयांणे जाय बसीयौ। षेत सषरा। तळाव नहीं। कोहर १ सागरो पुरस १३, मीठौ घणौ।

१ बांभणू ५०)

पोकरण था कोस १५[1] दिखण नुं। भुणीयांणै था कोस ५। बांभणुवा राठौड़ सूरा रा पोतरा बसता सु छांड गया, नै षेड़ौ चारण पत्तौ रायमलोत घर २० सुं रहै। तळाई भोषोळाई तिण में मास ८ पांणी रहै। कुवा ४ छै।

१ झलोड़ौ ५०)

पोकरण था कोस १३[2] दिखण नुं भुणीयांणा था कोस ३। षेड़ो सूनौ। पहली रा गोयंद भाषरसीयोत बसतौ। हिमैं छांड नै भुणी-यांणै जाय बसीयौ। अठै थकां गोयंद रा बेटां री बसती रा लोक षेत खड़ै। नाडी १ मास ४ पांणी रहै। कुवो १ झलोड़ो, सागरी पुरस १२, पांणी थोड़ो बुरांणो छै।

१ दांतल ५०)

पोकरण था कोस १३ दिखण नुं भुणीयांणा था कोस ३। षेड़ो सूनौ। भुणीयांणा रा लोक ढांणी[2] रहै, षेत षड़ै। षेत निपट सबरा। भुणीयांणा वाळो बाहाळो दांतल री सींव में रेलीजै[3], तठै सेंवज गेहूं १५० मण तथा २०० री ठौड़।

६

१. १४। २. १४।

1. यह स्थान छोड़ कर। 2. गांव के बाहर खेत आदि में बसे हुए घर। 3. वर्षा के नाले का पानी छलक कर जहां खेतों में भरता है।

४१. ५ अतरा[1] गांव रा० जोगाइत हमीर जगमालोत रा पोतरां रै बंट—

१ मांडवो

पोकरण था कोस ५ दीषण नुं। भुणीयांणे था कोस ५ ऊतर नुं। रा० जोगाइत टीकायत[2] मांडवै बसै। हेंसा २, वास २ छै।

१ वास–रा० नरबद जोगाइत रौ।

हमीर भगवान सूरौ मांना[1] रा बेटा छै। मांनौ सीवो कलो जालर[2] नरबद रै वास घर १०१ छै।

१ वास–रा० ऊरजन रौ १००)

ऊरजन केसो[3] नै आसौ महेसोत छै। घर ८ बसतो रा छै। वास २ बुही थोक रा नजीक ही बसै। तळाव १ पांणी मास ८ रहै। कोहर ३ सागरी, पुरस १२ पांणी घणौं, मीठौ। षेत सषरा।

२

१ पाद्रोड़ो १००)

पोकरण था कोस १० दिषण नुं। मांडवा था कोस ५ ऊगवण नुं। रा० आसा महेसोत री बसती रा घर १० तथा १५ बसै। तळाव नहीं। कोहर २ गांव था नजीक, पुरस १६ पांणी मीठौ। षेत सषरा काठा मगरै रा।

१ गांव रातड़ीयो १००)

पोकरण था कोस १० दिषण नुं। मांडवा था कोस ६ ऊगवण नुं। षेड़ौ सूनौ। बरसात में बाडवा था रजपूत आय नै षेत षड़ै।

१. हेमा। २. जाल। ३. केसो रौ।

1. इतने। 2. खानदान में प्रमुख, जिसे जागीर का टीका मिला हो।

कोहर २ नवा रातड़ीया। पुरस १६ पांणी मीठौ, घणौ। तळाव नहीं। षेत सषरा।

१ जालीवड़ो १०००)

पोकरण था कोस १२ दिषण नुं। बडो गांव बडी ठौड। गांव जोगाइत रा पोतरां रो बंट मांहलौ थौ[1]। पिण रा० लूंको रा० जगमाल सांगा लूंकावत रौ षोस नै[2] रा० सीवा कलावत आगा जोरावरी थकौ ली[3]। सु हिमें रा० मालौ परबत देवराजोत[1] री बसतो रा घर २५० तथा ३०० बसै। मालौ देवराज रांणै जैमल लूंकावत रौ। तळाव षंडरौ[2] मास ८ पांणी रहै। कोहर ३ सागरी, पांणी मीठौ, घणौ।

१ साकड़ीयो ५०)

पोकरण था कोस १३ दिषण नुं। षेड़ौ सूनो। कोहर १ पांणी थोड़ौ, पुरस १६, मीठौ। षेड़ौ घणै बरसां रौ सूनौ।

५

३० गांब रजपूतां रा।

४२. सांसण रा गांव परगने पोकरण रा।

गांव सांसण तिण रो विगत—

३ गांव तुंवर पींडतां नुं, दत्त तुंवर रांमदे अजैसिहोत जद धरती दाईजै राठौड़ां नु देनै अठै आय बसीया, तद अठा रा षेत दाबीया था[4]। पछै राव गोयंद रावत पींडत रावत गोईंद रतनावत नुं हळवा चाळीस धरती था कोहर विहंडु दीयौ। पछै राव मालदे गांगावत

---

१. देवराजोतां। २. पांडरो।

---

1. बंटवारे में मिले हुए गांवों में से। 2. छीन कर। 3. जबरदस्ती से ले लिया। 4. दबा लिये, अपने कब्जे में कर लिये।

राव जैतमाल गोईंदोत कनै सातलमेर लीयौ तद धरती हळवा ४० तथा ५०। तळाव टेकरा नै देवलाई रा षेत पींडतां देवकरण गोईंदोत नुं सांसण कर दीया। पछै इयां षेत्रां[1] मांहे गांव बसै छै, सु सारा ही पींडत सरीषा पांनै षड़ै छै[1]। षेत जुदौ। बंट गोत्र रौ कोई नहीं[2]।

१ रांमदेहुरो २००)

पोकरण था कोस ३ उतराध मांहे। बडो गांव छै। बांणीया रजपूत तुंवर कुंभार सुतहार बसै। धरती हळवा १२० तीन ही गांवां री छै। बरसाळी जुवार बाजरी मूंग तिल हुवै। ऊन्हाळो नहीं। तळाव १ रांमदेसर बडौ तळाव छै। पांणी मास १० रहै। पाळ ऊपर श्री रांमदेजी रौ मुकांम छै[3]। तळाव १ रावतसर मास ८ पांणी। कोहर १ राणोभो कोस ०॥ ऊगवण था जीवणो, पुरस २२ पांणी भळभळो। तीनूं ही गांव पीवै। हिमें पींडत रावत भोपत मांड-णोत नै चंदो भोजराजोत नै पूरो भांण रौ नै कुंभौ नराईण रौ छै।

१ वीरमदेहूरौ १००)

पोकरण था कोस ३ ऊतर ऊगोण बीच[4]। पींडत रजपूत बसै। धरती भेळी, बंट छै। तळाव १ मांणकरावसर मास ४ पांणी। कोहर रांणभै[2] पीवै। हिमें पींडत भोपत कान्हा रौ नै ईसर वणीर रौ छै। षेत सोहौ[5] बांट नै षड़ै।

१ सादां रौ वास २००)

पोकरण था कोस ८ ऊतर मांहे। पींडत बसै। धरती भेळी षड़ै छै। तळाव १ टीका रौ मास ४ पांणी रहै। पछै वेरीयां पीवै। नै कोहर रांणीभै पीवै। पहली अठै वास नु हुतौ। बरस २० पहली

---

१. षेतां। २. रांणीभै।

---

1. सब पंडित बराबर जमीन बोते हैं। 2. गांव को हिस्सों में नहीं बांटा है। 3. पाळ पर रामदेवजी का स्थान बना हुआ है। 4. उत्तर पूर्व के बीच में। 5. सभी।

पींडत डूंगरसी हेमावत रांमदेहूरा था अठै आय बसीया था, सु बसै छै। नै पींडत जगत गोपाळ रौ नै जेठौ ठाकुर रौ छै।

३

१ बांभणां नुं–१ गांव

मछावळो–

पोकरण था कोस···। षेड़ौ सूनौ छै। प्रो० फळोधी रा[1] पिरोहत सीवड़ा नुं छै। सांसण छै, धरती हळवा···। हिमैं प्रो० भागवांन देईदासोत छै।

४

४३. ११ चारणां नुं–

१ भाषरी १००)

पोकरण था कोस ७ दिषण था डावौ। दत्त राव गोईंद नरावत रौ, बारैट अचळा धणपालोत रौ रोहड़ीया जात मीषस नुं राव गांगै री जोधपुर वार, तद षेत दीया था। तद रावत अभीयड़ भोमोत देवराजोत सेतरावै रौ धणी गो० कालावा[2] रा ही षेत दीया छै। आपरो बारैट दीयो छै। हिमैं बारैट हेमराज षींवा रौ नै मालौ समुरता रौ सुरतांण जालप रौ छै। चारण बसै। हळवा ६० धरती। धांन सारा हुवै, ऊन्हाळी नहीं। तळाव १ मास ५ पांणी रहै। पहली झालरीया री वेरीयां पीवता। हिमैं कोहर नवौ षीणायौ छै[1]।

१ वोढणीयो[3] १००)

पोकरण था कोस ७ आथवण मांहे। दत्त भाटी रावत कीलांणदास हरदासोत रौ। चारण पता वरसावत जात रतनूं चेराई आस रा[4]

१. परगना रा। २. कालाऊ। ३. ओढ़णीयो। ४. आसा रा।

1. अब नया कुंआ खुदवाया है।

नुं। जैसलमेर थकां गांव सांसण कर दीयौ। तदे पौकरण भा० मेघराज मु० नराइण नै कलु कांमदार हुता। इणां नुं हुकम आयौ तरै यां आय सांसण कर दीयौ। चारण बसै। धरती हळवा १००। धांन सारा ही हुवै। षेत सषरा। पहली कांटण[1] वाळी रेल आवती तदे सेंवज हुती। हिमें चारण कान्हौ नै मेघौ[2] पतावत छै।

१ मांडवो, वास ४ २५०)

पोकरण था कोस ४ दिषण मांहे। दत्त राव हमीर जगमालोत रौ, रावळ माला रौ पोतरौ[3], चारण अषीया[4] सोढावत जात सोढाइचा नुं। गांव माडवा रा षेत दीया था पछै सींढाइच राजौ अषई रौ तिण नुं कोहर १ रा० जोगाइत हमीरोत दीयौ, तरै राजौ जुदौ षेड़ौ कर नै बसोयौ[1] थौ, सु बसै छै। नै चारणां रा धड़ा ४ छै[2] तिण रा वास कहीजै छै। षेड़ो १ छै। चारण बसै। धरती हळवा ५०। धांन सोह हुवै। षेत सषरा। ऊनाळी नहीं। कोहर १ कीरोलो सागरी पुरस ७, भळभळो। त ाव १ अषाईसर बरसोंदीयौ पांणी। तळाव २ मास ६[5] तथा ४ पांणी रहै। हिमैं सिढाइच देईदांन डूंगर रौ नै चोलो षेतसी रौ नै माहव आसा रौ नै घड़सी हेमा रौ छै।

१ म्हैडू जीवण रौ वास

पोकरण था कोस ८॥ दिषण मांहे। दत्त पोकरणा रा० माला परबत देवराजोत नै करण रतनसीहोत नै हदौ कान्हावत नै गोदो मेघराजोत लूंका नै राव कवरो मांणकराव रौ नै जीवण भोजावत नै सगतो धारावत भुणीयांणी पोकरणां रौ चारण जीवण करमसीहोत जात म्हैडू(नुं) संमत १६६२ रा जेठ मांहे सांसण कर दीयो थौ। पोकरणां नै गांगादेयोतां (रै) वैर हुतौ[3] सु

१. काढण। २. माधो। ३. पोतरां रौ। ४. अषई। ५. ८।

1. अलग बस्ती बसा कर रहने लगा। 2. चार परिवार अलग-अलग हैं। 3. आपस में वैर था।

भांजीयौ[1]। तरै जीवण नुं कह्यौ– तूं षीच कर, तो नुं षेत देसी। पछै षेत दीया, तिण में बसीयो थौ[2]। हिमें सूना छै। धरती हळवा २० धांन सोह हुवै[3]। षेत सषरा। हिमें म्हैड़ू देवीदास जीवण रौ छै। म्हैड़ू षीदा रौ वास में बसै छै। तठै पांणी पीवै।

४ वास झलारीया रा

सांसण छै। चारणां नुं झलारीया री धरती सांसण कर दीवी थी तठै चारण रतनूं बसीया।

१ रतनूं रूपसी रौ वास १००)

पोकरण था कोस ७ दिषण मांहे। दत्त भाटी रावळ भींव हरराजोत रौ चाकर रूपसी कवरावत जात रतनू नालहा[1] नुं। जेंसलमेर थकां षेत सांसण कर दीया। तद पोकरण भा० मेघराज मु० नराइण कांमदार था यांनुं हुकम आयौ, तरै इणां आय सांसण कर दीया। चारण बसै। धरती हळवा २०। धांन सोह हुवै। षेत सषरा ऊनाळी नहीं। तळाव १ मास ४ पांणो रहै। कोहर कोई नहीं। पाषती रा गांव पांणी मांगीयो पीवै। हिमें रतनूं किसनो पीथौ रूप-सीहौत नै जगो षेतसी रौ छै।

१ म्हैड़ू षीदा रौ वास १००)

पोकरण था कोस ८ दिषण मांहे। दत्त भाटी रावळ मनोहरदास कोलांणदासोत[2] रौ। चारण षीदा[3] अणदोत जात म्हैड़ू नुं। संमत १६८८ सांवण वदि १३ जैंसलमेर थकां षेत सांसण कर दीया। तद पोकरण भाटी दुरगदास मु० ऊधव मु० भोजौ अै कांमदार हुता, तद षेत दीया। पहली रावळ कोलांणदास चा० षीदा नुं षेत्रां रौ हुकम[4]

१. नाला। २. कल्यांणदासोत। ३. षोवा।

1. समाप्त किया। 2. उन खेतों में बसा। 3. सभी अनाज होते हैं। 4. खेत प्रदान करने का आदेश।

कीयौ थौ। चारण बसै। धरती हळवा २०। धांन सोह हुवै। षेत सषरा। ऊनाळी नहीं। तळाव[1] १ मालदे रौ। मास ४ पांणी। पछै पाषती रा गांव मांगीयो पांणी पीवै। हिमें म्हैड़ू हरदास षीदावत छै।

१ रतनूं भारमल रौ वास १००)

पोकरण था कोस ७ कीलांणपुर, दिषण में। दत्त भाटी रावळ कीलांणदास हरराजोत रौ चारण भारमल धारावत जात रतनूं चेराई नुं। रावळ कीलांणदास अजमेर पातसाहजी रो हजूर आया था, पछै पाछा आवतां रौ[1] हुकम कीयौ थौ। सु अठै था पोकरण आया तरै मु० नाराइण नै भाटी परतापसी नुं हुकम कीयौ, त्यां आय सींव काढ दी[2]। हमार षेड़ौ सूनौ छै। हिमें रतनू रांणो भारमलोत छै सु गांव सांमसीसर[2] थळ रौ बसै छै। धरती हळवा २५। धांन सोह हुवै। ऊनाळी नहीं। सरै २ छै—१ जसीहत नै १ रावळोत री। कोहर १ पाबासरीयो, कोस १ ऊतर था जीवणो। हिमें पांणो नहीं। तळाव १ मास ८ पांणी हुवै। आ तळाई संमत १७··· इण गांव वांसै पड़ी छै[3]।

१ सिढाइच मेहका रा वास १००)

पोकरण था कोस ५ दिषण मांहे। दत्त रा० प्रथीराज गोईंदोत नरावत रौ, सिढाइच मेहका सोलावत नुं। राव गोईंद री वार मांहे झलारीयौ पटै थौ तरां[4] षेत दीया था। बसतो षेड़ौ जुदौ कोई नहीं। सिढाइच मेहका नुं झलारोये रा षेत दीया था सु झलारीया मांहे मंडै। नै मेहको, सिढाईच उजळ रौ पोत्रौ छै सु गांव ऊजळां मांहे बसै छै। अठा रा षेत षड़ै छै। धरती हळवा १ धांन सोह हुवै। षेत काठा सषरा। ऊनाळी नहीं। तळाई १ पांणी दिन १५। ऊजळां भेळौ पीवै। हिमें चारण करमसी महेसु[3] रौ नै चंदो अमरा रौ।

---

१. तळाई। २. सोमसीसर। ३. महेसुर।

---

1. लौटते समय। 2. उन्होंने आकर सांसण की भूमि की सीमा कायम कर दी। 3. इस गांव के साथ ई। 4. तब।

१ ऊजळां १००)

वास ४ कहीजै । वास २ बसै । षेड़ा भेळा छै[1] । पोकरण था कोस ४ तथा ५ दिषण मांहे । दत्त रावळ गोईंद नरावत सूजो जोधावत रौ, चारण लोलो नोषावत जात सिढाइच नुं । सातळमेर थकां पाषती रा षेत ले सांसण कर दीया । कहै छै, राव जोधोजी गयाजी पधारीया तरै सिढाइच नोषो ऊजळोत साथे थौ । सु गयाजो मांहे बीजौ धरम कीयौ जींठे नाहर मारीयां रौ हो धरम लीयौ जोईजै । तरै सा० नोषे कह्यौ—मैं नाहर मारीयो छै[1] । पिण धरम नै दत्त रै कंवर सातल रौ बारैट दीयौ । नै षेत रौ ही हुकम कीयौ । सिढाइच पिड़ीहार रौ चारण बारट छै । पछै राव सातल जोधपुर टीकै बैठौ तरै रोहड़ीया नै सिढांइच बेऊ बारैटां नुं आवै[2] । तरै कंवर नरौ सातल रै षोळै छौ[2] तिण रौ बारैट[3] दीयौ नै टीकायत रौ न दियौ । पछै राव नरा नुं फळोधी हुई । पछै पोकरण ली नै सातळमेर कोट करायौ । तठा पछै राव गोईंद वेगो होज टीकै बैठौ । तरै सिढाइच लोलो नोषावत गोईंद कनै आवै । तरै अै षेत सांसण कर दीया, त्यां में बसीया[3] । चारण बसै । वास २ छै । धरती हळवा ६० सोह धांन हुवै । षेत काठा सषरा सेंवज गेहूं हुवै । कोहर ३ षारा, बूरीया छै । तळाव मास ८ पांणी रहै । हिमें चारण जैमल रांमदायोत[4] नै जगमाल सूजावत नै देईदांन हापावत छै ।

१ नांदणहाई रौ वास १००)

पोकरण था कोस ६ आथूण डावौ । दत्त पोकरणा राव सूजौ नै सांगो नै जैमल नै चांवंडौ[5] लूंका रा बेटां रौ चारण लूंभा नै सादा मेघावत जात वोठू नुं । गांव साकड़ै थकां सांसण कर दीयौ । त्यां में

१. में न मारीयौ छै, पण ध्रम न दै तरै सातल रै बारटो दीयौ । २. आया । ३. बारटो । ४. रांमदासोत । ५. चंवड़ो ।

1. गांव-बस्ती शामिल ही है । 2. गोद गया हुआ था । 3. उन खेतों में आकर बसे ।

चारण आय बसीया । चारण बसै छै । धरती हळवा ४३ । धांन सोह हुवै । ऊनाळी षेत जोगीहत[1] में सेंवज हुवै । नाडी नांदणहाई मास ४ पांणी । पछै पाषती रा गांवां मांगीयो पांणी पीवै । हिमें चारण तोगो सिवदांन रौ नै षेतसी पीथा रौ छै । नाडी वांसै षडीण छै । तिण रौ हासल पोकरण लै छै । गूघरी मण १६० रावळै दै छै । गांव सांसण छै ।

१ गांव केलावो आधौ ५०)

पोकरण था कोस ३ आथूण में । दत्त राव गोयंद नरावत रौ, चारण नाल्हा वछायत[2] रतनू जात रीछेड़ा नुं । पहली रतनू नाल्हो[3] देवळीया[4] री नाडी भेंसड़ा कनै छै तठै बसतो । सु रा० षींवो बरजांगोत पोकरण री गायां ली[1] । बांसे राव नरौ बाहर आपड़ नै[2] गांव देवलीयाळी वेढ कीवी[3] । तठै राव नरौ कांम आयौ । साथ घायल हुवा था त्यांरा रतनू नाल्हो घणा हीड़ा किया[4] था । पछै राव गोईंद टीकै बैठौ । रतनू नाल्हो गोईंद कनै आयौ । गांव केलावौ सूनौ षेड़ौ थौ, पछै भाटी वीरम जोधावत नै नाल्है नुं आधो-आध कर दीयौ[5] । तरै कोहर बंधाई नै[6] बास २ कर बसीया था । षेड़ो हिमें सूनौ छै । धरती हळवा १५ धांन सोह हुवै । ऊनाळी नहीं । तळाई मास १ पांणी । पछै कोहर रौ पांणी पीवै । हिमैं चारण ऊदौ हमीर रौ नै भानौ भारमल[5] रौ छै ।

११

१

जु० गांव ८६, तिण में गाव ६१ मंडीया । बाकी २५ गांव मांडणा[7] ।

---

१. जोगीहेत । २. वछावत । ३. नालो । ४. देवलीयाली । ५. भरमा ।

---

1. पोकरण की गायें ले आया । 2. गायों को प्राप्त करने के लिये पीछा करके । 3. युद्ध किया । 4. बड़ी सेवा चाकरी की । 5. आधा-आधा गांव दोनों को दिया । 6. अलग कुंआ बनवा कर । 7. लिखने बाकी हैं ।

परगने रा गांव मंडीया नहीं विगत वार तिण री ठीक कर मांडणा – – – – ।

४४. परगने पौकरण रौ पातसाही दफतर सातलमेर लिषीजै छै[1] । दरगाह सुं दांम ८००००० मांहे संमत १७०५ रा वैसाष मांहे पायौ । श्री माहाराजाजी रै रुपीया ४१०००) रा० सबळसिंघ प्रागदासोत राव चंद्रसेन सबळसिंघोत नुं संमत १७१५ रा फागण वदि १३ इण भांत दीयौ—रेष संमत १७२१ रा मंगसर सुदि ७ मुहणोत नैणसी पा० नरसंघदास इण भांत दुरस कर[2] रेष मांडी । तिण री विगत—

गांव	रुपीया	आसांमी
४०	२७०६०)	गांव हासलीक

रुपीया	आसांमी
१००००)	कसबै दांण सुधो १
४००)	चाचा बांभण १
२००)	भींवो भोजो १
४००)	धुहड़सर १
५००)	ऊधरास १
८००)	बांभणु १
१०००)	छायण
१००)	थाट
७०)	गाजण कालर री सरेह
२००)	वलहीयो १
२००)	दूधीयो १
१५०)	भोपी री सरेह १
२५०)	ढंढ री सरेह

1. परगना पोकरण बादशाह के दफ्तर में सातलमेर के नाम से लिखा जाता है ।

2. ठीक करके ।

६००)	बड़ली	१०००)	बांणीयां बांभण
१५००)	पचपदरो १	८००)	काला बांभण १
४००)	माहव १	१५००)	लोहवो
१०५०)	झालरीयो २	७००)	ढंढ १
५००)	जसवंतपुरो १	१०००)	षारो १
१०००)	मंढलो १	५००)	चांदसमो १
२५०)	राहड़ रौ गांव १	१५०)	केलावो
१५०)	जैसंघ रौ गांव १	१००)	एका
८०)	गोमटीया मोहर कालर		
१५०)	राहपो १	१००)	षालत सरवण री सरेह
१००)	नेहड़ री सरेह १	४००)	वरडांणो १
५०)	सोढां री सरेह १	१००)	षेतपाळीयां री सरेह[1]
२५०)	गलरां री सरेह		

३०	५१००)	पोकरणा राठौड़ जगमाल रा रजपूतां रा।
१५	१७००)	सांसण चारण पींडत बांभणां नुं।
८५	३३८६०)	
०	७०००)	मेळा २, श्री रांमदेजी रा देहूरा रा।
८५	४०८६०)	

॥ समाप्त ॥

१. 'ख' प्रति में गांवों के क्रम में भिन्नता है।

परिशिष्ट—1

[मारवाड़ के कुछ अन्य परगनों की विगत]

(क) वात परगने सांचोर री

१. कदीमी तौ सगतीपुर सैर थौ। बसीयां री ख्यात नहीं। ऊपर राज श्री सिवजी माराज रौ थौ, नै नदी सरसती वेती थी। सिवजी माराज कैळास पदारीया तरै चेला संकरजी नें राज भोळायो थौ तरै आगे तौ सैर रा मिनखां रै कोकड़ी १ सूत री लागती सु देता पछै संकरजी कोकड़ी २ घर दोठ[1] सूत री लीवी। पछै सिवजी माराज तपस्या कर कैळास सूं पधारीया तरै सैर रा लोकां भेळा होय नै सिवजी माराज नै अरज कीवी कै म्हांने आपरा चेला संकर-जी ओघ दीवी नै दूणी लाग लीवी। तरै सिवजी माराज संकरजी नै ओळंबो दियो[2] नै लोकां री खातर कीवी। परंत संकरजी कही—लोक भूठा है। सराद पक्ष है सो गांव मांह सुं दूध मंगावौ। तरै सैर में समसतां रै[3] घरै केवायौ[4] —परभाते दूध मेलजो[5]। सु सारा गांव रा लोक दूध लाया। सु घणौ पांणो नै थोड़ौ दूध। दूध लाया सो हौद[6] में भेळौ करायौ, सु हौद में नोय नै[7] परा गया। एक कुंभार बिनां पांणी साबत दूध लायौ, नै आगे दूध देखीयौ, पांणी तौ घणौ नै दूध थोड़ो तरै सिवजी माराज नै चेले संकरजो दूध रौ हवद देखीयौ नै वेराजी हुय नै[8] सकतीपुर सैहर रौ नांव थौ जिण रौ तौ नांव सांचोर दोयौ। नै इण मुजब सराप[9] दीयौ। तिण री विगत इण मुजब—

नदीयां नीर नहीं।
सतीयां सत नहीं।
ब्राह्मणां वधारो[10] नहीं।
असत्रीयां रूप नहीं[11]।

---

१. प्रत्येक घर से। २. उल्हना दिया। ३. समस्त लोगों के। ४. कहलवाया। ५. प्रातःकाल दूध भेजना। ६. हौज। ७. डाल कर। ८. नाराज हो कर। ९. श्राप। १०. फलेंगे-फूलेंगे नहीं। ११. स्त्रियां रूपवती नहीं होंगी।

इण तरै सराप दे, वेराजी हुय नै श्री सिवजी माराज नै चेला संकरजी कैळास पधारीया। उण दिन सु सांचोर नांव है।

२. पछै सांचोर ऊपर मांडवां रौ तथा बोगरा पातसा वगेरे केई राज रैया[1]। पछै कालमां परमारां रौ राज हुवौ। सु परमारां रा राज तांई बहीयां में ख्यात नहीं[2]।

३. सोनगरा चवांण कांनड़दे बेटा बीरमदे नै कांनड़दे रा भाई संवरसी जाळोर ऊपर राज करता सु संवत १३३७ में पातसाह अलाउदीन वीरमदेजी संवरसीजी नै मार नै जाळोर लीवी। नै संवरसीजी रा बेटा १ चुंग सालमसिंघजी १ बीकमसिंघजी १ हापोजी १ कूंभोजी अे चार जणा सांचोर रै गांव सेवाड़े आया नै जायगा कराई[3]।

४. सेवाड़े रह्या नै पछै संमत १३५६ रा बरस में बीकमसिंघजी रा मांमा कालमा सांचोर राज करता जिणां नै मार नै सांचोर लीवी। व सूराचंद ऊपर रांणुवां नै मार नै सूराचंद हापे लीवो नै तीजौ भाई चुंग कूंभोजी नै सांचोर रा तथा सूरचंद रा पटा मांह सु गांव ४८ अड़तालीस दीया। तरै कूंभोजी कांमलोकोट करायौ[4]। सु कुंभोजी तौ कांमलोकोट रह्या नै हापोजी सूराचंद राज कीयौ। नै राव बीकमसीजी सांचोर ऊपर राज कीयौ। बीकमसी रा बेटा राव संगरांमसिंघजी रा बेटा पातोजी भोमजी नै पातोजी रा बेटा राव वरजांगजी नै वरजांगजी रा बेटा राव जैसंघदेजी। जैसंघदेजी तांई तौ सोनगरां रौ राज रह्यौ पछै फेर पातसा री तथा पातसा री तरफ सु धवेचां रौ तथा बीहारीयां रौ। संमत १६६१ सुधी रह्यौ जितरै सोनगरा चवांण जैसिंघदेजी रा बेटा १ नेवाजी नै १ बारो रांणो। रांणा रा १ मेकरजी, मेकर रा १ सांवतसिंघजी। इतरी पीढी सोनगरां रै राज रह्यौ नहीं। सांचोर रा गांवां में बैठा था।

५. पछै सांवतसिंघ रा बेटा राव बलूजी रै सांचोर रहो, सु हेटै ख्यात में विगत आवसी। नै संमत १६६५ लगत[5] राज रैया तिण री विगत हेटै उतारी छै[6]।

कसबे परगने सांचोर रै असल दांम लाख २४ असी हजार, श्री पातसाजी रै दफतर छै।

---

१. अनेक राज्य रहे। २. परमारों के राज्य तक का वृत्तांत प्राचीन बहियों और ख्यातों में लिखा हुआ नहीं मिलता। ३. मकान आदि बनवाये। ४. कामलीकोट बनाया। ५. तक। ६. नीचे लिखी गई है।

६. दां. २४८००००, पैला[1] तौ जागीरी पातसाजी श्री..............रा अमल मांहे माराज श्री सूरजसिंघजी जोधपुर रा धणीयां नै हुई सु संमत १६६५ वें सूधी रही। नै पछै महाराज श्री गजसिंघजी देवलोक हुवा तरै ऊतरी[2]।

७. दां. २४८००००, जठा पछै नबाब श्री मीरखांन थटाई वाळा नै हुई। संमत १६६७ पछै ऊतरी। जालोर वास रया।

८. दां. २४८००००, तिण केड़े[3] नबाब काजमखांनजी ने हुई सु बरस एक रही, जाळोर वास था[4]।

९. दां. २४८००००, माहाराव श्री बलूजी चुहांण नै संमत १६६६ में हुई पातसा साहाजांन दो थी। नै जाळोर माहाराज श्री महेसदासजी रै हुई। सांचोर राव बलूजी चवांण ने थई। आगे राव वरजांगजी नै हुती तिण केड़े राव बलूजी ले आया।

१०. दां. २४८००००, तिण केड़े। राव बलुजी रांम केया तरै[5] फतैखांन जाळोरी नै हेंसा ३।। हुवा, दांम......संमत १७१७ में हुई।

११. पटौ १ चुंग सगतसिंघ वेणीदासोत नै हुवौ। वेणीदास रै पटौ मास ६ रेयौ। दरोवसत[6] पण पातसाजी रै हजूर। बेगजी फौत थया[7] तरै भाग ५।। थया।

पटो १ चुंग सूरजमलजी राव बलूजी रा बेटा रै दांम लाख।

२४८०००० संमवत १७२१ रा बरस में पातसाजी रै खालसै रयौ। साख बरसाळी था लीदी[8]।

१२. दां. २४८०००० संमत १७२१ री ऊनाली था माहाराज श्री जसवंतसिंघजी माराज रै थई सो १७३५ रा बरसाळी मांहे माहाराजाजी काबल रै थांणे धांम पधारीआ[9] तरै ऊतरी[10]। पातसाजी श्री औरंगसाजी रा अमल में। पातसाजी १७१५ में तखत बैठा तिण केड़े माराजाजी नै थई।

---

१. पहले। २. गजसिंहजी का स्वर्गवास होने पर जोधपुर से अलग करदी गई। ३. उसी समय, करीब उसी रकम में। ४. निवासस्थान जालोर था। ५. बलूजी की मृत्यु होने पर। ६. दरोबस्त, सम्पूर्ण। ७. मृत्यु को प्राप्त हुए। ८. खरीफ की फसल से बादशाह के अधिकार में हुई। ९. स्वर्गवास हुआ। १०. तब जोधपुर राज्य से अलग हुई।

१३. दां २४८०००० संमत १७३५ बरस, ऊनाळी सुं पछै रांमसिंघ मोकमसिंघोत राठौड़ जोधा सुजांणसिंघजी रा भतीज नै हुई । बरस ऊनाळी ।

१४. दां. २५५४४०० संमत १७३६ बरसाळी थी दीवांण श्री फतैखांन रै हुई । तरै दांम ४४०० ईजाफे थया[1] । मुकरड़े दांम[2] ऊपर है सरे जन ।

१५. पछै माहाराज श्री रांमसिंघजी रतनसिंघोत नै हुई संमत १७३७ री बरसाळी थी, ऊपर ऊनाळु मैं बालोलखां सेरांणी नै गुजरात थई मास २ तथा ३ । उणां री तागीरायत १७३८ में ।

१६. दां. २०५४४००, दूजी वार दीवी । श्री फतैखांजी नै हुई संमत १७३८ रा तिण रा दांम लाख ५ घटाड़ नै[3] ।

१७. दां. १३५४४००, संमत १७४० री बरसाळी साख थी थई सादी कासम गुजराती नुं दांम घटाय नै दीवी नै चवांण सैसमलजी भाग लीधो । विगत इण मुजब—

८७९४०० सादी कासम रै हुआ ।

४४१००० चवांण सैसमल ।

३४००० चवांण सूरजमल ।

१३५४४०० बोज़ा दांम उतार नै लीवी ।

१८. दां. २०५४४०० तिण केड़े संमत १७४२ में दीवांण श्री फतैखांजी नै साख ऊनाळी थी हुई तरै दांम लाख ७ बधाय नै[4] लीवी । संमत १७४३ दीवांण फतैखां असवारी कटक मांहे मोज का चेले आवतां फौत हुवा । तरै तागीरायत हुई । तरै राव सैसमलजी रा दांम बाल रया ।[5]

१९. दां. २०५४४०० तिण वेळा संमत १७४४ रा वरसाळी साख श्री दीवांण श्री कमालखांजी नै थई । साख में बंट[6] सैसमलजी रौ भेळो रयौ ।

२०. दां. २५५५४०० चवांण सांवळदास नरहरदासोत बलूजी रा पोतां नै हुई । दांम वधाय नै असल कीया नै सैसमलजी रा दांम ४४१००० रा गांव बांट दीया । नै सांवळदासजी दिखण मांहे गढ हड़मताई कांम आयौ, पछै सांवळदासजी रै तागीरायत थई[7] ।

---

१. रकम बढ़ा दी । २. कुल दांम । ३. कम करके । ४. बढ़ाकर । ५. बरकरार रहे । ६. फसल की पैदावार में हिस्सा । ७. सांवळदास के अधिकार से हट गई ।

२१. दां. २५५४३०, पछे संमत १७४६ रा बरस में दूजी बार प्रगनो हुवो है दीवांण श्री कमालखांजी नै। प्रगनो हुवो विगत इण मुजब—

२११३४०० दांम कमालखांजी नै प्रगनो हुवौ।

४४१००० दांम राव सैसमलजी रै आगे वंट थो जिण मुजब[1]।

२५५४४००

१०२१००० पछे संमत १७४९ तथा १७५० राव श्री सैसमलजी रो बेटो, ईजाफो हुवौ।

४४१००० बांटो १ तौ पैली दांम लाख ४ ने इगताळीस हजार।

२८०००० बांटो १ बीजो हुवौ दोय लाख असी हजार।

३००००० बांटो १ तीजो, दांम लाख तीन रा गांव सतरै १७।

१०२१०००

५०००० भाटी देवीदासजी नै दांम हजार पचास अद-लाख[2] रा दांम हुवा।

२२. दां. २५५४४००, माहाराज श्री अजीतसिंघजी नै हुई खालसा रौ थको दांम लाख २५५४४०० संमत १७५५ में थई वीगत दांमां री—

१४८३४०० माहाराजाजी नै

१०२१००० राव सैसमलजी नै

५०००० भाटी देवीदासजी नै।

२५५४४००

संमत १७५५ माहाराज श्री अजीतसिंघजी नैं जाळोर सांचोर हुई नैं सैंसमल चवांण रै पटै हेंसा ३ साख सांवणू थी हुवा। नै वीड खायां गया। सं० १७५६ बरसाळी महीना में नै वुठा बरस करवरो[3] थयो।

संमत १७५५ थी माहाराज श्री १०८ श्री अजीतसिंघजी माहाराज रै जाळोर, साचोर साख सांवणू थी हुई, जठा सुं लगाय आज तक श्री हजूर साहबां रै प्रगनो सांचोर आबाद है[4]।

---

१. पहले हिस्सा था उसी के अनुसार। २. आधा लाख। ३. पैदावार की दृष्टि से कमजोर। ४. अभी तक सांचोर का परगना जोधपुर राज्य में है।

२३. प्रगने कसबे सांचोर सं० १७२० थी, साल-साल री गोसवारो लेखो, ऊपना पईसां री विगत[1] तफसीलवारः—

१४१६३) सं० १७२० रै बरस री जागीर फतेखांजी नुं। चवांण सूरजमल सगतसिघोत भागा ५।। — बरासाळी दुकाळ[2]

२८३८।।)४३ नाळी रा ऊपनीया।

११३२४।।)१। घासमारी सायर री।

१४१६३)१

२३६८३।।।) सं० १७२१ खालसे पातसाजी रै। साख ऊनाळू महाराजा जसवतसिंघजी रै—

१७५१७।) बरसाळू ऊनाळू।

६४६६।।) सायर बाब घासमारी रा।

२३६८३।।।)

३८२३८) सं० १७२२, माहाराजा जी।

७३३५।।) सायर बाब रा।

४२५४) कसबा रा।

३८०।।) प्रगना रा।

३०६०२।।) खुराक रा।

२८८३२।।) खुराक।

६५०=) हजांम प्रीयो।

२७६=) मांहर रा।

३७८) कणवार रा।

१ बरसाळी नहीं।

४५८।) ऊनाळी।

७) नीहड रा।

३०६०२।।)

२४५६०।) सं० १७२३ रा।

१६१२८=) बरसाळू रा।

१०७६८।।=) ऊनाळू रा।

६६६४।।) घास की रास बाब रा।

३०६३२) सं० १७२४ रा।

२४७३८) बरसाळू रा।

११७८) ऊनाळू रा।

५०१६) सेर बाब रा।

३०६३२)

३५२६१।) सं० १७२५ रा।

२५२३८) बरसाळी रा।

६५६।) ऊनाळू रा।

६३६४) सेर बाब रा।

३५२६१।)

२३१६८) सं० १७२६ रा।

२३६६४) सांवणू रा।

२७६) ऊनाळू रा।

३६५५) सेर बाब रा।

२८१६८)

---

१. प्रति वर्ष रुपये पैदा हुए उनकी विगत। २. अकाल था।

२७३६१) सं० १७२८ रा।
१७७७३) बरसाळू रा।
३३७३) ऊनाळू रा।
६२४५) सायर रा।
२७३६१)

२८६१६) सं० १७२७ रा।
२२३७७) बरसाळी रा।
६२०।।।) ऊनाळी रा।
५१२१।) सेर बाब रा।
२८६१६)

२०३८३) सं० १७२९ रा।
१२५२१) खुराक रा।
२५५२) बांटा रा।
५३१४) सायर रा।
२०३८३)

३५२४४) सं० १७३० रा।
बरसाळू रा।
सायर रा।
३५२४४)

२०४१७।।) सं० १७३१ रा।
१२१४२।।) सावणू रा।
६०८।।) ऊनाळू रा।
७३६६।।) सायर फरोई।
२०४१७।।)

२९ ४६।।।) सं० १७३२ रा।
२०९२६।) बरसाळू रा।
३२३०) ऊनाळू रा।
५५०९।।) सायर रा।
२९७४६।।।)

१८४९३।।।) सं० १७३३ रा।
१४१२१) बरसाळी रा।
२०९३।।।) सायर सेर रा।
२२४९) ऊनाळू रा।
१८४९३।।।)

४०००२।।) सं० १७३४ रा।
३४५३२।।) खरीफ रा।
२५७०) रबी रा।
२९००) सायर फरोई रा
४०००२।।)

२८३१०।।) सं० १७३५ रा।
२३५२४) बरसाळू रा।
४७४) ऊनाळी रा।
४३१२।।) सेहर रा।
२८३१०।।)

३१७८३) सं० १७३६ रा।
२३९७०।) बरसाळी रा।
२६६७।।) ऊनाळी रा।
५११५।) सेर फ़रोई रा।
३१७८३)

३०६६९) सं० १७३७ रा।
२४२७३।) बरसाळी रा।
८६०) ऊनाळी रा।
५५३५।।।) सेर फरोई रा।
३०६६९)

२६४९०) सं० १७३८ रा।
१८५५७।।) सावणू रा।
५५८४।।) राबी रा।
२०५८।) सेर फरोई रा।
२६४९०।)

११६१४) सं० १७३९ रा।
४५८६) बरसाळी रा।
१८७४) ऊनाळी रा।
५१५४) सेर फरोई रा।
११६१४)

२४६७३) सं० १७४० रा।
१८३८४।) बरसाळी रा।
४०३७।।) ऊनाळी रा।
२२५१।) सेर रा।
२४६७३)

२३२०८) सं० १७४१ रा।
१५९०४।=) बरसाळी रा।
३७४९।।) ऊनाळी रा।
२१५१) सेर रा।
२१८४।।।=) चवांणां रा।
१४०३) गांवां रा।
२३२०८)

४७५५) सं० १७४२ रा।
३२००) बरसाळी रा।
१२५५) ऊनाळी रा।
३००) सेर बाब फरोई।
४७५५)

१५७३८) सं० १७४३ रा।
१०६८०।=) सांवणू रा।
१८७५।।) ऊनाळु रा।
११८२।।) सेर रा।
२०००) चवांणी रा
गांव रा।
१५७३८)

१३२१२॥) सं० १७४४ रा।
७८२८) सांवणू रा।
१०८५॥) ऊनाळु रा।
१३७६) सेर रा।
२९२३) चवांण रै गांव रा।
१३२१२॥)

१४९८१) सं० १७४५ रा।
११३८०।) खरीफ।
२१८८॥।) रबी।
१४११) सेर रा।
१४९८१)

१७११०॥) सं० १७४६ रा।
११७५५) खरीफ रा।
३९१५॥।) रबी रा।
१४३९॥।) सायर रा।
१७११०॥)

१४३९७) सं० १७४७ रा।
११४६६।) खरीफ रा।
१४७९॥।) रबी रा।
१४४१) सायर रा।
१४३८७)

१३१५३) सं० १७४८ रा।
११८९३) सांवणू रा।
१२६०) सायर रा।
१३१५३)

१२८६१॥) सं० १७४९ रा।
१०३१३॥) सांवणू रा।
१२०२॥) ऊनाळु रा।
१३४५॥) सायर रा।
१२८६१॥)

१५२१०॥) सं० १७५० रा।
१२३९४) खरीफ रा।
१२५७॥) रबी, सेंवजी रा।
१५५९) सायर रा।
१५२१०॥)

१४९५३) सं० १७५१ रा।
सांवणू, ऊनाळू रा।

२४१३९) सं० १७५२ रा।
साख सांवणु, ऊनाळू सगळी रा सांमल[1]।

---

१. दोनों फसलों की शामिल आमदनी।

५२५३) सं० १७५३ रा बरसाद काळ पड़ीयौ[1] । घास चारो नहीं । मेह थोड़ो वूठो[2] । वित घणौ मुवौ[3] । पड़ रा गांवां में तथा थळ में मिनख गोळू कर नै[4] ढोर चारवा नै नई पड़ रा घास चार में आवै, उणां ऊनाळू रा गांवां मै कोसीटा, नै साख बाजरी । रु० १) री पां० १२ ली । पासई १ रा रु० २) ।

१४०१) सं० १७५४ रा महाकाळ थौ । आधांन खंड में नेपत हुई नहीं[5] । प्रगनां रा गांव सगळाई सूंना थया[6] । मांणस वरतवा गुजरात गया । नै जठै घणो मेह थयौ[7] तठै मिनख मांदवाड़[8] नै भूख घणौ, तरै मुवा । सुंराचंद जावतां मांणस दुपाल कर-कर धाव वित लेनै गया । सरब धाव वित भीलां मार लीना[9] । सूराचंद देस सूंनो कीधौ नै कसबे बसती रही[10] । काटो कर नेड़ीलु घणो आव दोवण कमालखां नै व्यारी रा अमल जकां न थायां भीलां रा कटक थया ।

७५१०) सं० १७५५ रा मांहे, माहाराजा जी श्री अजीतसिंघजी नै जाळोर सांचोर हुई । नै सांमल चवांणां रा पेहेला ३ साख सांवणू तीड खाये गया, नै खंड थया । मोठ वा दुण री खांण खाय गया ।

४००१) सं० १७५६ रा बरसाळू मेह वूठा । बरस करवरो थयौ[11] । खंड घणा थया । गोहुं रु० १) रा ऽ१ ली १ नै बाजरी रु० १) री म०१, काती-सरे सीयाळे नी । राजाजी राज अमल सखरु । सूराचंद रांणा सारुद रा बेटां रांणा जीवण लख सा० सूराचंद थी परा काढ न[12] चवांण सिवराज बावे छा नै सलांमी रु० ३०००) रोकड़ा ले नै ही जुदी धू रांणा जीवण लखो परा काढीया । सो पारकर में जाय नै रया[13] ।

२४. प्रगना सूराबंद रा गांव आगे[14] तो रांणपुरे था । पछै संमत १३३७ में चवांण वीरमसिंघ जाळोर कांम आयौ । नै चवांण सालमसिंघ नै सालमसिंघ रा बेटा, १ वीक्रमसिंघ १ हापो सांचोर रा प्रगनां में आया । सु पैला तौ गांव सेवाड़े रया[15] । नै उठे जायगा कराई । बरस २४ इतरा तौ सेवाड़े ऊपर रया ।

---

१. अकाल पड़ा । २. वर्षा कम हुई । ३, जानवर बहुत मरे । ४. जानवरों को लेकर परगने के बाहर गये । ५. कुछ भी पैदा नहीं हुआ । ६. सभी गांव सूने हो गये । ७. जहां अधिक वर्षा हुई । ८. बीमारी । ९. सारे जानवर भीलों ने छीन लिये । १०. केवल कस्बे में आबादी रही । ११. कमजोर वर्ष । १२. सूराचंद के वंशजों को निकाल दिया । १३. पारकर में जाकर रहे । १४. पहले । १५. प्रारम्भ में सेवाड़ा ग्राम में आकर रहे ।

पछै कालमा सांचोर ऊपर राज करता जिणां रौ भांणेज तौ चवांण वीक्रमसिंघजी सुं कालमां नै मार सांचोर लीवी। नै चवांण हापौ सूराचंद ऊपर रांणुवा राज करता तिणां ने मार सूंराचंद लीवो। संमत १३६१ री साल सूं पीढी बारे १२ तांई[1] राज कीयौ। विगत पीढ़ीयां री तफसीलवार :—

१ चवांण हापोजी रांणा
१ रांणो गणसीदे
१ रांणो भोजराज
१ रांणो वीसलदेजी
१ रांणो वीसलजी
१ रांणो मांनोजी
१ रांणो सैसमलजी
१ रांणो सादूळजी
१ रांणो डूंगरसीजी
१ रांणो ऊधरणजी
१ रांणो दीपाली चवांण लखजी
१ रांणो सूजोजी।

२५. पीढो १२ बारे सूंराचंद राज कीयौ नै चवांण हापौ चोरण लीवी। डूंगर ऊपर कोट करायौ, जुंने राज कीयौ। पछै रायपुर लीवी नै खेड़ा ५२७ कबजे कर नवो कोट कियौ। नै सूंराचंद बसायौ नै रांणे घणती तळाव खुदायौ। इतरी वातां जूंनी सूंराचंद री हुई। पछै संमत १७१२ रा बरस में रावजी श्री बलूजी रा अमल में सांचोर रौ कानूंगो लोलो श्रीधर बार रै कांम नईड कांठा कांनी जावता थौ, सो सूराचंद रा रांणा देपाल रै बेटा भाई आडा फिर कांनूगा नै मार नांखीयौ[2]। नै आदमी ३ कांम आया। लारे बहू सायली सती हुई। नै रावजी गोचर महेलीयौ। तिण पछै फेर करणोत दुरगदासजी री सांढीयां घोड़ी करई संमत १७५६ रा मिगसर में लाया। लारै कुंभकरणजी आया। तरै सांढीयां दीवी नहीं नै गैर जबां बोलीयौ[3]। सो पाछौ जौधपुर नै चढ़ गया[4]। नै दूजी वार फौज ले आया। साथे गुड़ा रौ रांणो ठाकुरसी थौ ने फेर सांचोरी रा सिरदार

---

१. १२ पीढ़ी तक। २. रास्ता रोक कर मार डाला। ३. अशिष्ट व्यवहार किया। ४. जोधपुर को चले गये।

भोमीया नै चवांण सूरसिंघ वगेरा नै सांचोर री कानूगो लोला रो पोतरो[1] सांमदास श्री दरबार सुं अरज करी। राज फतेसिंघजी प्रथीराजोत अठै फौजदार था, तरै रांणा सिवराज कंवर वेणीदास अरजण नै टीको दीयौ।

२६. संमत १७५७ रा वरस में माहाराजा जी श्री अजीतसिंघजी माहाराज रा अमल में तरै जमां रा ऊंठ २ घोड़ा २ रुपीया २००) बरस १ रा ठेहराया[2]। नै सूंराचंद रा गांव दीया। आगला सूंराचंदा नै परा काढीया सूं आगे तो पारकर मुलक में गया था नै हमार थळ रा गांवां में गंगासर नै गंगासर रा गांवां में बैठा है[3]। गांव खावै है[4]। विगत सूराचंद रा गांव रांणा सिवराज रै आगे था तिण री, विगत तफसीलवार:—

१	गांव	सूराचंद	१	गांव	पटेलड़ी
१	,,	चीखां	१	,,	कडीयावास
१	,,	बांघूड़ी	१	,,	तलाचार
१	,,	हीरावसो	१	,,	बाघूड़ी
१	,,	कानावेरी	१	,,	मदावाव
१	,,	गोठो	१	,,	लोटोसर
१	,,	डाबली	१	,,	डाबाली
१	,,	बांमणावास	१	,,	भाकु
१	,,	गोऊं चारणां री	१	,,	गोड़ा
१	,,	खारीवाव	१	,,	भाटवस
१	,,	वीसीयां वेरी	१	,,	घीगाणो
१	,,	नोड़ी	१	,,	तेजीयास
१	,,	नोवज	१	,,	खेजड़ीयाळी
१	,,	मेलावस	१	,,	साकरीयो
१	,,	डीडावाव	१	,,	आखो
१	,,	फोगरवो	१	,,	वेड़ीयो
१	,,	रतासरी	१	,	आखरीया वाव
१	,,	चडीवाव	१	,,	पांडरवेरी

१. पौत्र। २. महाराजा को देने निश्चित किए। ३. गंगासर के गांवों में रहते हैं। ४. गांवों का उपभोग करते हैं।

१ गांव मुणावेरो
१ ,, मंडारीयो
१ ,, तारीसरो
१ ,, आसुभुपो
१ ,, सुवागो चारणां री
१ ,, अरठो
१ ,, चोटील
१ ,, मेंगावौ
१ ,, मासी
१ ,, चोतरड़ी
१ ,, खारी
१ ,, ऊणहड़ो
१ ,, मांटुड़ी
१ ,, बोहली
१ ,, ओगालौ
१ ,, गंगाकुवो
१ ,, पोथावेरी
१ ,, सूरावाव
१ ,, चौपड़ मेड़ी
१ ,, भूहेरो
१ ,, रंगाऊली
१ ,, सातो चारणां रो
१ ,, अरठी
१ ,, मांडणावस
१ ,, भूटोओ
१ ,, फागलीयौ
१ ,, सीणाणीयौ
१ ,, पनोरीयो
१ ,, मांटुड़ो
१ ,, नीगणांणी
१ ,, बाळदड़ौ
१ ,, डूंगरो

१ गांव भोजीया बेरी
१ ,, जेजोया वाव
१ ,, मूदलुऊ
१ ,, आंमटकुई
१ ,, कुतर कुवो
१ ,, बाखासर
१ ,, तड़लो
१ ,, गंगासरो
१ ,, रेवारी हीरा वेरी
१ ,, मीठड़ी
१ ,, धूढावो
१ ,, वांसरलौ
१ ,, सगर वाव
१ ,, हैमावाव
१ ,, गोहलौ
१ ,, कूंभीयौ
१ ,, गाडलीऊ
१ ,, खांमराई
१ ,, वांमटोयो
१ ,, सांमी री बेरो
१ ,, सोमारड़ी
१ ,, खळहळीऊ
१ ,, चालकनौ
१ ,, आकली
१ ,, मेहाजाजीऊ
१ ,, कांटोयो
१ ,, सेड़वो
१ ,, भूपार
१ ,, बांमणु
१ ,, कीलोयोहर
१ ,, मूहदाड़ा
१ ,, अड़वाळेसर

१	गांव	कोलीयांणो	१	गांव	रोहलो मालांणी
१	,,	बुड्ल	१	,,	जूडण
१	,,	ऊणहड़ी	१	,,	सुटाकुई
१	,,	हदवो	१	,,	सेंसाऊवो
१	,,	छूंदा वेरो	१	,,	चीभड़ो
१	,,	भेखड़ी	१	,,	चमली
१	,,	मांणकी मालांणी	१	,,	वीसलकुवो
१	,,	गोगावेरी	१	,,	सेहणो
१	,,	पांणाली	१	,,	रायोतसर
१	,,	वीराऊवो	१	,,	गूदी
१	,,	हाली वावड़ी	१	,,	साहारलो
१	,,	लाखा वास	१	,,	राऊवसर
१	,,	सीहमूल	१	,,	हरपालीयासर
१	,,	बांभणलो	१	,,	गुदाहर
१	,,	साऊ	१	,,	सोनारड़ी
१	,,	गीघड़ा कुवो	१	,,	केकड़
१	,,	राजऊवो	१	,,	चंपा वेरी
१	,,	सालाहर	१	,,	मलांणी
१	,,	हेकज	१	,,	भाऊड़ी
१	,,	वरणासर	१	,,	वाचलो
१	,,	वीसासर	१	,,	पाबू वेरी
१	,,	पुजाहर	१	,,	आंकली
१	,,	साहाऊ	१	,,	जाखड़
१	,,	रोहलो	१	,,	आलेठी
१	,,	बांभीणरु	१	,,	अगडावो
१	,,	कोजो	१	,,	कुंड़कुई
१	,,	घोरीमंनो	१	,,	कांगोड़ा
१	,,	बागावेरी	१	,,	चाहली
१	,,	माहालांणी	१	,,	कूभीयो
१	,,	वांक	१	,,	लीणरवाहु
१	,,	राजूड़ी	१	,,	हालु
१	,,	पूरसां	१	,,	भलगांव

१	गांव	अगराळी	१	गांव	देहरीयाळी
१	,,	हसतुड़ी	१	,,	पांसरली
१	,,	बरड़ीयो	१	,,	कापड़ीकोट
१	,,	दूठवा	१	,,	मूणीयासर
१	,,	रांणासर	१	,,	गुगड़ो
१	,,	कुंभटीयो	१	,,	वीसासर
१	,,	रोलयो	१	,,	हातलो
१	,,	डूंगरीयाळी	१	,,	लूणसर
१	,,	मूळीयांणी	१	,,	जड़फो

२७. विगत—इण गांवां मांह सुं परगना सूराचंद मांय सुं गांव बाखासर नै बाखासर रा नीवांण[1] था जिके आगे काळ रा सबब सूं परगनो सांचोर रा आगा पड़ता सो सराई सोढा वगेरे पारकर रौ मुलक छोड़ता, जिण दिनां बाखासर रा भोमीयां डरता थका सींदवाड़ो नै देणां कर नै सिंद में गया। नै सिंद री मुती बाखासर रेवती नै गांव बाखासर रैं ऊपर अमल ऊणां रौ थौ[2]। सु संमत १६०६ रा बरस में हाकम सींगो रतनराजजी नै ऊकील मुणोयत जीतमलजी नै सांचोर रौ कांनूगा उत्तमचंद चतुरदास केसरीचंद था सु कांनूगां री बयां[3] सुं नै सूराचंद रा रांणा रा चोपड़ा सुं बाखासर नै बाखासर रा नीवांण चाळीस सुधी[4] आई। हमें बाखासर रा गांवां री ढल हळां दीठ रुपीयां २॥) बाखासर रै गांवां रा श्री सिरकार में भरै। नै श्री दरबार रौ थांणो बाखासर में उण दिन सुं रेवै। सिंद में बरस ४० चाळीस तथा ४२ बेंयाळीस रैई सु पाछी श्री खांवदां[5] रै आई।

आगला जूना सूराचंद रा धणी पारकर में गया जिका हमार गंगासर रा जागीरदार है नै उणां रैं ही गांव ३२ बत्तीस कबजै है। श्री सिरकार में गीण भरै है। मुकरड़े रुपीया ठेरै है[6]। नै गांव बिनां पटै खावै है[7]।

प्रगने सांचोर रा गांवां रा हाल व० संमत १६६२ रा बरस री—

१ कसबे सांचोर

१. जलाशय। २. उनका अधिकार था। ३. बहियें। ४. सहित। ५. महाराजा। ६. लगान की निश्चित रकम तय की जाती है। ७. गांवों की आमदनी बिना पट्टे के खाते हैं।

अेक साखीओ[1] । वेरा ७, तळाव छोटा-मोटा १० । जमीन हळवा २२५ तथा २५० तथा ३०० होसी ।

१ गांव अरणाव

कोस ७ दिस ऊगवणो । कुवा २, तळाव १ । जमी हळवा २०० गांव पटैलीयौ लाटां कूंतां रौ ।

१ गांव अंगार

दिस आथूणो[2] । कोस २ । वेरी १, तळाव १ । जमी हळवा ६० । चौदरी जीवो, लाटा कूंतां रौ गांव ।

१ गांव आकोली

कोस ६ दिस उतराधो । वेरो १, तळाव १ । जमी हळवा १०० । गांव लाटा कूंतां रौ कोसीटा ऊपर ।

१ गांव आंबली

कोस ४ उतरादी । वेरो १ पांणी पीवै, तळाव १ । जमी हळवा १२५ । पादरीया ब्रांमण रै गांव ।

१ गांव ईसरलो

कोस १० दिस आथूणी । पादरीया चवांण रजपूत है । गांव दुसाखीयौ[3] । पांणी नदी लूणी पीवै । हळवा ७५ जमी छै ।

१ गांव अचलपुर

कोस ७ दिस आथूणी । वेरो १ । जमी हळवा १२५ गांव दो पेदघुड़ा दातरोडो, मांजरे पड़ीयौ छै । पादरीया चवांण छै ।

१ गांव अंगडावो

दिस आथूणो कोस १५ । जमी हळवा ६० रै आसरै[4] छै । चारण नाथा रै पड़ीया नै आगे पारो वाड़ी खेड़ ना ।

१ गांव अरडुयो

वेरांन छै, घणा दिनां रौ[5] । कोस १२ । दिस आथूणो । दुसाखीयो । नदी लूणी ऊपर मोजे डडेरा मांय मांजरे पड़ीयौ छै । हळवा २० ।

१ गांव अलेटी

---

१. केवल खरीफ की फसल होती है । २. पश्चिम में । ३. दोनों फसलें होती हैं । ४. लगभग । ५. बहुत दिनों से सूना पड़ा है ।

दिस आथूणो। कोस १४ कुंभा सतारा रा नांव रौ गांव छै। हळवा ५०।

१ गांव कीलवा

कोस ३। दिस आथूणो। वेरो १ नै तळाव १। हळवा १२५। लाटा कूंतां रौ गांव छै। एक साखीयो।

१ गांव किसोरी

कोस १०। दिस आथूणी पासे[1]। दुसाखीयो। पांणी नदी में वेरीयां में पीवैं छै। हळवा २०० आसरे छै। पादरीया कालमा रजपूत छै।

१ गांव काचेलो

कोस ७ दिस आथूणो। हळवा ५०। पांणी वेरियां रौ पीवै। तळाव १। गांव लाटा कूंतां रौ। पादरीया सोलंकी छै। हमार चारणां रै सांसण रौ गांव है।

१ गांव करोली

कोस ३ दिस उतरादो। वेरा २ तळाव १। हळवा १२५ आसरै। एक साखीयो। गांव लाटा कूतां रौ छै। पादरीया सोळंकी छै।

१ गांव कीरावड़ो

उतरादो, कोस ७। वेरो १ जमी हळवा ७०। एकसाखीयो गांव। जमीयां पछै गांव चवांणां रै छै।

१ गांव केरीयो

कोस १२ दिस उतरादो। दुसाखीयो गांव। कांपलीया चवांणो रौ थो। हळवा १५०।

१ गांव कांटेल

कोस ५ ऊगवणो। वेरो तळाव १। हळवा ८०। एकसाखीयो गांव। पटेलीया छै।

१ गांव कुड़ी देवड़ां री

ऊगवणी कोस ६। वेरी १, तळाव १। हळवा ५०। गांव देवड़ां रौ छै। गांव जमीयां पछै एक साखीयो[2]।

१ गांव कोड़कालमां री

कोस ५ आथूणो। वेरो १ तळाव १। हळवा ७० तथा ८० रै आसरै छै। गांव एकसाखीयो। ऊधड़ा तथा लाटा कुंतां रौ छै।

---

१. पश्चिम की ओर। २. प्रारंभ से ही गांव में एक फसल होती है।

१ गांव खासरवी

कोस १३ दिस आथूणी। नदी लूणी ऊपर। दुसाखीयो। पादरीया सोळंकी। लाटा कूंतां रौ। हळवा १४० रै आसरै।

१ गांव गोलासण

कोस ४ दिस दिखणाद। वेरा २ तळाव १। हळवा १५० आसरे। एकसाखीयो। गांव लाटा कूंतां रौ छै।

१ गांव गरढाळो

कोस ३ दिखणाधू। कुवो १ नै तळाव १। हळवा ८० तथा ६० रै आसरै होसी। गांव एकसाखीयो। जमो ऊधड़ो तथा कुंतां रौ छै। कालमां पादरोया छै।

गांव गंगावास

कोस ०॥ सांचोर री सींव में आथूणो। वेरो १ एक तळाव १ एक। जमी हळवा ३० तथा ४५। एकसाखीयो लाटा कूंतां रौ।

१ गांव गजीफीकी

कोस १ दिस आथूणो। गांव दुसाखीयो। हळवा २०० रै आसरै। नदो लूणी। चवांण पादरीया कदीमी छै[1]। लाटां सरै छै।

१ गांव गांधव

कोस १० आथूणो पासे उतराद नदी लूणी ऊपर दुसाखीयो। लाटा कूंतां रौ छै। राठौड़ विजैसिंघ देवीया रौ छै। हळवा ८०। सो हमार संमत १८६२ राव समैजा सा० बाहादुर मालांणी वाळां नै दीरायो नै जमा भरै नहीं[2]।

१ गांव गड़ासो

कोस १४ उतरादो सांमो[3]। दुसाखीयो। नदी लूणी ऊपर छै। पटैलीयो। हळवा २००।

१ गांव गोमी

कोस १० आथूणो। पाये नदी लूणी। सांसण चारणां मयारी छै। राव श्री बरजांगजा रौ दत्त दीयोड़ौ छै। संमत १५३२ में। हळवा ३० तथा ३५।

१ गांव चजीरो

---

१. पादरिया चहुवान प्राचीन समय से ही रहते हैं। २. सरकार को रकम नहीं देते। ३. उत्तर की ओर।

कोस ६ आथूणो। पांणी वेरीयां रौ पीवै। हळवा ४० आसरै। लाटा कूंतां रौ गांव। एकसाखीयो। पटैलीयो गांव छै।

१ गांव चीतलवांणो

कोस १० उतरादो। दुसाखीयो। नदी ऊपर लाटा कूंतां रौ, पटैलीयो। हळवा ५०। बसतो पटेलां रो तिणसूं पटैलोयो[1]।

१ गांव चारणीव

कोस ११ उतराधो। दुसाखीयो। नदी ऊपर। हळवा ३०। लाटा कूंतां रौ। पादरीया चवांण छै।

१ गांव चोरा

कोस १० उतराद सांमो। वेरो १, तळाव १ लाटा कूंतां रौ। हळवा ७० आसरे। साख १ नीपजै।

१ गांव जांणवी

दिस आथूणी। नदी लूणी ऊपर। दुसाखीयो। लाटा कूंतां रौ। हळवा ७०। कोस १०।

१ गांव जीजासण

कोस १॥ उगूणो। वेरी १ तळाव १। एकसाखीयो लाटा कूंतां रौ।

१ गांव जोखेल

कोस ५ उतरादो। वेरो १ तळाव १। एकसाखीयो। लाटा कूंतां रौ। पादरीया चवांणां रौ। हळवा ६०।

१ गांव झाव

कोस १३ उतरादो। दुसाखीयो। नदी सूकड़ी ऊपर कोसीटा घणा हुवै।[2] पादरीया चवांण छै। हळवा ७० आसरै जमी छै।

१ गांव भेरोल

कोस १० उगूण-उतराद छै[3]। वेरो १ तळाव १। हळवा ४०। सांसण चारण खिड़ीयां[4] रौ छै। दत्त बीहारीयां रौ दीयोड़ौ। अबार गांव खालसै छै।

---

१. पटेलों की बस्ती है इसलिये पटेलिया कहलाता है। २. सूकड़ी नदी के किनारे सिंचाई के लिये कुंए काफी हैं। ३. उत्तर-पूर्व में है। ४. खिड़िया जाति के चारणों के सांसण का गांव है।

१ गांव तुटड़ो

कोस ८ उतराद नै। वेरो १ पादरीया बीरांमण। लाटा कूंतां रौ। हळवा ८०।

१ गांव जोडादर

कोस १७ आथूणो। दुसाखीयो। नदी लूणी ऊपर। हळवा ६०। ववीचा चवांण छै। जमा ऊदड़ो देवै छै।[1] पादरीया चवांण छै। माहाराज श्री गजसिंघजी री वार में ववीचा चवांण वीरमदे नै जमा बांद नै दीयौ।

१ गांव जाडवो

आथूणो दिस उतरादो। कुंभावतां रौ गांव छै। घणा दिनां रौ वेरांन छै।[2] हळवा ४० आसरे छै।

१ गांव डंभाल

कोस ३ दिस आथूणो। हळवा १०० आसरै। पादरीया सोळंकी। एकसाखीयो। लाटा कूंता रौ छै।

१ गांव डंडोसण

कोस ६ आथूणो। पांणी वेरां रौ पीवै। तळाव १। हळवा ६०। एकसाखीयो। लाटा कूंतां रौ हुवै।

१ गांव डाभल

कोस ५ उतरादो। कुवा २ तळाव १। हळवा ६० आसरै। एकसाखीयो लाटा कूंतां रौ छै।

१ गांव डीघोप

कोस १० आथूणो। नदी लूणी ऊपर। दुसाखीयो। हळवा १५० आसरै। पादरीया गूजर छै।

१ गांव डेढरो

कोस १२ आथूणो। दुसाखीयो। नदी लूणी ऊपर। हळवा ५० आसरै। गांव जमीयो छै, चवांण गंगोईदास भूपत रौ छै।

१ गांव डेडवो

कोस ६ उतराद सांमो। वेरो १ तळाव १। हळवा ५० रै आसरै। इकसाखीयो लाटा कूंतां रौ।

---

१. एक निश्चित रकम गांव के लगान के रूप में दी जाती है। २. सूना पड़ा हुआ है।

१ गांव डांगरो

कोस ५। वेरो १ तळाव १। हळवा ४० जमी। पादरीया सोलंखीयां रौ छै। अेकसाखीयो।

१ गांव तीतरोल

कोस १२ उतरादो। बेरो १ तळाव १। हळवा ६० रै आसरै। लाटा कूंतां रौ। पटेलां रौ गांव छै।

१ गांव तांवड़ो

कोस १५। वेरो १ तळाव १। अेकसाखीयो जमी हळवा ५० तथा ६० रै आसरै। बिरांमण पादरीया छै। उदक रौ गांव छै[1]।

१ गांव दाघलो

कोस ५। वेरो १ तळाव १। जमी हळवा ४० तथा ५० आसरै होसी। पादरीया कालमा रजपूत। गांव एकसाखीयो छै।

१ गांव दधुड़ो

कोस ६ आथूणो। वेरो १ पादरीया पड़ीयार रजपूत छै। जमी हळवा ३० आसरै। हमार अचळपुर मांजरै पड़ीयौ छै[2]। गांव अेकसाखियौ।

१ गांव दांतीया

कोस ८ आथूणो। हळवा ५० आसरै छै। पादरीया परमार छै। अेकसाखियो गांव छै। लाटा कूंतां रौ छै। पांणी वेरीयां रौ पीवै छै।

१ गांव दीलोदर

कोस १६ आथूणो। अेकसाखीयो। नांव भाटकी मांजरै पड़ीयौ छै। हळवा ३० रै आसरै जमी खड़ीजै छै[3]। वाटकी वाळा।

१ गांव रूठवां

कोस १५ आथूणो। आथूण में कुंभावतां रौ गांव। दुसाखियो। हळवा २०० आसरै छै।

१ गांव घमांणो

कोस ३। वेरो १ तळाव १। जमी हळवा ५० तथा ६० रै आसरै छै। गांव लाटा कूंतां रौ एकसाखियो।

---

१. दान में दिया हुआ गांव। २. अभी अचलपुरा में सूना गांव है। ३. जमीन में खेती होती है।

१ गांव घाणतो

कोस ५ उगूणो । हळवा ८० रै आसरै । वेरो १ तळाव १ । लाटा कूंतां रौ गांव पटेलीयो । साख एक नीपजै[1] ।

१ गांव धुडवां

कोस ४ आथूणो । हळवा ३५ आसरै । वेरो १ तळाव १ । एकसाखियो लाटा कूंतां री । पादरीया बिरांमण छै ।

१ गांव घरणावस

कोस १४ उतरादो । सांसण चारण वणसूर, दत्त बीहारीयां रै दीयोड़ौ छै। घणा दिनां री नदी सूकड़ी आवै छै । हळवा ५० आसरै छै । गांव लाटा कूतां रौ दुसाखीयौ छै ।

१ गांव जांगोलड़ी

कोस ४ उगूणो । वेरो १ तळाव १ । जमी हळवा ७० तथा ७५ आसरै छै । गांव लाटा कूंतां रौ । एकसाखियौ । बसती पटेलां री ।

१ गांव जळधरौ

कोस १३ नदी लूणी ऊपरै गांव । दुसाखीयो । लाटा कूंतां रौ । पादरीया चवांण छै । हळवा ५० आसरै ।

१ गांव पुर

कोस ५ उगूणो । वेरा दोय तळाव दोय । हळवा २०० आसरै । गांव एक-साखीयो । धणी चवांण[2] ।

१ गांव पांनलो

कोस ७ ऊगूणो । वेरा दोय, तळाव दोय । गांव एकसाखीयौ छै । हळवा ७० तथा ७५ आसरै । धणी देवड़ा ।

१ गांव पाड़पुरौ

कोस २ दिखणादो[3] । तळाव एक वेरा २ । हळवा ५० आसरै । लाटा कूतां रौ गांव एकसाखीयो ।

१ गांव पलाधर

कोस ४ दिखणादो । वेरो एक तळाव एक । हळवा १०० आसरै । पादरीया देवड़ा छै । गांव एकसाखीयो ।

---

१. एक फसल पैदा होती है । २. गांव चहुवानों की जागीर का है । ३. दक्षिण की ओर ।

१ गांव पालड़ी सोळंखीयां री

कोस ३। वेरो एक तळाव एक। हळवा ५० तथा ६० आसरै[1] छै। गांव एकसाखीयो। ऊधड़ीया चवांणां री गांव छै।

१ गांव पालड़ी देवड़ां री

कोस ७। कुवो एक तळाव एक। गांव एकसाखीयो। उगूणो। जमी हळवा ७० श्रासरै।

१ गांव परावा

कोस ८ उतरादो। नै पांणी कुवा री पीवै। एकसाखीयो गांव। पादरीया चवांण घणी छै। हळवा ६० तथा ७० श्रासरै छै।

१ गांव पादरड़ो

कोस १२ उतरादो। पांणी कुवा री पीवै। हळवा ३० श्रासरै। पादरीया सिलोरा रजपूत छै। गांव एकसाखीयो।

१ गांव बगसड़ी

कोस ७ श्राथूणो। पांणी वेरीयां पीवै। एकसाखीयो। पादरीया भाट छै। हळवा ३० श्रासरै।

१ गांव फारणो

उगूणो कोस २। तळाव १ कुवो १। हळवा ६० रै श्रासरै छै। गांव लाटा कूतां रो। एकसाखीयो।

१ गांव बावड़लो

कोस ५ श्राथूणो। पांणी बेरीयां उं[2] पीवै। एकसाखीयो। पादरीया सोळंखी[3] रजपूत छै।

१ गांव वालेरा

कोस १४ श्राथूणो। दुसाखीयो छै। बिरांमणां रो। हळवा ५० तथा ६० श्रासरै छै। मोरांणे रा रुपीया ५॥।-) भरै।

१ गांव सड़वल

कोस ५ श्राथूणो। कूवो १ नै तळाव १। हळवा ६० तथा ७० आसरै। गांव एकसाखीयो।

---

१. लगभग। २. बेरियां (छोटे कुए) से। ३. राजपूतों की एक शाखा।

१ गांव भांदरूण वांभीयां री

कोस १०, नदी लूणी ऊपरै। आथूण नूं। दुसाखीयो। पादरीया सोलंखी छै। हळवा ५० तथा ६० आसरै छै।

१ गांव सवांण

कोस १३ आथूणो। पांणी वेरां रो पीवै। पादरीया परमार छै। हळवा ५० तथा ६० आसरै। गांव एकसाखीयो।

१ गांव वाटकी

कोस १४ पांणो तळाव रो पीवै। हळवा ७० तथा ८० अंदाज। पादरीया सोलंखी रजपूत छै। बसंरा रु० २२५) हमेसां ऊघरै छै[1]।

१ गांव भवातड़ो

कोस १७। दुसाखीयो। नदी लूणी ऊपरै। हळवा ३० तथा ४० अंदाज। मुकातो ऊघावे छै।

१ गांव भदरुड पालावास

कोस १२ उतराद[2]। कुवो १ तळाव १। हळवा १५०। एकसाखीयो, लाटा कूंतां रो।

१ गांव मालवाड़ो

कोस ८ उतरादो। कुवो १ हळवा ४० तथा ५० आसरै। गांव पटेलोयो[3]। एकसाखियो छै।

१ गांव मुजी

कोस १२ दिस उतराद नै। कुवो १। हळवा ४० तथा ५० आसरै। गांव बसती पटेलां री। एकसाखीयो छै।

१ गांव मिपाल

कोस ७ दिखण नै। कुवो १ नै तळाव १। हळवा ५० तथा ६०। वलादार रा चवांण छै। जठै जमां ऊगी देवै छै।

१ गांव मेलाप

कोस १४ उतराद नै। दुसाखीयो। नदी लूणी ऊपर। हळवा ४०० रै आसरै। लाटा कूंतां रो। बसती पटेलीयो।

---

१. लगान के रूप में वसूल होते हैं। २. उत्तर दिशा की ओर। ३. पटेलों की आबादी वाला।

१ गांव मंडाळी

कोस १४ आथूंणी । दोय साषीयो । हळवा ६० आसरै । वावेचा चवांण तेजमाल दुरजणसिंघोत छै । माहाराज श्री गजसिंघजी रा अमल में दिरीजियो छै[1] ।

१ गांव मरठवो

कोस ११ आथूंणो । नदी लूणी ऊपर गांव । दुसाखीयो । लाटा कूंतां रौ । पादरीया पड़ीयार रजपूत छै । हळवा २५ ।

१ गांव मेडो

कोस ११ आथूंणो । नदी ऊपर । गांव दुसाखीयो । लाटा कूंतां रौ । पादरीया राठौड़ छै । हळवा ५० अंदाज ।

१ गांव सूंघाऊ

कोस ३ ऊगवणो । कुवो १ तळाव १ । हळवा ७० तथा ८० आसरै । गांव दुसाखीयो । पादरीया जोजा रजपूत छै । गांव लाटा कूंतां रौ ।

१ गांव रतोड़ो

कोस ११ आथूंणो । नदी ऊपर गांव छै । हळवा ७० तथा ८० आसरै छै । पादरीया रजपूत राठौड़ छै ।

१ गांव रड़वल

कोस १७ दुसाखीयो । गांव भवातड़े में पड़ीयो छै[2] । बेरो न पड़ी छै[3] । नंदी लूणी ऊपर हळवा १०० रै आसरै छै ।

१ गाव रणोदर

कोस १४ उतराद नै, नदी लूणी ऊपर । दुसाखीयो । लाटा कूंतां रो गांव । वसती पटेलां री । हळवा १२५ आसरै ।

१ गांव ठालड़ी

कोस २ उगूणो । हळवा ४० तथा ५० अंदाज । कुवो १, तळाव १ । गांव एकसाखीयो । पादरीया गोयल रजपूत छै ।

१ गांव लीपादरो

कोस १० उगूणो । कुवो १, तळाव १ । एकसाखीयो गांव । जमी हळवा ८० रै आसरै ।

---

१. गजसिंहजी के अधिकार के समय में दिया गया। २. भावतड़े ग्राम के शामिल मिला दिया गया है। ३. पूरा पता नहीं लग सका है।

१ गांव लूणो पासण

कोस ५ उगूणो। हळवा ५० तथा ६० अंदाज। कुवो १ तळाव १। गांव एकसाखीयो छै। सांसण[1] चारण सेसजी नुं, संमत १६६१ में राव बलूजी दीयो।

१ गांव बलांणो

कोस ७ ऊगवण नैं कुवो १ नै तळाव १। हळवा ४० तथा ५० आसरै। लाटा कूंतां रौ गांव छै। एकसाखीयो।

१ गांव वासण

कोस ४ आथूण नै। कूवो १ तळाव १। हळवा ६० तथा ७० आसरै। पादरीया चवांण। एकसाखीयो। लाटा कूंतां रौ छै।

१ गांव चांचवाडो

कोस ७ आथूण नैं। गोयलां री। पांणी वेरीयां ऊं पीवै। गांव इकसाखीयो। ऊदड़ी जमी चुकावैं छै[2]। हळवा २०० आसरै छै।

१ गांव वेसालां

कोस ६ आथूणी। हळवा २० तथा २५। पांणी कुई सूं पीवै। इकसाखीयो। चवांणां रौ छै। जमा ऊदड़ा चूकै।

१ गांव वांक

कोस ६ आथूणो। पांणी कुई सुं पीवै। इकसाखीयो छै। हळवा ५० तथा ६०। पादरीया परमार छै। ऊदड़ीयो कूंतो छै।

१ गांव वासणी देवड़ां री

कोस १० उगूण नैं। कूवो १ तळाव १। हळवा ५० आसरै छे। गांव अेकसाखीयो छै। लाटा कूंतां रौ छै।

१ गांव वीहोल

कोस ७ दिखणादो[3]। अेकसाखीयो। कुवो १ तळाव १। हळवा १५० रै आसरै छै। गांव लाटा कूंतां रौ छै।

१ गांव वरणवो

कोस १२ आथूण नै लूणो ऊपर। दुसाखीयो। लाटा कूंतां रौ गांव छै। हळवा ५० तथा ६० आसरै। पादरीया सोलंकी रजपूत छै।

---

१. दान में दिया हुआ ग्राम। २. एक साथ बंधी हुई रकम लगान के रूप में देते ३. दक्षिण की ओर।

१ गांव बड़सम

कोस २ दिखणाद नुं । हळवा ५० तथा ६० । कुवो १ । इकसाखीयो । गांव लाटा कूंतां रो । तथा ऊदडो करै छै । हवाले जरड़ीया फतैखां रै छै ।

१ गांव वरणपुरी

कोस १२ उतरादो । हळवा २५ तथा ३० रै आसरै । कुंवो १, तळाव १, गांव इकसाखीयो । लाटा कूंतां रो गांव । पटेलीयो गांव छै ।

१ गांव वीराऊ

कोस १८ आथूण नै । घणा दिनां रौ बेरो न छै । हळवा ४० आसरै । कापलीयां रौ खेड़ो छै ।

१ गांव वोड़ा

कोस १० उगूण नै । कुवो १ तळाव १ । हळवा ४० तथा ५० आसरै । इक-साखीयो गांव । लाटा कूंतां रौ गांव छै । पटेलां री बसती छै ।

१ गांव सांगड़वो

कोस ६ उतराद नै । कुवो १ तळाव १ छै । हळवा २० तथा २५ आसरै छै । इकसाखीयो लाटा कूंतां रौ गांव छै । पादरीया ऊमट रजपूत छै ।

१ गांव सेवाड़ी

कोस ७ ऊतराद नै । कुवो १ तळाव १ । हळवा ५० तथा ६० । इक-साखीयो । चहुंवांणां रौ ।

१ गांव सीदेपुर

कोस २ उतरादो । कुवो १ तळाव १ । हळवा ६० तथा ७० आसरै । गांव इकसाखीयो । लाटा कूंतां रौ गांव छै ।

१ गांव सेहेली

कोस १२ उतरादो । पादरीया चहुवांण छै । हळवा ५० तथा ६० आसरै । गांव इकसाखीयो । ऊदड़ो कूंतां रौ गांव छै । तळाव १, कुवो १ ।

१ गांव सातरीयो

कोस १६ उतरादौ । कुई १ तळाव १ । पादरीया चहुवांण रजपूत छै । हळवा ३० तथा ३५ आसरै । इकसाखीयो । ऊदड़ीयो छै ।

१ गांव सूंरावो

कोस १० उगूण नुं । जस देवड़ां रौ छै । इकसाखीयो । जमां रा रुपीया बरस रा बरस भरै छै[1] । हळवा १२५ रै आसरै छै ।

---

१. लगान के रुपये प्रति वर्ष सरकार को देते हैं ।

१ गांव सीलुं

कोस ७ दिखणादो। तळाव १ कुवो १। हळवा ६० रै आसरै। गांव इकसाखीयो। पादरीया चहुवांण छै। लाटा कूंतां रौ।

१ गांव सरवांणो

कोस ८ दिखणाद नै। पांणी कुई सुं पीवै। हळवा ३० रै आसरै। पादरीया गोयल रजपूत छै। गांव अेकसाखीयो।

१ गांव सखांणो

कोस १० आथूणो। पांणी कुई पीवै। इकसाखियो। लाटा कूंतां रौ। पादरीया परमार रजपूत छै। जमी हळवा १२५।

१ गांव सूंतडी

कोस १४ आथूण नै नदी लूणी ऊपर। दुसाखीयो। पादरीया सोळंको मुकाते वावै[1]। चवांण चुतरसाल नै रावजी श्री बलूजी रा अमल में दीयौ। जमी हळवा १२५ तथा १४० आसरै।

१ गांव सींलोसण

कोस ११ आथूण नै। दुसाखीयो। सांसण चारण खिड़िया आंजणदास नै, व्यारीयां रौ दीयौ, मलकअली सेरदी संमत १६६०।

१ गांव लूटा कुंई

कोस १६ आथूणो। पुरीयां रौ गांव छै।

१ गांव हरीयाळी

कोस ७ उतरादी। कुवो १ तळाव १। हळवा ७० तथा ८० आसरै। दुसाखीयो। लाटा कूंतां रौ गांव। परेजीयो पादरीया चवांण।

१ गांव हडेवर

कोस ३ उगूणो। हळवा ८० तथा ९० आसरै। कुवो १ तळाव १। इकसाखीयो। लाटा कूंतां रौ गांव।

१ गांव हातीगांव

कोस १०। दुसाखीयो। आथूंणो। पांणी वेरी रौ पीवै। नदी लूणी ऊपर। पादरीया चवांण। हळवा १२५ आसरै।

---

१. मुकाता देकर खेत बोते हैं।

१ गांव दुनावो

कोस १० उगूणो। पांणी वेरी रौ पीवै। वेरौ १ तळाव १। हळवा ७५।

२८. प्रगना सांचोर नै सांचोर रा गांव जुमले गांव ४२, चवांण मोकमसिंघ लालसिंघोत खांप सखरावत चवांणां रै, १८०८।

राव मोकमसिंघ रै गांवां री विगत—

१	कसबे सांचोर सायर सुदी	रेख	६००००)
१	गांव पाड़पुरौ	,,	१०००)
१	गांव गंगावस	,,	५००)
१	गांव ईसरोल	,,	१०००)
१	गांव अरणाय	,,	४०००)
१	गांव कमालपुरो	,,	१०००)
१	गांव हीड़वाड़ी, खेड़े सूनो[1]	,,	१०००)
१	गांव लासड़ी	,,	१०००)
१	गांव कांटेल, खेड़ो सूनो	,,	१०००)
१	गांव घड़सोदो अेभाकीयो	,,	५०००)

१०

१२ गांवां री जमी ऊदड़ो चूकै, गूंजास माफक[2]—

१	गांव रतोड़ी	रेख	४०००)
१	गांव पांचलो, त० देवड़ा वीरमदे रै	,,	२०००)
१	गांव मीपल, त० चवांण सुजांणसिंघरै	,,	१०००)
१	गांव गरढालो, त० चवांण जोया हसते फकीर	,,	५००)
१	गांव पालड़ी, देवड़ां रै	,,	५००)
१	गांव वीरमपुरी	,,	......
१	गांव तीतरोल	,,	१०००)
१	गांव केरीयो, त० कांबलोयां रै	,,	४०००)
१	गांव डांगरां, त० रा० जीवदांन रै	,,	२००)
१	गांव मेठो ऊलो रै	,,	१०००)

१. गांव में आबादी नहीं। २. पैदावार के अनुसार।

१ गांव तांतड़ी, त० बोरांमणां रै रेख ......
१ गांव बगसड़ो

१२ जुमले गांव बारै ।

११ जमा रा गांव चवांण बावै तिण री जमा ऊदड़ी देवै:—

१ गांव दुगवां—चवांण बांकीदास, दोसाखीयो, रेख १००)
१ गांव वरणवी—चवांण गजसिंघ रै ,, ४००)
१ गांव खाजरडी—चवांण जैतमाल रै ,, १००)
१ गांव जोडादर—चवांण.........रै ,, १००)
१ गांव मंडाली—चवांण ईसर रै ,, १००)
१ गांव सूतडो—चवांण वांकीदास रै ,, १००)
१ गांव गांधव—चवांण सूरजमल देवीदास रांणावत, २००)

४ गांव चवांण राघू परबतसिंघोत रै, विगत—

१ गांव वाटकी
१ गांव दीलोदर-खेड़ो ऊलो अंवज धींगपुरो वडो, रेख ५००)
१ गांव भवातड़ो ,, १००)
१ गांव वरडवल ,, ५००)

११

६ पटा रा गांव रु० १४५०)

१ गांव आंबली—लाटा कुंतां री चवांण सोनसिंघ। गांव ४ तिणसुं गांव ३ तौ सोनगरां रा चवांणां रै नांवै। बाकी गांव १ आंबली जिणां री अमल दीयौ न छै[1] ....रेख रु० ५००)

२ त० चवांण प्रतापसिंघ सूरतसिंघोत रै रेख ५००)

१ गांव जांणठी ५००)
१ गांव भादरुड़ २००)

२

१ गांव पलादर—रु० १०००), अमल दीयौ। त० चवांण सिरदारसिंघ मालदेवोत।

1. विधिवत ढंग से अधिकार नहीं दिया गया।

१ गांव पलादर—रु० १०००), अमल दीयौ। ता० चवांण सिरदारसिंघ मालदेवोत।

२ चवांण अखैसिंघोत, सिरदारसींघोत। अमल नहीं दीयौ।

१ गांव चीराावी रु० २०००)
१ गांव बावरलो रु० ३०००)

२

१ गांव चोहरांणा ५०००)। अमल न दीयौ। चवांण राजसिंघ ईसरदासोत।
१ गांव हारेचो—सांसण सांमी[1] तेजपुरी, जीवणपुरी, वेज पुरी।

९ जुमले नौ।

४२ पटै चुवांण राव मोकमसिंघ लालसिंघोत नै संमत १८२२ रा आसोज में। १८२२ री साख सांवणू सूं पटो राव जालमसिंघ मोकमसिंघोत काती वद ८ पछै इणां नै दूजो[2] पटो दीयो, सांचोर श्री दरबार तालके।

२९. संमत १७७७ रा आसोज सुद ७ रा मंगळ, प्रगना सांचोर रा गांवां री फरसत।

२५ गांव खालसा रा—

१ कसबे साचोर—अेकसाखीयो।
१ गांव पाड़पुरो—कमालखां बारी बसायौ, संमत १७४४।
१ गांव घड़सो—दुसाखीयो।
१ गांव गरढाली—इकसाखीयो फकीरां री चौकी।
१ गांव दांरीयो—इकसाखीयो, पादरीया परमार।
१ गांव हीडावड़ी—हमार[3] हवाला में, वग पादरीया।
१ गांव मीलाप—इकसाखीयो, भोमीया चवांण।
१ गांव तांतडी,—इकसाखीयो, दादरीया बीरांमण।
१ गांव तीतरोल—इकसाखोयो, भोमीया राठौड़।
१ गांव डांगावास—इकसाखीयो, भोमोया राठौड़।
१ गांव ईरावड़ी—इकसाखीयो।
१ गांव वांक—इकसाखीयो, पादरीया परमार।
१ गांव पलाधर—इकसाखीयो, पादरीया।

---

१. स्वामी। २. अन्य, दूसरा। ३. अभी।

१ गांव लाचड़ी—इकसाखीयो, खालसे ।
१ गांव वेणपुरी—खेड़ो सूनो ।
१ गांव जांणवी ।
१ गांव कांटेल—भोमीया देवड़ा ।
१ गांव पालड़ी—भोमीया देवड़ा ।
१ गांव पांचलो—भोमीया देवड़ा ।
१ गांव बगसड़ी—चोकी भाटां री ।
१ गांव लीपादड़ो ।
१ गांव मेडो—दुसाखीयो ।
१ गांव गंगावस—सांचोर सूं कोस १ । इकसाखीयो ।

२५

३०. १० वावेचा चवांणां रै जमा, फौजबळ[1] गूंजास[2] माफक लागे—

१ गांव सूंतड़ी—मनोर सतावत । दुसाखीयो ।
१ गांव जोड़ाधर—चवांण मलुवो वीकमसिघोत ।
१ गांव मंडाली—नाथावत नै ।
२ गांव वरणावो—खासर बीरांमण पचांण नै । दुसाखीयो ।
१ गांव दूठवो—चवांण वेणीदास सिवराजोत नै ।
४ गांव ४ चवांण भोजराज परबतसिघोत—
१ वाटकी १ दीलोदर १ भवातड़ो १ रडवल

४

१ गांव मांधव, गुढा रा—रांणा सा पठांखांन नै, जमां सिरकार में भरै ।

३१. ३३ राव सैसमल कंवर भारतसिघ त० गांव—

१ अगार	१ सिधपुर	१ भडवळ
१ चजार	१ मालवाड़ो	१ कालवां
१ धूडवो	१ सीलूं	१ वेचीपाड़ी
१ अचळपुर गुड़ो	१ वेचीपाड़ी	१ रुगासु च० नारखां
१ वासणी देवड़ां री	१ जलधरा	१ सोहोतांणो
१ रणोदर	१ वेसाला	१ सातरीयो

१. अभी । २. फौज के निमित्त लिया जाने वाला कर विशेष ।

१ नागोलड़ी
१ गांव कारणा
१ चीतलवांणो
१ पुर
१ डंभाळ
१ कीसुंरी
१ कुडो देवड़ां री
१ डेडरो
१ होतीगांव
१ चोढां
१ सेवाड़ी
१ मूळो चवांणां री
१ डीभोग
१ पालड़ी सोलंकीयां री
१ सुरवो देवड़ां रो

३३ जुमले गांव तेतीस, राव सैसमल रै पटा रा, विगत ऊपर लिखी है ।

३२. ५५ पटायतां नै तथा चारणां नै, गांवां री विगत—

२ चुवांण मांनसिंघ मुंकनसिंघोत फतैसिंघोत नै पटो श्रीहजूर सुं इनायत हुवो ।

१ गांव अरणाय इकसाखीयो ।

१ गांव गलीको दुसाखीयो ।

२

१ गांव आकोली चांपावत सूरतसिंघ नै श्री हजूर सुं त० (बी) करी ।

२ भाटी सूरतसिंघ नारखांनोत नै श्रीहजूर त० चाकरी, विगत—

१ गांव बलांणो
१ गांव मेलावस

६ चवांण सूरसिंघ वेणीदासोत नै सांचोर तालके वीमरो फौजदार करोली—

१ करोली
१ घांणतो
१ डाबली
१ धमांणो
१ हातर
१ चरटवो

६

२ चवांण सूजो सूरतसिंघोत नै सांचोर त० (वी) करी—

१ हरीयाळी
१ भर कुवो

१ सिरदारसिंघ मालदेवोत रै गांव वीरोल ।

२ चवांण सिवदांन फतैसिंघोत नै—

१ जाखेल
१ डेडवो

४ राठौड़ करणसिंघ विजेसिंघोत रै—

१ जाब
१ सेहेली
१ सरवांणो
१ भादसुड़ ।

२ भाटी अमर केसवदास नुं गांव—

१ गांव दादलोत　　१ गांव वासणी।

३ जोधा दुरजणसिंघ सबळसिंघोत नै—

१ गांव भादरुडो　　१ गांव चोरां　　१ गांव आंबलीयां

३

१ चवांण नारखां लाडखांनोत—गांव गोलास।

३ चवांण अनोपसिंघ सांवळदासोत रै—

१ गांव बालेरा　　१ गांव केरीयो　　१ गांव रतोड़ो।

३

१ चवांण मूणसिंघ गिरधरदास—जोटड़ो वीरांमणां रो।

१ भेरडीया मांनखां मेगो डोसावत नै—गांव वड़सम।

१ सांमी जैतपुरी नरपुरी रा चेला रै—गांव हारेछो। माहाराजाजी श्री अजीतसिंघजी दीयो, १७६०।

१ चारण रूपदेजी सुंतले गांव का चोलो जात रा मेगु नै १७६२ रा वरस में दीयौ, माहाराजाजी श्री अजीतसिंघजी री वखत में।

१ चवांण जोवण केसरीसिंघोत।

१ चवांण सोभो भौरावत नै गांव ईसरोल। दुसाखीयो।

१ चवांण गोरधन नरहरदासोत, गांव परावां।

२३. ६ गांव सांसण चारणां रा—

१ गांव गोभी—चारण भींया नुं।

१ गांव जेरोल—चारण खिड़ीया।

१ गांव सीलोसण—चारण खिड़ीया।

१ गांव अमडावो—रोड़ीयां रो।

१ गांव लूणीयास—चारण मेगु नै

१ गांव डाडोसण।

१ गांव धरणावस—वणसूरां रै।

१ गांव पादरणी—वणसूरां रै।

१ गांव भोणा—चवाणां रै।

६

३४. प्रगना सांचोर रै गांवां री फिरसत हमार इणां बरसां में[1] बसतां तथा वेकरां, नै तिणां री विगत।

१७ खालसा रा—

१ कसबो सांचोर—
इकसाखीयो कचेड़ी भोम जेरडोयां नै जमो वेरो १ वेरो १ तळाव ४।

१ गांव गंगावास—
खेड़ो सूनो। वेरो १, जमीं सांचोर रा लोक खड़ै।

१ गांव पथूड़ा—
खेड़ो सूनो। गांव डुघाउ नै लूणी पावस चे जमी दोनां गांवां में दबी[2]।

१३ खास हवाला ता०—

८ गांव केरीयो—दुसाखीयो, रेख ४०००) नै केरीया रा गांव।

१ गांव केरीयो, दुसाखीयो।
१ ,, वीरावो।
१ ,, हालीया बावड़ो।
१ ,, सूंटाकुई।
१ ,, कुड़कुई।
१ ,, मेघाबी।
१ ,, कापलीकोट।

८

इतरा गांव मालांणी में गया—

१ गांव आंटली।
१ ,, पोणाली।
१ ,, जाखड़।
१ ,, वेरी।

४

१ गांव गोलासण—
इकसाखीयो। वेरो १, तळाव १। रेख रुपीया १०००)।

---

१. पिछले कुछ वर्षों में। २ दोनों गांवों की सीमा में इसकी जमीन दब गई।

१ गांव मेटोदो—

इकसाखीयो। रेल आयां। पारवाडीया तथा गोलासण, भड़वळ, कमालपुरो, फीलवाखेड़े पादरीया राठौड़ां री भोम।

१ गांव अरणाय—

दुसाखीयो। वेरा २ तळाव १। जमी मोकळी हळवा २००। तगीर, चहुवांणां रै पाछौ लिखीज गयौ। कदीम मुजब हाल—

१ गांव भेरोल—

कदीम सांसण सो चारण आईदांन रांमसरण हुवौ[1] १९१० में तरै संमत १९११ सुं खालसे। सो औ गांम विहारी गजनीखां रौ दत्त पायौ खिड़िये चेले १६५४ रा फागण सुद ८।

१ गांव हीड़वाड़ा—

पादरीया बिरांमणां रै। इकसाखीयो गांव।

१३ जुमले गांव १३ है।

१ गांव अेक सिरकारी जोड में प्रतापपुरौ बसायौ। सांचोर री सींव में। बसती घर ३०। संमत १९३९ रा वरस में वेरो १ खुदायो। जमीं जोड री खड़ै।

१७ जुमले गांव १७।

३५. ५६ गांवां री जमीं ऊदड़ी लागै—

५ गांव ५ री तौ अेक रीत—

१ गांव गरढाली—

अेकसाखीयो। वेरो १ तळाव १। फकीर रै मांनसा सा पीर पसातमारी रा बेटां री चोकी कुं० ३ कोस ३।

१ गांव सरचीणां—

इकसाखीयो। पादरीया परमारां नै गांव रांणावाव वाळां रै जुम्मे क० १०।

१ गांव मीपाल—

इकसाखीयो। वेरो १ तळाव १। चवांण नारणसिंघ मलूसिंघ रै जुमे। कोस ७।

---

१. देहांत हुआ।

१ गांव डांगरा—

इकसाखीयो। कोस ५। राठौड़ भोजराजोत रै जुमै।

१ गांव तीतरोल—

इकसाखीयो। राठौड़ मोबतसिंघ मेघसिंघोत रै।

५ जुमले विगत पासे गांवां री—

११ देवड़ां रा गांव—

७ देवड़ा रूपसिंघ अमरसिंघ रै हिंदूसींघ वनरार।

३ देवड़ा रूपसिंघ रै।

१ पीचलो १ नांनोल १ कुड़ी, संगरांम रै।

३ इकसाखीया।

१ पालड़ी देवड़ां री—

अखैसिंघ देवड़ो अमरसिंघोत रै।

१ कटोल—

देवड़ा हिंदूसिंघ रांमसिंघोत रै। कोस ५।

२ खेड़ा सूना मांजरे—

१ वणेदेव, १ वालेर।

३ देवड़ा पेमसिंघ कीलांणसिंघोत, सबळसिंघ, ठाकुरसिंघोत रै जुमे ३।

१ सुरावो—

दुसाखीयो। वेरो १ तळाव १। कोस १०।

१ दुगावो—

देवड़ा सबळसिंघ रै। कोस १०।

१ दुघड़—

खेड़ो सूनो।

३

१ देवड़ा प्रतापसिंघ रै—

गांव वासण, खेड़ो सूनो।

११ जुमले गांव इगीयारे रौ हाल।

३५ नईड़ कांठा रा गांव, सूंराचंद रा खेड़ा मांयला। नाडोला चवांणां रै जुमे, भाईवंटा में रांणा सिवराज नै महाराज श्री अजीतसिंघजी दिया।

६ रांणा मलु सुजांणसिंघ केसरीसिंघ सिरदारसिंघोत रै।

१ गांव सूराचंद—
दुसाखीयो। आथूंणो कोस १३।

१ गांव खेजड़ीयाळी—
दुसाखियो। आथूण कोस १५।

१ गांव नीबज—
आथूंणो कोस १२। चवांण गुलाबसिंघ मूळसिंघोत रै जुमे थो, सो गुलाबसिंघ फौत हुवौ तरै इणां जुमे।

१ गांव मालसरो—
सूनो खेड़ो। कोस १७।

१ गांव रायपुर—
खेड़ो सूनो। ऊपर सींधी बैठे। गीण सिरकार में आवै।

१ गीड़ां—
ऊपर सींधी बैठे। गीण सिरकार में आवै।

६

७ चवांण सूरतसिंघ जवांनसिंघोत नै चवांण उदैसिंघ कलीयांणसिंघोत—

१ गांव टांपी—
दुसाखीयो। कोस १५।

१ गांव साकरीयो—
दुसाखीयो। कोस १६।

१ गांव डूंगरी—
इकसाखीयो। सूनो खेड़ो।

१ गांव सेमारड़ी—
इकसाखीयो। कोस १७।

१ गांव खांभराई—
इकसाखीयो। कोस १८।

१ गांव यावतलावड़ी।
१ गांव जाले वेरी।

७

६ चवांण जवांनसिंघ दांनसिंघोत नै चवांण भूतसिंघ वीरमदेवोत नै चवांण दौलतसिंघ केसरीसिंघोत रै—

१ गांव दूठवां—
आथूंणो कोस १४। दुसाखीयो।

१ गांव सेवावो—
इकसाखीयो। कोस १५।

१ गांव भेखड़ी—
इकसाखीयो। कोस १६।

१ गांव पादरडी—
इकसाखीयो। सूनो खेड़ो।

१ गांव पांचलो—
इकसाखीयो। खेड़ा २, सो खेड़ो १ चारण जगा रै।

१ गांव तीलांणी रा खेड़ा २, सो जमीं मालांणी वाळा दाबी। कोस २ में मांणकी, संमत १९०२ रा बरस में गुजयाला दाबीयो।

६

१ चवांण तेजमल अळसिंघ भोजराजोत नै चवांण हठीसिंघ दुरगदास मांनावत रै—गांव मासरबी, दुसाखीयो। कोस १२।

१ रांणा चनणसिंघ उमेदसिंघ सिरदारसिंघोत रै—गांव बरणावो। दुसाखीयो। कोस १६ आथूण।

१ चवांण प्रथीराज जसराजोत रै—गांव ४।

१ गांव पाटवो—दोसाखीयो। आथूंणो कोस १५।

१ गांव वेडीयो—इकसाखीयो। आथूंणो।

१ गांव बोजी—इकसाखीयो।

१ गाव ढूबी—इकसाखीयो।

४

१ चवांण जवांनसिंघ अमरसिंघोत नै चवांण हातीसिंघ भोजराजोत रै—गांव मंडाली। दुसाखीयो। कोस १९।

१ चवांण कांनसिंघ रांमसिंघोत नै चवांण अमरसिंघ दुरगदासोत रै—गांव सुतड़ी। दुसाखीयो। आथूणो कोस १५।

१ चवांण जवांनसिंघ जीवराजोत नै चवांण भूपतसिंघ कुसळसिंघोत नै कुसळसिंघ नारांणदासोत रै गांवों में सींधी बैठे तिण री गीणती श्री दरबार री, नै गांवां री पैदास अलबता नै बाव श्री सिरकारी भरता। संमत १६२६ रा बरस में सिरकार सुं जबत हुवा। परंत इतरा गांव भवातड़े जुमे—

१ गांव भवातड़ो—
दुसाखीयो। आथूंणो कोस १५। सिरकारी थाणो १६०८ घालीयो[1]।

१ गांव वाटकी—
चवांण भोपतसिंघ जांवतसिंघ रै नै चवांण चिमनसिंघ रै। इण रौ आधोआध गांव। दुसाखीयो। कोस १५।

१ गांव धींगापुरो—
दुसाखीयो। कोस १५।

१ गांव वरडवालो—
खेड़ो सूनो। कोस १७। आथूणो।

१ गांव दीलोधर—
खेड़ो सूनो।

१ गांव जोड़ादर—
खेड़ो सूनो। आथूणो।

६

१ गांव फोगरडवो—
खेड़ो सूनो। कदीमी चवांणो रो।

१ गांव राजपुरो—
खेड़ो सूनो।

३५

१ चवांण जगतसिंघ मेघसिंघोत नै चवांण भभूतसिंघ मोड़सिंघोत रैं। गांव कोस ५। इकसाखीयो।

गांव २ भाटां रा जिण री जमां लागै—

---

१. स्थापित हुआ।

१ गांव बगसड़ी—
इकसाखीयो। कोस ७। बारठ जेठा भूता रै ग० रुपीया ६४) कदीम लागै। हमार रु० ३२) भरै छै।

१ गांव भाटवस—
दुसाखीयो। कोस १३ आथूणो। भाट मोती पद सरे मां रांणेर रु० १२।।।–) लागै।

२

१ गांव गांघरावास—
दुसाखीयो। सो सदाबंद सांचोर रा गांवां में था सु हमार संमत १८९२ री साल में गुड़ा वाळा रांणा बाड़मेर सूं सायब बहादुरजी कने सुं ऊकील पंचोळी जीतमल री मारफत जमी करीया। ऊनाळू साख रा खेत ना लीया नै जठा पछै जमा देवै नहीं।

५६ जुमले गांव छपन।

३६. ७६ पटायतां रै पटै गांव—

११ चढा ऊतर[1] गांव, सु पटायतां नै पटै गांव।

५ खांप राठौड़—

१ गांव घड़सो—
राठौड़ भैरुंसिघ सिरदारसिंघोत रै पटै। गांव दुसाखीयो। उतरादो कोस १२।

१ गांव ईसरोल—
करणोत जेठकरण कनीरांमोत नै करणोत बभुतसिंघ रै। गांव दुसाखीयो कोस १०।

१ गांव मेलावास—
बाला मर्घसिंघ रैं। गांव दुसाखीयो। कोस १४ आथूण।

१ गांव भड़वल—
जसोलियो खेमसिंघ चुतरसिंघोत रै। इकसाखीयो। कोस ४ आथूणो

१ गांव पाड़पुरो—
धवेचो सोभसिंघ वीरमदे जसराजोत रै। इकसाखीयो कोस २।

५

१. स्थायी जागीर के नहीं।

४ खांप चहुवांण—

१ गांव गलीफो—
चवांण वनैसिंघ किलांणसिंघ सगतीदांनोत रै। दुसाखीयो। कोस १०।

१ गांव रतोड़ी—
चवांण आसकरण बभूतसिंघ सूरतसिंघोत रै पटै। दुसाखीयो। कोस १०।

१ गांव वासण—
चवांण सादूळसिंघ हींदूसिंघोत रै पटै। इकसाखीयो। कोस ४।

१ गांव भादरुडी—
चवांण केसरीसिंघ प्रथीराज कवीरांमोत रै। गांव इकसाखीयो। कोस १०।

४

२ खांप सिपायां री[1] जाळोर वाळां रै—

१ गांव लाचड़ी—
कवर अबुखां, गुमानीखां सिरदारखांनोत रै इकसाखीयो। कोस १।

१ गांव कमालपुरो—
सयद जमालखां सायबखां रां रै गांव पटै। इकसाखीयो। कोस २।

२

११

६४ आगे पटा रा गांव कदीमी है सुं चढ़ै ऊतरै नहीं[2]। घणा वरसां रो भोमीचारो हैं।

११ राव मोतीसिंघ लालसिंघ पदमसिंघोत रै पटै गांव तिणरी विगत—

१ गांव चीतलवांणो—
कोस १० आथूंणो। गांव इकसाखीयो।

१ गांव रणोदर—
कोस १२ आथूंणो। गांव इकसाखीयो। भोमीया राठौड़।

१ गांव डीभोग—
हमार सीटी सूनी वरतन पुरोदी। गांव इकसाखीयो।

१ गांव डेडरो—
खेड़ो सूनो। कने रांमपुरो बसायो।

१. मुसलमान जाति के जागीरदार। २. स्थायी जागीर के हैं।

१ गांव फीलवां—

कोस ३। गांव इकसाखीयो। चवांण भोपालसिंघ रै जुमै।

१ गांव वेचवाड़ी—

कोस ८ इकसाखीयो। त० गोयल राजो, लखो, खावै[1] इण कने फेर जमो देवै।

१ गांव सैतांणो—

कोस ८। इकसाखीयो। गोयल धीरो, भगो खावै, घणा दिनां सुं।

१ गांव रुंधा—

कोस ३ इकसाखीयो। सुजेरडी फतैखां ऊसूखां रै जुमे।

१ गांव धूड़वां—

कोस ४। गांव सांसण, ब्रांमणां रौ, सो सिवजी माहाराज नै चढ़ायो। सांमी इंदरपुरी तथा किसनपुरी रै जुमे। इकसाखीयो।

१ गांव फरणो—

कोस २। इकसाखीयो। पुर वाळां रै आद में[2]।

१ गांव वेसालको—

कोस ८। इकसाखीयो। आगे चारणां नै दांन में दीयौ हौ नै हमें हमार वी० में, सो हरसोंघो रतनो खावै।

११

६ चवांण लालसिंघ मेघसिंघोत रै नांवे चवांण सुरतांणसिंघ दौलावत—

१ गांव हुतीगांव—

कोस १२। दोसाखीयो गांव। आथूंणो बंदो। लालसिंघ रै जुमै।

१ गांव कीसूंरी—

कोस ११ दुसाखीयो। गांव चवांण सुरतांणसिंघ दौलतसिंघोत रै जुमे।

१ गांव पालड़ी—

कोस ३। इकसाखीयो। लालसिंघ रै जुमे। पादरीया सोलंकी।

१ गांव सीधेपुर—

कोस १। इकसाखीयो। चवांण मोबतसिंघ रै जुमे।

---

१. उपभोग करते है। २. आधे हिस्से में।

२ चवांण सुजांणसिंघ नथसिंघोत नै चवांण सवाईसिंघ पदमसिंघोत, चवांण केसूसिंघ सवाईसिंघोत रै जुमे—

१ गांव अचळपुरो—
कोस ७ । इकसाखीयो ।

१ गांव दधूड़ा—
खेड़े सूनो ।

२

६ चवांण सूरतसिंघ ओपसिंघोत नै अचळसिंघ गुलाबसिंघोत रै पटै—

१ गांव जाब—
कोस १२ । दुसाखीयो । कोसीट। डावा ।

१ गांव जांणवी—
कोस १० । दुसाखीयो । चवांण मोकलसिंघोत बभूतसिंघ रै जुमे ।

१ गांव सेली—
कोस ११ । इकसाखीयो ।

१ गांव जाखल—
कोस ५ । इकसाखीयो ।

१ गांव डेडवो—
कोस ५ । इकसाखीयो ।

१ गांव भादरुड़—
कोस ११ । गांव दुसाखीयो ।

६

४ चवांण लालसिंघ सिरदारसिंघोत नै चवांण कांनसिंघ सुरजमलोत रै पटै गांव—

१ गांव कारोलाई—
कोस ३ उतरादो । इकसाखीयो गांव ।

१ गांव हड़ीतर—
कोस ३ उगूणो । गांव इकसाखीयो । चवांण लालसिंघ रै आगे ।

१ गांव गांणेतो—
कोस ५ ईसांन कूंट में । गांव इकसाखीयो ।

१ गांव आंमली—
कोस ५। इकसाखीयो।

―――――
४

३ चवांण मोडसिंघ लालसिंघोत, चवांण मंगळसिंघ प्रतापसिंघोत रै पटै, गांव ३—

१ गांव डभाल—
कोस ३ आथूणो। गांव इकसाखीयो।

१ गांव सीलूको—
कोस ३। इकसाखीयो।

१ गांव अगार—
कोस २ आथूंणो। इकसाखीयो।

―――――
३

५ चवांण भोपालसिंघ जालमसिंघ अजीतसिंघोत रै पटै, गांव पांच ५—

१ गांव पुर, वेतलब—
कोस ५ उगूणो। इकसाखीयो गांव।

१ गांव गेनाल—
कोस ६ उगूणो। गांव इकसाखीयो। खेड़ो सूनो।

१ गांव मालवाड़ो—
कोस ७ उतरादो। गांव इकसाखीयो।

१ गांव नागोलड़ी—
खेड़ो सूनो।

१ गांव बोठा—
उगूणो गांव। खेड़े सूनो।

―――――
५

गांव नै कारणा में आद सुं रावजी रै नांवे मंडायो।

२ चवांण तेजसिंघ हातीसिंघोत, भारतसिंघ जीवसिंघोत रै पटै, गांव २—

१ गांव हरीयालो—
कोस ७ उतरादो। बेतलब, इकसाखीयो।

१ गांव भरकुवो—
खेड़ो सूनो।

२

३ चवांण हेमसिंघ लालसिंघोत नै चवांण सूरजमल जेसा सादूळसिंघोत रै पटै, गांव ३—

१ गांव डडोसण—
कोस ५ आथूणो। इकसाखीयो।

१ गांव वालेरा—
कोस ११ आथूणो। दुसाखीयो। पादरीया बीरांमण पास रै गांव रो वित हमेसां पावै[1]।

१ गांव दादलो—
कोस ५ आथूणो। इकसाखीयो।

३

४ चवांण आसकरण बभूतसिंघोत नै चवांण भोजराज नवलसिंघोत रै पटै। गांव ४—

१ गांव डावल—
कोस ५ उतरादो। इकसाखीयो। बेतलबो।

१ गांव लीपादरो—
कोस १२। इकसाखीयो। चवांण जेठकरण जीवराज रै। उतरादो।

१ गांव वरणपुरी—
कोस ४ उतरादो। खेड़ै सूनौ।

१ गांव सागड़वो—
कोस ८ उतरादो। इकसाखीयो गांव।

४

१ चवांण अजीतसिंघ सोभसिंघोत नै चुवांण पाबूसिंघ जीवसिंघोत रै पटै, गांव १—

१ गांव मरटवो—
कोस ११ आथूणो। गांव दुसाखीयो।

---

१ पड़ौस के गांवों के मवेशी यहां पर पानी पीते हैं।

२ चवांण हीमतसिंघ जवांनसिंघ प्रथीराजोत रै पटै, गांव २—

१ गांव सेवाड़ो—
कोस ८ उतरादो । इकसाखीयो ।

१ गांव चजरायो—
कोस १ आथूणो । गांव इकसाखियो ।

२

३ चवांण हातीसिंघ चुतरसिंघोत रै पटै, गांव ३—

१ गांव दांतीया—
कोस ८ आथूणो । इकसाखीयो ।

१ गांव वांक—
कोस १० आथूणो । इकसाखीयो ।

१ गांव करावड़ी—
कोस १० उतरादो । गांव इकसाखीयो ।

३

१ चवांण रघुनाथसिंघ किलांणसिंघोत नै चवांण बनेसिंघ नवलसिंघोत रै पटै, गांव १—

१ गांव चारणी—
कोस ११ उतरादो । गांव दुसाखीयो ।

२ चवांण तगसिंघ धीरसिंघोत नै चवांण भोमसिंघ विजैसिंघोत, पटै गांव २—

१ गांव मूली—
कोस १२ उतरादो । गांव दुसाखीयो । कोसीटा हुवै[1] ।

१ गांव सांतेरोयो—
कोस १३ । खेड़ो सूनो । जमीं जाबक[2] नीचे दबी ।

२

२ चवांण जीवसिंघ जोगराजोत नै चवांण प्रतापसिंघ नवलसिंघोत नै चवांण धीरसिंघ रै पटै, गांव २—

---

१. कुओं से सिंचाई होती है । २ कुल, सम्पूर्ण ।

१ गांव वीरोल
कोस २ दिखणादी कांनी। इकसाखीयो। गांव थीराद री कांकड़ आयो[1]।

१ गांव पलादर—
कोस ३ दिखणादो। इकसाखीयो। खेड़ो सूनो पड़ोयो, संमत १६११ रा बरस में प्रवानो कराय बसायो, जिण दिन सूं खावै।

२

१ गांव चोरां—
कोस ८ उतरादो इसांन कूंट। इकसाखीयो गांव। चवांण अजबसिंघ नै चवांण चुतरसिंघ दुरजणसिंघोत नैं चवांण सगतीदांन मांनावत नै चवांण सादूळसिंघ हींदूसिंघोत रै पटै, गांव १।

१ गांव कोलो—
चवांण लालसिंघ मोड़सिंघोत नै बभूतसिंघ जांमसिंघोत रै पटै। गांव इकसाखीयो। कोस ६ उतरादो।

१ गांव पारावा—
चवांण चिमनसिंघ सगतीसिंघ ऊमावत रै पटै। गांव इकसाखीयो। कोस ८ उतरादो। कोसीटा हुवै।

१ गांव जोटड़ी—
चवांण ओपसिंघ, बुदसिंघ बखतसिंघोत नै चवांण दलसिंघोत रै पटै। गांव इकसाखीयो। कोस ८ उतरादो। कोसीटा हुवै।

१ गांव धमीणा—
चवांण जगतसिंघ अजबसिंघ नै चवांण जेठकरण रतनसिंघ रै पटै। गांव कोस ४ उतरादो। इकसाखीयो गांव।

१ गांव खावड़लो—
चवांण जालमसिंघ जैतावत नै चवांण मोबतसिंघ वागसिंघोत रै पटै। गांव कोस ५ आथूणो। इकसाखीयो।

१ गांव जलदरा—
राव लालसिंघ, पदमसिंघ अणंदसिंघोत रै जुमे। गांव दुसाखीयो। आथूणो। तेजमालोतां रै है।

---

१. थीराद की सीमा पर स्थित।

१ गांव बलांणो—

चवांण सगतीदांन रार्यासघोत लाडसिंघोत रै पटै। गांव इकसाखीयो। कोस ६ ईसांन कूंट में।

१ गांव वड़सस—

मेरडीया फतैखां नीहालखां माखुखांजोत नै भेरडीया मीया मीदूखां सवाईखां सिरदारखां मादुखांनोत रै पटै। गांव इकसाखीयो। अगनी कूण में।

७६

११. सांसण गांव—

१ गांव हाडेचा—

इकसाखीयो। दिस आथूण में। भगवानपुरी सिवपुरी भींवपुरी पटै। माहाराज श्री अजीतसिंघजी चीतलवांणो १७६० रा वरस में पधारीया तरै चढायो[1]। कोस ७ गांव।

६ चारणां रा सांसण—

१ गांव मोपी—

कोस ६ आथूण। इकसाखीयो। कोसोटो हुवै। चारण करता जमांवत नै चारण अभा मांनावत रै आदो-आद, सो गांव बरजांगजी दीया चारण सोडै मई नै।

१ गांव अगडावो—

दुसाखीयो। चारण रांणा प्रगता वागावत रै। भाखरसिंघ रै दीयोड़ो। कोस १६। सा० पातलोत दीयो धवेचे, पायौ रोहड़ोयै नाथै।

१ गांव घरणावस—

दुसाखीयो। दिस उतराद कोस १३। चारण भांना रो। चारण जादे ऊमा रै दत व्यारी मलकअली सेरखां दीयौ, संमत १६६० रा बरस में, चारण भादो वणसूर पायौ।

१ गांव पादरड़ी—

इखसाखीयो। दिस ईसांन कूंट। कोस १०। चारण खेता वजा रै दत्त, राव वरजांगजी रो। पछै राव वरजांगसिंघजी संभत १७६० में दीयौ।

---

1. भेंट किया।

१ गांव फीचेलो—

कोस ७ आथूंणो। इकसाखीयो। चारण वीरदांन केसु रै, दत्त राव बरजांगजी रौ।

१ गांव लूणियावस—

कोस ५। इकसाखीयो। अगनी कूण में। चारण करता खूबदांन नारखांनोत नै, दत्त राव बलूजी रौ। पछै पाछौ दत्त[1] व्यारीयां रौ १७४२ रा वरस में।

१ गांव जीजोसण—

कोस १५ दिस ऊगवणो। गांव इकसाखीयो। चारण संगरांम सुखदांनोत नै चारण भूता जीवावत रै। दत्त राव बलूजी रौ दीयोड़ो गांव।

१ गांव भोवांणो—

कोस १० दिस आथूणो। इकसाखीयो। चारण कीरतसिंघ अनोपा रै नै चारण चूरण जीवा धीरा मांनावत रै। दत्त माहाराज श्री अजीतसिंघजी रै दियौड़ा, संमत १७६० में।

१ गांव सीलोसण—

कोस ११ वायब कूंट। गांव दुसाखीयो चारण पूरा हरदांन देवदांन रा बेटां रै। दत्त व्यारी अलीसेरजी दीयौ, संमत १६६० खड़ीया जाजा नै।

१ गांव तांतड़ो—

कोस १४ दिस उतराद। इकसाखीयो। जाळोर रौ गांव, इंदा ऊपर। पेली कांनी माळी महोगर बीरांमण मुकनौ सोबो गंगादास रौ, चारण वणसूर रै[2]।

११ जुमले गांव इग्यारै

रेख री चाकरी रा घोड़ा सांचोर करता तिण री वीगत—

४ चवांण राव वीरमदे मालदांनोत पटै गांव, चीतलवांणो, रेख १४०००)।

३ चवांण केसरीसिंघ अखसिंघोत पटै कीरोल, घोड़ा ३, रेख ४०००)।

४ चवांण बुदसिंघ भवांनसिंघोत, पटै गांव होतीगांव, रेख ४०००)।

४ चवांण प्रथीराज सुंरतांणसिंघोत नं जैसिंघदे जालमसिंघ रामसिंघोत, रेख रु० ४०००)। घोड़ा ४।

---

१. फिर से दान में दिया गया। २ वणसूर खांप के चारणों के अधिकार में।

२ चवांण जैतसिंघ रूपसिंघोत नै लालसिंघ राजसिंघोत, पटै गांव डंभाल.। गांव ३। रेख २०००), घोड़ा २।

२ चवांण प्रथीराज केसरीसिंघोत पटै गांव सिव। रेख २०००) घोड़ा २।

२ चवांण जालमसिंघ अजबसिंघोत, पटै गांव पुर। रेख रु० २०००) घोड़ा २।

१ चवांण ईसरदास कुसलसिंघ जोधावत बीसनदास हातीसिंघोत, रायसिंघ लाडूसिंघोत, पटै गांव डावल। आगे घोड़ा २ री चाकरी, घोड़ो १।

१ चवांण वनेसिंघ जोधावत, पटै गांव मख। रेख रु० १०००)।

४ चवांण कुसलसिंघ जोधावत, पटै गांव रतोड़ी। रेख रु० ४०००)।

१ चवांण रायसिंघ लाडूसिंघोत, पटै गांव बलांणो। घोड़ो १।

२ चवांण माहसिंघ रूपावत, पटै गांव करावड़ी दांतीया। घोड़ो १। गांव ३। रेख २०००)।

१ चवांण माधवसिंघ कलावत नै सेरो जमालोत रै पटै गांव घसांणी। रेख १०००) घोड़ो १।

१ चवांण थांनसिंघ हींदूसिंघ सखावत चवांण लूणकरण वीरमदेवोत, पटै गांव हरीयाळी भरकुवो। रेख १०००)।

१ चवांण कनीरांम विजेसिंघोत, पटै गांव भादरु। रेख रु० १०००)।

४ चवांण सिवसिंघ इंदरसिंघोत। पटै गांव अरणवो। रेख रु० ४०००)।

२ चवांण प्रेमसिंघ हेमराजोत रै पटै गांव बासण कमालपुर। घोड़ा २।

४ चवांण सगतीदांन देवीसिंघोत, पटै गांव गलीफो। रेख रु० ४०००)।

१ चवांण अणंदसिंघ दौलतसिंघोत, पटै गांव तीतरोल। रेख १०००)। घोड़ो १।

१ चवांण रायसिंघ विजैसिंघोत रै पटै गांव चारणीव। रेख १०००)।

२ चवांण भोजराज कीरतसिंघोत चवांण जवांनसिंघ उदैसिंघोत रै गांव डडोसण दादलो। रेख रु० २०००)। घोड़ा २।

१ चवांण मांनसिंघ हीमतसिंघोत रै गांव सागड़वो। रेख १०००)। घोड़ो १।

१ चवांण गजीयो केसरीसिंघोत, पटै गांव बांवरलो। रेख १०००)।

१ चवांण ऊमो भाखरसिंघोत, पटै गांव परावी। रेख १०००)।

१ चवांण गुमांनसिंघोत प्रेमसिंघ ब्यारीदासोत, पटै मुली। घोड़ो १।

१ चवांण ऊमो लालावत रै पटै गांव जोतड़ो। घोड़ो १।

१ चवांण नारणदास अभावत नै सिवदांन हटावत रै, पटै गांव वीरोल। घोड़ो १।

१ चवांण कांनो मांनावत रै पटै गांव कीड़। घोड़ो १।

१ चवांण रांमसिंघ चुतरसिंघोत, पटै गांव जवधरा। घोड़ो १।

१ चवांण रांमसिंघ अनोपसिंघोत रै पटै गांव करीयो। घोड़ा ४।

४ राठौड़ रतनसिंघ पाड़सिंघोत खांप मेड़तीया, पटै गांव घड़सो। चाकरी घोड़ा ४ जोधपुर करै। रेख हजार ४०००)।

१ राठौड़ नवलसिंघ पबावत खांप करणोत, पटै गांव ईसरोध। रेख हजार १०००)। घोड़ो १।

१ राठौड़ मांनसिंघ कीरतसिंघोत, खांप बाला, पटै गांव मेलावस। रेख हजार १०००)। घोड़ो १।

१ राठौड़ सगरांमसिंघ आईदांनोत, खांप धवेचा, पटै गांव पाड़पुरो। रेख हजार १०००)। घोड़ो १।

१ जेरडीयौ सवाई रैमतखां रौ नै नपालखां माखुवोत वगेरे, सांचोर रा भोमीया तिणां रै पटै। गांव हसम रेख हजार १०००)। घोड़ा १।

१ मेर बादरखां हसनखांनोत रै पटै गांव लाचड़ी। रेख रु० १०००)

१ चारण जीवो सीभुदांनोत, अभो भाखरसिंघोत रै जाव कोचेलो सांभरण। चाकरी घोड़ो १।

६६

३७. याददासत आगलो[1] री विगत—

रांणो भोजराज रै बेटा रांणो चंद जोगराज पचांण वींजेरा जोत नै गजसिंघ कांठा रा गांवां[2] री हकीगत, संमत १७१२।

विगत तफसीलवार—

१ गांव भवातड़ो—

रावजी श्री बलूजी नै राज श्री जाड़ेजी रांणा भोजराज री बहू पुखता तरै चवांण राघूजी नुं दीयो। जमां बांध नै।

१ गांव जोड़ादर—

राव जी श्री बलुजी रांणा तेजमाल ने दीयो छै जमां बांध नै। आगे[3] सूनो थौ।

१. प्राचीन। २. सीमा के गांव। ३. पहले।

१ गांव भींतड़ी—

रावजी श्री बलूजी दीवी चवांण सता भोजराजोत नै, जमे री में। मोदी १४०० बांधा दीवी तिण पछै गांव राखे तो भोपत रांम खेत गया। तरै हमार जोर पोंछै नहीं। तरै ऊंठ १ ने सांड ४० देवै।

१ गांव मंडाली—

रावजी श्री बलूजी रांणा भोजराजजी नुं दीवी। गांव सूनो पड़ीयो थौ। तरै जमां रो ऊंठ १ बांध नै १७०३ में दीवी।

१ गांव खासरवी—

महाराज श्री अजीतसिंघजी रांणा पचांण नुं दीवो जमा बांध नै। सूनी थी सो जमा रा रु० ४१) में, चवांण मालदांनजी नै ऊभी देता जां मुजब।

१ गांव वाटकी—

माहाराज श्री अजीतसिंघजी माहाराज रांणा पचांण नुं दीवी। वसतो रसतो थौ चाकरी कीवी। समत १७३३ में।

१ गांव वरणवो—

रावजी श्री अजीतसिंघजी दीनो रांणा पंचांण नुं, दीयो रु० २००१) जमां रा बांद।

१ गांव दुठवो—

आगे तो कदीमी सुं नाथां नै। राज श्री सगतसिंघजी नै राज श्री देवीदासजी ऊंठ १ कर नै दीवी। संमत १७६२ में रावजी बलुजी दीयौ।

१ गांव दीलोधर—

कदीम सूनो। सदाबंद[1] वाटकी में मांजरे छै।

१ गांव रड़वल—

खेड़े कदीमी सूंनो, नै गांव भवातड़ा में सदामद मांजरे।

१ गांव धींगपुरो—

हमार इणां बरसां में नवे ने सोडी करने राज श्री अभैराजजी मेरुजी बसायो नै सोमां गांव सुतड़ी तथा वाटकी तथा भवातड़ो तथा पारीवासु कने खेत बसायो छै।

१ गांव घड़सो—

संमत १७३५ रा रांणा ठाकुरसी श्री माहाराज सायबां रा वखत में घड़सा

---

१. हमेशा से ही।

रा पटेल मार नै गेगा पती मार नै गांव घड़सो लीयो थौ। तिण पछै रावजी श्री सांवळदासजी नुं संमत १७४७ सांचोर हुई तरे गांव घड़सो छोडावण री तकरार कीवी, तरै ठाकुरसी छोडे नहीं। तरै गांव गंधवा २ वाख दे सिरकार री जमां बांध नै गांव घड़सो छुडायो। तरै राज श्री गिरधारीदासजी नुं मांणसां कैयो[1] जो गांधवा क्युं देवौ ? तरै कैयौ—मैं तौ बेटी दे नै छोडावसां पछै, म्हांरा घर में सपूत होसी सो छोडावसी। संमत १७४६।

३८. सिध श्री माहाराजाधीराज माहाराजाजो श्री श्री १०८ श्री अजीतसिंघजी माहाराज कंवार श्री अभैसिंघजी वचनायतं तथा सोबे सांचोर रा गांवां में वीरांमणां पै छै तथा वीचलां रै माफ कीयो छै। गांवां री विगत इणां भांत—

१ गांव कीलवो	१ गांव बालेरा
१ गांव आंबलो	१ गांव जोटड़ी
१ गांव धूड़वां	१ गांव हीडवाड़ी
१ गांव परावा	१ गांव वणपुरी
१ गांव डंसाल।	

९

गांव नव। संमत १७६० रा फागण सुद १५, मुकांम चीतलवांणे ती नकल उतारी छै।

१. लोगों ने कहा।

(ख) परगने जाऴोर रौ हाल

१. प्रगने जाळोर री जूंनी विगत कांनूगां री जूंनी बही सूं ऊतरी[1] । संमत १३१२ रा चैत सुद ३ लगन मेख मांहे श्री जाळोर थापना कीनी[2] । तिण पछै १३५१ रा पातस्या अलाऊदीन जाळोर लीधी । कांनड़दे जी कांम आया वरस १२ बारे राज कांनड़देजी कीयौ । पछै फौज आई तरै जळोर फतै कीधी ।

२. व्यारीयां री विगत, इतरा हाकम व्यारीयां रा ठाकुरां नै जाळोर पटै हुई तथा और हाकम जाळोर आया । संमत १६२५ रा वरस मास थी बही रा पांने लिखी तिण री नकल ऊतारी छै—

नबाब गजनीखांजी टीकै बैठा, मलकखांनजी मूवा तरै संमत १६२५ रा गजनीखांजी टीकै बैठा. संमत १६४२ रा पोस वद ४, वरस १७ राज कीयौ ।

३. व्यारीयां नबाब खांनखांना नैं पकड़ीयो तो वेद मुतो जगमाल तरक ऊप्र रसा पकड़त कांम आयौ । व्यारीयां री वसी राड़धड़े[3] गयौ थौ, गजनीखांन पकड़ीयां पछै खोजो परमाद जाळोर हाकम हुवौ । पछै अब्दुल कासम जाळोर राज कीनो संमत १६४३ रा कातो वद ५ खोज वरदी जाळोर ऊपर वेस टुकी ऊपर छतरो खोज वरदीन कराई ।

४. पछै संमत १६४५ रा हबरदो जामु बेग जाळोर प्रवेस । संमत १६४८ रा काती वद १ जाळोर गढ़ नबाब श्री गजनीखांनजी बीजापुर लाहोर था राजरांणी परण[4] आया । पछै संमत १६७० रा वरस गजनीखांनजी बीजापुर रै थांणे फौत हुवा नै पाड़खांजी टीके बैठा संमत १६७३ रा पोस वद ।

५. राजरांणो नै पाड़खांन मारी, पाड़खांन बुरानपुर था नबाबखांनजी ही सोबे था । राजरांणी बुरांनपुर में मारी । राजरांणी रा भाई-बंद अतमाहात दौला रौ काका था सो पातसाही नूंरमैल आगे पुकारीया—जु मेरी बेटी पाड़-खांन मारी छै । तरै पातसाजी पाड़खांन नै पकड़ाय मंगायौ । जाळोर रा उमराव तुरक मना था, हिंदू सगळाई मतौ कराय नें मरावी थी[5] । पछै पाड़खांन नै पातसाजी पूछीयो, नूंरमैल पासे ऊभी थी,[6] केण लागी-किण मारी । तरै पाड़-

---

१. लिखी, लिपिबद्ध की । २. जालोर री स्थापना की गई । ३. मालानी का इलाका । ४. शादी करके । ५. हिन्दुओं ने उकसा कर उसे मरवाया था । ६. पास में खड़ी थी ।

खांनजी जाबाब दीयौ— जु मैं मारी । तरै नूरमैल हुकम कीयो—जो पुरुस खून कोयो है, मारौ, तरै पाड़खांन नै अजमेर में मारीयौ ।

६. पछै साहाजादो खुरम आपरा उमराव जाळोर थाणे म्हेलीया था सो उमराव रौ लसकर खोरणी नैं मालोळाई छै, जठै ऊतरीया था । तरै जाळोर ठाकुर सह था तिणां सांभळीयौ[१] । पछै जाळोरीयां वेढ कीवी । अमीजो नूरमहेमंद रौपडो उण बखत मंडोवरी कांम आयौ । बीजा ही घणा कांम आया हुसी[२] । साहजादे रा चाकर था सू नास गया[३] पछै साहजादै नुं खबर हुई तरै माहाराजाजी श्री सूरसिंघजी जाळोर लेवण री ऊमेद में था सो साहाजादे सुं अरज कीवी । तरै साहाजादे हुकम दीयौ, तरै जाळोर लीयौ ।

७. पछै कंवरजी श्री गजसिंघजी मारवाड़ रौ साथ ले जाळोर आया नै खांडा हरजी रा पैली तरफ डेरा था सहेर में व्यारी ठाकुर भला-भला था सो वेढ करतां दरवाजा ऊपर नाळ थी सु चाढता चीरडता लसकर री आदमी कोई आय सकतो नहीं । पछे नरांणदास बोड़ो थौ सु सिवांणा वाळा सूं राजसिंघजी वात करावता जोहुं कंवर श्री गजसिंघजो कहै छै—मैं तौ मांमाजी रैं भरोसै आया छां । नै छोडाया, तरैं नारांणदास बालोत श्री माहाराजाजी री चाकर थौ तिण ने डोडीयाळ रौ पटो गांव २० बीस थी पटै दीयौ । बोडा नरांणदास नै बाकरो नै वागरो री पटी ढंढारराव रै पटै दीया । पछै बोडांणा नै बालोत भेळा होय नै कंवरजी श्री गजसिंघजी रौ साथ लेय नै गढ ऊपर चढीया । राजसी मुंतो नै पचांयण बालोत गढ ऊपर चढीया था सो गढ ऊपर श्री माहाराजाजी रौ साथ चढीयौ । तरै राजसी मुंतो तौ मरतौ थौ[४] सो पंचायण बालोत मरण देवै नहीं । हेटा तळेटी ऊतारीया[५] । पछै गढ री पाज लड़ाई हुई, जठै जबदलखांनजी सीलारखांनजी ताजुजी केसरखांनजी नंदा ताज कांम आया । और ही साथ कांम आया तथा घायल हुवा । नै राजसी मुंतो जाळोर रा रोळा में कांम आयौ । बीजा ही व्यारी नै रजपूत वगेरै नोसरीया । दीवांण कमालखांनजी था सो पालणपुर गया । और संमत १६७३ सुदी जाळोर में व्यारीयां राज कीयो । संमत १६७४ रा माहाराजा श्री सूरसिंघजी नै जाळोर सांचोर कंवरजी श्री गजसिंघजी रै नांवे लिखीजी सु संमत १६७६ सुधी रया ।

८. सीसोदीयो भींयो[६] कलांणदास रौ संमत १६७७ रा वरस १॥ रयौ नै माहाराजा श्री गजसिंघजी नै संमत १६७८ रा लगायत संमत १६६४ सुदी वरस

---

१. सुना । २. अन्य लोग भी काम आये होंगे । ३. भाग गये । ४. मरने को उद्यत हुआ । ५. किले के नीचे उतरे । ६. भीमसिंह ।

१६ रेयी। नबाब मीरखांजी नुं संमत १६६४ रा काती सुद १५ सुं संमत १६६८ रा वरस सुदी राज रयो।

९. माहाराज श्री महेसदासजी रतनसिंघजी नै संमत १६६९ में हुई। सु संमत १७१२ रा आसोज वद ४ सुदी[1] राज कीयौ।

१०. माहाराज श्री जसवंतसिंघजी नुं संमत १७१३ रा फागण सुं लगाय संमत १७३५ रा पोस सुद, १५ बरस २२।। रयो।

११. राव श्री सुजांणसिंघजी नै संमत १७३५ रा वरस में ऊनाळो सूं संमत १७३६ रा दीवाळी सुदी, मास ८ आठ राज रयो।

१२. दीवांण फतैखांजी कमालखांजी रै संमत १७३६ रा काती सुद सुं संमत १७३७ रा काती सुदी रयो।

१३. राज श्री रांमसिंघजी १७३७ रा मिगसर सुद सुं जेठ तांई मास ७ रयो।

१४. पठांण बेलोलखांजी रै संमत १७३७ रा असाढ सूं संमत १७३८ रा भादवा सुदी वरस १ नै मास २।। रयो।

१५. दीवांण फतैखांजी रै संमत १७३८ रा आसोज सुं लगायत संमत १७४० रा माहा सुद १५ सुदी रयो।

१६. सयद मीरकासमखांजी रै संमत १७४० रा फागण सुं संमत १७४२ रा फागण सुदी वरस २ दोय रयो।

१७. दीवांण फतैखांजी संमत १७४२ रा में आया सो फौत हुआ, तरै पछै कमालखांजी रै पटै हुवौ। संमत १७४३ सुं संमत १७५४ रा जेठ सुदो लां रयौ।

१८. माहाराज श्री अजीतसिंघजी रै संमत १७५४ रा जेठ रा मास में आया नै संमत १७६३ रा फागण में फौज रा डेरा सूराचंद था, सो पातसाहजी औरंगजेबजी फौत हुवा[2] तरै समाचार आया सो माहाराज श्री अजीतसिंघजी जाळोर सुं कूच कर जोधपुर पधारीया। सो जाफरखां ने लूटीयौ।

१९. संमत १७८१ में माहाराजा श्री अभैसिंघजी पाट बैठा[3] नै हाकम मूंणोयत सांवतसिंघ आयौ। नै संमत १७८५ रा गनीमां जाळोर मारी[4]। पछै संमत १७९१ मुंतो किसनचंद हाकम आयौ।

---

१. तक। २ मृत्यु हुई। ३. राजगद्दी पर बैठे। ४. जीती, लूटी।

२०. पछै संमत १७९८ में माहाराज श्री बखतसिंघजी रै जाळोर हुई तरै हाकम सिंघवी सांवतमल आयौ।

२१. संमत १८०६ में माहाराजाजी श्री अभैसिंघजी देवलोक हुवा तरै संमत १८०९ में माहाराज श्री विजैसिंघजी रौ अमल हुवौ नै पंचोळी रांमकरण नै मुणोयत गुलाबचंद फौज ले आया सो जाळोर में गनीम था सो वात कर परा काढीया,[१] नै माहाराजाजी रौ अमल कीयौ।

२२. संमत १८३६ रा सांवण में जाळोर पासवांनजी गुलाबरायजी[२] रै हुई नै हाकम सिंघवी जोरावरमल आयौ।

२३. संमत १८४९ रा पोस वद ८ मांनसिंघजी पधारीया नै सेरसिंघजी अै दोनूं पधारीया, सो सेरसिंघजी तौ पाछा जोधपुर पधारीया नै मांनसिंघजी अठै हीज था।

---

१. निकाल दिया। महाराजा विजयसिंह की पासवान।

(ग) परगने भीनमाल रौ हाल

१. १ भीनमाळ।

१ प्रथम जुग में पुष्पमाळ १, कोस ८४ कहीजै।

२ दूजै जुग रतनमाळ २, सु ऊंचो जटक कहीजै।

३ ताजै जुग श्रीमाळ, कोस ४० चौफेर।

४ कळजुग में भीनमाळ, वदे चौबीस तिण पैला।

२. विगत तफसील वार—

१ पैला जुग में श्री लक्ष्मीजी रौ राज रयौ।

२ दूजै जुग में परमांरा रौ राज रयौ।

३ सिरीमाळियां[1] नै, श्री लिखमीजी[2] रौ व्याव हुवौ जरां[3] दांन में दीवो।

४ संमत ११११ रा वरस में बीडी मुगल पातसाह आयो नै नगरी सूनो कीवी। सो वरस २५० सूनो रही। पछै चवांणां सीरोही रां नै हुई।[4] सो सीरोही रा रावजी नै मार नै वीहारीयां लीवी। सो वीहारीयां कना सूं सीहोजी माहाराज लीवो। हमें राज राठौडां रौ है।

३. भीनमाळ जाळोर री जूनी खियात री विगत मंगाई सु हाल श्री है के जाळोर रौ राज बीआरी[5] करता सु संमत १६७३ रा बरस में बड़ा माहाराज श्री सूरसिंघजी साहायबां कंवरजी श्री गजसिंघजी नै हुकम दीयो के पातसाह सलामत आया नै जाळोर सांचोर इनायत कीया है सु थे सारो साथ ले जाळोर जाईजो। नै जाळोर जाय नै झगड़ो कर जाळोर लीजौ[6]। तरै जोधपुर सूं फौज लसकर लै'र कंवरजी श्री गजसिंघजी नै सिरदारां में राठौड़ राजसींघजी खीमावत सावायत लसकर लै'र जाळोर आया नै गांव गुदरे डेरा किया। नै जाळोर रै घेरौ दीयौ। तरै सेहर में बीहारीयां रै साथ रा इतरा जणा गढ रा कांगरां ऊपर ऊभा रया[7], तिणां री वीगत—बीहारी १ जबदलखांजी

---

१. श्रीमाली ब्राह्मण। २ लक्ष्मीजी। ३. तब, उस अवसर पर। ४. सीरोही के चहुवानों को मिली। ५. बीहारी। ६. युद्ध कर के जालोर पर अधिकार कर लेना। ७. गढ की ऊंची दीवार पर चढ़ कर खड़े हुए।

१ ईसबखांजी रौ बेटौ १ सीलारखां, जबदलखांजी रौ बेटौ मेलतीबखां, नै बड़ा मलकखांनजी रौ बेटौ नै जमालखां अैमंदखांजी रौ बेटौ नै ताजुक सीयांनी जात तुरक अै नमांमंद[1] जात बीहारी नै हाथ सूं खांन खुद मुलक बीयारी रौ नै हतुसंदी नै मुग राजसी नै बालोत पंचांण-गांगावत नै काबा रायसिंघ, नै सींदल खींयो गढ रा कांगरा ऊपर मरणीया हौयर[2] यांने कंवरजी श्री गजसिंघजी रौ कटक[3] देय नै नेड़ा आये[4] नै घांघो करै। पिण सेहर ले सकीया नहीं। इहु करतां[5] मास ५ तथा ६ हुवा तिण पछै बोड़ा नाराणदास बागावत सीयांणा रौ भोमियो तिको कवरजी श्री गजसिंघजी रौ साथ बोड़ो दस कर नै चढ़ीया सु गढ भेळीयो सो ऊपर सिपाई २ तथा ४ कांम आया। जठै बालोत गढ छोड नै ऊमाड़ा ती ऊतरीया। तरै माहाराज श्री सूरसिंघजी सायबां री आणदुवाई फेरी।

दूजै दिन श्री हजूर रौ साथ सैर कोट ऊपर आया। तरै जाळोरीयां पोळ मांकूल कीवी। जाळोरियां रौ साथ बड़ी राड़ कीवी। नै इतरा जाळोरी राड़ में कांम आया तिण री विगत—१ जबदलखांजी बीयारो १ सीलारखांजी १ ताजूखां अजबानी १ केसरखांन १ दुरगो सींधी ताजु रौ ने १ मु॰ राजसी १ हेतू सींधी राजसींघ बगेरे जणा ७ तथा ८ कांम आया। नै जाळोरी सिरदार कांम आया तरै दूजा सारा नीकळ गया, समत १६७४ रा भादवा रा मास में।

४. पछै जाळोर राज माहाराज श्री सूरसिंघजी साहेबां रै रयौ, जठा पछै सीसोदीया राजा भींव रौ बरस १ तांई राज रह्यौ। तीं जाळोर ऊभी मेल नै गयौ[6]।

५. संमत १६७८ रा माहाराज श्री गजसिंघजी रौ राज हुवौ सु बरस १६ तथा १७ राज रह्यौ। नै बरस ३ नबाब मीरुखां रौ राज रह्यौ।

६. जठा पछ संमत १६६६ रा लां. समत १७१२ सुधी बरस १३ राव रतनसिंघजी मेसदासोत रै राज रह्यौ।

७. नै संमत १७१३ सुं लगाय संमत १७३५ रा पोस सुद तांई[7] माहाराज श्री जसवंतसिंघजी रै बरस २३ तांई राज रयौ।

८. नै जठा पछै संमत १७३५ रा बरस री साख ऊनाळी रौ राज राठौड़

---

१. नामी, प्रसिद्ध। २. प्राणोत्सर्ग के लिये उद्यत। ३. फौज। ४. समीप आकर ५. इस प्रकार प्रयत्न करते हुए। ६. छोड़ कर। ७ तक।

सुजांणसिंघजी रै रह्यौ नै संमत १७३६ रा दीवाळी जां पछै दीवांण माहाखांन जी फतैखांनजी बीयारी रा बेटां रै संमत १७३७ रा बरस री दीवाळी सुधो रह्यो । बरस १ ।

९. जठा पछै राज राठौड़ रांमसिंघजी मास २ नै दिन १० कीयौ । पछै दीवांण श्री फतैखांनजी पातस्याजी श्री औरंगजेबजी रै हजूर सुं अजमेर आया नै १ जाळोर १ सांचोर १ पालणपुर १ डोसो, इण मुजब प्रगना ४ च्यार पाया नै अमल कीयौ । संमत १७४० रा फागुण सुद १५ सुधो फतैखांजी रह्या ।

१०. पछै सईद कासमजी संमत १७४० रा चैत वदी नैं जाळोर सांचोर आय अमल कीयो संमत १७४२ रा चैत वद ५ सुधो अमल रह्यौ । नै संमत १७४२ रा चैत वद ६ सूं फतैखांजी बीहारी जाळोर सांचोर रा प्रगना २ पाया । जठा पछै कांमदार मु० कयो जरां जाय अमल कीयौ नै सईद कासमजी अैमदाबाद नै हालीया ।

११. संमत १७४२ रा बेसाख वद १४ नै दिन ऊगते माहाराज श्री अजीतसींघजी लसकर ले'र पधारिया, तिण री विगत—राठौड़ भगवांनदासजी ऊदैभांणजी तेजसिंघजी खीमकरणजी अखैराजजी दूजोई साथ पाला[१] असवार मिनख २००० आया ने परबात रा जालोर कायम कीनो । नै अक बाजु गढ रै पाज चांपावत भगवांनदासजी तेजसिंघजी चांपावत ने बाला अखैराजजो ऊपर ढोली दरवाजा रै ऊपर ही अं नै ऊदैभांणजी मुकनदासोत नै खीमकरणजो भेळीआै नै गढ री पाज बीयारी अलुखां नै पनुखां रौ कांम आयौ, माजनां रै साथ रा जणा ४ नै चौधरी अमरो कांम आयौ । नै दूजा सिपाई १० बारे कांम आया, नै सेहर भेलीयो[२] । नै सारो सहर लूटीयो नै खोसीयो खूदीयो । रातदिन खोस-लूटो[३] हुवौ । नै फतेखांजो रौ कांमदार बालो अमरदास वाकानवेस[४] ले'र नीसरीयो, वाकानवेस साथे लेनै नीकलीयौ । जठा पछै फतेखांजी नै खबर हुई कं भीनमाल जालोर राठौड़ां कायम कीवी ।

१२. जरां भीनमाल सुं मुग घर का दास उमराव जणां ४०१ ले'र नै जालोर आयो ने गेब रा नगारा[५] सुण रै राठौड़ां रा डेरा ऊगड़ीया[६] नै माहोमाह[७] लड़ाई हुई । सु आदमी ८० तथा ८५ कांम आया तथा घायल हुवा ।

---

१. अन्य पैदल सेना । २. शहर में प्रवेश किया । ३. लूटखसोट । ४. सूचना देने वाला व्यक्ति; एक पदाधिकारी । ५. युद्ध के नगारे । ६. हलचल मची । ७. आपस में ।

नै इणां ठाकुरां रा डेरा आगे कीया। नै ईयांरै साथ फतैखांजी री आंणदुवाई फेरी। राठौड़ां इसी लूट कीवी सु मिनखां नै धांन पांच तथा छव दिन सुधो मिलीयो नहीं[१]। जरै फतैखांजी रौ कोठार साबत रह गयौ[२], तरै सेहर में धांन नहीं मिलै नै ऊपर आखातीज[३] आई तरै घर दीठ[४] धांन सेर १ कोठार सुं दिन १५ तथा २० सुधो दीधौ। पछ माजनां लोकां कना सुं मोल रौ रुपयो १।) लीधौ।

१३. पछ फतेहखांजी जालोर आया नै फौज रै वासतै धांन लेबा ने मुग अगरा नै गांव मोठुड़ै मेलीयौ। सु धांन गाडी २ ले'र आवता था[५], सु फौज ऊपर गई तरे मुग अगरै आपरी लुगाई, बेटी नै बाढ-मार नैं लसकर सांमो आय न कांम आयौ। नै फतेखांजी री फौज मांहेला मीया तालीमखां नैं बेटो कांम आयौ। बेटो वडा वन रस फरीद रा रै घाव पड़ीया[६]। सेहर रो लोक बारे नीकलीयो ने कितरायक सिपाई यांरै घरै जाय बैठा।

१४. जठा पछै महाराज श्री अजीतसिघजी रौ लसकर आयौ सु जालोर भीनमाल कायम कीवी। नै भीनमाल म बीयारी कमालखांजी ने मुग मेवोजी कांम आया। सु बीयारी कमालखांजी पीर हुवा सु कचेड़ी में दरगा थपी ने मुग मेवाजी मामाजी[७] हुवा सु महेला कोट रै नीचे थांन थपीयो।

१५. जिठा पछै राठौड़ भगवानदासजी जोगीदासोत (ओत) रै भीनमाल पट हुई। सु समत १७८२ रा में तो दासपां रोठौड़ प्रतापसिघजी रै हुवौ। ने समत १७८५ मे महासिघजी रै मजल रौ पटौ हुवौ।

१६. तरै भीनमाल संमत १७८६ रा बरस सुं खालसे हुई, सु संमत १७८६ रा बरस सुं लगाय संमत १८१० रा बरस सुधो जालोर रौ थांणो रयौ। नै संमत १८१० रा बरस भंडारीजो पामसीजो रे पट हुवौ। लारला बरसां री बहीयां कागदोया[८] था सु संमत १८१२ रा बरस में भीनमाल में गनीखां री फौज सींधीयां री लागी सु सहर सारो भींठोरा कांटा रा घाल ने लाय लगाय बाल नांखीयो[९], जिण में कितराईक कागदीया जबाब रा था सु उण सांमल सारा जल गया।

---

१. लोगों को खाने के लिये ५-६ दिन तक अनाज नहीं मिला। २. पूरा ही बच गया। ३. अक्षय तृतिया। ४. एक-एक घर को। ५. लेकर आता था। ६. घाव लगे। ७. एक प्रकार का देव-स्वरूप। ८. कागज-पत्र आदि। ९. झाड़ियों के कांटों को शामिल करके उन्हें घरों में डाल कर लाय लगा कर जला दि।

(घ) परगने नागोर रौ हाल

१. सं० ११११ रा वैसाख सुद ३ पुख नखतर[1] में चवांण प्रथीराज रा परदांन सांमत कवास ठायमा कोट री नींव दीनी नै कोट करायौ नै नागोर बसायौ।

२. मांयलो किला रो कोट लांबो गज ४६४५ नै चवड़ो गज ४४६६, चारुं तरफ रौ गिरदाव[2] गज २१००० नै कोट रा कांगरा नग ८१८ नै बुरजां नग ३० नै कोट री पोळां नग ३ किला री नै मांय पोळ नग ३, गडीयालखांना री १ नै नगारखांना री १ नै डोडी री सुदी पोल् ६।

३. नागोर लार परगनो है नै नागोर राज पहली तो चवांणां रै थी सं० ११११ सुं लगाय नै ५० पचास तांई।

४. पछै खांनजादा मुसलमांन नै सोबो हुवौ[3], सुं ११७३ लगाय नै १४३१ तांई खांनजादां रै नागोर रहौ। सु करेई[4] तो खांनजादा दिल्ली रा नौकर रया नै करेई मांडव माळवा रा पातसा रा नौकर रया नै १४३१ रा में खांनजादा सुं नागोर दिलो रा पातसा छुडाय लोनी।

५. पछै १४३५ खांन समसुखांन पातसा कनै पाछी लिखाय लोनी सु बरस १५८ पोढी दस तांई[5] खांनजांदा रै रयो।

६. आगै सं० १४५६ राव चूंडेजी नागोर खांनजादां कना सुं लीनो थौ सु बरस तीन हीज रयौ न खांनजादो मुलतान रा सोबादार सुलमखांन मदत लाय चूंडाजी नै गांव टुकछा में मार नागोर पाछो उरौ लीनो[6]।

७. संमत १५९२ राव मालदेजी खान मैहमद दोलतखां कना सुं छुडाय नै नागोर उरी लीवी। ऊवा बरस ८ रहो। पछै राव मालदेजी सुमेल री राड़ हारीया,[7] संवत १६०० में। तद सोबो पातसा सलेमखां रै आयौ। सु संमत १६११ तांई रयौ।

८. पछै पातसा हुमायुसा दोली तखत बैठो तरै उणां रा सोबादार आया नै पछै हुमायु रै पाट अकबरसा बैठो तरै उणां रौ सोबादार आयौ।

---

१. पुष्य नक्षत्र। २. घेरा। ३. सूबे पर अधिकार हुआ। ४. कभी। ५ दस पीढी तक। ६. नागोर फिर से अपने अधिकार में कर लिया। ७. सुमेल नामक स्थान में होने वाले युद्ध में हार गये।

९. पछै पातसा अकबरसा १६२७ में नागोर आयो। तरै बीकानेर रा राजा रायसिंघ ने सोबो दीयो। सु तीस तांई बरस तीन रयो। तिण में बरस १ रो पट्टा सुं बारट संकर नै रायसींघजी दीनो नै संकर रै रही।

१०. पछै पातसाह अकबर कछवावा जगमाल नै संमत १६३० नागोर दीनो सु सं० १६४४ तांई रयो। चमालीस में राजा दलपत रायसींगोत बीकानेर वालां न इनायत कीवी सु पछै सं० १६५१ में फेर कछवावा कवर जगतसींग मानसिंगोत नै हुवो।

११. संमत १६६२ में पातसा जांगीर तखत बैठो तरां सीसोदीया रांणा संगर ऊदेसिंघ रां नै अजमेर नागोर चीतोड़ लार[1] दीनी। पछै संमत १६६३ कछवावा मादोसींघ भगवानदासोत आंबर वाळा ने नागोर अजमेर भेळा दोना।

१२. पछै संमत १६७३ में पठांण जावदीन नै नागोर दीवो नै पछै राजा सूरसींग बीकानेर भूरटीया बीकानेर वाळां ने दीनो सु संमत १६८१ में लिखीजी।

१३. जोधपुर वालां रै १६९५ कंवर अमरसिंघजो रै लिखीजी। सु पछै १७०१ रा सांवण सुद तांई राव अमरसिंघजी रै रही।

१४. अमरसिंघजी आगरा कांम आया तरां नागोर फतैपुर रा कायमखांनी दौलतखांन अलखफखां रै हुई।

१५. १७१४ में माराज जसवंतसिंघजी रै सोबो हुवो थो। सु १७१५ अमरसिंघजी रा बेटा रायसिंघजी रै हुवो सु इणां रै रयो नै पछै इणां रा बेटा ईदरसींगजी राज कायो। समत १७७३ रा सांवण वद २ माराज अजीतसिंघजी लिखाय लीयो नै ईंदरसिंघजी सुं छुडाय लीयो। सु भंडारी पोमसी अमल कीयो[2]।

१६. पछै संमत १७८० रा फागण वद ३ नै पातसाई री तरफ सुं लाल नीसांण लेने सवाई जैसींगजो रो लोक आय अमल कीयो।

१७. मा वद ३ इंकियासीया रा में सं० १७८१, पाछो ईंदरसिंगजी रै लिखीजियो।

१८. १७८२ रा असाढ वद ८ माहाराज अभैसिंघजी रै लिखीजियो सु

---

१. चित्तौड़ के साथ दी। २. राज्य का दस्तूर किया।

माराज अभैसिंघजी बगतसिंघजी नुं दीनो, सु उणां रै रयौ १८०८ तांई। पछै जोधपुर सांमल हुवौ।

१९. नागोर सुं तरफ उतराद में अजासर गांव इलाके नागोर सुं कोस १२ परली तरफ बीकानेर इलाक रौ कांकड़ लागै[1], गांव अजासर वगेरह। नागोर सुं तरफ दिखणाद गांव कोणेचो कोस १८ मेड़ता री हृद लागै। नागोर सुं तरफ पूरब कोस ३२ आगे गैर इलाको सीकर वो बीकानेरी रौ कांकड़ लागै। नागोर सुं तरफ आथूण गांव मांडपुरीयो कोस १५ आगे जोधपुर परगना री हृद लागै। लंबाई अफ पूरब सुं पिछम री कोस ४७ सैंताळीस। नै चौड़ाई उतराद दिखणाद कोस ३०। अंदाज कुल रकबो कोस ७७ सीततर रा गिरदाव में है।

२०. किलो अवल तौ सैर नागोर में नै सैरपनो छै महाराज श्री बखतसिंघ जी रै करायोड़ो। नै ताऊसर रो गढो है नै तळाव भडां ऊपर मोरचां रावजी अमरसिंघजी रै करायोड़ा है। रावजी श्री अमरसिंघजी री छतरी है[2]।

२१. कसबे लाडणू में किलो केसरीसिंघोतां रै करायोड़ो है नै गांव दुगोली में गढी[3] नै गांव खाटू वडो मे किलो नै गांव अेवाद में पकी गढी भुरजांदार है।

२२. कुल गांव ५५५ पांच सौ पचावन तिण में प्रगने कोलीये रा गांव ३७ नै बाकी ५१८। तिणां में आबादांन वसता ४४७ नै सूना ७१, जुमले गांव ५५५।

२३. दोनू साखां[4] में जवार, बाजरो, मोठ, मुंग, तिल। अेक साख सावणू हीज हुवै, नै केई गांवां में ऊनाळी सेंवज नै वेगा ही है।

२४. पांणी केईक गांवां में तो सात तथा आठ पुरस नीचै है नै केई गांवां में ३० पुरसां नीचै है। नै नदी इण प्रगना में नहीं। पाहाड़ इण प्रगना मे खाटू वडी ने खाटू खुड़द में है, नै गांव लोडसर में डूंगरी[5] है। गांव मूंडवे ठरड़ो है। बाकी रेत री जमी है। खडी री खांन गांव चूंटीसरे भदांणे, मांगलोद, खेराट, इतरा गांवां में है। पथर री खांन खास नागोर में तो लाल पथर री है,

---

१. सीमा लगती है। २. अमरसिंह राठौड़ के स्मारक स्वरूप छतरी बनी हुई है। ३. छोटा किला। ४. दोनों फसलें। ५. पहाड़ी।

नग १० है, नै पीळै पथर री खांन खाटू बडी में है। लाडणू में भाटां री खांन लाल पथर री है।

२५. जोड[1] खास हवाला रा गांवां मे पाबोळाव रौ है कठोती में नै मूंडवे कसबा में नै ईदांणो, खजवांणो लूणसरो, मांणकपुर, वरण गांव, गोवां खुडद, नै वोडवो, श्राकोली, बुगरडो, दूणीयो, सोनेली, मांझी, वगेरे छोटा जोड १८ है। पाबोळाव, कठोती, ईदांणौ श्रै तीन वडा जोड है। रोई में रुंख[2], केर खेजड़ी, वगेरे है। मेड़ता पटी रै कांकड़ मूजा है नै थली में फोग है। कितराक गांवां में नीब है।

२६. मेला प्रगना रा गांवां में वसवांणी में रांमदेजी रौ मेलो भादवां सुद १० ने माहा सुद १० नै हुवै। नै गांव जुजाले गुसांईजी रा मेला २ श्रासोजसुद १० चैत सुद १। मांगलोद में माताजी रा मेला २ श्रासोजी ने चैती नोरतां[3] में हुवै। ने मुंदीयाड़ श्री गणेसजी माराज रौ मेलौ भादवा सुद ८ नै भादवा सुद १० तांई लगाय दिन ३-४ रेवै। गांव खाटू बड़ी में पीरजी रौ मेलौ १ श्रासोज में, १ भादवा में भरीजै।

२७. करसा[4] सावणू करण वाला जादा है। नै केई गांवां में ऊनाली है।

२८. प्रगनां री रेख १२०००००बारे लाख री है। जिण में जागीरदारां नीचे ६००००० छव लाख री है। नै हमार पैदास ६००००० छव लाख श्रासरै[5] री है।

२९. कारीगरी दांत री वाग-वाड़ी नै पीतल रा वासण[6] नै ऊन रा रंगत रा कांमला[7], खेसला नै मिठाई दूध री ऊमदा करै, खास नागोर में गांव रोल में लोह रा कड़ाव कड़ायला वगेरे हुवै।

३०. प्रगना में देखण लायक खास नागोर में तो किलो सेरपने सुदो नै झडां ऊपरलो मारचो ल महादेवजी श्रो पतालेस्वरजी रौ देहुरो[8] नै मिंदर वगेरे है। गीदांणी ऊपर मदारा ने मसीत करायोड़ी है, नै तलाव समस नै पीरजी तारकोनजी री दरगा नै कठोती में दरगा १ श्रकबर रै बखत री है।

---

१. घास श्रादि के चरागाह। २. वृक्ष। ३. नौरात्रा। ४. किसान। ५. श्रनुमानित। ६. बर्तन। ७. कंबल। ८. स्थान मन्दिर।

(ड़) परगने मारोठ रो हाल

१. ओ प्रगनो संमत १११४ गोड़ वछराज माठा गूजर रा नांव सूं मारोठ बसायौ। पंला माठा गूजर री ढांणी[1] थी। पछै उण रै बेटो थिरराज गांव री वसती आवादांन कीवी। और थिरराजजी वडा-वडा आंब काट नै आंबेर सूं लायौ नै महारोठ में लगाया। पछै कितराक पीढीयां पछै मारोठ में गौड़ां रो भोमीचारो रेयौ[2]। प्रगना पातसाजी मनसब में देबो कीया ने गौड़ां री भोम थी सु छूटी नहीं। तैसील भर देबो कीया[3]।

२. मारोठ रा गांव ११२ तीण री विगत नीचे मंडो छै। वास कसबे रा १२ जुदा छै। माजनां रा घर पछै वसीया। जमो वीगा ५२००० पकी डोरो छै। जमी री दोय बावनीयां वांसां सूं गीणीजै छै। सो गौड़ां ऊदक[4] री श्री लीछमीनारांयणीजी नीमत बीरामणां नै ५२०० पकी डोरी पटै बावनो दीनो हेंस मुंहे सो ऊदक कर दीवी। हजार में वीगा ९०० नव सौ पटे बावनी है। खालसै-खालसै वीगा १००० ऊदक रो जिका विगत जुदी है।

३. संमत १७१५ री साल माहाराज श्री रुघनाथसिंघजी ने पातसाहजी ओरंगजेबजी माहाराज ने दीनी। दिखण रो लड़ाई में रुगनाथसिंघजी बंदगी चोकी कीवी। औरंगजेब दिली तखत बैठो नै साहाजीहां नै कैद करी साहासूजो, मुराद बगस, दारासीकोह नै मारीया तथा कैद कीया, अै तीन भाई ओरंगजेब का वडा छा जिकां बेठां यां ओरंगजेब तखत रो हकदार नहीं।

४. रुगनाथसिंघजी को नांनेरो बगरु थो नै केसर कंवर बाई रुगनाथसिंघजी री मां रो नांव थो[5]।

५. पछै रुगनाथसिंघजी दीखण में गया नै पातसाहजी कनै गया नै मनसब पायौ। गांव नै प्रगना पाया ७। नैं इण मुजब नीवाजस हुई—हाती १ सिरोपाव १ सिरपेच वगेरे पातसाजी दीना। बोत खातर कीवी।

६. पछै रुगनाथसिंघजी मारोठ आया। गौड़ां सूं झगड़ो कीयौ। फेर मगलाणे झगड़ो कीयौ फेर गांव गंगावा सूं थेट रोहडी तांई झगड़ो कीयौ। संमत १७१५ की साल फेर गौड़ां सूं मारोठ में भारी झगड़ो हुवो सो घोरु-धार हुवो सो ऊवो ईछो हाल घोरु-धार वाजै छै। जिण सुं गौड़ कितराक सारा मारीया

---

१. रहने का स्थान। २. भोमिया के तौर पर शासन। ३. लगान आदि देते रहे। ४. दान। ५. रघुनाथसिंह की माता का नाम केसर कंवर बाई था।

गया नै कितराक नीसरीया, नांव तोलोकसीजी अणदसिंघजी कुसलसिंघजी सग-रांमजी सूं सांभर कने बाब हीमायत[1] करने गौड़ां नै गांव १७ में राखीया।

७. प्रगनां री हद सिरकार रा गांव ११२ सुं—

९५ जागीर में — १७ ईसतमुरारी, जिण रो ईजारो रुगनाथसिंघजी नैं देबो कीया। नीम बकादे लोकां सुं सांभर तां० तलब तकादो दस-तक होबो करीया। ऊं गांवां में चौधरीयां री हीमायत गौड़ां कीवी।

८. प्रगना मारोठ सिरकार सूं सूबे अजमेर जसदांमी रेष अठ आंनी चा सूं पलस भरतां गांव लागा था पछै नांवे तां० लागा तिण री विगत—

१. कुल आमदनी रो गोसवारै थी।

	दांम	जमी	
	२६८३५०	६६६९४५।	१०२६०००
प्रगनां रा नांव	रेख	दांम	जमी
१ प्रगने मारोठ	२२१०००	५५९२९५।	७५९०००
१ प्रगने सांभर तां० था सु हमार नांवा तां० के	४७२५०	११८०७००	२६७०००

१ गांव समूचो १२८	विगत दांमां री
१ बारेमावां रा[2]	१ छमावां रा
१ चोमावां रा	१ तीमावां रा

९. १ पैदास प्रगनां री दांमां माफक, तिण री विगत तफसीलवार—

१ मेळ ईदर सिंघोतां री रेख रु. ५००००) रा ५५०००)।
१ मेळ पांचोता री रेख रु. ३२०००) ३२०००)।
१ मेळ बीजेसिंघोतां रै रेख रु. ५००००) पैदास ४००००)।
१ मेळ पांचवा री रेख २६०००) पैदास १८०००)।
१ मेळ लूणवा री देवली सुं रु. ३७०००) री पैदास १५०००)।
१ फुटकर गांव=लांबो लालावास गांगांणी
२०००) २०००) १०००) ५०००) पैदास ३५०००)

---

[1] सिफारिश व कहासुनी करके। [2] बारह महीनों के।

कसबा री रेख रु० २०२५०) वास १३ डोळी वगेरे जमी[1] न्यारी छै।

१०. हमार पसे समूचे प्रगने नांमे वेरा बंट लीकाकर नै धरती आवादांनो सू ऊनाळू ७००००) सांवणू ५५०००)।

१ डोळी या भोम री पैदास १२५०००) सवाई हमार छै। १ प्रगना सांभर सुं हमार नांवा तां० गांव तिणां री हमार रेख ४७५०) तिण री पैदास कसबे मारोठ सुं किताक वास कसबा री सींव में—

रेख	दांम	जमी
२०२५०)	५०८७६०)	५४०००

११. सांसणां री विगत जुदी—

१ रेख	१ दांम	१ जमी	१ आसांमी रा नांव
६००)	२२३६५)	२०००	गांव तीसावा चारणां रै
८००)	२०३५७)	४०००	गांव जसरांण चारणां रै

१२. मारोठ सुं घणा वरसां सूं गांव सांभर नीचै कीया था सो हमार नांवा नीचै छै सो रेख वदो[2] नहीं।

१२००००) २००००) सरगोठ ११०००० १२००० कुचांमण

कुल जमी १०२६०००)

६७०००) प्रगना मारोठ रा नीचे

२५०००) प्रगना मने दीया

६४०००) प्रगना मेटीबां

४३०००) जमी खारी खांडा तथा लूण री।

७१०००) प्रगना में बळाखोळा

१ तळाव प्रगना में

१ गांवां री बसती प्रगना में

१ कूवा री खाड़ां प्रगना में

बाकी लायक जमी सांवणूं ऊनाळू री...।

---

१ ब्राह्मणों आदि को दान में दी हुई भूमि। २. बढ़ी।

परिशिष्ट २.

कुछ परगनों सम्बन्धी अतिरिक्त ज्ञातव्य

(क) परगनो जोधपुर

१. संवत १७१६ रा सावण वदि ४ अजमेर रं कानूगो महेसदास गांव १४६० जोधपुर रा परगना रा मांडीया हुता पछं मुहणोत नैणसी पा. नरसंघदास भेळा होय[1] इण भांत मांडीया छं[2] —

जुमले	आवादांन	वेरांन	आसांमी
५०५	४१३	६२	

जुमले	आवादांन	वेरान	आसांमी
२६६	२३३	३६	तफै हवेली रा
२७	१६	८	,, सेतरावो
२३	१३	१०	,, केतू रा
६	६	३	,, देछू
११०	६१	१६	,, ओसीयां
६७	५१	१६	,, लवेरो
५०५	४१३	६२	

७८	७०	८	तफै पीपाड़ रा गांव
१५	१३	२	,, बीलाड़े रा गांव
११	६	२	,, षेरवा ,,
८	८	०	,, वाहळौ ने वळूंदो
३५	२७	८	मोहल ३ पाली षारलां रो हेठ
१०	६	४	तफै गुदवच रा गांव
३०	२१	६	,, दूनाड़े ,,
८०	५१	२६	,, भादराजण
३८	२४	१४	,, षींवसर ,,

---

१. दोनों ने मिलकर। २. इस प्रकार लिखे हैं।

६१	४२	१९	तर्फ	कोढणा रा गांव
४९	४१	८	,,	इंदावाटी ,,
१६	१५	१	,,	आसोप
१०१	५६	४५	,,	महेवो
५४	३२	२२	,,	पोकरण सातलमेर
१०९१	८२८	२१३		
१३६			प्र०	सोभत
६९			,,	फळोधो
१२९६				

२. परगनै जोधपुर रा गांव १४४० इण जीनस इण भांत मंडे छै —

आसांमी	जुमलो	हासलीक	बसता	सूना	सांसण
तर्फ हवेली	२६९	२३७॥।	२०१॥।	३६	३१।
,, पींपाड़	७८	७०	६४	६	८
,, बीलाड़ो	८	७	७	०	१
,, षेरवो	११	९	७	२	२
,, रोहठ	१९	१८	१८	०	१
,, पाली	४४	३५	२७	८	९
,, गुदोच	१०	१०	६	४	०
,, भादराजण	९५	८६	५७	२९	९
,, दूनाड़ो	४६	४२	३३	९	४
,, कोढणो	७९	६५	४६	१९	१४
,, बहळवो	५९	४९	३३	१६	१०
,, सेतरावो	२७	२७	१९	८	०
,, केतू	२३	२२	१२	१०	१
,, देछू	९	९	६	३	०
,, ओसीयां	११०	१०१	८२	१९	९
,, षींवसर	३६	३५	२१	१४	१
,, लवेरो	६७	६१	४५	१६	६
,, आसोप	२१	२१	२०	१	०

तफे महेवो	१२८	११०	७३	३७	१८
	११४४	१०१४॥।	७७७॥।	२३७	१२४।

प्र. सीवाणो	१६४
,, पोकरण	८६
,, फळसूंड	४६
	१४४०

३. परगना री तनषाहां कांनूंगै महैसदास अजमेर रै लिष दीयौ, विगत—

मोटा राजा	सुरजसिंघ	गजसिंघ	माहाराजाजी	आसांमी
१०८००००	१३५००००	२५०००००	६००००००	हवेली
१४६६०००	१८३२५००	१८३२०००	२५०००००	पींपाड़
८०००००	१००००००	१००००००	१००००००	भादराजण
१०१०००	१२५०००	१२५०००	३०००००	दूनाड़ो
२२००००	२७५०००	३७५०००	३०००००	खेरवो
६००००	२१२५००	२१२५००	२०००००	गुदवच
१७०००	२१५०००	२१५०००	३०००००	षींवसर
४६०००	५७५००	५७५००	७५०००	कोढणो
४२००००	८०००००	८०००००	१५५००००	आसोप
३४२०००	४२७०००	४२७०००	६०००३०	बीलाड़ो
६६००००	१२०७५००	१२०७५००	१२०००००	महेवो
२००००	२५०००	२५०००	५००००	ईंदावटी
२५००००	३१२०००	३१२०००	४०००००	प'ली रोहठ
				षारला महेल ३
१८००००	२२५०००	२२५०००	३०००००	व हळो बळूंदोर
६१४७०००	८०६४०००	९२१४०००	१४७२५०००	

४. मोटै राजा नुं एकलौ जोधपुर हुवौ तिण हमें तफा २ तलबां रा छै, संबत १६३९ रा जेठ मांहे—

४२०००० आसोप रा—

३४२००० बीलाड़ा रा, वाघ प्रथीराजोत।

५. प्रगनै जोधपुर री तनषाहां—

रूपया :

मोटाराजा	सुरजसिंघ	गजसिंघ	माहाराजाजी	आसांमी
२७०००)	३३७५०)	६२५००)	१५००००)	हवेली
३६६५०)	४५८१२॥)	४५८१२॥)	६२५००)	पींपाड़
२००००)	२५०००)	२५०००)	२५०००)	भादराजण
२५२५)	३१२५)	३१२५)	७५००)	दुनाड़ो
५५००)	६८७५)	६८७५)	७५००)	षेरवो
२२५०)	५३१२॥)	५३१२॥)	५०००)	गुदवच
४३००)	५३७५)	५३७५)	७५००)	षींवसर
११५०)	१४३७॥)	१४३७॥)	१८७५)	कोढणो
१०५००)	२००००)	२००००)	३७५००)	आसोप
८५५०)	१६७५)	१०६७५)	१५०००)	बीलाड़ो
२४०००)	३०१८७॥)	३०१८७॥)	३००००)	महेवो
५००)	६२५)	६२५)	१२५०)	ईंदावटि
६२५०)	७८००)	७८००)	१००००)	पाली रोहट खारला ३
४५००)	५६२५)	५६२५)	७५००)	बाहळो बळूंदो।
१५३६७५)	२०१६००)	२३०३५०)	३६८१२५)	

६. कसबे जोधपुर में मंडोवर गोहूं वो चोषां रा हासल री विगत—

मंडोर	गोहूवो[1]	चोषां[2]	आसांमी
१४६)	१८५)	२०२॥)	संमत १७०८
६१६)	१२१)	१२५)	,, १७०९
१४५)	९६)	१३६)	,, १७१०
८७३)	२१६।)	१९५)	,, १७११
४६०)	२५२)	१९९)	,, १७१२
—	—	—	,, १७१३
३१२)	११६॥)	१५०)	,, १७१४
७६५)	१७४)	१७८)	,, १७१५

१. यह स्थान जोधपुर शहर के उत्तर में, सूरसागर के समीप है। २. यह छोटासा गांव पहाड़ियों के बीच जोधपुर से ७ मील पश्चिम में है, यहाँ कुएं बहुत हैं।

•७७७)	४४५)	७२६)	संमत १७१६
१७३)	२७०)	२६४॥)	,, १७१७
६७८॥)	१७६॥)	१६८)	,, १७१८
१५१२॥)	२४५)	२४४।)	,, १७१६
२६४)	७६॥)	१२५)	,, १७२०

७. सरकार लोधपुर रा गांवां में सांवण ऊनाळी कोसेटा[1] आदसत[2], मुनीम पं. नवलरायजी री बही सुं नकल ऊतारी—

आसांमी	कोसेटा	हळ	रैत रा	पसाय[3]	डोहळी
तर्फ हवेली					
गांव झालामंड	७	२६	२६	३	०
,, ऊचांहेड़ो	७	१८	१२॥	१॥	०
,, कुड़ी	६	२२	१६	६	०
,, धीगांणो	३	१६	१६	०	०
,, डीघाड़ी	३	६॥	४॥	२	०
,, तणांवड़ो षुरद	८	३२	२५	७	०
,, तणांवड़ो बड़ो	५	२०	१६	४	०
,, पैंसावास	४	११	८	२	०
,, मोकळावास	२	८	३	५	०
,, नोधड़ो षुरद	३	५	४	१	०
,, गोधावासीयो	३	७	६	१	०
— — — —	४	५	४	—	०
— — — —	—	१२	१	—	०

८. संमत १६१४ रा चैत वदि ६ अकबर पातसाह री फौज जैतारण ऊपर कामषांनी[4] आयौ रा० रतनसी षींवावत इतरो साथ सुं कांम आयो—

१ रा. रतनसी षींवावत
१ रा. गोयंददास जैतसीयोत
१ रा. सांकर जैसिंघोत
१ रा. भानीदास षींवावत
१ रा. कुंभो जैमलोत
१ रा. रायसिंघ सीहाणोत

---

१. कुंए जिनसे सिचाई होती हैं। २. याददाश्त। ३. पसायता। ४. आसोपा के अनुसार कासिमखां, 'इतिहास नी बात' पृ० ४८।

१ रा. मानसिंघ नगराजोत
१ गौड़ ग्रासौ
१ डेडरीयो रिणधीर
१ डेडरीयो जैमल
१ देवड़ौ सातल
१ सांषलो दूदो
१ राठौड़ षेतो
१ दौ. ग्रचळो
१ रा. किसनदास जैतसीहोत
१ रा. कांनो जैतसीहोत
१ रा. नराइणदास सांगावत
१ रा. जोधो भींवोत
१ रा. षेतसी परबतोत
१ डेडरीयो मांडण
१ ग्रासाइच हींगोलो
१ रा. नगराज गांगावत
१ गौड़ नाथो धनो
१ डेडरीयो गजो
१ षीची वीदो
१ ईंदो कांधल
१ डेडरीयो दूदो
१ मांगळीयो सहेसो
१ नायक मांडण
१ पंवार सुरतांण
१ डेडरीयो रतनो
१ पंचोळी चुतरो
१ नाईक दुरगो
१ भांड जसो।

३४ सिरदार इतरा कांम ग्राया।

राव रांम रो वाको—

६. संवत १६२० राव रांम ग्रकबर पातसाहि कांनै जाई[1] नै पातसाही फौज ले ग्रायौ, जेठ सुदि १२ फौजां ग्रायी जोधपुर लागी, डेरा रांम वावड़ी कीया, दिन १८ कटक[2] रहौ, गढ लीयो नहीं। गांव मारीयो बाळीयो लूटीयो। दिन २ मंडोर रहा। ग्रासोज सुदि १५ वीसलपुर डेरो कीयो, दिन ७ रहा। पछै राव रांम नुं सोभत वैसांण नै[3] कटक परा गया। तठा पछै वल् राव रांम जाय फौज लायौ। हसनकुलीषां मुदफरषांन ग्रायौ, सु संमत १६२१ रा चैत्र सुदि १२ गढ जोधपुर सुं ग्राय लागा। राव चंद्रसेन गढ झालीयो। दिन ६ रहा, पछै वैसाष वदि २ ग्राधी रात रा गांव छोड गढ ऊपर चढीया। वैसाख सुदि १५ रांम-पोल् नीसरतां मुगल ५ तथा ७ पांच तथा सात मारीया तठां कांम ग्राया—

१ भाटी रिणमल नींबावत १ नायक षेतसी। पछै वैसाष वदि २ ढोवौ १

१. बादशाह के पास जाकर। २. फौज। ३. सोजत पर कब्जा करवाकर।

कीयो[१]। रांम प्रौल् रौ कोट षंड पड़ी[२] तठै मुगल़ घणा मारीया। पछै रावजी नै सगलां ठाकुर मांहे आय रही, वैसाष सुदि ४ मुगलां री नाल् रा गोल् घोड़ा २ गढ ऊपर मारीया। जेठ सुदि ३ राणीसर तल़ाव रौ कोट भिल़ीयो, तठै कांम आया—

१ राः किसनदास दुरजणसलोत करण रौ पोतरो।

२ मुः जोगो १ नाराईण १

१ जेठ सुदि १४ माल-बावड़ी मांहे पुरसे ११ पांणी नीसरीयो, सु दिन १७ तांई हुवो।

संमत १६२२ रा मंगसर सुदि १० रविवार राव चंद्रसेन सोनगरो मांनसिंघ राः तीलोकसी कूंपावत पतौ नगावत बीजा ही ठाकुरां रात घड़ी ८ गई तरै गढ छोडीयौ। हसनकुल़ी री मां कहौ—चंद्रसैन म्हारो बेटौ है, घोड़ा चढण नुं ऊँट पुरण भार नुं उण मंगाया दीया। हसनकुली, राव रांम गढ ऊपर चढीयो। अतरो साथ जोधपुर रौ गढ हाथ दे कांम आयौ—

१ भाटो गांगो नींबावत।

१ राः वरसल पातलोत जैमलोत।

१ राः वीजो वीरराजोत अड़वाल रौ पोतरो।

१ भाटी आसो जैसावत।

१ राः राणो वीरमोत ऊदावत।

१ भाः जोगो आसावत।

१ ईंदो रासौ जोगावत।

१ भाटी जैमल आसावत।

१ राः सूरो गांगावत।

१ ईंदो रणधीर महैकावत।

१ ईंदो सूजो वरजांगोत।

श्री मोटा राजा रा वाका—

१०. संमत १६४१ सीरोही राव सुरताण ऊपर राजाजी जामवेग नबाब रौ चाकर जाल़ोर थो सु गया। पछै राव सुरतांण रै माथै पेसकसी कीवी। पीरोजी लाष दोई घोड़ा १३ तिण में वाई राठोड़ कीसनां.........दहीयो सांवतसी तोगा

---

१. एक हमला किया। २. टूट पड़ी।

री मां सुरा री बैर नै देवड़ो सांमदास सुजावत प्रथीराज रौ भाय अै दोया सुरा. भोपत पतावत साथे ऊहड़ गोपालदास साथे जोधपुर मेलीयो ।

संमत १६४३ कंवर भोपत भगवानदास दलपत जैतसिंघ लारां गांवां ऊपर दौड़ीया[1], तठै इतरो साथ कांम आयौ—

१ ऊहड़ रांमजी जैमलोत गांव रै फलसौ भिलतां[2] ।

संमत १६४४ लाहौर कंवर सुरजसिंघ नुं कछहावाह दुजणसल री बेटी रांणी सोभागदेजी परणाई ।

संमत १६४४ राजाजी सोरोही ऊपर गया । जामवेग साथे वीजे फागुण सुदि ५ गांव नीतौड़ो मारीयो । मास १० उठै रहा । सुरतांण राव नास भाखर पैठो[3] । पछै राव वरसल प्रथीराजोत रौ बोल दे इतरै राव सुरतांण रा रजपूत आंण मारीयौ, तैंरी विगत—

१ दौ. सांवतसी सुरावत ।

१ राड़बरो हमीर कुंभावत ।

१ दौ. तोगो सुरावत ।

१ राड़बरो वीदो सांकरोत ।

१ दौ. पतौ सूरावत ।

१ चीबो जैतो षींवा भारमलोत ।

पछै राजाजी तौ डेरां रहा । भीतरोट नुं जामवेग दौ. वीजा गाल में गया तठै राव सुरतांण वीजा नुं मारीयौ । जांमवेग रौ भाई लोहड़ै पड़ायो ।

---

१. गांवों पर चढाई की । २. गांव का मुख्य द्वार टूटने पर । ३. भाग कर पहाड़ों में चला गया ।

(ख) परगनो मेड़तो

कमठा और नोवांण—

मेड़तो वसीयो १५४५ रा वैसाख वद १३। राव वरसिंघ दूदाजी बसायो, मेड़तीयां तिण री विगत दूजी ख्यात में है।

१. कचेड़ी रा महेल संमत १५४५ सुं पछै संमत १६१२ में कचेड़ी हुई।

२. मालदेवजी मालकोट करायो।

३. संमत १५४५ में सायर कायम हुई।

४. चांतरो संमत १७०० री साल कोटवाल मुकरर हुवो।

५. मिंदर श्री चतुरभुजरायजी रौ संमत १६१५ में मेड़तीया दूदाजी रा बेटा जैमलजी करायो, नै जैमलजी रा पोतरां करायो।

६. बेजपो तलाव प्रोहित बैजनाथजी खुदायो भूतां कने सूं[1]। नै बेजपा ऊपरलो मकांन ने वाग माहाराजा श्री विजेसिंघजी रै राज में धायभाई जगजी संमत १८२० री साल करायो।

७. दादूपंथी साद[2] बेजपार री जायगा आधी माहाराजा श्री अभैसिंघजी रै राज में दीवो।

८. तलाव दूदासर संमत १५४५ रा वरस में राव दूदाजी खुदायो।

९. कुंडल प्रोहित बैजनाथजी भूतां कने सूं खुदायो।

१०. देवळीयां[3] नागोरी दरवाजा बारे माहाराजा श्री अभैसिंघजी रै वखत में हुई।

११. मेड़ते संमत १८९२ देवली अजमेरी दरवाजा बारे। दीखणीयां सूं झगड़ो महाराज अभैसिंघजी कीयो सो १ आसोप १ चंडावल १ रीयां रा सिरदार कांम आया।

१२. मेड़ते १८४७ में माहाराजा श्री विजैसिहजी री वखत में दिखणीयां सु सींगवी भींवराज फौज मुसायब आयो नै झगड़ौ करीयो सु सींघवीजी कनै जायगा।

---

१. भूतों के द्वारा खुदवाया। २. साधू। ३. स्मारक के रूप में खड़े किए हुए पत्थर।

१३. महेसदासजी कांम आया। तिणां री छतरी गांगावास रा तलाव ऊपर नै कुंडल में रीयां रा ठाकुर सेरसिंघजी नै आऊवा रा ठाकुर कुसाळसिंघ जी री है।

१४. नागोरी दरवाजे बारे छतरीयां घणा बरस पैली री है[1]।

१५. माहाराजा श्री जसवंतसिंघजी रा राज में उमरावां रै ने दिली रा पातसाह रै दिली खास में झगड़ो हुवौ ने व्यास गीरधरजी कांम आया नैं जठा पछै बादस्या तुरकांणी करी तरै मेड़ता में मसीत पातस्या औरंगजेब कराई, संमत १७३५ नै लारला कमठा पछै हुबो कीया।

(गीरधरजी जसवंतसिंघजी रै राज में कांम आयां री बात गलत लिखी है व्यास गीरधरजी तो माहराज कंवार अमरसिंघजी कनै कांम आया है।)

१६. मेड़ते अजमेरी दरवाजा बारे सराय लोढा हीमतमल गेनीरांमजी कराई।

१७. माताजी रौ मिंदर।

१८. डांगोलाई तलाब जाट डांगो डांगावस रौ, राव दूदाजी रौ वखत में खिणाई।

१९. मालकोट रै मूढा आगलो[2] देवलीयां साजो री नै डावा हात री नै थड़ा ऊपरली छतरी सिंघवी धनराजजी री है।

२०. माताजी श्री राजराजेश्वरीजी रौ मिंदर सिंघवीजी भींवराजजी १८०० री साल में करायो।

२१. नवल-सागर माहाराजा श्री अभैसिंघजी रा राज में मठ रा गुसांई नेकापुरीजी करायौ, संमत .... री साल में।

२२. गांव डांगावास रौ वेरो मोत्री मनछारांमजी पांणी पीत्रण वासते करायो।

२३. लोड़ो मींदर माजनां करायो, संमत १८१० में। मीत्री मनसारांमजी कराय न्यात रै सुपरद कीयो।

२४. डांगावास रा आगला घणा बरसां सुं ढांणी है।

२५. भंडारीयां री हवेली माहाराजा अभैसिंघजी रा राज में भंडारी रुगनाथजी कराई।

२६. जैनियां रौ मींदर माहाराजा श्री मांनसिंघजी रा राज में १८६२ में हुवौ।

---

१. बहुत प्राचीन है। २. सामने की।

परगनो सीवांणो (ग)

सीवाणा रौ हाल—

सीवांणा रौ कीलो आगे संमत १०१० में पंवार सिवनारांयण नै वीरनारांयण राज कीयौ नै फेर राजवी रेयौ[1] तिण री विगत आगली व जूंनो बही सूं उतारी ।

१. आगे तो जैतमालजी सलखावत रै थौ सो पीढीयां ४ तांही जैतमालजी रा बेटां पोतां रै रही नै जैतमालजी रौ प्रड़वो तो रांणा देवीदासजी बीजावत चूक संमत १५९५ रा पोहो सुद १ नै राव मालदेजी रांणा देवीदासजी अनबी[2] थकां नै चूक करण रौ वीचारीयो । सींधल जेकां नै बुलाया नै कयो—सीवांणे रांणा देवीदासजी अनवी है जिणां नै चूक करणो तरै सींधल जेके चूक करण नै जणा ७ ले नै आयौ सो दताला रा भाखर सिवांणा सुं कोस १ रहता सो तोजै दिन प्रभात रा रांणा देवीदासजी री गायां चारण नुं चूंडो तेजसी आयौ नै रांणो सो तेजसिंघ सुं मिल् नै जेको रात रा किला में आयौ नै रांणा देवीदास नै वेद मुता परताप ऊरजनोत नै चूक कर मारीयौ । संमत १५९५ रा पोहोस सुद ४ ।

२. माहाराज श्री मालदेजी रै नै पातसाह सुं वेराजोगो[3] हुवौ सो सीवांणे पधारीया नै सीवांणा सुं कोस २ गांव पीपलुंणा रै भाकर पधारीया नै महादेवजी श्री हलदेश्वरजी रै भाखर ऊपर पोल् १ कोठार १ नै कोट करायो, संमत १६०० में कमठो समपुरण हुवो[4] नै उठा सुं गांव नाल् पधारीया सो मांयली नाल् में वेरो १ नै तल्लाव १ ऊदेल्लाव नवो करायौ । ने पीपलुंण सुं संमत १५१६ में जोधपुर पधारीया ।

३. सीवांणे कंवरजी चंद्रसेणजी पधारिया नै गढ में अमल कीयौ नै सैर में पोरवाल् माजनां री वसती थी सु पताल् भोग लीयौ । तरां पोरवाल्लां गादोतरो घाल सीरोही परा गया । संमत १६२० में पछै राव चंद्रसेणजी साथ ले सीरोही ऊपर संमत १६२१ रा वैसाख सुद १३ रवीवार घड़ी ३ दिन चढतां सीरोही लूटी सो मैलां रा किवाड़ नै दरवाजां रै कींवाड़ री जोड़ीयां सीवांणे लाया । सो कींवाड़ां रौ तो नवचोकीयो करायो नै कींवाड़ वीचली पोल् चढ़ाया ।

---

१. जिनका राज्याधिकार रहा । २. दूसरे के अधीन न रहने वाला । ३. अनबन हुई । ४. निर्माण का कार्य पूर्ण हुआ ।

चंद्रसेणजी सीरोही सु' आवतां गांव वागास रा माजन वगेरां रै चाकेतां मलु' नै खाती १ लाय ने कसबा में बसाया। नै बीरांमण सोढ़ां री डोलियां सीवांणे थी सो तो खालसे कीवी ने अेवज गांव कोरणा रो डोलीयां दीवी। नै सींव काढी¹। संमत १६२१ रा असाढ़ सुद १ सींव काढी तिण री विगत—

१ गांव कुईप

सिवांणा बिचे बंदा री पाल़ सीवाड़ो छै।

१ गांव खाखरल़ाई

खाखरल़ाई रा नाडा ऊभो भेल़ो दंताल़ा भाखर सुदो सीवांणा री सींव है।

दंताळा ने सिवांणो खेड़ो री बालु आथूंणो सिवांणा री छै।

गांव पेली सिवांणा विचे दंताल़ा रा भाखर सीवांणा रौ छै नै खाखरल़ाई रौ सीवाड़ों लागे छै।

१ गांव देवदी

सीवाणा सीवाढ़ो दंताल़ा खेड़ा री वाड़ सूं लगाय नेड़ा रा खेतां सूं लगाय भीड़भंजनजी रा थांन तांई सिवांणा री सींव छै। नै तल़ाव धंधू रौ सिवांणा रौ छै।

१ गांव मोड़ी

नै सीवांणा रौ सीवाडों नाडा मांहे नाड़ी आगे नाडी सात पांव सूं लागे तोरांहन रौ नै आगे देवरालौ नै आगे चेला नंडी सीवांणा री सींव छै।

१ गाव गुमठेट

सीवांणे सींव सेड़ो नै पीपलूण तीनां ही गांवां रौ संवाड़ो गुरड़ै नै हरा भाखर सूंदी सीवाणा री सींव छै। नाड़ी खेजड़ीयाली गड़ी भाभरलाई वगेरे नाडा-नाडो सीवांणा री सींव रा छै। नै अगलोई तीखो गोड़ो गोगावाल़ा सूंधी सीवाड़ो छै।

४. माताजी श्री हींगलाजजी रै थांन सीवांणा रा सींव में कापडो देवो सेवा करतो सु महाराजा श्री सूरसिंघजी सीवांणे संमत १६६१ रा बरस में पधारीया सो श्रीमाताजी रै थांन दरसण नै पधारीया सो कापड़ो देवो सेवा करतो तिण नु' तो सीख दीवी नै गुसांई नागोजी तापता हा² तिणां ने सेवा

---

१. सीमा निश्चित की। २. तपस्या कर रहे थे।

सूंपी[1] ६ नै ओरण[2] केरली नै थांन वीचे नीला पंची सूं थूंबधा में ओर ओरण युं डावो सीवांणा री गायां चरसो नै ओरण भांगसी[3] सूं गुनेगारी रा रुपीया १०८) देसी । संमत १६२१ राव चंद्रसेणजी सीवाड़ो कीनो थौ नै सीवांगा विचे अेकलो कोला रो भाखर सीवांणा रौ छै ।

५. पछै चंदरसेणजो नै ऊगरसेणजी कांम आया नै पछै संमत १६४० रा वरस में महाराज उदैसिघजी टीकै बैठा । राव पदवी थी, पछे पातस्याह राजा पदवी दीवी ।

६. माहाराज श्री उदैसिघजी रै छोटा भाई रायमलजी रै कंवरां री वीगत—

१ वडा तौ कांनसिघजी
१ प्रतापसिघजी
१ किलांणदासजी
१ बलभदरजी
१ सांवतसिघजी

तिणां में किलांणदासजी पातस्या री चाकरी करता सु संमत १६४१ में रायमलजी सूं वेराजो होय नै पातसा रा हुकम सूं सिवांणे अमल कीनो ।

पातसा रौ सगपण करण नुं चीतारा जैसलमेर हुय सिवांणे मेलीया संमत १६४७ रा सांवण सुद ५ । सो किलांणदासजी री बायां[4] रमण नुं आईथी[5] । सो चीतारां ने निजर आई । तरै बायां रा तसवीर नख-चख सूंदी उतार लीवी । तरै खलीता पातसावां रै मालम हुवा । नै खलीता वाच नै मोटा राजा उदैसिघजी नै, रायसिघजी नै बुलाया नै पातसा फुरमायो—रांमचरतजी रै बेटीयां मोटी है सूं साहाजादा सूं सगपण करो तरै उदैसिघजी अरज करी—डावड़ीयां[6] तो म्हांरो है परंत कीलांणदासजी री बेनां है नै सीवांणे रहै छै सो म्हांरै सारै नही[7] । नां म्हांरो कयो करै सो ओ सोदो तौ आपरा केणा सूं हुसी । तरै पातसाहा बुलाय नै बाला भोपतोत नुं नै नबाब नै किलांणदासजी नै बुलावण नै सीवांणे मेलीया । सो किलांणदासजी नै खलीता वचाया । तरां किलांणदासजी कैयो कै मनै थे दिली लेजावसो तो म्हांरा बाप सुं तो म्हांरे राह नहीं[8] नै नां म्हांरे खरचो नां म्हांरे रखत किण तरै म्हां सूं हालीजै । तरे रुपीया १००००)

---

१. सेवा का कार्य सौंपा । २. अरण्य, किसी देवस्थान आदि के चारों तरफ छोड़ा गया जंगल, जिसकी लकड़ी कोई नहीं काटता । ३. सीमा का उल्लंघन करेगा । ४. लड़कियें । ५. खेलने को आई थी । ६. लड़कियें । ७. मेरे कहने में नहीं हैं । ८. मेलजोल, मत्यैक्य ।

खरची नै रखत रा दीना । तिणां सुं संभ कराय नै दिली नै चढीया । सु॰ दिली गया नै डेरो न्यारो कीयौ । तरै खरची दिली में आछी तरै सूं दीरीजी । वे पातसा रै मुजरे गया तरै दोनुं बायां रौ सगपण कीयौ नै केयो सगपण तो करूं हूं पिण व्याव हिदवां रै हुवै है जीहु करावसो[1] । तरे पातसा केयो ठीक है । तरै किलांणदासजी फेर अरज कीवी के म्हारे घर में तो लगांवण रो तेह है नहीं[2] नैं भाभाजी काकाजी दांम देवै नहीं । खांनाजाद री बायां परणीजै जद अेक टंक तो राबड़ी पाई चाहीजै[3] सो म्हांरे तो थळ १ टका रौ है नहीं[4] । पछै खांवंद जांणो जीहु करावो । तरै पातसा जांणीयो हींदू लालची है परंत व्याव रे वासते खरची सारु रुपीया १००००००) दस लाख दीराया । तरां छकड़ां में घाल सीवांणे पोंचता कीया नै पछै साहाजादा कनै जाय नै हात जोड़ीया तरै साहाजादे रुपीया ४०००००) चार लाख नै घोड़ो १ दीयौ । सो ऊत्रे ही रुपीया सीवांणे पूगता कीया । पछै पातसा कनै सीख मांग किलांणदासजी सीवांणे आया नै किलांणदासजी किलो सजीयो[5] ।

८. साहाजादा साथे जांन कर साथे १ जोधपुर १ बीकानेर १ किसनगढ़ १ जेसलमेर, वगेरे ऊकीलां समेत जांन कर कूच कर जांन रा डेरा सीवांणा सूं कोस ७ गांव देवलीयाली रा डेरां सूं राई का वधाई ले सीवांणे आया अर केयो—जांन आई है । तरै किलांणदासजी बीरांमणां नै बुलाया नै केयो—थे फौज में चीज-वसत लेजावो । तरां बीरांमणां केयो—ठीक है ।

तरे मोचीयां नै बुलाय वां सारी मोजड़ीयां कराय खीनखाप में मंडाय सीवाय नै देवलीयालो रा डेरां मेलो । केयो—वीनणीयां तो है नहीं नै मोजड़ीयां हाजर है । तरै साहजादे कोप में आय नै खलीता दिली मेलीया । तरै दिली सूं फौज हजार ४०,००० मेली सो सीवांणे आई नै फेर घेरो दीयौ । संमत १६४१ रा चैत वद ६ फौज घेरो दीयो नै गोळा वेणा सरू हुवा[6] । सो कितराक दिन तो लड़बो किया ।

९. पछै संमत १६४१ रा सांवण सुद ३ नै किलांणदासजी बूंदी पधारीया सो मेह अंधारी रात है नै बीजळीयां रे पळके बूंदी री सींव में बेवै है[7] । जितरै

---

१. हिन्दुओं की रीति से बिवाह करायेंगे । २. आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं । ३. लोगों को कुछ तो खिलाना-पिलाना ही पड़ेगा । ४. रुपया-पैसा बिल्कुल नहीं है । ५. किले में युद्ध की व्यवस्था की । ६. गोले चलने लगे । ७. बिजली की रोशनी में बूंदी की सीमा में चल रहे हैं ।

श्री हाडीजी महल रै झरोखे ऊभा सोच करे छै। दीली री धणी कोपीयो नै सीवांणे लड़ै छै। सो सोच करतां नै झरोखा में नींद आय गई। तरै पहाड़ां मांय सूं नव हतो जोध बाघ[1] फलांग मारी सू हाडीजी नै मूंडा में लेय मारग-मारग चलीयौ आवै है। तरै बीजळी रा पळकां सूं देखीयो सो हाडीजी तो मूढा मांहे था नै पग अेक १ नीचो टीराऊ थौ[2]। सो पग में जांजर वाजतो थौ[3]। तरां घोड़ो चमकीयो। तरै कोलांणदासजी जांणीयो घोड़ो काहूं चमकीयौ। तरां बीजळी रो पळको पड़ीयो तरै जांणीयो नार आवै छै। मूढा में कोई मिनख दीसै है। तरै नार नैड़ौ आयौ सो दुगोळीयो[4] भर नै नार नै वायौ सो नार रै लागौ। सो वाघ तो हेटो पड़ीयौ नै पड़तां-पड़तां हाड़ोजी कुरळाया[5] के—किण वडे आदमी नार मारीयो। तरै कोलांणदासजी हंस नै केयो—नार मारण में थांरे कांई कसर गई। नहीं तो थांने मार नांखतौ। तरै हाडोजी केही—म्हांने मारी होती तो पाप कट जावतो। तरै कोलांणदासजी केयो—थांरै कांई दुख है? तरै इणां कयो म्हांरै दुख है तो घणौ ही है। तरै कोलांणदासजी केयो—थें थांरो दुख हुवै सो बतळावौ। तरै हाडोजी केयौ—म्हांरे खांवद ऊपर पातसा री फौज आई है। जीवता छोडे नहीं। जिण सुं मनै वाघ मारी हुती तो पलो छूट जावतो, नहीं तो रांमजी दुख देखावसी। तरै किलांणदासजो केयो—तूं हाडो है ने हू किलांणदास हूं। हमें तू फिकर करै मतो। पछै दिन ५ तथा ७ किलांणदासजी बूंदी में रया पछै सीख मांगी सो हाडीजी साथे त्यार हुवा सो किलांणदासजी तो हाडीजो रौ ना कैयौ। पिण माडांणो साथे वहीर हुवा। सीवांणे आया। गढ़ दाखल हुवा। नोबता सुरु हुई जद बारली फौज में जांणीयो आज नौबत सुरू हुई है सो जांणां किलांणदासजी सासरे सूं आय गया दीसै है। किलो भिळण रौ घाट नहीं[6]। इतरा दिन फौज लड़ी सो कोऊं ही हुवो नहीं। किलांण-दासजी रौ खवास वालीयो रजपूतां रे घरे आवतो जावतो ने घर रै धणी घणो ही वरजीयो पिण रयौ नहीं। तरै रजपूत केयौ मोजल जाय नै वाला भोपत सुं मिळ नै कही—हूं किलो भीळाय देसूं। थांरा आदमी २०० तथा ३०० म्हांरे साथे मेल दो। सो किलो भीळाय देसूं नै थे ही फौज ले उरा आवजो। तरै आदमी २०० तथा ३०० साथ ले नै आया नै किलांणदासजी कनै आदमी था सो फौज रो कूच हुवौ तरै कितराक तो सीख कर-कर आप आप रैं घरां परा

---

१. नौ हाथ लंबा शेर। २. नीचे लटक रहा था। ३. पैर की पायल बज रही थी। ४. दो गोली एक साथ चल सके ऐसी बंदूक। ५. करुणाजनक आवाज की। ६. किले को जीतने के कोई आसार नहीं।

गया नै कितराक सिनांन संपाड़ा नै परा गया[1]। रात रा नाई वालीयो रजपूत रै धरे आयौ; तरै फौज रा आदमीयां पकड़ लीयो नै केयो किलो भेळाय दे। तरै वालीयो केयो मनै कांई देसो ? तरै फौज वाळां केयो—तूं गढ़ ऊपर ऊभ ने गांव मांगसी जिको गांव थनै परो देसां नैं थारो हुकम रेसी। तरै नाई वालोये केयौ—किलांणदासजी रा आदमौ तो सारा बिखर गया है सो उठो, नीसरणीयां बांध चढ जावसो तो किलो भिळ जावसी। तरै पादरड़ी री गाळ में फौज रा आदमीयां नीसरणीयां बांध ऊंचा चढीया। दोय सौ, चार सौ आदमीयां रै आसरे लोक आयौ। तरै किलांणदासजी नै खबर पड़ी। सो किलांणदासजी रै तो ऊठतां ही गोळो लागो सो माथो पड़ गयौ। पछै किलांणदासजी री छाती में आंखीयां ऊघड़ी नै तरवार झाली[2]। आदमी २०० दोय सौ ३०० तीन सो मरण गया। तरै मुसलमांन गुळी रो गाबो नांखण लागा तरै जमीं बार दीयौ[3]। नै किलांणदासजी जमीं में पधारीया। संमत १६४३ रा वैसाख सुद १३ सुकरवार परभात रा दिन पोहोर चढ़ीयां गढ भिळीयो नै किलांणदासजी रा आदमी ३४३ कांम आया। फौज रौ लोक हजार १२०० कांम आयौ। ने गढ पादरडो कांनी नाई वालीये भीळायौ नै किलांणदासजी रै लारै सतीयां हुई। सो किलांणदासजी रे ऊपर तो चांतरो हुवौ[4]। नै सतीयां रै लारै छतरीयां तुरकाणी रा सबब सूं हुई नहीं। श्री कछवाईजी भटीयांणीजी हाडीजी वगेरे सतीयां हुई। पछै नाई वालीये नै फौज वाळां गढ ऊपर ऊभो राख गांव देखाया ने केयो—इतरा गांव थनै दीया है औ कहतांई वालीया रौ माथौ तोड़ नांखीयौ।

१०. पछै वरस २ दोय तांई तौ तुरकांणी रहो। पछै आंणदांण माहाराजा श्री उदैसिंघजी री संमत १६४५ रही। नै संमत १६४५ रा बरस में सीवांणा रौ किलौ वेद मुता नारांण नै दीयौ सो सोबे हुवौ। पछै डुगरोट रा भायलां रै ने वेद मुतां रै वैर थौ सो भायल चढोया नै सीवांणा री गायां लोवी। नै नारांण रा बेटा चार चढीया नै गायां छुडाई। तिण री वधाई ले ने सीवांणे आयौ। सौ नारांण रै बेटा ३ सीयो, रांमो, दुदो, तुरक नाथो, डेडीयो, तेजो इतरा जणा सांमा गया नै भायलां भेळा हुवा अर झगड़ो कियो तरै घणा आदमी कांम आया तिणां पुठे ओरण हळ २१ रौ मुंता नारांण नै बावड़ी ऊपर चांतरो करायौ।

---

१. स्नान आदि करने को चले गये। २. तलवार हाथ में ली। ३. पृथ्वी ने अपनी गोद में स्थान दिया। ४. चबूतरा बनाया गया।

संमत १६५७ रा आसोज वद सो ८ आंण भांगसी[1] सो गुनेगारी रा रुपीया १३१) देसी ।

११. माहाराज श्री सूरसिंघजी सीवांणे पधारीया । संमत १६६२ में गढ़ दाखल हुवा । अमल कीयो । पछै माहादेवजी श्री वीरभंजनजी रै थांन पधारीया जठे जायगा चोखी देखी तरे तळाव खोदावणो विचार कियो । नै सीवांणा री सीर में नाडीयां खुदाई तिण री विगत तफसीलवार नीचे मुजब है—

१२. १ तळाव अबतळाव तिण रौ नांव धधूरो संमत........में माहाराजा सूरसिंघजी करायो ।

१३. १ नाडी १ खुमरलाई पंवार राजा कीरपाल री बेटी खुमा खोदाई तिणसु नांव खुमरलाई दीयो ।

१४. १ नाडी बारला कंवरजी श्री जैसिंघजी खोदाई ।

१५. १ नाडी वीनां, वीना बाई खोदाई ।

१६. १ नाडी सातपाव राजा भोजराज पंवार रै कंवर सात था सु सातूंही भेळा होय नै खुदाई । तिण सु सातपाव नाडी रौ नांव दीयो ।

१७. १ नाडी टोपां पोरवाळां रै खोदायोड़ी ।

१८. १ नाडी बेमांण राजाजी सूरसिंघजी खोदाई ।

१९. १ नाडी केरली पंवारां रा राज में राजा हरजी खोदाई नै आगोर[2] घास रै वासते हळ २२ छोडायो ।

अजीतसिंघजी री वारता—

२०. हाती सूंड सूं पकढ़ ऊपर बेसांणीया नै चावा हुवा तरै खीची मुकनदास उठासूं पीपलूण था छपन रा पाड़ां में आयौ । सो उठै कोट करायौ नै बेरो १ सोरवो बंधायो । पछै सीवांणा सूं माहाराजा सुजांणसिंघजी पातस्याह थका था तिणां रे हाती थो सो नागां में देखण ने गयो सो सुजांणसिंघजी मेलीयो नहीं । तिण सूं कागदां रो तथा मेड़ता रो हाती मंगाय नै गीलोय री दीवी सो सीवांणा रा किला में हाती सुजांणसिंघजी रो मर गयो । गांव होटली रा चुवांणां रै व्याव हुवो नै लोकां ने गांवाई बाब छूट कीवी । नै पड़दलखां नै वाला धवेचा भायल भेळा होय नै मारीयो नै थांणो ऊठायो नै जाळोर पधारीया । राठौड़ दुरगदास

१. छोड़े गये अरण्य की सुरक्षा की शपथ तोड़ेगा । २. तालाब में वर्षा का पानी शामिल होकर आने के लिए छोड़ी गई भूमि ।

आसकरणोत वीखो घणो कीयो नै संमत १७६३ रा चैत वद ५ जाळोर सूं नै जोधपुर सूं सोबेदार नबाब जाफरखां वगेरे था सो नास गया नै श्री हजूर जोधपुरमें जाळोर सूं जाय नैं अमल कीयो। पाट बैठा। तुरकांणी बरस २७ रही। संमत १७८० रा आसाढ वद १३ श्री हजूर नै गढ ऊपर चूक हुवौ।

२१. माहाराजा सुजांणसिंघजी सीवांणा रा किले संमत १७३६ नै संमत १७५९ में देवलोक हुवा। लारै छतरी वाग में करी ही संमत १७५९ रा आसाढ सुद १. रुपीया ४५०००) हजार छरती में लागा। सिरमाळी सुंदर नै दांन दियो तिण री विगत तफसीलवार—

१ हळ ४ वाग सारूं जमीं, तिण में बेरो १ खुदायो।

१ खेत सगळो हळ २४।

१ खेत दंतलो हळ २४।

परिशिष्ट ३.

महाराजा जसवंतसिंहजी रै समै रा रीत किरियावर

१. रांणी प्रतापदे नै रांणीपदो

राणी श्री पतापदेजी[1] रै रांणीपदा रौ दसतूर सु राणी श्री हाडी जी नु राणीपदा रौ बंटौ दीयौ। इतरौ और पावै सीधो मण ८४) बरस १ में। बीजा महेल सु दूणो। बोड़ा १० खरच २० बारै हुवै तरै रुपीया २) दीहानगी पावै। जोधपुर में चाकर रा पेटीया रा टका १२ रोज १ रा पावै। बीजो लवाजमो रांणी हुवै सूं बीजा मेहलां सुं बीवड़ा में टोपावै दसतूर छै। रोकड़ा रुपीया ६०००) छव हजार दीग्रा छै।

राजलोकां सूं कीरियावर टुणेटो करै। होळी दिवाळी नै लोदीया साड़ीयां श्री रांणोजी देवै। राजलोकां री पहेरावणी दै नहीं नै पगेलागणो दै[2]। मांणसां री साड़ी ४ दै। खवासीयां नु साड़ी दै। प्रधानां हुजदारा रै साड़ी दै। सुखड़ो दै। आखातीज गाडा गुलवांणी दे। राखड़ी[3] कसार खोपरा दै। दसरावै सुपारी दै। बीजा राजलोकां सु कड़ूबा री आवै तिणां नु दूणी विदागीरी दै[4]। नै बोजो ही कीरीयावर दूणो करै।

राणीजी प्रतादेजी रामसरण हुवा[5]। तरै राणी सोभागदेजी रै भेळै कंवर श्री जसवंतसींघजी नु राखीया था नै रांणीजी पावता सु पायां जावता। पछै संवत........कंवरजी रै रसोवड़ो जुदौ हुवौ[6]। नै चाकर ताबीनदार दीया नै पटा दीया—१ राठौड़ अमरा राईसिघोत रांमदासोत रा नु गांव २, राठौड़ नारखांन खेतसी गोपाळदासोत रा नु १ गांव आंतरोली षुरद प्रगना मेड़ता रौ रेख रुपीया १०००) री, भाटी रुघनाथ बाघोत नु गांव बारणी रेख रुपीया १२००) री, खवास सोभावत रांमदास नै बेटा समेत दीया नै रसोवड़ा री खिज-

---

१. महाराजा गजसिंह की रानी व जसवंतसिंह की माता। २. पांवधोक देने पर दिया जाने वाला दस्तूर। ३. रक्षा-बंधन। ४. विदा होते समय दस्तूर के अनुसार दुगुनी रकम अथवा वस्तुएं आदि देते हैं। ५. स्वर्गवासी हुए। ६. अलग व्यवस्था हुई।

मत दीवी नै १ गांव धागडवास १ पालड़ी खुड़द गोपाळदास रांमदासोत, महेसदास रांमदासोत, ईसरदास सोभावत ।

२. महाराज कुमार प्रीथीसिंह रौ जनम—

७६८) माहाराज कुंवार श्री प्रीथीसिंघजी रौ जनम हुवौ तरै खरच हुवौ तिण री विगत, संवत......असाढ सुद ५ गुर जनम हुवो—

४४) जात करम नुं—

३४) सोनो तो. २ प्रा. १४) लखं प्रा. मनोर बदीया मादा नै गऊदांन रा।
२८) १४) १४) ६)

१०) बदीया नै रुपया २ पीरोयत नै ५) बेदीया नै ५)

४४

५००) सुवावड़[1] रा सेखावतजी नु दोना ।

५६) मौर ८) प्रत नु ७) लखै दीवो गढ उप्र सुता था तिणां नै ।

१ जोसी चक्रपाण १ जोसी सुखदेव १ जोसी कीलाण १ जोसी अखो १ पांचो रुघपत रौ १ लालदास सेखावतजी रो १ माधो बेदीयो १ जोघो उपाधीयो ।

४६) मौर ७ नेकदारां नै प्र. ७)

१ व्यास पदमनाभ १ पीरोयत मनोहर १ सेवग दुवारा नै १ साणी नै नाळो गाडो तठै । महल में खरच ३ ।

५८) दाई टोहा जगा री बहू नै कुंडा में ५०) । बाला चूंदडी २)३। ग्रौट मयादम ६). बाको खरा ५७।।।) ५ ।

१) व्यास पदमनाभ टीको कियो तरै थाळी में ।

४) आंवळ नुं थाळी १ ली ३), थाळी में घातीयो १) ।

६) सुरज रो दांन कियो जनम पेला ।

३) मळीवाड़ा री घांन १ पगला मांडि लसर चलायो ।

४६) परचून दीखणा[2] तथा वाजदारां तथा बालीग्रा ।

७६८)

---

१. बच्चे की मां की खुराक के लिये। स्फुट दक्षिणा ।

४५५॥)४। दसोटण[1] हुवो संवत १७०९ रा सांवण बद ५ रौ तरै खरच उपडीयो—

१) श्री सूरजजी री पूजा रौ मेहल में मेलीयो।

१) श्री कुंवरजी रे छहैडे बांधीयो।

३) श्री नागणेसीयांजी[2] रै पूजापा रौ ना. ७—॥)४ नकद २) २।२५ कपड़ो नांवे मंडायो।

२०६) मोहोरां रा नेगदारां नै—

७) श्री आनन्दघनजी री भेंट।

७) श्री कीलांणरायजी।

७) तोरण री पोळ।

७) श्री नागणेचीयांजी रै।

३॥) खेत्रपाळजी।

८०) बाई चांदकंवरजी नै।

७०) मोरां ५

३) चौ. सादूल १ टीका री १ साथीया।

१) धा. सादूल १ आरतो १ हांचळ[3] खोलाई।

१) सा. प्रबत १ पालणे पोढाई १०) रुपया।

२) पंवार करमसी रो बेटो याचग खेतो। ७) माधो कछवावो थाळी में।

७) खोजो दीलावर।

७) धाय-बेन सरुपी लूण ऊतारो[3]।

७) पटवा नुं।

१४) कूंभार नुं ७) दरजी नुं ७)।

१४) धोबी ७) पुरबीया ७)।

७) धोवलेरणीयां[4] नै १४), कंदोई ७), मालण ७)।

१४) गांछा नै ७) सुथार नै ७)।

७) रसोईदार नै।

२०६)

१. पुत्र जन्म के उपलक्ष में किया जाने वाला समारोह। २. राठौड़ों का कुलदेवी। ३. स्तन। ४. नजर न लगे इसलिए नमक की वार-फेर करने वाली धाय बहिन द्वारा की जाने वाली रस्म। ४. गीत गाने वाली।

४) देवसथांन चढाया—

 १) सोनाणा रा खेत्रपाळ नुं
 १) गढ री पाळ रा खेत्रपाळ नुं
 २) मेड़ते श्रीनागणेचीयांजी नुं ।

 ४)

१४५॥) परचूण खरच कीया तथा कमीण लोक देवणी जीसी पाया जीसड़ो देख दीयो[1] बीजदारां नुं ।

१२५) भाट ऊमा ने सोना री मुरकीयां नुं तुगल घड़ाय ने पेराया तोला ८॥)॥

 १०) तुगल जोड़ा २० मुरकीयां रा जोड़ा ।

७०।) कपड़ो दसोटण रौ खरच—

 २८॥) मीसरु रा थांन १२॥
 ६ श्री नागणेचीयांजी रे चंद्रवा नुं ।
 ॥ मेड़ते नागणेचीयां रै मेलीयो ।
 ४ बाजादारां नुं बाजा ऊपर ओढाया । कुंभार गांछा नु आदि आदि ।

कंवरजी नै पालणे पोढाया तरै ओढ़ाया ।

 ७॥)४। दरयाई गज ४४॥, खरीद ४० अेचरी ६१ हाथ तो २३॥ कपड़ा नुं ।

१५॥।) साडी २१ सांगानेर री नचणीयां[2] नुं ।
पालणि ओढाई बाई चंदकंवर नुं

१६॥।) ढोल तीन २ नागचीयां नुं ।

 १६॥।)

५५५॥।)४॥

३०७।)३। मास वगेरै खरच

 १) मास वारे दिने टीको तरै थाळी में व्यास पदमनाभजी नुं ।
 २) चारणी खींवलदे नुं ।

---

१. स्तर के अनुसार हिसाब देखकर दिया । २. नाचने वाली स्त्रियां ।

८२) दान कीयो दांन ९ गरां रा[1] । जापा री बरणी पोथी री बरणी ।

२६।)३। श्री रामेस्वरजी माहादेवजी री पूजा कीवो तिणरा। पूजापो सिकदार राघवदास दीरायो ।

१४) दवे बेणा सिरमाळी नुं मोहर रायां भेड़ी १ रा ।

७) ७)

१२।)३। टका ३०३। देवतां री पूजा कीवी तदे दोखणा रा ।

२००)३ बीरामणां नुं नै बाजा वाळां नुं ।

८) सिघडुदांनु रु०) १ नै पेटोया री नै रुपिया ७) पांनड़ी रा ।

९०) श्री ठाकुरद्वारै महोछब करायो ।

५३) खेरायत रा जोगीयां नुं मुजावरा नुं भगतां नुं ।

३२) मास वारे दिन कमीण लोक ढोवणी लाया तिणां नुं दोना ।

१०) बाई आणंदकंवर रा आदमी बधावो लाया, तिणां नुं ।

३) सीवांणा रा भुबहरदास जणा ३१ नुं ।

३०७।)३।

२०७॥) श्री राजलोक नुं मोहरां उछाब रा दीया नग रुपिया ७) रा ।

२८) वहुजी मनभावतीजी नुं । १४) बाई चांदजी नुं ।

७) बाई मिरघावतीजी नुं । ७) दादी जादमजी नुं ।

७) दादी सोढीजी नुं । ७) दादी भटीयाणीजी नुं ।

७) मां चोहाणजी नुं । ७) मां चहुंवांणजी नुं ।

७) मां वाघेलोजी नुं । ७) मां भटीयांणीजी नुं ।

७) मां जाड़ेजी नुं ७) मर्जासिघजी री पात्र नुं ।

२८) सबलसिंघजीरो बहू४ नुं । ७) राजा सूरसिंघजी री पात्रं नुं ।

७) बाई अणंदकंवर सबलसिंघजी री बेटी नुं । ३॥) बाई परभावती नुं ।

४३) बीजा राज लोकां नुं मेलिया—

७) राजसिंघजी री बहू नुं । ७) राणीजी री बेन स्यामकंवर नुं ।

८) राणीजी री भोजाई नुं । ५) बाई दुरगावती नुं ।

---

१. नवग्रहों की शान्ति के लिए दान ।

४) चारणी कीकी भोरुंदा री । ७) आणंददेजी राव अमरसिंघजी री
५) बाई रतनावती नुं । बहू नुं ।
७) मीयां फरासत नुं ।

---

५०) समावळी मेहलीया अखैराजजी री बहुवां री छतरडीयां नुं ।

२९०।)३। श्री कंवरजी रो जनम हुवो तरै भुंजाई १ नै कड़ाव २ रावळी तरफ रा हुवा तिणां नुं लागा, ईग्यारे कड़ाव बीजा हुवा ।

गुल, खोपरा, नीवात, खारक, नारेल, सुपारी—

रु.	मण	असांमी
२५४।।।)	११९।।)३।।	गुल पडत ७।।
१२६।।)	२६।।।)	खोपर पड़त ८
८६।)	७।।)८	नीवात प्रत मण १ रा रु. १२)
३५।।)४।२५	९।।)३	खारक पड़त ।)
३९)	६)	सुपारीयां पड़त ५।।।)
४३।)२।२५		नाळेर ८२⁻)

६३१।।)२ पहरावणी हुई[1] तिण नुं कपड़ो—

१ मोहल में	राव अमरसिंघजी रै मेलिया ।	हुजदारां रै ।
१ गढ री साथ	पोसाली	१ बीरामणां रै
१ फुटकर	खवास पासवान	१ श्री ठाकुरदवारै
१ डूम भाट		१ माहाजनां नै

३. कुंवरजी नै कंवरपदो दियो—

श्री कंवरजी नुं कंवरपदा रा गांव लवाजमो दीओ गांव बीसलपुर सुं में संवत १७२४ रा ऊनाली था दीयो नै रु. १) रोजीना माहावदी सुं कर दीयो बागा वा लवाजमो सारो सिरकार था पावै तिण री नामो जोधपुर री जमैबंधी मै मंडीयो छै—

श्री कंवरजी री धाय भागां नैथावड़ बलू, धाय री बेहन पूरां, धायभाई करण इणरो सुबै पेटीया[2] रोजीना—

---

१. पोशाकें दी गईं। २. जीवन-निर्वाह हेतु दी जाने वाली सामग्री।

	चावल	दाल	आटो	घीरत	रोकड़
धाय भागां बलु सांवलोत री बहु	ऽ १	ऽ ॥	ऽ १।	ऽ ॥	०
राणी प्रतापदेजी रा धाय भाई सांवल रो बेटो बलू री बहू					
धाय भाई करण	०	०	१।	=	०
धाय री बेहन पूरां	०	०	१।	=	०
धावड बलू सांवळदासोत हमार पावसी नें गांव दीरीजसी तठा पछै मनै कीजो।	०	०	१।	=	०
छोकरी आसो नुं	०	०	१।	=	०

रोकड़ पावै मास १ में पावै—

४)२।२५ धाय भागां पावै।
४) धायभाई करण पावै।

वरसोंद[1] पावै वरस अेक में—

३८।।) धाय भागां पावै मास १२ में।
२३।।) कपड़ा रा वरस १ में।
८) ओडणाद ५।) फेटीयाद।
३) कांचळी[2] ६, ४।।।) गाघरा ६
२।।।) ओडणी २।

२३।।)

१५) चूड़ा रा पावै बरस १ में।
१०) धावड़ बलू सांवळ रो कपड़ा रा बरस १ में।
७।।) छोकरी आसकी कपड़ा रा बरस १ में।

४. कंवर जगतसिंह रो जनम—

कंवरजी श्री जगतसिंघजी बहुजी श्री चंद्रावतजी रै जनम हुवो। संवत १७२३ रा माहावद ३ गुरुवार दिन घड़ी १३ चढीयां नै पल १ मेख लगन में जनम हुवो सु श्री महाराजाजी हजूर लाहोर में माहासुद सुं हजूर नेगचार पावै नें रीत-पात कीवी तिणरी विगत—

बीरांमणां नु—

देस मांहे रीत सु देस मैं पावसी नै हजूर इतरा दीया मोर १ रु० ७) पावै।

---

१. प्रति वर्ष के हिसाब से। २. कंचुकी।

१ व्यास बेदंगराय नुं	१ जोसी जोतंगराय नुं	१ त्रीवाड़ी कांना नै
१ जोसी चक्रपाण नुं	२ सि० अखेराज नुं	१ व्यास जदेव नुं
१ जोसो बृंदाबन संतो-खीदास नै धाबै दीदी।	१ बेदीयो रामेश्वर नुं	१ व्यास जग।

९ रु० ६३) दीया।

बधाई आई तरै मौर १ रु० १५) री नै रु० ५) तिल री थाळी में।

मोर १ रु० ७) री गीतेरणीयां नै।

बारीया नै सिरपाव १ पाग रु० ९) री बादळाई नै फामड़ी १ रु० ६) री।

११६) रोकड़ बधाई रा १००), मोहोर री ७), माळा १ लोभ. १ सोना री मोरां री ७), ईजाफे १), चोकपुराइ रौ १) बारीया नुं।

बाजदारा नुं—

१) तोला रा सोना रा तुगल[1] जोड़ा ४ दीया ज्यांन मेहमद १, कुतब नुं १, जोड़ी लाखा नुं १, जोड़ी लीखमीचन्द नुं।

छीणगां सालुंवां रा पाघां दीवी, थांन १ री पाघ ३

१ ज्ञान मेहमद मोरछल

१ लाखो	१ कुतब मोरछल	१ अलाबगस
१ सुरणायची	१ लिखमीचंद	१ करणाजी
१ कलु	१ खोजो करणायचो	१ फतैमेहमद सुरणायचो
	१ नासिर	१ मीठो
	१ ढाढो	१ याकूब

१५

वीठळदास कुसळायत नुं मोर १) दीवो।

कासोदां री जोड[2] देस सुं आई तोणां नै रु० ४०)।

केसीया नुं पागां सालु री २०)।

खुडीया नै पाग १ सालु री २०)।

भुजाई हुई श्रीजी री तरफ सुं महेलां री तरफ सुं,

धायजी री तरफ सुं १, राठौड़ जैतसिंघ १ नारखांनोत री, १ राठौड भोंव गोपाळदासोत री, १ राठौड़ रिणछोड़दास १ गोयनदासोत री, १ मीर, अब री १

१. कानों में पहिनने का गहना। २. संदेश वाहकों की जोड़ी।

श्रीजी निजर कीवी मोहोर ४०० पातसा औरंगजेबजी रै निज हुंडो कराय ने ज्याहानाबाद में ली।

सायजादा सुलतान माजम री नोजर १०००) कीया।

राठोड़ रुपसिंघजी री बेटी चंद्रमती सायजादे नुं परणाई छै तिण नुं थांन नग ३५ मैलीया।

कलावत गुणीजनां नै[1] इनांम दीग्रो।

देस में रीत हुवां रो विगत—

कंवरजी श्री जगतसिंघजी रौ जनम संवत १७२३ रा महा बद ३ गुरवार दिन घड़ी १३ चडोयां पल १ मेख लगन में जनम हुवो तरै देस में खबर हुवै तिण री विगत संवत १७२४ रा बरस में ।

३६२।) जनम हुवौ तरै उछब[2] रो खरच—

३५८॥) मोहोर ७ नेग री सु रु० ३६५॥) में सु रु० ७) पहला दीया था बाकी रया सु पछै दोया।

१६॥) जोसी ५ बेदीयो १ जनम रै समै दोडी सूता[3] तिणां नुं पेडा नै, रा रुपीया।

३५) में सु १५॥) संमत १७२५ में दीया बाकी हमार दीया।

१४।)१। ढोलणी भेट लाया तिणां नुं दीया। सुतरार[4] ढोलणो लायो तिणनै। भाड़भुंजो चवीणो लायौ २), पींजारीयां नुं ३), दरजी भोपत नुं २॥)१।

२२५८।-) धरम रै दाखल खरच हुवौ—

३५५।)	आमांन छायादांन संकरायत रा सा १ रा रु० २३॥)	१६७॥)३।	होम सोमवार समीसरवार रा सो १ रा रु० १२॥)
१६।)३।	मकर संकरायत रा	११२)२।२५	... ...
६॥)२।	बरसोंद रा दीजे		... ...

---

१. गायक आदि कलाकारों को। २. जन्मोत्सव। ३. ड्योढ़ी पर सो रहे थे। ४. खाती।

८)२।३७।। भादवा वदी १२
बछाबारस रै भीजोवणा नुं
१७।)२।३७।। सीतलामाताजी री पूजा
चैतवदी ८ हुई तरै।
१८)२।२५ नोरतां में गोरणीयां २२
बरस १ में जीमै तिण नुं
सीधा[1]।
८६६।।।) श्रीकंवरजी तुलाव माहा
वद ८ कोवी तरै खरच
५२।) रा श्री लिखमीनारायणजी री
तुलावका मौर १ रा १५।)२
रोकड़ ३७)

... ...
४।।।)२ २५ मंडोवर श्री खेत्रपाळ
काळा गोराजी री
पूजापा रौ हुवै।
४८।=) गीरैह रास पलटीया
तरै दांन जप रा दीया
४३७) बराता संनधा बर
हुकम दीया।
१५।)३। श्री नागणेचीयांजी री पूजा
११।।)२।३७।। घी दीयो रोजीना
पईछै एक पाव।
३।।) पूजापो वरस एक में वार २।
१५।)३।

८७४।) श्री कंवरजी तुलाव बैठा,
मौर १ रा रोकड़ वरणो ब्रा. १६।
१५।)२। ७५९) ३२)
तील पात्र घीरत पात्र
२) –
प्राचीत दान नाळेर
५) १)
८६६।।।)

५०) सामान ब्रामणां नुं माहावद
५ दीया तरै।
१२१।।-) बाजै धोरी इतरा दान
पुन ऊसीचणा कीया
तिण नुं।

२२६९।-)

गहणो घड़ायो सोना रौ १६) कांठलो
हांसल[2] १ तोला २ री
गहना मुनाल कराया
तिणां सुं सोनो।

रुपीया तोला मासा ग्र०
१०६।) ६।) २ कोठार सुं
१६) ।।।) २ खरीद

तरवार कटार बुक
१ १
मूठ तरवार री कटारी
सोने री सोनो मस-
कत सुधो।

---

१. रसोई के पेटे। २. गले में पहनने का एक गहना।

तीवारां री भुंजाई हुई[1]—

संवत १७२४ रा बरस में आसोज रा दसरावै—

६।।=) दीवाळी री भुंजाई

होळी री भुंजाई

१०।।≡) चैत्री दसरावा नुं

दीवाळी री जलूस नुं बागो नवो करायो।

३) दुदमी गज ४।

१) पाग १० अतलस री)

२) अतलस अपदार गज १

७।।) कनारी सोनरीया बागो।

पान रा बीड़ा आया

राखड़ी रा बीड़ा १००

पान १५०

अगम दसरावै पासू ७५

दीवाळी ना बीड़ा १००

पान १५०

होळी बीड़ा १००

पान १५०

चैत्री दसरावै बीड़ा १००

पान १५०

आखातीज बीड़ा १००

जनम रै समै बीड़ा १०००

कपड़ा बागा राबत कराया मास १२ में संवत १७२४ रा बरस में।

२१) बागा १५ कराया

१०) सूथण १५ अतलस

४) टोपी कोरां सुधी

सीयाळा रा बागा साटै रा मोगसर सु माह तांई

३३।।।) अतलस गज ३२।।

२३।।।) इलायची रा थाळ

१६) साहोबो गज २२

१६।।) पालड़ी ३

५२)२ आसोज सुद १० रै दसरावो बागो करायो—

२२।।) पाग लाल कीलेदार मुकेसी सारु।

७।।) असावसी गज २।। बागा।

८) पटको १ जरीदार सग रूपा पटवा रो।

५) सूथण १ नुं अतलस १।।। गज

५।) कोर सोने री तोला २) पडत १) तोला रा रु० २।।)

५)२ तुररो १ रूपा रौ तोला १०।

४८।।) सेजखाना रो साज कपड़ो

१४) सीरखां २ खासो मछलो बदर री छींट।

८।।) सीरखां २ सीरोज छींट री।

२।।।)३। पथरणा २ लांगी रा।

१।।।)३। पछेवड़ा २ सीवांणा री टुकड़ी रा।

४।)३। मुलमुल रा थान गज २४ रो।

१२ अंगोछा।

१२ धोती।

१६।।) बुगचा[2] २ मुखमली।

१।।) सूत सीरखां[3] पथरणा में।

५३।)२। वसूल रु० १।) केसु रै गयौ बाकी।

५०) केसु रै १।।) बाकी।

४१७।।।)

---

१. त्योहारों पर भुना हुआ खाना बना। २. कपड़े का बड़ा थैला जिसमें कपड़े आदि रखे जाते हैं। ३. रजाई।

३।) दरीयाई गज ६।। रा।
६)१।२५ श्री साय गज ६।
८।।) इकतारो बुरानपुरी गज २७'। असतर नुं।
।।।–) अतलस टोपी ७।
२।।) ओडणी २ रजाई नुं।
१६।) कनारी १० सोने री।

३३।।।)३। मास ५ फागुण रा बागा १५ सरै जंन बैत कराय दीया।
।।) जोडा २ पांवपोस रा तिण नुं।
६।।)३। बाजे इनाम दाखल।
६) मांजडी १ पंडित लालजी नुं .... खिजमत खवास पारादात रै।
।।)३। पाघ १ धायभाई करणा नै बरसगांठ री।

जनम उछब रै खरच री विगत संवत १७२३ में—

३२६) रोजगार मीया रुसतम नै चंद्रावतजी रा दीया।
३२५) रोजगार रा प्र० २५)
१४) जडावल बरस रै प्र० ७)

७३।।।) छुड़ीदार जणा २ मास १३रा
३६) भाई खांन मास १ रु० ३)
३३।।।) घासी पीरमेहमद रो मास १ रु० ३)

७२।।।)

१६६।।) छड़ीदार खांन मेहमूद नुं मास ७ रा प्रत मास १ रा, २४)७
१५) खान महंमद मोरघो
४) फतसा
५) सेख बाजखां
४) जलाल आलमसा

---

२८) में बाद ३।।।)१। बाकी २४)५।

२२।।।) सीको बरखुरदार गाजी रो साल १रा रुपीया १।।।) नै पेटीयो १ आटो १। मन ≡)

१४६।।।) तळहैटो रा मेहलां श्रीकंवर जी रहै तरै चोकीदार राखीआ तिणां नै खरची रा—

२५)३।१२।। साणी रतनसी साल १रा रु० २)
१३) सोलंकी जीवी सुपा रो वरी

४४।=) दोढी तांणी[1] जणा २ बरीचा रे मास १ रो रु० १)
१ ताजो खवास पूरो रोज दीन १ रा टका २।२५ मुगा मास ६॥ दीन ४ रा।

२२)३। भग बाघो गोईदोत रोज टका १।१२॥

२२)३। फरो दहोयो रोज टका १।१२॥

१॥)१।२५ चुं० अलौवल मुरीद रौ

५६-) श्रीकंवरजी मीयां फरासत री हवेली रहा तरै ईजाफै चोकीदार राखीया जणां ६ प्र० ॥)१।।

४०)३। फरास जणा २

३॥)१। फरास ईनायत लाडा रो मास २ रा दिया।

३६।)॥ फरास मजु नुं हजुर था सु श्री श्री कंवरजी रो कांम करसी गढ़ ऊपर तळेटी कोठार रो रखत संभाळ सी, मास १ रा रु० ६) बाद ॥-) बाकी रु० ५≡)।

१२॥) हलालखोर लालू खिजमत करै सु मास रो १ रु. १) सु मास १३ रा में रु. ॥) कसूर।

२।)३।२ तरवार कटारीयां रै म्यांन।

७८॥) मुखमली साज तरवार रे लीयो। रुसनाई[2] खरच दीया सारुं तेल संवत १७२४ रा सांवण सुं नै असाढ सुधी मास १३ रौ पड़त तेल ७१ रो टका १।२५ लखै।

१०।)३। बीड़ा ६१३ हसते तंबोली बेणो।
१६१ गढ ऊपर
२७२ श्री कंवरजी रै हजूर।
१८० राजा मानसिंघजी रै।

८।) धोबी नराईण सादूळ रो कपड़ा बागो धोवै सु साल १ रो रुपयो १॥) पावै।

४) दरजी बाघो बागो सीवै तीणा नुं

६६) बरस गांठ रो जलुसायत संवत १७२४ रा माहावद ८ हुवौ तरै।

२।)१ भेंट श्री ठाकुरदुवारै नै भागवत ऊपर चढाया।

१०) केसर टंक ७० पंसारी व धारी पड़त ७)

२६)३।३७॥ मेवा जमा।

१८।)१।३७॥ दमीदोय २॥)१ नै पेड़ा ५॥ सेर

७॥)२। मिठाई १।)६ राजा मांनसिंघजी नुं।

---

१. डेयाढी के पहरे के लिये। २. रोशनी के लिये।

पान मसालो
८॥)३।७॥ १॥)३।३७॥
२) राजा मानसिंघजी रै सीधो मेलियो ।
२॥।)।२५ फूल श्री अणंदघण करण जी रै नै बाई रै रतनकंवरजी रै अेक अेक
२।)३ ।)१।२५
१)१।३१ ओखद करायो धायर तिण नुं
३।३७॥ दाख ॥ सेर
२।३७॥ मोसरी ॥ मन

बीड़ा ६१३ हसते तंबोळी बेणो
रुपीया १०।)३। सु बीगत दुजी कांनी सु ली ।
गढ ऊपर श्री कंवरजी राजा मांनसिंघजी
१६१ २७२ १८०
राजा मांनसिंघजी रै सीदो रुपिया २) सा.
।)१। — ॥)३। — ८५

४०) दीवाळी नुं मीठाई चबीणो दिरीजे ।
२६।॥)३ कहार २९३ बाई श्री चांदजी, मां चंद्रावत बाघेलीजी बहु हाडीजी पात्र चंद्रजोतजी गोढे पधारीया तरै खरच हुवा कहारा ।
३।)२ गूडी २ उडावण रै वासते कराई तरां रै ।
२।॥) श्री कंवरजी गढ ऊपर पधारीया तरै बाजदारां नुं ।
२८।॥।३७॥ खसखानो १ बाड़ी रै करायो मोहले तींण नुं लागो खसखाना नुं पांणी खसछाहण नुं ।
२२)२।३७॥ ३।')१।
रखत चकबंधी ३)१।

७।)२।१२॥ ओडणी ४६ प्रत थान १ गज २४ थांन १ रा सु थांन ५॥। पड़त १।)।२५ ।
६।)२।२५ बाजै बाजदारांनुं ६) घबलेरण १ बीरामणां नु २) जेठड।) २।२
३८)१।२५ रखत करायो तोणां ने लागो
३१) जाजम अेक कराई ती लेखे
२।॥)१। बगले १ मजर घाल्यायो तिणने मसालो ।
१।=) गादी १ गदेलो १ ।
२॥≡) मुखमली गादी १ ।

५।) सीधो खरच
२॥।) चंदण २॥ सेर रैयो
१॥) मुठीयो १ मलीयागरी रो
१) गुलाब रा सीदरा ।

२०।≈) बाजे परचूरण
   ६।) तांबेड़ो पीतळ रौ ५।। सेर
   ४)२। जाग लाख री।
   ४)१।२५ छाळी १ दूध अरोगण नै
   ६) परचूण
   ७।।≈) दरजी बाघो बागो सीवै सु रोज पेटीयो आटो १। सेर, घी ≡पाव, तेल ≈) सु काती वद १ सु असाढ सुद १५ सुधी मास ६ रा धान २ सेर कणेत पावै रोजीना।

१५) होळी री गोठ रा दीया हसते भाटी सूजा पीरागदासोत फागण सुद १२

११-) बाजै खरच
   ७।।) कसबे जोधपुर रै चोकै।
   ७।।≈) प्रगने सोजत रै।

४८६८।।)

५. बाई रतन कुंवर रौ जनम—

बाई रतन कंवरजी रौ जनम संवत १७१२ में हुवो तरै विगत खरच री—

३००) बहुजी श्री सेखावतजी नुं सुवावड़ रा दीया।

६१) श्री बहुजी नुं पीठी नुं मोठ ३८) मण तिल मण १५) रा दीया।

११) नेग रा दीया मोहोर १ श्री चांदजो नुं ७) धाय नुं १४)।

२६।।।) जोसी लाग ६ दाई २ जनम रै समै नुं परै पहली गढ रहा तिण नुं पेटीया दीया २८ रा नै ढोली पांती पटां रा दीया।

२८) गीरह ६ रो दांन करायो श्री बाईजी कने तिण रा रुपीया २८) दीया।

६।) मासवारी[1] पूजापो नैवेद सुधो श्री देवसथान पूजा रा मेलीया।

३०।।) श्री नागणेचीयांजी रै पूजा रा श्री खेत्रपाळ पूजापो नै धाय नुं दीया रांग रा।

२७-) पालणो खाती रतनो लायो तिण नै २५), रोकड़ १०।।), कपड़ो ६।), नीवार २), बाजीदार नुं ५)।

।।) थाली १ दाई नुं।

५११।)

1. प्रतिमाह।

पछै श्री महाराजाजी री तरफ सु बाई पावै तिण री विगत—

५०) राखी रा[1] रोज १ बीडो ६ रा पान ६० ।	१) रोजीना मु० ३४८)
१०) पांवपोस रा जोड़ा ।	११) छाबरा मांस मास सेर २
१२) धोबी दरजी नु ।	३) दसरावा दोनु रा नेग कंवर का रोकड़ो २) दमीदो १) ।
४०) गवर रा रावळी तरफ सु पावै[2] ।	मांजणां नु तेल रोज १ रो १ पात्र सु रोकड़ा २५ ।
६६।।) बाही पांनड़ी रा । सीधा रोज १ गेहूं ४ सेर, मूंग १ सेर ।	१०) मिठाई रा सांवण सुद ३ रा रोकड़ ।
भायां री तरफ सु रुपया रोकड़ ३२) पावै ।	२०) कपड़ा रा मास १ रा ।
सु रोज तेल मास १ में सेर २ पावैं ।	१३) दोवाळी नै कुलड़ो भरै तरै मेवो नै मिठाई नै चबीणा रा ।
	१ ... ...

बाई रतनकंवरजी री धाय जंगी सिकदार भगवांन कुसळावत री बहू पावै—

सीधो रोज पावे आटो १।। सेर, चोखा पाव १, दाल ।। सेर, घी ०।४ पाव सु जंगी नु ।	धाय री बैन रै— छोकरी १ रै आटो १। सेर, घीरत = भर ।
दानगी पावै १ रोजीना तिण रा मास १ रा रुपीया ४)	२७।।) वरसोंद[3] पावै । धाय पावै कपड़ा रा १४), बागा ६) चूड़ा रा ७।।) ।
	६) छोकरो रै कपड़ा रा ।
	३३।।)

१. रक्षाबंधन के अवसर पर । २. गवरी पूजन के अवसर पर राजा की ओर से पाती है । ३. प्रतिवर्ष ।

६. हाड़ी जसवंतदे नै राणीपदो दीयौ—

महाराज श्री जसवंतसिंघजी कंवरपदै बूंदी रा हाडा छत्रसालजी[1] री बेटी जसवंतदेजी परणीया सं० ... ...' रा दुतीक सांवण सुद ८ रौ जनम नै त्यां ने १६६४ रा जेठ सुद २ परणोया बूंदी पधारने। पीहर रौ नांम रांमकंवर थौ। तिणां १७२० संवत बाग रा... पको करायो नै कोट करायौ नै तळाव किलांण-सागर रातोनाडो करायो। सं० १७२६ औरंगाबाद में रांणीपदो पायौ। पछै बूंदी चलीयां[2] सं० १७३६ नै। सं० १७२६ रा बैसाख वद १३ औरंगाबाद में रांणीजी जसवंतदेजी नु रांणीपदो दीयो तिण री विगत—

रांणीपदा रै मोहरत[3] रै दिन जतुसायत हुवै। श्री महाराजाजी नै श्री रांणीजी बीजो हिसा रौ मेहल खवासीयां मांणस उमराव खवास पासवान कांम-दार सागड़द पेसो बणाव[4] करै, नै इतरो श्रीजी री तरफ सु रांणीजी पावै—

बागो चूनड़ सूधो आवै। बणाव नु बागा २।

गहणा रा डबा मांहै सुं इतरो दीयो, तिण में सारा गेणा था जडाव रा। बणाव कर नै अेकण सिंगासण बैठे। ऊपर मेघाडंबर तांणीजै। खोळ भरीजै। विगत—श्रीजी री तरफ सुं सूत सुं लेपेटीयो नारेळ सु सोना रा संपुट रौ नारेळ हुवै। सु पछै ही जतनां सुं राखीजै[5] कोठार मांही।

फळ नग १८ हुवै बीजोरा तथा बीजा ही फळ हुवै। सो संको कुजो नोवात रौ १ सुपारी बीड़ा ५ रोकड़ रुपीया १००)३। खोळ भरै तरै मोड़ बांध नै सींघासण बैठे। तरै पिरोहीतांणी आरती करै सु आरती में मोहर १)) अेकहीज घालीजै। श्रीजी री तरफ सुं रुपीया ७), रांणीजी री तरफ सुं रुपीया ७) आरती री मौर १ अेक सवासणी नै दीजै। पछै श्रीनागणेचीयांजी रै पांय लागै[6] तरै रांणीजी री तरफ सुं ईतरो हुवै—मोहोर १ अेक, नारेल ४, मेदो ऽ), गेहू ऽ।), दूध ऽ।), चावल ऽ७, खांड ऽ२, गुळ ऽ२।।, घीरत ऽ७, सवामण रौ नेवेद, नै चंद्रवा लाल सावटु।

देवतां री रांणीजी पधारनै पूजा करै। विगत—मेहलां में पुरबाई ।।, खेत्रपाळ ।।, जोधा सुरार रा खेत्रपाळ नुं। देवतां री पूजा की। होम दोळु[7] परदीखणा[8] दीजै। कलस ५ थापन कीजै—कळस १ रुपा रौ रुपीया १०) रौ घड़ीजै, मासो सोनो कळस में नारेल ४ दरीयाई, तांबा रा कळस ४, नारेळ ४,

---

१. शत्रुशाल। २. स्वर्गवासी हुए। ३. मुहूर्त। ४. शृङ्गार। ५. बड़े यत्न-पूर्वक रखा जाता है। ६. कुलदेवी के पांव-धोक देते हैं। ७. चारों ओर। ८. प्रदक्षिणा।

कळस ४ में, सोनो मासा ४ च्यार, रोकड़ रुपीया २) नीसतेई बीरांमणां नुं दीजै। नवगिरे री पूजा कीजै नारेळ १ रोकड़ ४।२५ चावळ कपड़ो रातो, रुद्र कळस रुं नारेळ १ रोकड़ा २। पात्र स्थापन नारेळ १ रोकड़ी २) रातो कपड़ो चावल।

नागणेचीयां री पूजा नै पंच देवतां रो पूजा नवेद भेसो स्वसत खावन नारेळ २ सपत धांन[1] नारेळ रुपीया २०) भुरसी दिखणा रा नै रुपीया ६०) सखालै लागै।

रातै रातीजोगो हुवै। धोलेहरणीयां गावै तिणां नै मोहोर १ अेक दीजं रांणीजी री तरफ सुं।

आरती हुवां पछै उमराव हुजदार कांमदार खवास पासवांन साहा में आय नै पगै लागै नै भेंट करै सु रांणीजी रै आवै न देवै।

ऊणीज[2] दिन श्री आनंदघनजी रौ ऊछब करावै सो मोहोर १)) अेक नारेळ २, चढ़ावै नै श्री किल्यांणरायजी रै मोहोर १ अेक नै नारेळ २ दोय चढ़ावै।

श्री माहराजाजी रे रसोवड़ै भुंजाई हुवे सु सकोई पहल उमराव खवास पासवांन जीमै नै कांमदारां नु लाडू पुड़ी, दीरीजे नै भुंजाई १ श्री रांणीजी री तरफ सुं हुवै।

ऊमरावां री बहुवां आवै सु जीमै नै बारली नै मांहोली भुजाई बचै जीनस[3] रेवै सु राजलोक[4] तथा खवासीयां री थाळीयां पुरस मेलै। श्री रांणीजी रै मेहेल पधारै पगमांडणी राणीजी देवै।

अतलस मीसरु नग १ नै निछरावळ मोहर १ नै रुपीया १००) करै सु फूल वणा होव सु बाई लेवै।

आरती होवै। आरती री मोहर सवासणी नुं दीजे। पछै सगळा मांणसां नुं पगां लगा लगावै। सु मांणसां नै चूड़ा पहरावै। श्रीजी री तरफ सुं, नै बागा रांणीजी री तरफ सुं देवै। माळीया सुं रात रा पधारै तरै इतरां नु नेग वागा रौ छै—खवास धांधल उदैकरण लेवै मोहर १)) बेस १ खोजा मदारख नुं बागा २ सुधा खाना रा नुं, मोहोर १ बागो १ अबदारखाना रा नु, रसोवड़ा रा दरोगा नुं, हजूर रा दोढोदार नुं। सेझखाना रा ढोली नुं—मोहोर १, बेस

---

१. सात प्रकार के अनाज। २. उसी। ३. जिन्स। ४. राजघराने के नौकर-चाकर आदि।

१, खबर देण आवै तिण नुं ऊल गुडुंबा नुं मोहोर १ बेस १ ।

इतरा मोहोर पावै लूण ऊतारण री १)) जोसी, मोहोर १)) प्रोहीतजी, मोहोर १)) रतनाजी री पोसालु, मोहोर १)) पोलीया नु, मोहोर १)) गेहणां कोठार वाळां नुं । मोहोर १)) वेदीया नुं, मोहोर १)) साहाणीयां नुं, मोहोर आदी ।)) गांछा नुं, मोहोर १)) कुंभार नुं, मोहोर १)) पाट रा हाथी रा ऊछाड़ै आधी मोहोर, बारीआं नु मोहोर १)), सुखपाल रा काररा मोहोर १)) ।

उमरावां री बहुवां नै बागा दीजे—

१ बडा बडा उमरावां री बहू नुं मोहोर १ अतलस १ परकालो नारेळ २ ।

२ ऊतरता[1] उमरावां री बहू नुं मीसरु परकालो रोकड़ रुपीया ५) ।

३ तीणसुं उतरता उमरावां री बहू नु मीसरु रोकड़ रुपीया २ ।

४ तिणसुं उतरता उमरावां री बहुवां नु परकालो नै नारेळ २ ।

सकोई[2] उमरावां नुं आसीस कहावै नै पांन रा बीड़ा देवै ।

श्री रांणीजी सासुवां नुं नणदां नुं पगालागणा रा मोहोर १)) परकालो लाल अतलस ।

खवासीया धाय बडारणां नुं साव पटु दीजै । खवास कामदार मुखी[3] होवै तिणां नुं दुसाला थीरमा, मीसरु दीजै । बीजासी नुं नै महाजनां नुं खवास पासवानां नुं साड़ी दीजै । पोळ नुं सावटु ऊंछाड़ो दीजै । नै पोळीया नुं साड़ी पाघ दीजै । डूम ढोलीयां नुं तुगल छीणगा दै । नेग ढोल दरमामा दरीयायी सुं उछाड़ी जै[4] ।

रुपीया ६०००) श्रीमाहाराजाजी रांणीजी नुं दीराया ।

---

१. प्रथम श्रेणी के नीचे की । २. समाप्त । ३. मुख्य । ४. दरियाई कपड़े के आवरण से सज्जित किए जाते हैं ।

परिशिष्ट—४

डावी नै जीवणी मिसलां री विगत

रावजी जोधेजी मिसलां री रीत बांधी सो आपरा भाई तो जीमणी मिसल में बैठा नै आपरा बेटां नै डावो मिसल में बैसांणीया सो मिसल जीमणी में तो चांपावत, कूंपावत, जैतावत, करनोत अै च्यार सिरायत है नै डावी में मेड़तीया, ऊदावत, करमसोत जोधा है।

मिसल जीवणी

खांप चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

ठिकांणो आऊवो—

राठौड़ कुसालसिंघजी सुं संवत १९१४ मै काळा लोकां बाबत आऊवो छूटौ[1]। नै बगतावरसिंघ, माधोसिंघ, सिवसिंघ, जैतसिंघ ज्यां नै संवत १८३१ री साल चूक गढ ऊपर हुवो नै कुसलसिंघ, तेजसिंघ, आईदांन, दलपत, गोपाळदास, मांडण, जैसो, भेरुदास, चांपो रिड़मलोत सो आऊवो भैरूंदास, जैसाजी नै दीरीजीयो सो कितराईक दिन सूरजमलोतां रै हो नै पछै माहाराज अजीतसिंघजी संवत १७ तेजसिंघजी नै दीयो।

ठिकांणो आहोर—

राठौड़ जसवंतसिंघ, जैतसिंघ, सगतीदांन, अनाड़सिंघ, राजसिंघ, विहारीदास, रिणछोडदास, जगनाथ, आईदांन, दलपत, गोपाळदास, मांडण, जैसो, भैरुदास, चांपो, माहाराजाजी श्री मांनसिंघजी री मरजी वधी[2] सो अनाड़सिंघजी नै चांणोद, काळू, सादड़ी वगेरे पटो वधारे में दीयौ।

ठिकांणो रोयट—

राठौड़ अचळसिंघ, इंदरसिंघ, किलांणसिंघ, भगवतसिंघ, सगतसिंघ, आईदांन, दलपत, गोपाळदास, मांडण, जैसो, भैरूंदास, चांपो।

---

१. सन् १८५७ के स्वातंत्र्य संग्राम में विद्रोहियों को पनाह देने और अंग्रेजों की खिलाफत करने के कारण गांव जब्त हुआ। २. कृपा हुई।

ठिकांणो पोहकरण—

वभूतसिंघ सालमसिंघोत, वभूतसिंघजी हिमतसिंघजी रा बेटा सो सालमसिंघ जो रै खोळै आया[1]। सालमसिंघ सवाईसिंघजी आंने मूंडवे चूक हुवो[2], मीरखांन बाब सबळसिंघजी, बोलाड़ै कांम आया। देवीसिंघजी संवत १८१६ री साल में ज्यां नै चूक हुवौ। माहासिंघ, भगवांनदास, जोगीदास, वीठळदास, गोपाळदास मांडण, जैसो भैरुदास, चांपो।

ठिकांणो खोंवाड़ो—

खांप वीठळदासोत। अजीतसिंघजी, गजसिंघ, ग्यांनसिंघ, नवलसिंघ, पेमसिंघ, अखैराज।

ठिकांणो दासपां—

चांपावत बीठळदासोत। अनाड़सिंघ, सादूळसिंघ, उदैभांण।

ठिकांणो बाकरो—

खांप वीठलदासोत।

रिणसीगांव, हरीयाडांणो, पोलवौ, दासीणीयो, रातड़ीयो, मालगढ़, दूदोड़।

गांव खारडा में मुकनदासजी रा है।

गांव सिणला में उदैभांण लखधीरोत है नै मुकनदासजी उदैभांणजी सो माहाराजा अजीतसिंघजी कनै विखा मै रहया था सो माहाराजा अजीतसिंघ जो गढ़ दाखल हुवां पछै पाली रो तो पटो दीयो नै परधांनगो दीवो[3]। नै नागोर राव ईंदरसिंघजी सूं मिलावट राखी सो जाहर हुई तरै गढ ऊपर उण खून सुं चूक हुवौ। छीपीया रा ठाकुर ऊदावत प्रतापसिंघजी चूक कियो। सो ऊदैभांणोतां रो ठिकांणो छूट गयौ नै ऊणां रा पोतरा गांव सिणला में भोमे है[4]।

ठिकांणो हरसोळाव—

खांप बलूओत। बगतावरसिंघ, जालमसिंघ, गिरधरसिंघ, सूरतसिंघ, हरीसिंघ, जसवंतसिंघ। बलू गोपाळदासोत नै सथलांणो, धांधीयां, चवां, मांडावस वगेरै ठिकांणा था सो संवत १८६३ फितूर कांनो परा गया[5]। तिण सुं छूट गया। नै परगनै गोढवाड़ रो गाव सेवाड़ी ही जद छूटी थी। गांव धांमळी ही बलूओत है। राठौड़ सिंभूसिंघ जालमसिंघोत।

---

१. गोद आए। २. धोखे से मारा। ३. प्रधान का पद दिया। ४. भोमीचारा है। ५. राज्य के विरोधी पक्ष की ओर चले गये। महाराजा मानसिंह के विरुद्ध।

आउमो पहला तो जैसेजी भैरुंदासोत पायो थो सो सूरजमलोतां रै रह्यो। नै पछै महाराजा श्री अजीतसिंघजी आईदांनोतां नै दीयो नै सूरजमालोतां रै चिरपटीयो थो सो ही संवत १८६३ फितूर कांनी रया तिण सुं छूट गयो। सो मेवाड़ में गया नै अठै सूरजमलोतां रै भोमां है—वीठोरै, बांतै, वाडसां, वाडीयो, जेठंतरी वगेरै में है।

ठिकांणो खाटू, (भोपतोत)—

राठौड़ विसनसिंघ, जोधसिंघ, दुरजणसिंघ, हुकमसिंघ, धीरतसिंघ, बाहदरसिंघ, भोपत गोपाळदासोत।

पोकरण पहलो तो पोकरणां रै थो नै पछै नरैजी छुडाई सु नरावतां रै रही। सु उणां कना सुं रावजी मालदेजी छुडाई नै संवत १७८४ माराज श्री अभैसिंघजी माहसिंघ भगवानदासोत नै दीवी। नै पैला माहाराज श्री अजीतसिंघजी री विखा री चाकरी भगवानदास करी थी सो भीनमाळ दीवी थी सु तो छुडाई नै पोकरण दीवी नै नरावतां नै नागोर रो गांव भडाणो दीयो। चांपावतां रो ठेट्ठु ठीकांणो तो कापरडो, रणसीगांव थो सो पछै गोपाळदासजी रै बेटा ८ हुवा था सु जुदा-जुदा ठीकाणा वे दीया। नै पछै देवीसिंघजी संवत १८१६ मै माहाराज विजैसिंघजी पकड़ चूक कराया नै सबळसिंघजी पिण बालाड़े फौज में था सु पिण कूंपावत रै हाथ सुं लोह लाग परमधांम गया। नै सवाईसिंघजी माहाराज विजैसिंघजी नै गढ सुं ऊतार नै सिवसिंघजी नै गढ दाखल[1] कीया। नै संवत १८६३ फेर जोधपुर गढ रै घेरो दीयो नै १८६४ रा चेत सुद ३ मीरखां नबाब सवाईसिंघजी नै चूक कीयो। सु सालमसिंघजी पाट बैठा नै संवत १८८० रै बरस धांम पोता[2]। नै भभूतसिंघजी गादी बैठा संवत १८९५ वें। सारा सिरदारां लेर अंगरेज साथै जोधपुर आये पाछा अजमेर आये पाछा जोधपुर आया। नै गढ खाली करायो नै मीजल दूनाडो पाछो बाल[3] करायो।

खांप कूंपावतां रा ठिकाणां री विगत

ठिकांणो आसोप—

पैली तो दूजा भाईयां रै थी सु तो गांव खारीया में है नै पछै राजसिंघजी रै परधांनगी नै आसोप माहाराजा जसवन्तसिंघजी रै दीवी। या लोवार नै मार जु ऊपर पीयो थो तिणां राजसिंघोतों मेह नोज है नै पैला आसोप भींव सबळसिंघोत रै थी।

---

१. गढ़ पर अधिकार करवा कर प्रवेश कराया। २. स्वर्गवासी हुए। ३. बहाल।

राठौड़ सिवनाथसिंघ, बखतावरसिंघ, केसरीसिंघ, रतनसिंघ, महेसदास, दलपत, कनीरांम, रांमसिंघ, जैतसिंघ, मुकनदास, किसनसिंघ, खींवकरण, माउण कूपावत सुं रांमसिंघजी हुई, ईणां रे हांसौ आसोप हुई।

ठिकांणो चंडावळ—

राठौड़ सगतीदांन, प्रतापसिंघ, लिछमणसिंघ, सांवतसिंघ, बिसनसिंघ, हरीसिंघ, सेरसिंघ, प्रीथीसिंघ, फतैसिंघ, गोरधनदास, चैनसिंघ, ईसरीसिंघ, कूंपो माराजोत श्रै गोरधन।

ठिकांणो कंटाळीयो—

राठौड़ गोरधनदास, सींभुसिंघ, कुसलसिंघ, सगरांमसिंघ, बखतसिंघ, भीवसिंघ, सबळसिंघ, किसनसिंघ, सादूळसिंघ, महेसदास कूंपावत।

गांव सिरीयारी—

राठौड़ रतनसिंघ, मालमसिंघ, दौलतसिंघ, जोधसिंघोत।

गांव चेलावस—

राठौड़ गुमानसिंघ, मुकनसिंघ, जुंझारसिंघ, रतनसिंघ, लिछमणसिंघोत।

खांप जैतावतां रा ठिकांणां री विगत

ठिकांणो बगड़ी—

राठौड़ जेतैजी हुलां कना सुं छुडाय लीयो। १ राठौड़ नारसिंघ, सिवनाथसिंघ, केसरीसिंघ, हींदूसिंघ, जोरावरसिंघ, पाड़सिंघ, उरजणसिंघ, प्रतापसिंघ, देवकरण, कुंभकरण, प्रथीराज, जैतो, पंचायण, अखैराज, रिड़मल। बगड़ी उरजणसिंघजी सुं छूटो। माहाराजा श्री अजीतसिंघजी रा वीखा में ईंदरसिंघजी सुं खटपट राखी नै दळथंभणजी री फितूर खड़ौ कियौ तिणसुं उरजणसिंघजी नै माळवे चूक हुवौ नै बगड़ी अचळदासजी नै दीवी। सु पाछी पाहाड़सिंघजी रै नावै लिख दीवी।

खोखरो—

राठौड़ ग्यांनसिंघ, सालमसिंघ, भांनसिंघ, गुढा ४ ठगां रा बाजै जीके।

नै भदावत, कलावत, रांणावत श्रै खांपां अखैराजजी सुं फंटीया सु भदावतां रै तो गांव खांभल नै कलावतां रै गांव जाढण इणां गांवां में भोम है।

वगड़ी रो पटौ कदेक तो खोखरां वालां रै नांवो हुयबो कीनो कदेक पाछो बगड़ी वाळां रै होयबो कीयौ। पछै संवत १८६३ फितूर तरफ केसरीसिघजी गया[1] सुं मूंडवे सवाईसिंघजी भेळो चूक हुवौ नै वगड़ी सालमसिंघजी खोखरा वाळां रै लिखीजी। सो फेर पाछो संवत १८७० में सिवनाथसिंघजी नांवे लिखीजी सो फेर पाछी जपत संवत १८८० में हुई। नै सालमसिंघजी रै लिखी जी सो संवत १८८४ में सिवनाथसिंघजी रै लिखीजी।

सिवनाथसिंघजी फितूर री फौज डीडवांणे सांमल गया तरै पछै संवत १८८६ बूडसु रा अखेसिंघोत सुं मेल हुय खोडीया रौ गढ उरो लीनौ नै जेतारण वगडी रौ वीगाड़ कीनो। तरै सिंघवी कुसलराज श्री दरबार री फौज ले चढीयौ सूं सिवनाथसिंघजी सुं झगड़ो कर काड दीनो[2]। सो मेवाड़ रै गांव चीबड़े पोहता नै झगड़ो हुवो सुं पडाले माल कुसलराज रै हाथै आयौ। संवत १८८६ रै बरस आसाढ सुद १० झगड़ो हुवो।

खांप करणोतां रा ठिकांणां री विगत

कांणणो

राठौड़ दुरगदास आसकरणोत माहाराजाजी श्री अजीतसिंघजी रै विखै में बंदगी कीवी नै बरस २८ तांई मारवाड़ में तुरकांणी रही तरै बडा खेटा कीया[3] नै पातसा औरंगजेब रा साहबजादा अकबर रा बेटो १ नै साहजादी १ लाया था नै सांमल राख झगड़ा कीया। सो पातसाह औरंगजेब दुरगदास नै मुंडोसीयो कहता नै कांणणो, समदरड़ी, झंवर, हीगलो, चांदसमो, भाखरी, कोटणोद वगेरे है।

राठौड़ रतनकरण, ऊमेदकरण, नथकरण, केसरकरण, सांमकरण, करनीदांन, फतैकरण, सिधकरण, अभैंकरण, दुरगदास, आसकरण, नीबो, बीदो, लूणो, करण, रिड़मलोत।

बाघावस—

पेमकरण, घणस्यामकरण, जैतकरण, मैहकरण, दुरगदासोत।

गांव समदरड़ी—

राठौड़ आईदांन, सालमसिंघ, इंदरकरण।

मिसल डावी

खाँप जोधां रा ठिकांणां री विगत

ठीकांणो खेरवो—

कंवर समरथसिंघ, सांवतसिंघ, दौलतसिंघ, अमांनसिंघ, सवाईसिंघ, इंदरसिंघ, सीवसिंघ, प्रतापसिंघ, रिणछोड़दास, गोयंददास, भगवांनदास उदैसिंघोत।

---

१. महाराजा मानसिंह के विरुद्ध धौंकलसिंह के राज्यारोहण के प्रयास में उसकी मदद की। २. वहां से निकाल दिया। ३. बड़े साहस के कष्टसाध्य कार्य किये।

खांप गोयंददासोत जोधा है नै गोयंददासजी रौ वसायो गोयंदगढ अजमेरा में है। सो रोएसो, बाबरो, बलाड़ो, बुटी, जावस, कोठड़ो, आंतरोलो, औ गांव गोयंददासोतां रा है।

ठिकांणो दुगोली—

राठौड़ सिवनाथसिंघ, ग्यांनसिंघ, सिरदारसिंघ, राघोदास, सांवतसिंघ, किसनसिंघ, रतनसिंघ, हरीसिंघ, तेजसिंघ उदैसिंघोत।

खांप रतनसिंघोत जोधा :

इणां रा गांव नागोर पटी[1] में गैनांणो, घाटीयाद, रोडो, टालणोया, ऊखावरांणो है।

ठिकांणो लोटोती—

इंदरसिंघ, उदैसिंघ, सेरसिंघ, जालमसिंघ, सिरदारसिंघ, इणां रै आगै बाकलीयौ थौ सो आतमारांमजी माहाराज श्री बड़ा माहाराज श्री विजैसिंघजी रा राज में लोटोती हुई नै बांझाकुड़ी नै राबड़ीयौ।

ठिकांणो लाडणू—

जोधा केसरीसिंघोत। कंवर प्रथीसिंघ, ठाकुर बाहादरसिंघ, मंगलसिंघ, पदमसिंघ, सिवदांनसिंघ, भारथसिंघ, लखधीरसिंघ, जूंझारसिंघ. चंद्रसेण, केसरीसिंघ, नरसिंघदास, किलांणदास, रायमल मालदेओत, सो औ केसरीसिंघोत जोधा बाजे है। सो लाडणू आगे खालसे थी नै कला रायमलोत रै सिवांणो थौ सो सिवांणौ मोटा राजाजी संवत १६४५ छुडायो नै कलो रायमलोत कांम आयौ। पछै नागौर रौ गांव कसूमो राजथांन रह्यौ[2]। नैं चोरी-धाड़ा रा फैल सुं माहाराजा बखतसिंघजी पटौ छुडायौ थौ। पछै माहाराजा श्री विजैसिंघजी रा राज में ऊमरकोट सिंघवी खूबचंदजी रै तालके थौ सो उठै था सो टालपुरां सरायां सुं झगड़ो हुवौ सो सिवदांनसिंघजी नै छोटा भाई मालमसिंघजी झगड़ो कर आछा तरै कांम आया[3]। सिवदांनसिंघजी रै बेटो नहीं तरै छोटा भाई पदमसिंघजी पाट बैठा। उण चाकरी सुं लाडणू लिखीजी। मालमसिंघजी कांम आयां पछै छठै महीने रिणजीतसिंघ जनमीया ज्यांरै नांमै न्यारो पटो गांव गोराऊ वगेरै लिखीजीयो नै पदमसिंघजी सुं छोटा गोपाळसिंघजी ज्यांरै परतापसिंघजी तिणां रै गांव लेडी। परतापसिंघजी रिणजीतसिंघजी नै माहाराजा श्री मानसिंगजी

---

१. नागोर परगने का इलाका। २. प्रमुख ठिकाना रहा। ३. खूब वीरता दिखा कर काम आये।

नगारो नीसांण दीयो। लाडणू हाथ रौ कुरब है नै केसरीसिंघ अभैराजोतां रै नीचै लाख दोय रौ पटो है।

गांव नीबी—

राठौड़ लिछमणसिंघ, इंदरसिंघ, अमरसिंघ, अभैराज, कांन, रायमल मालदेवोत।

ठिकांणो भादराजण—

राठौड़ सगरांमसिंघ, इंदरभांण, बखतावरसिंघ, जालमसिंघ, ऊमेदसिंघ, ऊदैराज, वाघसिंघ, विहारीदास, ऊदेभांण, मुकनदास, सादूळसिंघ, रतनसिंघ, मालदेग्रोत ग्रै रतनसिंघोत जोधा है। सांवरीडरो बाला वगैरै।

खांप मेड़तीयां रा ठिकाणां री विगत

राव जोधाजी रा बेटा वरसिंघजी नै दूदोजी नै मेड़ता रो परगनो दोनुं भायां नै दीनो सु दूदेजी वरसिंघजी रै वणी नहीं तरै बीकानेर गया। दूदोजी सुं जांभाजो रो वर हुवै नै करे रो खांडो दूदोजी नै दीनो सो कितराग्रक दिन बीकानेर रहा पछै वरसिंघजी धाम प्रापत हुवा नै बेटो सीहोजो वरसिंघजी रै ज्यां सूं मेड़तो ढबियो नहीं तरै बीकानेर सुं दूदाजी नै बुलाय नै मेड़तो दियो नै सीहाजी नै रांयण दीवी थी नै वरसिंघोत गांव बरो परबतसर रो में भोमीया छुटपुट गांवां मै है नै अजमेरा मै सराधणा में नै मालवा मै ग्रांबझरो है।

पछै मेड़तो दूदाजी रै हो तिणां रा मेड़तीया हमार हजारां पिंड है[1]।

१ वडा वीरमजी तो मेड़ते पाट बैठा।

२ छोटा रायमलजी तिणां रा रायमलोत रांयण में है।

३ रतनसिंघजी तिणां नै कुड़की दीवी सो कंवर तो हुवो नहीं नै बाई मीरां परम भगत हुई नै चीतोड़ रांणाजी नै परणाया।

४ रायसलजी ज्यां रा रायसलोत जिणां रै भोम है।

पछै वीरमदेजी मालदेजी रै ग्रापस मै विरोध पड़ीयौ सो मेड़तो छुडाय दीयौ तरै वीरमदेजी सूर सलेमसाह री फौज लाया नै सुमेल झगड़ो हुवो सुं मालदेजी री फौज घणी घासण ग्राई नै वीरमदेजी नै पाछो मेड़तो दीरायौ। वीरमदेजी रा बेटां री विगत—

१. हजारों वंशज हैं।

१ जैमलजी पाटवी
२ ईसरजी रा ईसरोत
३ जगमालजी रा जगमालोत
४ चांदाजी रा चांदावत
५ बीजोजी
६ प्रतापसिंघजी रा प्रतापसिंघोत
७ सारंगदेजी
८ अचलोजी
९ करणोजी
१० कानजी
११ सेखोजी
१२ प्रथीराजजी

जैमलजी रा बेटां री विगत—

१ सुरतांणजी रा सुरतांणोत
२ सादूळजी
३ किलांणसिंघजी रा किलांणदासोत
४ माधोसिंघजी रा माधोदासोत
५ केसोदासजी रा केसोदासोत
६ नरांयणदासजी
७ रांमदासजी
८ गोयंददासजी रा गोयंददासोत
९ विठलदासजी
१० नरसिंघदासजी ना ओलाद गया
११ मुकनदासजी रा मुकनदासोत
१२ सांमदासजी ना ओलाद गया
१३ हरीदासजी
१४ द्वारकादासजी रा दवारकादासोत ।

वडा जैमलजी मेड़ते राज कीयौ श्री चत्रभुजजी रा परम भगत हुवा सो रावजी मालदेजी री फौज ऊपर आई सो सेवा मांय सुं ऊठीया नहीं[1] तरै श्री ठाकुरजी जैमलजी रो रूप कर झगड़ो कर जैमलजी री फतै कीवी ।

पछै जैमलजी रा बडा बेटा सुरतांणजी मेड़ते राज कीयौ । पछै मेड़तो छुडाय लीयौ ने सुरतांणजी पातसाहजी री चाकरी गया तरै मेड़तो पाछो पायौ । नै सुरतांणजी पातसाह री चाकरी मै कांम आया नै बेटा गोपाळदासजी था तिणां रै नांवै पातसाहजी मेड़तो लिख दीयो । पछै गोपाळदासजी रा बेटा जगनाथजी रै मेड़तो रह्यौ । सो संवत १६५९ महाराजा सूरसिंघजी मेड़तो छुडाय

१. पूजा करते हुए उठे नहीं ।

लीयो । जठा पछै मेड़ता रो मुनसब ऊणां रै हुवो नहीं नैं मेड़तीयां रा ठिकांणा परबतसर मारोठ बंधीया । प्रतापसिंघजी, जैमलजी, ईसरजी ग्रै तीनूं ही रांणाजी रा भांणेज[1] था सु चीतोड़ ऊपर पातसाह ग्रकबर सा ग्रायौ तरै ग्रै हाजर था सु तीनूं झगड़ा में कांम आछो तरै कर[2] कांम ग्राया नै जैमलजी रा छोटा बेटा मुकनदासजी तिणां नै राणेजी वदनोर ठिकांणो दीयो नै प्रतापसिंघजी रां नै घांणेराव नाडोळाई चांणोद दीवी[3] नै ईसरसिंघजी रा बेटां नै गांव ग्रटाळीयो दीयो सो ग्रै तीनां तो रांणाजी री ग्रमलदारी में ठीकांणा है ।

माधोदासोत नै चांदावत जोधपुर राज में चाकरी पहला माहाराजा ग्रजीतसिंघजी रा राज मं लागा ।

केसोदासोत सुरतांणोत रुघनाथसिंघोत पछै चाकरी लागा ।

मिसलां री खांपां फंटी जिण री विगत

डावी मिसल—खांप जोधा बाजै

माहाराज ग्रजीतसिंघ रा ग्रणंदसिंघजी रायसिंघजी सु ईडर राज करै (ग्रैमदपुर) राजा है खांप फंटी नहीं ।

किसोरसिंघजी ग्रजीतसिंघजी ऊ राजगढ़ कियो वांरी कवास रा मेड़ता री घुळेराव में है ।

माहाराज गजसिंघजी में मिळै गजसिंघजी रा अमरसिंघजी नागोर राज दीयो, ग्रमरसिंघजी रा इंदरसिंघजी, इंदरसिंघजी रै मोकमसिंघजी, मोवणसिंघजी झाड़ोद री गांव सीया में ग्रमरसिंघोत ।

उदैसिंघजी में इतरी खांपां जोधोजी री मिळै

बेटा ऊदैसिंघजी रै—

१ सूरसिंघजी रा तौ राज करै ।

१ किसनसिंघजी किसनगढ़ राज करै ।

१ भगवांनदासजी रा गोयनदासोत जोधा खेरवो वगेरे जागीर ।

१ नरहरदासजी रा जगनाथजी भोड, रोळ, खीयास में जागीर ।

१ मोयणदासजी रामसरी में ।

---

१. भानजे । २. ग्रच्छी बहादुरी दिखाकर । ३. ये ठिकाने बाद में मारवाड़ के ग्रंतर्गत ग्रागये थे ।

१ माधोदासजी रा केसरीसिंघजी नै केसरीसिंघजी रा सुजांणसिंघजी सु सुजांणसिंघोत जोधा पीसांगण सु ......।

१ जैतसिंघजी रा हरीसिंघजी नै हरीसिंघजी रा रतनसिंघजी रतनोत जोधा दुगोली वगेरे में ।

१ भोपतजी सु भोपतोत किसनगढ री धरती में है ।

१ सगतसिंघजी रा सगतसिंघोत जोधा अजमेरा में खरवो वगेरे ।

१ दलपतजी रै महेसदासजी, महेसदासजी रै रतनसिंघजी सु रतलाम बसायो माळवा में है ।

राव मालदेजी में मिळै जोधां री खांप, मालदेजी रा बेटां री विगत—

१ चंदरसेणजी रा चंदरसेणोत भीणाय देवळीयो वगेरै खारी रै ढावै, चंदरसेणजी पैली जोधपुर राज कियो ।

१ उदेसिंघजी रा राज करै जोधपुर ।

१ रांमोजी सु रांमावत जोधा माळवा में है मारवाड़ में एक पावो गोढवाड़ रो ।

१ रायमलजी रै कीलांणदासजी, कीलांणदासजी रै नरसिंघदासजी, नरसिंघदासजी रै केसरीसिंघजी सु केसरीसिंघोत जोधा लाडणू वगेरे नै रायमलजी रै अेक बेटो कांनोजी रै अभैराजजी सु अभैराजोत जोधा नींबी वगेरे में ।

१ रतनसिंघजी रै रतनोत भाद्राजण में ।

१ भोजराजजी रा भोजराजोत कठमोर, दयालपुरा वगेरै ।

१ गोपाळदासजी रा गोपाळदासोत भड़ोद में गेलासर वगेरे ।

१ महेसदास सु महेसदासोत जोधा पाटोदी और नीवाई वगेरै में ।

सुजाजी मै मिळै—

१ खांप ऊदावत ऊदोजी सुजाजी रा ।

१ खांप नरावत नरोजी सुजाजी रा ।

खांप मेड़तिया

दूदोजी जोधाजी रा सु जोधपुर सुं जाय मेड़तो बसायो जिण सुं दूदाजी रो वंस सारा मेड़तीया है । मेड़तीयां में इतरी खांपां है—

१ वरसिंघोत मेड़तीया वाजै सु वरसिंघजी दूदाजी रा भाई है ।

१ रायमलोत रसलोत दूदाजी मै मिळै ।

१ दूदाजी रै वीरमजी सु वीरमजी में मिळै ।

१ चांदावत

१ ईसरोत

१ जैमलजी दूजा ।

१ जगमालोत

१ परतापसिंघोत

घांणेराव, चांणोद ।

जैमलजी में—

१ गोयनदासोत सु रुघनाथसिंघोत मारोठ रा नै भयोगेडो वगेरै ।

१ केसोदासोत वडु बुढसु वगेरे ।

१ सुरतांणोत गूलर ज्ञावलो वगेरै ।

१ विसनदासोत बोरुंदो वगेरै ।

१ वीठळदासजी रा आईदांनजी आईदांनोत लूणसरो वगेरै ।

१ दुवारकादासोत ।

१ मुकनदासोत मेवाड़ में वदनोर ।

१ माधोदासजीरां रो आलणीयास वगेरै ।

१ करमसोत करमसोजी जोधाजी रा ।

१ रामपाळजी रा रामपाळोत जोधाजी रा ।

१ खांगारोत जोधा वाजै है घाणो, जालमु सु खांगार जोगावत जोगो जोधावत ।

१ भारमलजी सुं भारमलोत ।

१ वीदोजी सुं वीदावत बीकानेरी में, बीदोजी जोधाजी रा ।

१ बीकोजी जोधाजी रा सु बीकानेर राज करै ।

जीवणी मिसल में रिड़मलजी रा

१ चांपोजी रिड़मलजी रा सु चांपावत ।

१ कूंपावत वाजै कूंपोजी रा कूंपौ मैराज रौ मैराज अखैराज रौ अखैराज रिड़मल रौ ।

१ जैतावत सु जेतौ पंचांण अखैराज रिड़मल रौ ।

१ भदावत सु भदोजी पंचांण अखैराज रिड़मल रा ।

१ कलावत कलोजी पंचांणजी री जाडण वगेरं ।

१ रांणावत रांणोजी पंचांणजी रा ।

१ करणोत, करणोजो रिड़मलजी रा करणोत कांणणा समदड़ी ।

१ अड़मलजी रा अड़मलोत रिड़मलजी रा ।

१ पाताजी रा पातावत रिड़मलजी रा।

१ रूपाजी रा रुपावत रिड़मलजी रा चाडी वगेरै।

१ जगमालजी रा खेतसीहोत हमें जमी नहीं रिडमलजी में।

१ नाथाजी रिड़मलजी रा नाथोत।

१ मांडणजी रिडमलजी रो मांडणोत।

१ मंडलो रीड़मल रौ सु मंडलावत।

१ भाखरसी रिडमल रौ भाखर रै बालोजी अै सु बाला।

१ डूंगरसी रिड़मल रौ डूंगरोत।

१ सतोजी चूंडाजी रा सतावत।

१ भींव चूंडाजी रौ सुं भींवोत।

१ अडकमल चूंडाजी रौ सु अड़कमलोत।

१ कांनोजी चूंडाजी रा कांनलोत।

१ रणधीर चूंडाजी रा सु रणधीरोत।

१ पूनाजी रिड़मलजी रा सु पूनावत।

१ देवराज वीरमजी रौ सु देवराजोत।

१ चाडदे देवराज वीरमजी रो सु चाडदेवोत।

१ गोगादे वीरमजी रौ सु गोगादे।

१ जैसींग वीरमजी रौ सु जैसींघोत राठौड़।

१ महेचा सारा महेवा में बाड़मेरा, कोटड़ीया, पोकरणा सारा राव मलीनाथजी रा मलीनाथजी सलखाजी में मिळै।

१ जैतमाल, सलखावत जिण रा जैतमालोत नै धवा लारै फेर धवेचा वाजै।

१ सोभो सलखा रौ सु सोभावत बाजै।

१ खोखर राठौड़ वाजै सु छाडाजी में मिळै।

१ वांनर राठौड़ ही छाडाजी में मिळै।

रायपालजी में इतरी राठौड़ां री खांपां मिलं —

१ केलण रा कोटेचा वाजै।

१ ऊंडां रा ऊड़ा राठौड़ वाजै।

१ रादा रा रादा राठौड़ वाजै।

१ कीटक ऊना रा कीटक राठौड़।

१ धांतु रा धांतु राठौड़।

१ मोवण रा मोणोत मुसदी।

१ डांगी रा डांगी राठौड़ ।

१ पीथड़ राठौड़ धूड़ां में मिळै ।

१ ऊडण राठौड़ धूड़ां में मिळै ।

आसथांनजी में मिळै

१ धुहड़जी रा तो राज करै सार धुहड़ रा ।

१ जोपसाजी आसथांनजी रा नै जोपसाजी रै ।

१ सींदल	१ ऊहड
१ मुहु	१ जेहु राठौड़ ।

१ धांधलजी रा धांधल राठौड़ ।

१ चाचक रा चाचक राठौड़ ।

चांपावतां मै इतरी खांपां बाजै

चांपाजी रे भैरुदासजी भैरुदासजी रै जसोजी रै दोय बेटा जेंरा नाम मांडल जी नै जैतमालजी उरे सूरजमलजी रा सूरजमलोत बाजै पैलो यांरै आयो हो पछै चीरपटियो सु हमार मेवाड़ में है । चिढी रो थाड सु बांते वगैरे गांव में भोम ।

१ मांडलजी रै गोपाळदासजी गोपाळदासजी रै आठ बेटा हुआ ।

१ दलपतजी रै आईदांनजी जिणरा आवौ रोयट आयोर ।

१ वीठलजी रा वीठलदासोत पोकरण, पाली, दासपां, बाकरो ।

१ भोपतजी रा भोपतोत खाटू वगेरे ।

१ बलूजी बलोत हरसोळाव, सथलांणे ।

१ खेतसीजी रा खेतसीयोत ।

१ हरीसिंघजी रा हरीसिंघोत सिणला में भोम ।

१ हाथीजी ।

१ राघवदासजी ।

परिशिष्ट—५

जोधपुर रा चाकरां री विगत

जोधपुर रा चाकरां री विगत तथा मुसदीयां वगेरे री इण मुजब छै—महाराज श्री अजीतसिंघजी संवत १७६२ रा आसोज सुद १ चाकरां री हाजरी लोवी, गढ जाळोर री कचेड़ी बिराज नै[1] हुकम फुरमायौ—बही में नांमा मांडौ। तरै माहाराज श्री उदेसिंघजी रा राज री बही संवत १६४० री देख नै नांमा मांडोया उण मुजब।

पंचोळी चाकर कदीम था सु संवत १५१६ रा बरस में पण हरीदास आईदासोत नोकर हुवौ। नांवौ मंडायो फेर रांमचंद चाकरी कदीम सुं तिण जोधपुर कदीमी चाकर है। मदनसिंघ रा कदीमी चाकर है।

भंडारी

भंडारी समरो नाडोल रौ पटायत श्री दीवांण री तरफ सुं थौ। सु उदैपुर संवत १४६४ वैं रावजी श्री रिड़मलजी नै चूक चीतोड़ रांणेजी करायो तद रावजी जोधोजी उठा सुं नीसरीया तद साथे राजवी फेर ७ सात था सु जोलवाड़ा रा घाटै आया तद घाटौ भांग समरो उठै चौकी घाटा ऊपर थो सु रावजी झगड़ा करता करता आया था सु साथ रौ लोक हैरांन थौ उठे इणां भंडारीयां समरो तौ कांम आयौ नै बेटा नै रावजी साथै मेलीयो। उठै वरजांग भीमोत भीम चूंडावत रौ पागड़ौ छांड झगड़ो कर लोहां पड़ोयौ, सु विगत चलू ख्यात में है। पैला ऊपाड़ ले गया नै भंडारी समरा रो बेटौ रावजी साथे सोजत आयौ। नै सोजत रावजी श्री रिड़मलजी रौ तीयौ[2] कियो नै तीन सतीयां हुई, रीडमलजी लारे, सोजत हुई—अभवणदे, सारंगदे, नाभल देवलदे, सु उठा सुं रावजी मंडोवर होय बोकानेर परै कोस १२ पर गांव तळाव कोडमदेसर पर रावजी रिडमलजी रौ कारज बारीयो कीयो। जद सुं लगाय बिखा में धांन वगेरै अै भंडारी थैट्ट चाकर है। तिण रा बंस में भण्डारी लूणौ हुवौ। तिण कंवरजी गजसिंघजी साथै १६७३ रा संवत में जाळोर लियौ बीहारीयां

---

१. जालोर के किले की कचहरी में बैठकर। २. मृत्यु के तीसरे दिन किया जाने वाला संस्कार आदि।

कना सुं, पातस्याजी जागीर स्याहजी रै हुकम सुं । तद सुं परधांनगी लूणा नै हुई । सु फेर दीवांणगी बगेरे भंडारो मना, रुगनाथ, बीठलदास बगेरे ठावा चाकरां में रेबो किया है । श्रे थेटू हैं चाकरी में बालकोसन चाकर कदीम सु है ।

फेर आगेई पंचोळी अभौ रावजो श्री मालदेवजी री वार मै तथा भाबलो माहाराज श्री गजसिंघजी जसवन्तसिंघजी री वार में फेर ही पंचोली कदीमी चाकर है । भंडारी धनराज बीठलदास आसकरण बछराज श्रै ही कदीमी चाकर है ।

भंडारी राय खींवसी, रुगनाथ, अनोपसी, अजबसी महाराजा श्री अजीत-सिंघजी री वार में हुवा ।

३. मूता[1] समदड़ीया

रावजी श्री सूजोजी जैसलमेर रा भाटीयां जैसाजी री बेटी रांणी श्री लिखमोजी परणीया तिणां रै राव बागोजी हुवा था, तीयां रा व्याव मे साथै डांडी डोळै आया[2] । रावजो सिरपाव दियौ । मुंता गुमनो चाकर हुवौ । जद सूं चाकर छै ।

४. मूता भंडसाली

रावजी श्री चूंडाजी री वार में[3] सुकनौ चाकर हुवा, आया मेवा सुं तिण रा वंस सुरतौ हुवो । तिण जोधाजो रा विखा में रांणाजी रौ थांणौ मंडोवर थौ सु अहाडौ हींगोलो नै मुता रैणायर थौ तिण पर सुवैं जाय ऊणां नुं मार थाणौ ऊठायौ नै फतै कीवो । तद सुं श्रै राज में चाकर है ।

५. मूता कोचर

रावजी श्री सूजाजी रै रांणी लिखमी भटियांणी रै फळौधो थी, तरै कोचर चाकर हुआ । पछै मोटा राजा श्री उदैसिंघजी री वार में मुतो बेलो, फतो, धीरो चाकर हुवौ । माहाराज सिरोपाव दीयौ तद सुं श्रै चाकर है ।

६. मूता बागरेचा

मुता बागरेचा माहाराजा श्री ऊदेसिंघजो री वार मे चाकर हुवा ।

७. मूता बछावत

रावजी श्री मालदेजी री वार सुं चाकर है ।

---

१ मुहता । २. लड़की (रानी) के साथ ही चाकरी में आए थे । ३. समय में ।

८. मूता दफतरी

मुता दफतरी मलू महाराजजी श्री गजसिंघजी री वार में, तिण री बेटो केसोदास दफतर ऊपर रहै, तद सुं इणां रो राज में चाकरी है ।

९. मूता बेद

बैद मुता बीकानेर सुं चाकरी में आया, नौकर हुवा ।

१०. सिंघवी

थेटु ती ढ़ेलडीया बोरा था गांव ढेलड़ी रो संग काटीयौ तिण सुं सिंघवी वाजीया । सौ सीरोई रा राव रा चाकर था । पछै रावजी श्री गांगोजो संवत १६६० पछै रांणी पदमा देवड़ीजी परणीया तरै साथै डंडी डोल् आया । जद सुं चाकर हुआ । पछै सुखमल वग़ैरे महाराज गजसिंघजी रै वार में आया ।

११. बीरामण पोकरणा

ऊपादीया पोकरणा बीरामण । रावजी श्री जोधाजी री वार में संवत १५१५ रा जेठ सुद ११ रा वार शुकर जोधपुर री नींव दीवी तद सुं बीरांमण गुणपत श्री देवी रौ वरदाइक[1] थो सु गणपत कोई मंतर-जंतर रावजो नुं दीयौ सो घोड़ा री बाल मै सजाया सु रावजी गणपत नुं ऊपादीया पदवी दीवी । चंवरी जोधपुर में दोयरी दीवी नै गांव बैराई सांसण नै गांव सौकड़ा, सु तिण मिति सुं राज मे चाकर है ।

१२. पोकरणा कोलाणी

पोकरणा विरामण देरासर नाम, तिणां नुं रावजी श्री जोधाजी री वार में ओसवालां री चंवरी दीवी । जद सुं चाकर है ।

१३. पोकरणा व्यास नाथावत

बोरा सीलु रौ खत मोटाराजाजी श्री उदैसिंघजी कीयौ थौ । दिली जावतां फलोधी रा वासी बोरा सेऊ रौ मु० वेला हसते खत कीयो थौ । रुपीया अेक लाख लीया था, सु सेऊ रा दोईता नुं, तिण रै नाथौ हुवौ तिण सुं नाथावत राज में चाकर है ।

१४. पोकरणा बीरामण जोसी पीरोयत

रावजी श्री मालदेजी री वार सुं रावजी भटियांणीजी ऊमादैजी राव

---

१. वरदान प्राप्त किया हुआ ।

मालदेजी री रांणी जैसलमेर री तिण साथे जोसी दामोदर रौ बेटो चंडू जोसीपणे आया। तिण टीपणो[1] नवो बरतारौ चलायौ। सु टीपणौ तो चंडू संवत १५८४ रौ पैला बरतीयो थौ पछै संवत १५९३ वें नव वरसां पछै रावजी जैसलमेर परणीया तद औ आया। पछै जोसीपणो लीयो[2]। तद सुं इणां री राज मै चाकरी है।

१५. बीरामण सीरमाली

संवत १७२२ तीवाड़ी सुखदेव माहाराज श्री जसवतदे जी री वार मे चाकरी में रह्यौ।

---

१. चंडू पञ्चांग जोधपुर राज्य में प्रसिद्ध रहा। २. जोशी का पद ग्रहण किया।

परिशिष्ट—६

जोधपुर रा ओदादारां री याददास्त

१. परधांन
२. मुसायब
३. दीवाण[1]
४. धायभाई
५. बगसी[2]
६. खांनसामा
७. व्यास
८. पिरोहित
९. बारहठ[3]
१०. किलादार
११. दौडोदार
१२. यादबगसी
१३. चोकीनवेस
१४. हाकम
१५. श्री हजूर रा दफतर रौ दरोगो
१६. खासा रसोड़ा रौ दरोगौ
१७. खवास पासवान
१८. साहाणी
१९. नाजर
२०. कारकून[4]
२१. मुसरफ[5]
२२. पोतदार
२३. नवीसंदा[6]
२४. वाकानवेस[7]
२५. यतलाक नवेस
२६. कांमदार
२७. कोटवाळ
२८. जोतसी
२९. बेदिया
३०. दांनादिक
३१. अंगोळोया
३२. झाराबरदार[8]
३३. पेसदसत
३४. कांनुगा (पट्टी माफक रेवै)
३५. आसामीदार
३६. सिलहपोस
३७. ढळैत
३८. पड़दार
३९. मिरधा
४०. पंक

---

१. दीवाण राजस्व संबंधी व्यवस्था को देखता था, इसके अतिरिक्त तन दीवान भी होता था जो राजा के निजी सचिव की तरह काम करता था। २. ये दो प्रकार के हुआ करते थे—फौज बक्सी तथा जागीर बक्सी। ३. अनेक चारण कवियों को राज्य की ओर से आश्रय मिलता था परन्तु बारहठ का पद चारणों की खांप विशेष के व्यक्ति को दिया जाता था। ४. प्रबंधकर्ता, कारिन्दा। ५. एक उच्च अधिकारी। ६. लेखक, लिखने का कार्य करने वाला। ७. घटनाओं की सूचना देने वाला। ८. पीने के पानी की व्यवस्था करने वाला।

४१. यतमामी
४२. सालंहोतरी[1]
४३. रसोवड़दार
४४. महावत
४५. हवलदार
४६. वैदराज
४७. मुकीम
४८. दराब
४९. चोपदार
५०. हलकारा[2]
५१. नकीब[3]
५२. बजंदार
५३. कपड़ा रो कोठार रौ दरोगो
५४. बागा रा कोठार रौ दरोगो
५५. सिलहखांना रौ दरोगो
५६. फरासखांना रौ दरोगो
५७. जरजरखांना[4] रौ दरोगो
५८. बागायत रौ दरोगो
५९. गऊखांना रौ दरोगो
६०. फीलखांना रौ दरोगो
६१. सुतरखांना रौ दरोगो
६२. अंबर रा कोठार रौ दरोगो
६३. कीलीखांना रौ दरोगो
६४. सायर रौ दरोगो
६५. तोपखांना रौ दरोगो
६६. हवाला रौ दरोगो
६७. कमठा रौ दरोगो
६८. बागर घास री रौ दरोगो
६९. खेमा रा कारखाना रौ दरोगो
७०. अदालती रौ दरोगो
७१. सिकां रौ दरोगो[5]
७२. हलकारां रौ दरोगो
७३. कबूतरखांना रौ दरोगो
७४. शिकारखांना रौ दरोगो
७५. जिनानी डोढ़ी रौ दरोगो
७६. नगारखांना रौ दरोगो
७७. खजांनची
७८. गजधर[6]
७९. वकील
८०. मुनसी
८१. तालीमखांना रौ दरोगो
८२. महरां रौ दरोगो
८३. सोरखांना रौ दरोगो
८४. चेला
८५. दरवांन[7]
८६. पटानवीस
८७. बारीदार
८८. तिवाई बरदार
८९. हवालदार (?)

---

१. घोड़ों की परीक्षा और उनके इलाज आदि करने वाला। २. एक जगह से दूसरी जगह सूचना ले जाने वाले। ३. बन्दीजन। ४. जहां जेवर आदि रखे जाते थे। ५. सिक्के ढालने की व्यवस्था को देखने वाला। ६. भवन निर्माण आदि के कार्य का विशेषज्ञ। ७. द्वारपाल।

परिशिष्ट—७

जोधपुर श्री हजूर उमरावां नै कुरब इनायत करै सो याददास्त

१. ऊठण रौ कुरब—बेवड़ो[1], अेकेवड़ो[2] ।
२. हाथ रौ कुरब ।[3]
३. बांहपसाव रौ कुरब ।[4]
४. सिरै बैसण रौ कुरब ।[5]
५. सांमो बैसण रौ कुरब ।[6]
६. 'ठाकुर' कह नै बतळावण रौ कुरब ।
७. खासो ठमण रौ कुरब ।
८. आगे घोड़ो खड़ण रौ कुरब ।
९. 'घोड़े चढि जावौ', फुरमावण रौ कुरब ।
१०. बलांणु घोड़ो दिरीजण रौ कुरब ।
११. हाथी री असवारी खवासी चढ़ण रौ कुरब ।
१२. रसोवड़ा सुं थाळ पुरूसण रौ कुरब ।
१३. पटो बेतलबी रौ कुरब ।
१४. ठिकाणा रौ बसवाना नै परपटी में हासल नो लागण रौ कुरब ।
१५. खास रुका में ठाकुरां लिखण रौ नै जुहार लिखण रौ कुरब ।
१६. ठिकाणा री रेखा बाबा नहीं लागण रौ कुरब ।
१७. पालखी इनायत रौ कुरब ।
१८. हाथी इनायत रौ कुरब ।
१९. नगारो नीसांण इनायत रौ कुरब ।
२०. छड़ी इनायत रौ कुरब ।
२१. सिरां दवाती इनायत रौ कुरब ।

---

१. सरदार के आने पर तथा रवाने होते समय दोनों बार राजा खड़ा होकर सम्मान देता था। २. केवल आने पर खड़ा होता था। ३. सरदार के नजर आदि करने पर राजा उसकी बांह से अपना हाथ लगा कर वही हाथ अपने सीने के पास लाता था। ४. इस कुरब के लिए राजा केवल सरदार के कंधे से अपना हाथ लगा देता था। ५. राजा के बाईं या दाईं ओर बैठने का सम्मान। ६. राजा के सामने बैठने का सम्मान।

२२. मोतियां की कंठी इनायत रौ कुरब ।
२३. सिरदार रा ब्याव नै सिरोपाव इनायत रौ कुरब ।[1]
२४. पिता रो मातमपोसो रौ कुरब ।
२५. दादी री तथा माता री मातमपोसी रौ कुरब ।
२६. कंवर नै ताजीम बांह पसाव, सांमो बैसणो घोड़ो आगे वगेरै कुरब ।
२७. रंग इनायत करण रौ कुरब ।
२८. जडावलि वगेरे गरम पोसाक बाय इनायत रौ कुरब ।
२९. दोडो ढोलीये सोवण रौ कुरब ।
३०. मातमपोसी रा घोड़ा निजर रा पाछा इनायत करण रौ कुरब ।
३१. हाथी असवारी हुवां घोड़े चढ़ीयां मुजरो करण रौ कुरब ।
३२. पाग में लपेटो बांधण रौ कुरब ।
३३. सुथरी इनायत रौ कुरब ।
३४. खरीद रो हासल छूट रौ कुरब ।
३५. फळसं उतरण रौ कुरब ।[2]
३६. जीकारा सुं बतळावण रौ कुरब ।[3]
३७. मोती कड़ा इनायत रौ कुरब ।
३८. श्री हजूर में पिचकारी बावण रौ कुरब ।[4]
३९. पाग खिड़कीयां तथा लपेटो डावो बंध रो इनायत रौ कुरब ।
४०. बैठण रौ कुरब ।
४१. ठिकाणा परवांना सिदां में खास लिखीजै ।
४२. ठिकाणो पटो दिरीजै बीजां नै अमल री चीठी दिरीजै ।

---

१. राजा की ओर से सरदार की शादी के अवसर पर सिरोपाव आदि भेजने का सम्मान। २. सरदार जोधाजी के फलसे तक सवारी पर चढ कर आ सकता था। ३. सरदार को सम्बोधित करते समय राजा उसके नाम के आगे 'जी' लगाता था। ४. होली आदि अवसरों पर सरदार रंग की पिचकारी राजा पर छोड़ सकता था।

परिशिष्ट—८

राजा जैसिंघ रा मनसब रो नांवो संवत १७२१ था लिखीयो

दांम	रुपीया	आसांमी
१४६०००००००	३६५००००	राजा जैंसिंघ मीरजै राजा ३५०००० । जात सात हजार २८०००० । असवार हजार सात दो सपा ५००० । असल दो सपा २००० । सिवा री फतै पाई तद दीया दो सपा ५००००० । दोय करोड दांम ईनाम तीण रा । ——— ३६५०००० (छतीस लाख पचास हजार रुपीया री जायगां तिण रा दांम चवदे करोड़ साठ लाख)
४००००००० ।	१०००००० ।	कंवर रामसिंघ जैंसिघोत २००००० । जात चार हजारी ८००००० । असवार हजार चार । ——— १०००००० । दस लाख रुपीया न्यारा दांम चार करोड़ ।
१८१००००० ।	४५२५०० ।	कंवर कीरतसिंघ ६२५००० । जात दोय हजारी सीम

३६०००० । असवार अठारे सौ ०
१५०० । असल
३०० । ईजाफे सिवा रे
मांमले ।

२०४१०००००० । ५१०२५००
तनखाह जागीर
१ दांम १ रुपीया

१ ---

सोबो अजमेर
२७८०००००० । ६९५०००) । सरकार
अजमेर
परगना ५

१८००००००० । ४५००००) आंबेर
२७०००००० । ६७५००)
मामोजाबाद
३४०००००० । ८५०००) प्रग फाग
१२००००० । ३००००) प्रग. भाफ
२५०००००० । ६२५००) प्रग. भेरांण

२७८०००००० । ६९५०००)

१ सरकार रणथंभोर
१३२०००००० । ३३००००) चाटसु
३०००० । ७५०००) निवाई
१२००००००० । ३००००००) मालपुरो
१०००००० । २५००००) मलारणो
७५०००००० । १८७५००) नेणवाई
१६००००००० । ४०००००) दुट समत १७२२
खरीफ था

६१७००००००। १५४२५००)

सोबा अकबराबाद

(——— ० (——— (———

१०००००००। २५००००) परगने दोसां
६००००००० । १५०००००) परगने वसवो बाहवर
५६०००००। १४७५००) जलालपुर

१६५६००००। ४१४७५०)

६०००००। २२५००) नीवाली
१८००००००। ४५०००) सुनेर
१५००००००। ३७५००) नहार अनववाडो
२६९६००० । ६७४००) हसनपुर खोहरी
४२०००००। १०५०००) बावल भोजारी
८००००००। २०००००) चाल कीलांणो दुख दादरी
२२०००००। ६५०००) कोटड़ो
११५३२८०। २८८३२) साकरस
१२५००००। ३१२५०) रताई
१००००००० । २५००००) खोहरी
२००००००। ५०००००) खरथल
११०००००। २७५००) भरखोल
४०००००। १००००) लीसांणो
४५००००। १००००) ईसमालपुर
५०५०००। २४६२५) हुवरणो
८५००००। २१२५०) कांमा
१५२००००। ३८०००) पाहड़ी
२७०००। ६७५) कोह मुजाहद
१४७१९४६। ३६७९८॥=) बाहदरपुर
६३०००००। १५७५००) बड़ौद फतेखां
३६००००। ९०००) हरसांणो
६२००००। १५५००) नैसहरो
५३५००००। १३३७५०) कडमेर
९०००००। २२५००) तावड
९५००००। २३७५०) इदोड

७६०००० । १९००००) कोट पुतली
६०००००० । १५०००००) वाराही
२०३१७८४ । ५०७९५) मंडावर
१२००००० । ३००००) आंतेरो भांमरो
९००००० । २२५००) सिनाई
२०००००० । ५००००) सुनेहर
७१०००० । १७७५०) दुग्गेरे
३६२५००० । ९०६२५) फीरोजपुर
१५००००० । ३७५००) बड़ोद रांणा री
१५००००० । ३७५००) हसनपुर मंडावर
१४२३७७४ । ३५५९४) मेजापुर
२५०००० । ६२५०) बडोदो मेवात रो
१०००००००। २५००००) रेवाड़ी
१०००००००। २५००००) ऊदेही
२४०००० । ६०००) तोडेठक

५२७४४४४॥=) २६२२१९४॥)

परिशिष्ट—९

हिन्दू उमरावां री विगत

अकबर पातसा रा हिन्दू उमरावां री विगत

नांम	जात	मुनसफ
१. राजा भारमल	कछवाहो	पांच हजारी
२. राजा भगवांनदास	कछवाहो	पांच हजारी
३. राजा मानसिंघ	कछवाहो	पांच हजारी
४. राजा टोडरमल वजीर	खतरी	चार हजारी
५. राजा रांमसिंह बीकानेर	राठौड़	चार हजारी
६. जगनाथ राजा भारमल रो	कछवाहो	ढाई हजारी
७. राजा वीरबर	बिरामण	ढाई हजारी
८. राजा रांमचंद	वघेलो	दो हजारी
९. राठौड़ कल्यांणमल बीकानेर	राठौड़	दो हजारी
१०. राव सुरजन बूंदी रो	हाडो	दो हजारी
११. राव दुरगो	सीसोदीयो	डोड हजारी
१२. माधोसिंघ भगवानदास रो	कछवाहो	डोड हजारी
१३. रायसल दरबारी	सेखावत कछवाहो	डोड हजारी
१४. रूपसी वेरागी भारमल रो भाई	कछवाहो	डोड हजारी
१५. मोटा राजा उदैसिंघ मालदेवोत	राठौड़	एक हजारी
१६. जगमाल राजा भारमल रो भाई छोटो	कछवाहो	नो सदी
१७. राजा करण आसकरण रो	कछवाहो	नौ सदी
१८. राव भोजराय सुरजन रो बूंदी रो	हाडो	नो सदी
१९. थारू राजा तोडरमल रो	खतरी	सात सदी
२०. राव पीतांबर दास	खतरी	सात सदी
२१. मेदनी राय	चहूवांण	सात सदी
२२. जगतसींघ बड़ो बेटो मांनसिंघ रो	कछवाहो	नव सदी
२३. बाबू मंगली राय	—	सात सदी

नाम	जात	मुनसफ
२४. परमानंद	खतरी	पंच सदी
२५. जगमाल	पंवार	पंच सदी
२६. रावल भीम जैसलमेर	भाटी	पंच सदी
२७. रांमदास	कछवाहो	पंच सदी
२८. दुरजनसिंघ मांनसिंघ रौ	कछवाहो	पंच सदी
२९. सबलसिंघ मांनसिंघ रौ	कछवाहो	पंच सदी
३०. रामचंद मधुकर रौ	बुंदेलो	पंच सदी
३१. राज खमन भदोरियो	चहूवांण	पंच सदी
३२. राजा रांमचंद उडीसा रौ	...	पंच सदी
३३. दलपत रायसींघ रौ	राठौड़	पंच सदी
३४. सकतसिंघ मांनसिंघ रौ	कछवाहो	४ सदी
३५. राजा मनोर राव लूणकरण रौ	कछवाहो	४ सदी
३६. राजा सलेदीन भारमल रौ	कछवाहो	४ सदी
३७. रांमचंद	कछवाहो	४ सदी
३८. बांको	कछवाहो	४ सदी
३९. बलभद्र	राठौड़	३ सदी
४०. केसोदास जैमल रौ	राठोड़	३ सदी
४१. तुलछीदास	जादु	३ सदी
४२. भादर गोपलोत	...	३ सदी
४३. कीसनदास	तुंवर	३ सदी
४४. मांनसींघ	कछवाहो	३ सदी
४५. राठौड़ रांमदास दीवांण	...	२॥ सदी
४६. नील कंठ	...	सदी
४७. प्रतापसींघ भगवांन रौ	कछवाहो	२ सदी
४८. जगतसींघ मांनसींघ रौ	कछवाहो	२ सदी
४९. सगर रांणा प्रतापसिंघ रौ भाई	सीसोदीयो	२ सदी
५०. मुतरादास	खतरी	२ सदी
५१, कलो	कछवाहो	२ सदी
५२. लालो बीरसर रौ	ब्राह्मण	२ सदी
५३. सांवळदास	जादव	२ सदी

नाम	जात	मुनसफ
५४. केसोदास	राठौड	२ सदी
५५. सांगो	पंवार	२ सदी
५६. ईदरदम उडीसा रो	...	२ सदी
५७. सुंदर उडीसा रो	...	२ सदी
५८. मुतरादास	...	२ सदी
५६. ब्रिकमादीत राजा	वगेला	सदी
६०. सगतसिंघ मोटा राजा रो	राठौड़	५ सदी
६१. दलपत मोटा राजा रो	राठौड़	५ सदी
६२. सालवान	...	...

जांहगीर रा हिंदू उमराव

नाम	जात	मुनसफ
१. राजा जगनाथ	कछवाहो	५ हजारी ३००० सवार
२. राजा मांनसींघ	कछवाहो	५ हजारी
३. रांणो संकर राणा प्रताप रो भाई	सीसोदीयो	३॥ हजारी
४. माधोसिंघ मांनसिंघ रो भाई	कछवाहो	... ...
५. भावसिंघ मांनसिंघ रो पोतो	कछवाहो	२ हजारी फेर ४००० १००० सवार
६. राजा मनोर कछवाहो	कछवाहो	१ हजारी सवार ५०
७. करमसी	राठौड़	१ हजारी
८. रांमदास	कछवाहो	३ हजारी
९. केसोदासो मारू	राठौड़	१॥ हजारी फेर सवार २०००
१०. पीतांबरदास	खतरी	हजारी १२०० सवार
११. नरसींघ देव	बुंदेलो	३ हजारी
१२. राजा बासु पंजाबी	...	३ हजारी
१३. राठौड़ रामसिंघ बीकानेर	राठौड़	५ हजारी
१४. सामसींघ	...	...
१५. राजा नथम पंचोली	बुंदेलो	२॥ हजारी
१६. राजा रांमचंद	बुंदेलो	हजारी

नाम	जात	मुनसफ
१७. किसनसिंघ मोटा राजा रो	राठौड़	१ हजारी ३ हजारी ५०० सवार
१८. राव दुरजो	सीसोदियो	४ हजारी
१९. राव रतन	हाडो	२ हजारी
२०. राजा सुरजसिंघ जोधपुर	राठौड	३५०० सवार ३ हजारी
२१, नरांणदास	कछवाहो	२ हजारी
२२. दलपत रायसिंघ बीकानेर रो	राठौड़	हजारी
२३. मोहणदास		६ सदी ५०० सवार
२४. रा० जेसींघ	कछवाहो	४ हजारी ३ हजारी
२५. बीहारीचंद		पंचसदी ३०० सवार।

साहजहां पातसा रा हिंदु उमीरां री विगत

१. राजा जसवंतसिंघजी जोधपुर	राठौड़	६ हजारी
२. राजा जैसिंघजी मिरजा जैपुर	कछवाहा	६ हजारी
३. राजा गजसिंघजी जोधपुर	राठोड़	५ हजारी
४. राव रतन बूंदी	हाडो	५ हजारी
५. चैनसींघ	बुंदेलो	५ हजारी
६. भ्रोदुजी	दिखणी	५ हजारी
७. बादर		५ हजारी
८. राजा भगवानदास		५ हजारी
९. राजा जगतसिंघ	कछवाहो	५ हजारी
१०. रांणा राजसिंघ	सीसोदिया	५ हजारी
११. साहू	दिखणी	५ हजारी
१२. रायसिंघ		५ हजारी
१३. राव छत्रसाल	बुंदेलो	४ हजारी
१४. राजा भावसिंघ		४ हजारी
१५. राव अमरसिंघ	राठौड़	४ हजारी
१६. जगदेवसिंघ		४ हजारी
१७. राव सुपुड		४ हजारी
१८. प्रथमादोत	बाघेलो	हजारी

नाम	जात	मुसनफ
१६. राजा कलांणसिंघ		
२०. केसोदास राव कला रौ बेटो		
२१. अजीराय		१॥ दजारी
२२. राजा कीलांण बंगधारी		१॥ हजारी ८०० सवार
२३. मांसिंघ मांनसिंघ रो पोतो	कछवाहो	३ हजारी
२४. पाडी राजा लिखमीचंद		३ हजारी
२५. रांमसिंघ		२॥ हजारी
२६. राव भगवत	भदोरीयो	
२७. सुपरूपास		१ हजारी
२८. राजा कीसनराय		१ हजारी
२६. राजा टेकचंद कमाऊ रौ		१ हजारी
३०. राजा भारत रांमचंदर रौ	बुंदेलो	६ हजारी ४००० सवार
३१. राजा जगमल		
३२. राजा सूरसिंघ रायसिंघ रौ बेटो बीकानेर		२ हजारी सवार १०००
३३. राव सुंदरदास		
३४. राजा कीसनछंद नगर कोट रौ		
३५. कंवर करण उदेपुर रौ	सीसोदीयो	५ हजारी सवार १०००
३६. राजा सुरल वासुसल रौ		२ हजारी
३७. गीरधर रायसाल दरबारी रौ		८ सदी
३८. जगतसिंघ करन रौ बेटो	सीसोदीयो	३ हजारी सवार २०००
३६. राजा गजसिंघ सूरसिंघ रौ	राठौड	१ हजारी
४०. राजा राजसिंघ	कछवाहो	
४१. राजा कलीयांण जैसलमेर	भाटो	२ हजारी
४२. राजा मांन		१॥ हजारी
४३. प्रथीचंद मनोहर रौ	कछवाहो	५ सदी
४४. रायकवर दीवांण गुजरात		

नाम	जात	मुनसफ
४५. रांमदास रा: सुरतसिंघ रो		
४६. राजा चांपो प्रलवारो		
४७. राजा सारंगदेव		८ सदा
४८. राजा रांमदास राजसिंघ रो	कछवाहो	१ सदी
४६. पेमनारायण राजगढ रो		१ हजारी
५०. राजा समरसी ऊदसीघ विसवागरो सीसोदीया		
५१. राजा जेंसिघ मासींघ रो	कछवाहो	
५२. भोज बीकमादीत रो भदोरीयो		
५३. ऊदेरांम दीवलो		
५४. राजा प्रताप बगला रो	ब्राह्मण	३ हजारी
५५. राजा कलास ताडरमल रो	खतरी	
५६. राजा कीलांण ईडर रो	राठौड़	
५७. चदरसेण हूलोद का	झालो	
५८. रामजसो	जाडेचो	
५९. लछमीनारायण कछ रो		
६०. रामघण सुरदी दीलो वालो		
६१. राव भारो कछभुज रो	जाडेचो	
६२. राजा जगसींघ वासू रो		१ हजारी
६३. राव वलमालोदास मुसरफ		६ सदो
६४. राव माईदास मुसरफ भायल रो		६ सदी
६५. नथमल राजा कीसन रो	राठोड	५ सदी
६६. जुगल किसनसींघ रो	राठोड	५ सदी
६७. मांनसीघ रावत सोकर रो	सीसोदीयो	१ हजारो
६८. संगरांमसींघ जंबु रो राजा		१ हजारो
६९. हकीम रुघनाथ		६ सदी
७०. देवीचंद गर्वा		१५ सदी
७१. राजा रूपचंद गुवालेरी		
७२. हीरदेनाराण	हाडो	९ सदी
७३. लोखमीचंद राजा कमाज रो		
७४. राजा सांमसींघ श्रीनगर रो		

नाम	जात	मुनसफ
७५. कुवरसींघ कलवार कसमीरो		
७६. राजा जोगराज माराज नरसींघ रो	बुंदेलो	२ हजारी
७७. जादुराय दिखणी		

औरंगजेब पातसा रा उमरावां री विगत

नाम	जात	मुनसफ
१. ईदरमणी जघेडा रो	बुंदेलो	
२. राव भागसींघ	हाडो	
३. रांमसींघ कछवाहो	कछवाहो	४ हजारी ४००० असवार
४. सुजांणसींघ	राठौड़	
५. राजा बुंदेलो	बुंदेलो	
५. गोरधरदास		
७. मनोरदास		
८. राजा राजरूप जंबू रो		
९. जैतसींघ	बुंदेलो	
१०. सुभकरण	"	
११. बादरसींघ	भदेरीयो	
१२. राजा रायसींघ	सीसोदीयो	
१३. राजा जैसींघ जैपुर	कछवाहो	७ हजारी
१४. भोजराज	"	
१५. सुरजमल	गोड़	
१६. प्रथीराज	भाटी	
१७. राजा रायसिंघ नागोर	राठौड़	
१८. केसरीसींघ	भुरटीयो	
१९. जगतसिंघ	हाडो	
२०. वीरमदेव	सीसोदीय	
२१. सबलसिंघ	सीसोदीयो	
२२. राजा हरसींघ	गोड़	
२३. रूपसिंघ	राठौड़	
२४. बादरसिंघ	गोड़	

नाम	जात	मुनसफ
२५. भगवतसिंघ	हाड़ो	
२६. परसुजी	दिखणी	
२७. सुंदरदास	सीसोदीयो	
२८. उदैभांण	राठौड	
२९. प्रतापसींघ	झालो	
३०. राजा देवीसिंघ	बुंदेलो	
३१. कीरतसिंघ जैसिंघजी रौ	कछवाहो	
३२. जालमसिंघ		
३३. किसनसींघ	तुंवर	
३४. अमरसिंघ	चंदरावत	
३५. गिरधरदास	गौड़	
३६. चुतरभुज	चहुवांण	
३७. सेरसींघ	राठौड	
३८. प्रथमजी	गौड़	
३९. मासींघ		
४०. मालूजी		
४१. प्रथीसिंघ श्रीनगर रौ		
४२. मेदनीसिंह प्रथीसिंघ रौ		
४३. राजा तोडरमल ईटासी को		
४४. राजा रुघनाथ		३ हजारी
४५. रिणमल जामनगर रौ	जाडेचो	
४६. सत्रुसाल रिणमल रौ	जाडेचो	
४७. रायसींघ रिणमल रौ	जाडेचो	
४८. नीबोजी कछ रौ	जाडेचो	
४९. राजा व्रकमसी पगुवा		
५०. नांनजी मलार चांदा रौ		
५१. गोवंदचंद देवगढ़ रौ		
५२. राव करन भुरटीयो		
५३. राव अनोप करण री		२ हजारी

नाम	जात	मुनसफ
५४. किंसन रांमसींघ रो जैंपुर	कछवाहो	१ हजारी ५०० सवार
५५. रुगनाथदास	सीसोदीयो	
५६. मांनसिघ कीसनगढ रो		३ हजारी
५७. मासींघ किसनगढ रो		
५८. अनोपसींघ किसनगढ रो		
५९. राय लालचंद काबल रो		
६०. रांणा राजसींघ उदैंपुर	सीसोदीयो	५ हजारी ५००० सवार
६१. प्रथीसिंघ जंबू रो		
६२. राघोदास	झालो	७ सदी ५०० सवार
६३. संभोजो सेवाजी रो	दिखणी	६ हजारी
६४. किसनसिंघ	हाडो	
६५. जसवंतसिंघ	बुंदेलो	३॥ हजारी
६६. राव ईदरसिंघ रायसिंघ रो	राठौड़	३ हजारी
६७. रांणो जैंसिंघ राजसिंह रो	सीसोदियो	३ हजारी
६८. ऊदोतसिंघ भदोरीयी	भदोरीयो	
६९. राजसिंघ	राठौड़	
७०. प्रथीसिंघ जगतसिंघ रो	कछवाहो	
७१. रांणो भीम राजसींघ रो	सीसोदीयो	५ हजारी
७२. वीसनसिंघ किसनसिंघ रो	कछवाहो	१ हजारी
७३. चिमनजी खड़गगढ रो	मरेठो	४०० सवार
७४. मकरंदसिंघ कीछीभींत रो	मरेठो	
७५. कालूजी	दिखणी	५ हजारी
७६. जगदेव राय जादुराय रो	दिखणी	६ हजारी
७७. दौलतसींघ मासिंघ रो	भदोरीयो	
७८. दिलीपसींघ	बुंदेलो	
७९. हरीसिंघ छतरसिंघ रो		
८०. अनंरुदसिंघ	हाडो	
८१. रुदरसिंघ मासिंघोत	भदोरीयो	

नाम	जात	मुनसफ
८२. किसोरदास मनोरदास	गौड	
८३. पदमनायक सीकर रौ		
८४. रांमसिंघ		
८५. किसनसिंघ चांदा रौ		
८६. राजा उदेसिंघ सेवा रौ भाई दिखणी		२ हजारी
८७. पाड़सिंघ	गौड़	७ सदी
८८. रामाराव तिलोकचंद	चंदरावत	
८९. मोकमसींघ		
९०. सिवसिंघ		
९१. साहूजी	मरेठो	७ हजारी
९२. मदनसिंघ सींभुजी रौ	मरेठो	७ हजारी
९३. ऊदबसी सींभुजी रौ		
९४. उदेसीघ उरछी रौ	बुंदेलो	
९५. रांमचंद		हजारी
९६. किल्यांणसींघ भदावा रौ		
९७. दुरगादास करणोत	राठौड़	हजारी २००० सवार
९८. ईदरसींघ	सीसोदीयो	२ हजारी
९९. बादरसिंघ राजसिंघोत	सीसोदीयो	१५ सदी
१००. राजा जैसिंघ विसनसिंघ रौ	कछवाहो	२ हजारी
१०१. वसुदेव चंदनखेड़ा रौ		३ हजारी
१०२. राजा रांमसिंह	हाडो	
१०३. मांनधाता		

परिशिष्ट—१०

याददासत नव कोटां री

१. बाहड़मेर—मुदै केराड़ू कहीजे छै[१] । धरणीवाराह री बैसणौ छै[२] । भाखर मांहै ऊंडी जायगा छै । देहुरा जिण समै रा छै । गांव ७०० ॥१॥

२ आबू—आल्ह पाल्ह पंवार री बैसणो छै । अचलगढ नांव छै । जिको गढ अचलेश्वर महादेव रै नांवै छै । पंवारां नै मारनै चहुवांणां लीयौ । गांव ५४० ॥ २ ॥

३. पारकर—हांसू पंवारां रौ बैसणो । काछ अड़तौ[३], चवदे वेढी कहीजे । घणी धरती लागै छै । हमार सोढा राज करै छै । राधणपुर रा हाकम नुं मिळै छै । सूराचंद परै कोस चाळीस छै । रांणा सोढा कहीजै छै । बरसाळी रौ देस छै । ऊनाळी ऊही[४] ॥ ३ ॥

४. पूंगल—पूंगळ गजमल पंवार रौ बैसणौ छै । सिंध अड़तो बलोच सूं कं छै । विचै पांणी नहीं । ऊंचा-सा टीबां माथै कोट पड़ीयो छै । पौळ निपट अजायब छै । हमार तौ वसतौ घर १०० कोट मांहै छै । मारोठ कोस २५ छै । बलोचां रै कटक जोर लागौ छै[५] तिणसूं करनै धरती सगळी सूनी छै । हमें भाटी केलण राव जगदे छै । लागै तो पूंगळ जैसलमेर नै छै नै बीकानेर तो नजीक छै । बीकानेर पण मांहै छै । पैंडो मुलतांन रौ बहै छै[५] । तिणरी विसूद[६] लागै छै । तिणरा रुपया १२०००) तथा १५०००) पनरा लागै छै । कोट मांहै कुवा ३ छै । गांव बारै कुवा ४ छै । पांणी खारौ । पाखती थळ ओकळी[७] जोर छै । सांप घणा छै ॥ ४ ॥

५. जालोर—जाळोर पंवार भोज रौ बेसणौ छै । पंवारां कना सुं चहुवांणां लीधौ । कांनड़दे नै मार नै पातसाह अलावदीन लीयौ । भाखर ऊपर वडो गढ, कोस ५ तथा ७ भींत छै । मांहै झालरा बावड़ी अतूठ पांणी छै[८] । घास बळीतौ[९] गढ पाखती घणौ । पाखती सिध जलंधरनाथ बावजी रा भाखर छै

---

१. मूल नाम केराड़ू है । २. निवासस्थान, राजगद्दी का स्थान । ३, कच्छभुज से लगा हुआ । ४. बहुत साधारण । ५. बहुत बड़ी फौज ने आक्रमण किया । ५, मुल्तान का रास्ता वहां से निकलता है । ६. कर विशेष । ७. पोली रेत । ८. कभी समाप्त न हो इतना पानी । ९. ईंधन ।

हेटै सहर वसै छै। सहर दोळौ कोट छै[1]। तळाव बावड़ी घणा। गांव ३६० तीन सौ साठ लागै छै। इतरा परगना छै—

डोडीयाळ, रांमसेण, लोहीयाणौ, गूदाऊ, राड़धरौ, इतरा तौ पड़गना लागै छै। धरती मांहै रजपूत, मैणा, भील घणा। ऊनाळो पड़गने छै। खालसै थोड़ी[2] ॥ ५ ॥

६. ऊमरकोट—ऊमरकोट धाट कहीजै। पंवार जोगराज रौ बैसणौ छै। हमें रांणा सोढा राज करै छै। थटा नुं पेसकस दे छै। वडौ देस छै ॥६॥

७. लोद्रवौ—लोद्रवो जैसलमेर कनै छै। पंवार भांण रौ बैसणौ छै। जेसलमेर तठा पछै रावळ जैसल बसायो। गढ देहरा कुवा बावड़ी आईठांण सोह बता छै। जैसलमेर सुं कोस ५ छै। अठै लोद्रा पंवार रहता। पछै भाटी देवराव देरावर थकै पंवारां नै मार नै लीयौ। कितराग्रेक पाट भाटीयां रै राजथांन रयौ। पछै रावल भोजदे ऊपर तुरकां री फौज आई तद भोजदे साको कर कांम आयौ।

साख १ दूहौ—

> मांहिम है सर भोज दे, लोद्रवो कैलास।
> अण बिढियो[3] आपै नहीं[4], बाप तणौ अवास ॥

पछै रावळ जैसल लोद्रवो पाड़ नै[5] संमत १२१२ जैसलमेर बसायौ ॥ ७ ॥

८. अजमेर—अजमेर पंवार सिध रौ बैसणो। बडौ गढ छै। पछै चहुवांणां लियौ। भाखर माथै गढ छै। वीसलियौ आंनासागर मोटौ तळाव छै। ऊपर मीरांसाजी री दरगाह छै। तळहटी ख्वाजैजी री दरगाह छै। पाखती मेर घणा छै[6]। मोटी जायगा छै। बावन गढ अजमेरा लार छै ॥८॥

९. गढ मंडोवर—मंडोवर पंवार सांवत रौ बैसणो छै। तठा पछै पड़ीहारां लियौ। भाखर ऊपर गढ छै। पछै पड़ीहारां कनै राव चूंडेजी लियौ ॥ ९ ॥

---

१. शहर के चारों ओर शहरपना है। २. खालसा की जमीन कम है। ३. बिना युद्ध किए बिना घायल हुए। ४. छोड़ेगा नहीं। ५. ध्वस्त करके। ६. आसपास खूब मेर लोग बसते हैं।